जाओ
और
मसीह की कलीसिया बनाओ

कलीसिया के पर्व

द्वारा

डोटा

मैनुएल 5

समूह के अगुवों के लिए

(चौथा संशोधित संस्करण 2016)

प्रस्तावना

कलीसिया क्या है।

विश्वव्यापी स्तर पर, कलीसिया मसीह की देह है(इफिसियों 1:22-23) और सारे मसीही उस देह के अंग हैं(1कुरिन्थियों 12:12)। स्थानीय स्तर पर, मसीहियों के किसी घर (रोमियों 16:5)या शहर (1 कुरिन्थियों 1:2) में जमा होने को कलीसिया कहा जाता है। केवल यीशु सारी स्थानीय व विश्वव्यापक कलीसियाओं का सिर है। केवल वह ही कलीसिया का प्रमुख चरवाहा और बिशप है(1पतरस 2:24;5:4)। कलीसिया एक आत्मिक घर है जिसमें प्रत्येक मसीही एक जीवित पत्थर(1पतरस 2:5) या वह वास स्थान है जहाँ पर परमेश्वर अपनी आत्मा के माध्यम से वास करता है (इफिसियों 2:21-22)। कलीसिया एक घराना या परमेश्वर का परिवार है(इफिसियों 2:19)। जिसमें स्वयं परमेश्वर प्रेम व देखभाल करने वाले पिता के समान रहता है और सारे मसीही लोग एक दूसरे के साथ भाई व बहन के रूप में रहते हैं। कलीसिया एक भेड़ के झुण्ड के समान है जो अपने आगे चलने वाले चरवाहे का अनुसरण करते हैं(1पतरस 5:2; 2:25;5:4)। कलीसिया परमेश्वर का चुना हुआ पवित्र देश है जो उन लोगों से मिलकर बना होता है जिन्हें परमेश्वर ने सम्पूर्ण संसार में से चुना होता है(1पतरस 2:9-10)कलीसिया परमेश्वर के राज्य या उसके धरती पर राजा होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है(मत्ती 13:36-43; 16:18-19;21:42-44)। कलीसिया अभी तक भी सिद्ध वास्तविकता नहीं है(मत्ती 13:24-30), लेकिन मसीह के द्वितीय आगमन पर, वह मसीह की सिद्ध दुल्हन हो जाएगी(प्रकाशितवाक्य 21:1-2,9-10, 19:7)। एक तरफ तो कलीसिया संसार में एक योद्धा कलीसिया है जो शत्रु के सारे आक्रमणों के विरूद्ध खड़ी होती है(मत्ती 16:18-19; इफिसियों 6:10-18; प्रकाशितवाक्य 12:10-12)। जबकि दूसरी ओर कलीसिया स्वर्ग में एक विजयी कलीसिया है जहां पर इस दुनिया से कूच कर गये मसीही पहले ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं(गलातियों 4:26; इब्रानियों 11:10,16;12:22-14;13:14)।

किस प्रकार से मसीह की कलीसिया बनती है?

मसीह कलीसिया का सस्थापक, मालिक और निर्माता है। वह अपनी कलीसिया को बनाता है और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं हो सकते(मत्ती 16:18)! वह अपनी कलीसिया को पवित्र आत्मा(प्रेरितों 20:28), बाइबल(2 तीमुथीयुस 3:16-17) और स्थानीय कलीसिया के पुनरियों की परिषद (1तीमुथी 5:17) के द्वारा अगुवाई करता है। मसीह ने यहूदियों, समारियों और अन्यजातियों में कलीसिया की ऐतिहासिक बुनियाद रखने का काम प्रेरितों के द्वारा किया(इफिसियों 2:20)। लेकिन अब वह कलीसिया का निर्माण करने के लिए अति साधारण विश्वासी का इस्तेमाल करता है। वह उन मसीहियों के द्वारा कलीसिया का निर्माण करता है जिनके लक्ष्य निम्नलिखित होते हैं: जो एक दूसरे की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में सहायता के द्वारा आपसी रिश्ते बनाते हैं(इफिसियों 4:1-2), ठोस मसीही सिद्धान्तों के आधार पर अपनी आत्मा की एकता को बनाये रखते हैं(इफिसियों 4:3-6)जिससे वे इस एकता में पायी जाने वाली विविधता को बनाये रखें(इफिसियों 4:7-11), जो मसीह की कलीसिया के भीतर व बाहर व्यवहारिक काम करने के लिए लोगों को तैयार करते हैं(इफिसियों 4:12)और जो सारे मसीहियों को परिपक्ता में अगुवाई करते हैं (इफिसियों 4:13-14)। अत: कलीसिया सत्य,प्रेम, मसीह की समानता और नियमित वृद्धि (इफिसियों 4:15-16) पर आधारित एक समुदाय बन जाती है। मसीह की कलीसिया का निर्माण करना आज सभी विश्वासियों का लक्ष्य है।

डोटा पाठयक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता है:

1.प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छ: महीनों में(अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) समाप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठयक्रम को छ: दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।

2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।

3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे "पढें" "खोजें व चर्चा करें" समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।

4. "नोट्स" प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का साराशं बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।

5.यह पाठयक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6.हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7.प्रशिक्षण पाठयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठयक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।
हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में तेजी से मण्डलियों की (घरेलू कलीसिया) संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं(प्रेरितों 6:7)। यीशु ने कहा,"मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधोलोक के फाटक उसमें प्रबल नहीं होगें!"(मत्ती 16:18)! परमेश्वर को महिमा मिले! "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन!"(रोमियों 11:26)

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05-10-1993में हुआ जब यह पाठयक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, "Discipleship training On The Air", अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)1995 में (प्रथम संस्करण)। 2016 में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार
मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए नि:शुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश
इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठयक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

कलीसिया अध्याय 1

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 1:1-4:20**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 1:1-4:20) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]* **(1)2 कुरिन्थियों 3:18**

स्मरण वचनों की पाँचवी श्रृंखला (ड़) 'मसीही चरित्र' से सम्बन्धित है। पाँच स्मरण पदों के शीर्षक हैं:

(1) मसीह की समानता। 2 कुरिन्थियों 3:18

(2) शुद्धता। 1 पतरस 2:11

(3) प्रेम । मरकुस 12:12:30-31

(4) विश्वास। रोमियों 4:20-21

(5) नम्रता। फिलिप्पियों 2:2-4

दो लोग साथ मिलकर **मनन, स्मरण तथा पुनरावलोकन** करें।

(1) मसीह की समानता: 2कुरिन्थियों 3:18। परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है,जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया के पर्व]* **क्रिसमस : मसीह के जन्म का स्मरणोत्सव**

परिचय- क्रिसमस मसीहीयों का वह उत्सव है जिसमें हम यीशु मसीह के जन्म को मनाते हैं। इस अध्याय हम सीखेगें कि बाइबल यीशु मसीह के इस संसार में प्रथम आगमन के बारे में क्या कहती है। हम जानेगें कि उसके प्रथम आगमन के बारे में पुराने नियम में किस प्रकार भविष्यद्वाणियां की गयी थीं,इस धरती पर उसके जन्म लेने पर क्या हुआ, और इस संसार में उसका जन्म लेना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

क. प्रारम्भिक मानवीय इतिहास लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रथम प्रतिज्ञा का वर्णन करता है।

बाइबल में सर्वप्रथम प्रतिज्ञा उत्पत्ति 3:15 में दी गयी है। जब धरती पर कोई पाप नहीं था शैतान, पहले मानव अर्थात आदम और हव्वा के पास सर्प के रूप में आया। इस सन्दर्भ में चली शक्तिशाली बातचीत से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस सर्प के भीतर दुष्ट छुपा हुआ था। इस दुष्ट को आज हम ''शैतान'' के नाम से जानते हैं, जिसका अर्थ निन्दक या मुद्दई होता है, जिसका मतलब विरोधी वरन 'बड़ा अजगर' होता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। उसने प्रथम पुरूष और स्त्री की

परीक्षा की और उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उकसाया जिसके परिणामस्वरूप वे निष्कपट अवस्था से गिरकर पाप की अवस्था में पहुँच गये।

परमेश्वर ने उन्हें दण्ड देते हुए कहा कि शैतान की 'सन्तानों' जो कि दुष्टात्माएं व दुष्ट लोग हैं जो सदा शैतानी बातों का पक्ष लेते हैं,तथा स्त्री के वंश जिसका शाब्दिक अर्थ "बीज"अर्थात जो लोग सदा परमेश्वर का पक्ष लेते हैं, के बीच में सदा के लिए शत्रुता व लड़ाई बनी रहेगी। भविष्य में स्त्री का वंशज शैतान का सिर अपने पैरों से कुचलेगा, हालांकि शैतान भी उसकी एड़ी को डसेगा और उसे नुकसान पहुँचाएगा। इस तरह से परमेश्वर ने पहले मनुष्य और शैतान की घनिष्ठ व विनाशक मित्रता को सदा की शत्रुता में परिवर्तित कर दिया। परमेश्वर ने शैतान के वंशजों व स्त्री के वंशजों के बीच लगातार लड़ाई की चर्चा की: और परमेश्वर ने निर्णायक विजय के बारे में भी बताया।

नये नियम के प्रकाशन में, हम जानते हैं कि यह लड़ाई अन्ततः शैतान व यीशु मसीह के बीच में होगी। यीशु पहले पुराने नियम के लोगों द्वारा सताया जाएगा और बाद में वह अपनी देह में क्रूस की यातना सहेगा। यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर, उसने शैतान की शक्ति को नाश कर दिया लेकिन अभी तक उसकी शक्ति का अन्त नहीं हुआ है। नया नियम प्रगट करता है कि परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी (या उद्धार की प्रतिज्ञा) के द्वारा यह प्रगट किया कि अन्तिम युद्ध दो व्यक्तित्वों के बीच में होगा, जिन्हें हम शैतान व यीशु मसीह के नाम से जानते हैं, यीशु तो एक स्त्री से उत्पन्न होगा। शैतान यीशु पर आक्रमण करके उसे मारने की कोशिश करेगा, क्योंकि परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी की है कि वह शैतान के सिर को कुचलेगा। हालांकि अवश्य है कि यीशु को "शैतान द्वारा उसकी एड़ी में डसे जाने" की वजह से तकलीफें उठानी पड़ेंगी और वह क्रूस पर मारा जाएगा, लेकिन वह फिर भी शैतान पर विजय प्राप्त करके उसे कुचल डालेगा। अन्त में यीशु विजयी ठहरेगा।

ख. पुराने नियम का इतिहास उस लड़ाई को दर्शाता है जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साकार होने में बाधा डालने का प्रयास करती है।

1.आदम से नूह के समय तक भड़की लड़ाईयाँ

(1) आदम और हव्वा

परमेश्वर ने प्रथम पुरूष व स्त्री अर्थात आदम और हव्वा से उद्धार की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 3:15)। स्त्री से उत्पन्न कोई जन शैतान के सिर को कुचलेगा। प्रारम्भ में आदम और हव्वा को केवल दो ही सन्तानें हुई, केन और हाबिल। केन, हाबिल से जलने लगा और क्रोध में आकर उसने हाबिल की हत्या कर दी (उत्प 4:1-8)। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में ही शैतान स्त्री के वंश को नाश कर देना चाहता था ताकि उद्धार के निमित्त परमेश्वर की प्रतिज्ञा कभी पूरी न हो सके। लेकिन परमेश्वर ने आदम और हव्वा अर्थात प्रथम पुरूष व स्त्री को और भी बच्चे दिये(उत्प 5:1-5)। इस तरीके से मानवजाति का विकास होता रहेगा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हो जाएगी! इस तरह से मानवजाति विकास होता रहा तथा किसी व्यक्ति के द्वारा उद्धार दिलाने की प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की सम्भावनाएं भी ज़िन्दा रहीं, जो किसी मनुष्य के वंश में पैदा होने वाला था।

(2) शेत व नूह

आदम और हव्वा का तीसरा बेटा शेत,पहले से ही परमेश्वर की उद्धार की प्रतिज्ञा को ढोने वाले के रूप में नियोजित था(उत्प.5:6-32)। बहुत वर्षों के बाद, पृथ्वी पर लोगों की संख्या बहुत बढ़ गयी। परमेश्वर का ज्ञान जो आदम और हव्वा ने अपने वंशजों तक पहुँचाया था, इतना मिश्रित हो गया था कि मानव जाति ने पूरी तरह से भ्रष्ट जीवन शैली के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया। "परमेश्वर के पुत्र"(जो कि शेत के वंशज थे और जो परमेश्वर का अनुसरण करने वाले लोगों को दर्शाते हैं) "केन की पुत्रियों" से विवाह करने लगे (जो केन के वंशजों को दर्शाते हैं अर्थात वे लोग जिन्होंने दूसरे मनुष्यों को देवता मानकर अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया)(उत्प.6:1-4;व्यव 7:1-4; 2कुरि 6:14 को पढ़ें)। जिसके परिणामस्वरूप धरती पर दुष्टता अत्यधिक बढ़ गयी। "यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है, वह निरन्तर बुरा ही होता है(उत्प 6:5)। इसलिए परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानवजाति को बाढ़ के द्वारा नाश करने का विचार किया (उत्प 6:5-7,11-13)। एक बार फिर से ऐसा प्रतीत होने लगा कि शैतान उस मानवजाति को नाश करने में सफल हो जाएगा जिसमे परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा का बीज विद्यमान था।

लेकिन परमेश्वर को एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उस काल में एक निष्कलंक जीवन व्यतीत कर रहा था:नूह। "वह परमेश्वर के साथ चला करता था "(उत्प 6:8-9)। परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को बाढ़ में नाश होने से बचा लिया

(उत्प.6:14-8:22)। इस तरह मानवजाति प्रगतिशील रही और मनुष्यों में से ही एक उद्धारकर्ता के पैदा होने की उम्मीद बनी रही।

2.नूह से लेकर यहूदा तक यह लड़ाई चलती रही

(1) अब्राम(ई.पू 2157-1992)

ई.पू. इक्कीसवीं शताब्दी में, आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा अब्राहम(अब्राम) और सारा(सारै)को दी गयी थी। परमेश्वर ने उनसे वायदा किया कि उनके वंशज (शाब्दिक अर्थ:उनका बीज)'आकाश के तारों के समान' तथा 'समुन्द्र के बालू के किनकों के समान' अनगिनत होगें। और परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे"(उत्पत्ति 12:3)(उत्प 11:26-32;उत्प.15:5;उत्प 22:17-18)। मानवीय दृष्टिकोण से बात करें तो यह प्रतिज्ञा कभी पूरी नहीं हो सकती थी,क्योंकि अब्राहम व सारा दोनो ही बहुत बूढ़े थे, उनकी देह में कोई शक्ति नहीं बची थी और सारा बांझ थी। एक बार फिर ऐसा प्रतीत होता था मानो शैतान जीत जाएगा।

परन्तु तभी एक चमत्कार हुआ। जब अब्राहम सौ वर्ष का था,परमेश्वर ने चमत्कारी ढंग से अब्राहम व सारा को पुत्र की आशीष दी जिसका नाम इसहाक रखा गया(उत्प 21:1-7)! परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा की लाल रेखा लगातार आगे बड़ती चली गयी।

(2) इसहाक (2067-1887 ई.पू)

आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा इसहाक को दी गयी थी(उत्प.26:4)लेकिन उसकी पत्नि रिबका भी बांझ थी(उत्प 25:21)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

परन्तु इसहाक ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे एसाव व याकूब नामक दो बच्चे दिये।

(3) याकूब (2007-1860 ई पू) आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा याकूब को दी गयी थी(उत्पत्ति 28:13-14) लेकिन उसका भाई एसाव उसे मारना चाहता था, क्योंकि याकूब ने छल से एसाव के पहिलौठे का अधिकार छीन लिया था(उत्प 27:41)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

लेकिन परमेश्वर ने स्वयं याकूब से यह वायदा किया था कि जहां जहां वह जाएगा परमेश्वर उसकी सुरक्षा करेगा(उत्प 28:15)। याकूब जीवित रहा और परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा की लाल रेखा लगातार आगे बड़ती चली गयी।

(4) यहूदा

आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा याकूब को दी गयी थी,जो याकूब और लिया से उत्पन्न हुआ था(उत्प 49:10)। राजकीय अधिकार तब तक यहूदा के घराने से दूर नहीं होगा जब तक कि प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता जन्म नहीं ले लेता। वह राजा होगा और धरती के सारे कुल एक दिन उसकी आज्ञा का पालन करेगें(यशा 45:22-23;फिलि 2:9-11)

3.यहूदा से लेकर मूसा तक चलने वाला संघर्ष

(1) याकूब व यहूदा के वंशज: इस्राएली।

पन्द्रवीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं ई.पू शताब्दी के बीच आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार करने की प्रतिज्ञा इस्राएलियों को दी गयी। क्योंकि शैतान कुलपतियों अर्थात अब्राहम,इसहाक और याकूब को नष्ट करने में असफल रहा,उसने इस्राएलियों के विरूद्ध मोर्चा खोल लिया क्योंकि वे याकूब के वंशज थे(उत्प 32:28)। इस्राएलियों के लिये यह नियुक्त कर दिया गया था कि उन्हीं में उद्धारकर्ता को जन्म लेना है (यूहन्ना 4:22)। जिन 430 वर्षों में इस्राएलियों ने मिस्र में समय बिताया, उस दौरान उसकी जनसंख्या काफी बढ़ गयी (निर्गमन 12:40),वे एक बड़ी जाति बन गये। अन्तत: मिस्र में एक ऐसा राजा खड़ा हुआ जो युसुफ को नहीं जानता था। उसने इस्राएलियों पर तरह तरह से दबाव बनाया और अन्तत: उसने उनके बालकों को मारने का आदेश दे दिया(निर्गमन 1:7-22)। एक बार फिर ऐसा लगने लगा मानो कि शैतान 'स्त्री के बीज' को नाश करने में कामयाब हो जाएगा।

लेकिन परमेश्वर ने इस्राएलियों की सुरक्षा की। क्या आप इस बात पर विश्वास करेगें कि परमेश्वर ने ठीक राजा के महल में मूसा को खड़ा किया और बाद में परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर लाकर प्रतिज्ञा के देश तक ले जाने के लिए अगुवा ठहराया(निर्गमन 3:1-12)

(2) मूसा (1527-1407 ई.पू)

मरूस्थल से होकर प्रतिज्ञा के देश तक की यात्रा के दौरान,इस्राएली कई बार विश्वास से भटककर मूर्तिपूजा करने लगे। उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया और वे उसकी पूजा करने लगे(निर्गमन 32:1-6)। परमेश्वर बहुत क्रोधित हुआ और वह मूसा को छोड़कर समस्त इस्राएलियों को मारना चाहता था(निर्गमन 32:10)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

लेकिन मूसा ने पापी राष्ट्र की ओर से मध्यस्थता की प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली(निर्गमन 32:11-14)और इस्राएलियों को बक्श दिया। परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना सुनी। यहां पर हम मूसा को यीशु मसीह के प्रतीक अर्थात एक मध्यस्थ के रूप में देख सकते हैं, जिसने न केवल अपने लोगों के लिए प्रार्थना की वरन उनके लिए प्राण भी दे दिये(इब्रानियों 7:25-28)।

4.मूसा से लेकर दाऊद तक संघर्ष का जारी रहना।

दाऊद (राज्य किया: 1011-971 ई पू)

ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान, आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार करने की प्रतिज्ञा दाऊद को दी गयी। दाऊद, यहूदा के गोत्र का वंशज था। 1 इतिहास 17:11-14 में एक मसीही सम्बन्धी भविष्यवाणी को पढ़ें। परमेश्वर ने दाऊद के पुत्रों(वंशज) की राजगद्दी सदा के लिए स्थिर करने की प्रतिज्ञा की: जिसका नाम यीशु मसीह हुआ। भविष्य में प्रगट होने वाला यह राजा "परमेश्वर का घर" स्थापित करने वाला था: जिसे हम कलीसिया के नाम से जानते हैं (2कुरिन्थियों 6:16;इफिसियों 2:20-22; 1 पतरस 2:4-6;9-10)। परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि इस राजा का सिंहासन सदा काल तक स्थिर रहेगा। (यशायाह 9:6;मत्ती 12:28-30;प्रकाशितवाक्य 17:14;प्रकाशितवाक्य 19:16)। परमेश्वर ने उससे यह वायदा किया कि "वह उसका पिता ठहरेगा और वे उसकी सन्तान कहलाएंगे"(भजन 2:7; मत्ती 3:17; इब्रा 1:5)। यिर्मयाह 23:5 में हम पढ़ते हैं,"देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में से एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा,और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा।" क्योंकि परमेश्वर ने ये प्रतिज्ञाएं दाऊद से की थी इसलिए शैतान दाऊद को नाश करना चाहता था। गोलियत ने तथा शाऊल ने दो बार भाले से दाऊद को मारने का प्रयास किया परन्तु असफल रहे(1शमूएल 18:10-11)। उसके बाद दाऊद के अपने बेटे,अबशालोम,ने अपने देश के कई लोगों के साथ मिलकर गोष्टी की और दाऊद को मारने का प्रयास किया, लेकिन वह भी असफल रहा(2शमूएल 15:1-19:43)। हर बार ऐसा प्रतीत होता था मानो शैतान अब जीतने वाला है।

लेकिन बाइबल हमें सिखाती है कि कोई भी परमेश्वर को उसकी योजना पूरा करने से नहीं रोक सकता। "सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है,"नि:सन्देह जैसा मैंने ठान लिया है,वैसा ही हो जाएगा,और जैसी मैंने युक्ति की है वैसी ही पूरी होगी। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?"(यशायाह 14:24,27)। दाऊद नहीं मारा गया और इस तरह परमेश्वर की उद्धार की योजना निरन्तर आगे बढ़ती गयी।

5.दाऊद से लेकर अहाज तक संघर्ष का जारी रहना।

(1) योआश (कार्यकाल: 734-727ई.पू)

ई.पू दसवीं से लेकर छठी शताब्दी के बीच में,आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा को यहूदा के दक्षिणी राज्य (2½ गोत्रों)के राजाओं द्वारा आगे बढ़ाया गया था। समय समय पर इस्राएल का उत्तरी राज्य(9½ गोत्र) मिलकर दक्षिणी राज्य अर्थात यहूदा पर चढ़ाई करते थे। अतल्याह, जो उत्तरी राज्य के राजा अहाब की दुष्ट बेटी, रोगी अहज्जयाह की माता (और ओम्री की पोती)(2 राजा 8:18,26-27)थी जिसने राजा दाऊद के राजकीय घराने के सारे राजकुमारों को मरवा दिया, क्योंकि वह सारा अधिकार अपने हाथों में रखना चाहती थी। इस बार वास्तव में ऐसा लगा कि शैतान उस वंशावली और उद्धार की योजना को मिटाने में कामयाब हो गया है जिसमें मसीह का जन्म होने वाला है।

लेकिन एक बार फिर से, सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर ने शैतान की युक्तियों को असफल कर दिया। यहोशीबा अर्थात राजा यहोराम की बेटी ने योआश को बचा लिया जो रोगी अहज्याह का बेटा था। योआश को मन्दिर में 6 वर्ष अर्थात तब तक छिपा कर रखा गया जब तक अतल्याह को मारकर उसे राजा न बना दिया गया(2 राजा 11:1-21)। यदि अतल्याह दाऊद के घराने के सारे वशजों को मारने में सफल हो जाती तो शैतान की जीत हो जाती और प्रतिज्ञा किये गये उद्धारकर्ता का कभी जन्म नहीं हो पाता।

(2) अहाज (कार्यकाल 734-727 ई पू)

उसके बाद इस्राएल के उत्तरी राज्य और अराम (सीरिया)ने मिलकर यहूदा के दक्षिणी राज्य को नाश करने की युक्ति बनायी(2 राजा 16:5)। ऐसा लगने लगा की आसपास के राज्य मिलकर परमेश्वर के लोगों को नाश कर देगें (जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते थे) और शैतान जीत जाएगा।

लेकिन भविष्यद्वक्ता यशायाह ने राजा आहाज से कहा,"इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह देगा: सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी"(यशायाह 7:1-14)। परमेश्वर ने यह वायदा किया कि चाहे इतिहास में कैसी भी कठिन परिस्थिति रही हो,कोई भी मसीह अर्थात उद्धारकर्ता को इस दुनिया में आने से नहीं रोक सकता है। आने वाला उद्धारकर्ता "इम्मानुएल" कहलाएगा जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ है"(मत्ती 1:20-23)।

बाइबल हमें सिखाती है कि अविश्वासी संसार परमेश्वर के लोगों को नाश करने में कभी कामयाब नहीं हो पाएगा। कोई भी नेता या राष्ट्र परमेश्वर की योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकता।

6.अहाज से एस्तेर तक सघंर्ष का ज़ारी रहना।

ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी के दौरान,यहूदी(दक्षिणी राज्य यहूदा के वंशज)मेडो-परशियन साम्राज्य में हर जगह बस गये। दुष्ट हामान यहूदियों से नफरत किया करता था इसलिए उसने एक चाल चली और फारसी राजा क्षयर्ष को ऐसी आज्ञा पत्र निकालने के लिए मना लिया, जिससे उसे 12वें महीने के 13वें दिन तक,सारे यहूदी जवान व बूढ़े,स्त्री व बच्चों को मारने और उनके सामान को नाश करने का अधिकार मिल गया (एस्तेर 3:5-10,13)। संदेश वाहकों को इस आदेश के साथ सभी प्रान्तों में भेज दिया गया कि बारहवें महीने के तेरहवें दिन में सभी यहूदियों व उनकी समपत्ति को नाश कर दिया जाएगा(एस्तेर 3:13-14)। सारे यहूदियों को नाश करने की धमकी दी जा रही थी। यदि हामान अपनी युक्ति में सफल हो गया तो,शैतान जीत जाएगा और उद्धार को वास्तविकता बनने से रोकने में सफल हो जाएगा।

लेकिन परमेश्वर ने हामान की योजना को विफल करने के लिए रानी एस्तेर का इस्तेमाल किया। राजा क्षयर्ष ने हामान को फाँसी पर लटका दिया और यहूदियों के लिए उसने एक और आदेश पत्र निकाला जिसके अनुसार वे खुद पर होने वाले आक्रमण का मुँह तोड़ जवाब दे सकते तथा उन्हें लूट सकते हैं (एस्तेर 8:7-11)। 12वें महीने(अदार) की 14 व 15 तारीख को यह स्मरणोत्सव मनाया जाता है। परमेश्वर ने एक बार फिर से इस अनर्थ को होने से रोक लिया और शैतान को फिर हार झेलनी पड़ी।

7.एस्तेर से बेतलेहम तक संघर्ष का जारी रहना।

(1) प्रकाशितवाक्य 12:4-5:अजगर और स्त्री।

यीशु मसीह व शैतान के बीच युगों से चलने वाली इस लड़ाई में, यीशु मसीह हमेशा ही विजयी हुए। पुराने नियम में चली यीशु मसीह व शैतान के बीच की लड़ाई का प्रतीक के रूप में प्रकाशितवाक्य 12:1-5 में वर्णन किया गया है।"वह अज़गर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ कि जब वह बच्चा जने तो वह उस बच्चे को निगल जाए। वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।" "वह स्त्री" पुराने नियम के समय में परमेश्वर के लोगों को दर्शाती है। वह प्रतिज्ञा किये हुए उद्धारकर्ता को जन्म देगी(यूहन्ना 4:22)। "अजगर" शैतान का प्रतीक है(प्रकाशित वाक्य 12:9)। और "बच्चा" मसीह अर्थात यीशु मसीह को दर्शाता है। पुराने नियम के सम्पूर्ण काल में,शैतान ने प्रतिज्ञा किये हुए उद्धारकर्ता के जन्म में बाधा डालने का प्रयास किया है।

लेकिन परमेश्वर ने इस बात की चौकसी की कि उद्धार के निमित्त उसकी योजना विफल न हो। और वह वास्तव में विफल नहीं हुई। न कोई वस्तु और न ही कोई व्यक्ति बाइबल के सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकता(यशायाह 14:24,27)!

(2) यूसुफ व मरियम।

अन्त में उद्धार के निमित्त मसीह के आने की प्रतिज्ञा यूसुफ व मरियम को दी गयी(लूका 1:26-38;मत्ती 1:18-25)। जब जगत के उद्धारकर्ता मसीह के इस संसार में जन्म लेने का समय आया तो,"अज़गर" ने उसे इस संसार में आने से रोकने का अपना अन्तिम प्रयास किया। रोमी राजा हेरोदेस(37ईसा.पू-4 ई प.)ने जब पूर्व से आये ज्योतिषियों से यह सुना कि उद्धारकर्ता का जन्म हो चुका है तो वह डर गया। वह यह सोचकर भयभीत था कि यह मसीह उसके स्थापित राज्य पर कब्ज़ा कर लेगा। इस कारण उसने बेतलेहम व उसके आसपास के प्रान्तों में दो वर्ष से छोटे शिशुओं की हत्या करने की आज्ञा दे दी(मत्ती 2:1-18)। एक बार फिस से ऐसा लगने लगा की हेरोदस राजा अपनी इस क्रूर योजना द्वारा सफल हो जाएगा।

लेकिन परमेश्वर की अनन्त योजना कभी असफल नहीं हो सकती और वह असफल नहीं हुई। परमेश्वर ने रात में ही युसुफ के पास एक स्वर्गदूत को भेजा और उससे कहा कि वह मरियम और बच्चे को लेकर रात ही में मिस्र को चला जाए। और वे तब तक मिस्र में ही रहे जब तक कि हेरोदेस राजा मर न गया।

(3) यीशु मसीह।

जब यीशु मसीह ने धरती पर अपनी सेवाकाई का आरम्भ किया तब ही,"अज़गर" अर्थात शैतान ने यीशु को अपने कब्जें में करने के लिए उसकी परीक्षा की (पढ़ें मत्ती 4:1-11)। सबसे पहले शैतान ने यीशु को अपने आप भरोसा करने की परीक्षा में डाला (अपनी काबलियत पर भरोसा करके परमेश्वर से मुक्त होने की परीक्षा)। वह पत्थर को रोटी में बदल सकता था। उसके बाद शैतान ने परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने की परीक्षा में डाला अर्थात बाइबल का गलत तरीके से इस्तेमाल करने के लिए उकसाया। वह चाहे तो छत पर से छलांग मार सकता है क्योंकि लिखा है कि स्वर्गदूत उसे हाथों हांथ उठा लेगें

और उसे बिल्कुल चोट न लगेगी। अन्त में शैतान ने यीशु से उस पर भरोसा और विश्वास करने की परीक्षा सामने रखी जिससे उसे सारे संसार के राज्य पर अधिकार प्राप्त हो सकता था।
लेकिन यीशु शैतान की हर एक परीक्षा पर जयवन्त हुआ और उसका नकाब़ हटाकर उसे झूठा साबित किया। (यूहन्ना 8:44)।

(4) प्रतिज्ञा पूरी हुई: यीशु मसीह ने शैतान को बांध दिया।
यीशु मसीह संसार में शैतान के कामों को नाश करने के लिए आए(1यूहन्ना 3:8)। धरती पर रहते हुए उसके उद्धार के कामों के दौरान,यीशु ने दुष्टात्माओं को (शैतान की दुष्टात्माओं को) लोगों में से निकाला और अपना राज्य स्थापित किया(हुकुमत)(मत्ती 12:28-29)।
क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु मसीह ने शैतान की दुष्टात्माओं को निहत्था बना कर उन पर विजय प्राप्त की (कुलु 2:15)। उसके मृतकों में से जी उठने,उसके स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा यीशु ने शैतान को उसकी उपाधि 'संसार (पापमय) का सरदार' से गिरा दिया और अब वह सारे संसार पर जय के साथ राज्य करता है!

उस समय से लेकर आज तक यीशु सारे देशों व सारी जातियों के लोगों की अपने राज्य में अगुवाई कर रहा है। (यूहन्ना 12:31-32)। वह आज भी इस कार्य को कर रहा है। लोगों में सुसमाचार प्रचार किये जाने के द्वारा लोग शैतान के चंगुल से छुड़ाकर ज्योति के राज्य में प्रवेश कराये जा रहे हैं(कुलु 1:13)। इस तरह से उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा पूरी हुई। यीशु मसीह,"स्त्री का वंश" जो असल में "अब्राहम के वंश"(अकेला) भी कहलाता है(उत्प 33:18; गलातियों 3:16)ने सर्प के सिर को कुचल दिया: यीशु ने शैतान पर विजय पा ली! यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन से लेकर अब तक,संसार की सारी शक्तियों व सारे हाकिमों पर राज्य किया है, चाहे उन्हें कोई भी नाम क्यों न दिया गया हो(मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22)! उसके प्रथम आगमन से अब तक कोई भी जन उसे लोगों को अपने पास खींचने से नहीं रोक सका।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में अनेकों भविष्यद्वाणियां कीं

आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में पुराने नियम में की गयी भविष्यद्वाणियां संसार में पूरी हुई सबसे पुरानी भविष्यद्वाणियां हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता महानतम भविष्यद्वक्ता, अन्तिम महायाजक और सर्वोच्च राजा होगा।

1. मानव इतिहास के आरम्भ में।
परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की थी कि उद्धारकर्ता स्त्री से उत्पन्न होगा और शैतान के सिर को कुचलेगा(उत्प 3:15;लूका 3:23-37)

2. 2100 ईसा पूर्व वर्षों पहले ।
परमेश्वर ने अब्राहम से यह वायदा किया कि आने वाला उद्धारकर्ता "अब्राहम का वंशज " होगा, अर्थात वह अब्राहम के कुल में पैदा होगा और उसके द्वारा संसार की सभी जातियां आशीषित होगीं। (उत्प 12:3; 22:18; गलातियों 3:16)

3. 1400 ईसा पूर्व वर्षों पहले।
मूसा भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की थी कि आने वाला उद्धारकर्ता जीवतों के बीच में सर्वश्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता होगा। वह परमेश्वर के मुख से निकली बातों का प्रचार करेगा। और परमेश्वर सभी लोगों से अपेक्षा करेगा कि वे उसकी आज्ञा मानें(व्यवस्थाविवरण 18:15-18; प्रेरितों 3:21-25)।

4. 1000 ईसा पूर्व वर्षों पहले।
दाऊद ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता मनुष्यों के बीच में सर्वश्रेष्ठ महायाजक होगा (भजन 110:4; इब्रानियों 3:1;4:14-15. 7:22-28)यद्यपि लोग उसे तुच्छ जानेगें, उसे क्रूस पर चढ़ाएगें उसके कपड़ों पर चिट्ठियां डालेगें(भजन 22:1-18),फिर भी वह अपने प्राणों की आहूति देकर उनके पापों का प्रायश्चित करेगा(यशायाह 53:6,10)।

5. 700 ई पू वर्षों से पहले।
मीका भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता बेतलेहम शहर में पैदा होगा। (मीका 5:2;लूका 2:11-15)। और यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी में कहा कि उसे "परमेश्वर हमारे साथ है" कहा जाएगा(यशायाह 7:14; मत्ती 1:20-23)। वह बहुत से लोगों के अपराधों के लिए क्रूस पर मारा जाएगा और बहुतों को धर्मी ठहरायेगा(यशायाह 53:5,11;रोमियों 4:25)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह भी भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता मनुष्यों में पैदा हुआ

सर्वश्रेष्ठ राजा भी कहलाएगा। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर और अनन्त पिता के स्वभाव को धारण करेगा और उसकी धार्मिकता के राज्य का कभी अन्त न होगा। (यशायाह 9:6-7;लूका 1:30-33)!

6. 400 ई.पू.वर्षों पहले।

भविष्यद्वक्ता मलाकी ने भविष्यवाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता के आगे आगे चलने वाला एक जन पैदा होगा जो उसके आने के लिए मार्ग तैयार करेगा(मलाकी 3:1;4:5-6)। और वह भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था(मत्ती 11:11-14; 17:10-13)।

घ. यीशु मसीह के जन्म के समय घटी घटनाएं

1. देहधारण : परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मनुष्य का रूप धारण किया।

यीशु मसीह का अस्तित्व या वजूद उसके बेहलेहम में जन्म लेने के साथ शुरू नहीं हुआ था। वह आदि से परमेश्वर के साथ था वरन वह स्वयं परमेश्वर था। उसमें अनन्तता से ही परमेश्वर का ईश्वरी स्वभाव विद्यमान था(यूहन्ना 1:1-5,14-18)। जब सही समय आया तब यीशु ने बिना ईश्वरीय स्वभाव को त्यागे मानवीय स्वभाव को धारण किया और मनुष्यों के बीच में जन्म लिया। उस समय से लेकर यीशु में न केवल ईश्वरीय स्वभाव वरन मनुष्य स्वभाव भी विद्यमान था। वह शतप्रतिशत ईश्वर व शतप्रतिशत मनुष्य था(गलातियों 4:4;फिलिप्पियों 2:5-8; कुलु 2:9)। जब वह धरती पर था तो लोगों ने अपने बीच में उसे बढ़ते हुए देखा(लूका 2:52)। उन्होंने उसे छुआ,उसके चमत्कारों और उसके पापरहित जीवन को देखा,उसकी शिक्षाओं को सुना उसके उद्धार का अनुभव किया(1 यूहन्ना 1:1-3)।

2. जर्कयाह को बताया जाना ।

यीशु मसीह के जन्म से पहले एक स्वर्गदूत जर्कयाह के पास उसकी वृद्धावस्था में उसे यह बताने के लिए भेजा गया कि उसे एक पुत्र प्राप्त होगा। उसका पुत्र आने वाले उद्धारकर्ता का अग्रदूत होगा। जर्कयाह ने परमेश्वर के वचनों पर सन्देह किया इसलिए परमेश्वर ने उसे एक चिन्ह दिया- कि वह तब तक बोल नहीं पाएगा जब तक कि परमेश्वर का कहा वचन पूरा न हो जाए (लूका 1:5-25,57-79)! जब परमेश्वर का वचन पूरा हो गया तब जकर्याह ने यह कहते हुए स्तुति का गीत गाया, कि आने वाले उद्धारकर्ता में होकर परमेश्वर द्वारा अब्राहम से बांधी गयी वाचा पूरी हो जाएगी(लूका 1:72-73)! यीशु मसीह में होकर परमेश्वर का निष्पक्ष अनुग्रह संसार की सारी जातियों के लिए एक वास्तविकता बन जाएगा।

3. मरियम को बताया जाना

यीशु मसीह के जन्म से पूर्व, ज़िब्राईल फरिश्ता मरियम को दिखाई दिया और उसे बताया कि परमेश्वर का अनुग्रह उस पर हुआ है(लूका 1:26-56)। वह यीशु की माता बनेगी, लेकिन केवल उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार! पवित्र आत्मा उस पर छाया करेगा और वह गर्भवती होगी। इस कारण, वह पवित्र बालक "परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा"(लूका 1:35)। उसके जन्म के कारण, वह परमेश्वर का पुत्र नहीं बन गया(क्योंकि वह तो आदि से ही परमेश्वर का पुत्र है)। वरन, उसके जन्म के द्वारा उसने बिना अपना ईश्वरीय स्वभाव त्यागे हुए मनुष्य का रूप धारण किया। यीशु हमेशा से ही ईश्वर था लेकिन अब उसने मनुष्य का स्वभाव को भी धारण कर लिया था। यद्यपि मानव इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था,इसलिए स्वर्गदूत ने कहा कि "परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है" (लूका 1:37)। जकर्याक से बिल्कुल विपरीत,मरियम ने परमेश्वर के वचनों पर ज़रा भी सन्देह नहीं किया। वरन उसने परमेश्वर की योजना पूरा होने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

4. युसुफ को बताया जाना ।

यीशु मसीह के जन्म से पहले स्वपन में एक स्वर्गदूत यीशु के सपनों में प्रगट हुआ और कहा कि जिस स्त्री से उसकी "मंगनी" हुई है, वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से गर्भवति होगी। उन दिनों में मंगनी को कानूनी विवाह के रूप में देखा जाता था। युसुफ को उस बच्चे का नाम "यीशु" रखना था जिसका अर्थ "उद्धारकर्ता" था। वह सारे जगत के लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। यूसुफ एक समर्पित पति था। उसने परमेश्वर के वचनों पर भरोसा किया। उसने न तो मरियम को त्यागा और न ही यीशु के जन्म तक उसके साथ सहवास किया(मत्ती 1:18-25)। रोमी जनगणना के तहत नाम लिखाने के लिए यीशु यूसुफ और मरियम ने नासरत से बेतलेहम तक यात्रा की। बेतलेहम में शिशु यीशु का जन्म हुआ(लूका 2:1-7)।

5. चरवाहों को बताया जाना।

यीशु मसीह के जन्म के पश्चात, एक स्वर्गदूत चरवाहों को दिखा और उनको बताया कि आने वाला उद्धारकर्ता बेतलेहम में पैदा हुआ है और यह ही मसीह है। उसके बाद हजारों स्वर्गदूत प्रगट हुए और गीत गाने लगे कि धरती पर जिन लोगों पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है परमेश्वर उन्हें शान्ति प्रदान करेगा। हर एक जन जो यीशु के अनुग्रह को स्वीकार करेगा उसका

परमेश्वर से मेल हो जाएगा। चरवाहे यीशु से मिलने के बाद, सबको यह खबर सुनाने लगे। यीशु के जन्म के आठ दिनों के बाद यीशु का खतना हुआ(लूका 2:8-24),क्योंकि वह "व्यवस्था के अधीन" पैदा हुआ था। (वह काल तब भी पुराने नियम के अधीन काल था)(गलातियों 4:4)।

6.शिमौन को बताना

बाद में,यूसुफ और मरियम यरूशलेम के मन्दिर में यीशु को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करने के लिए ले गये(लैव्य. 12:1-8; निर्गमन 13:2,12,15)। पवित्र आत्मा ने शिमौन पर यह प्रगट किया था कि वह जब तक परमेश्वर के मसीह को न देख ले, न मरेगा। जब उसने यीशु को मन्दिर में देखा तो उसने गवाही दी कि यीशु ज्योति बनेगा और अन्यजातियों पर परमेश्वर को और इस्राएल पर परमेश्वर की महिमा को प्रगट करेगा। लोगों में मतभेद होगा और कुछ लोग यीशु मसीह के विरोध में और कुछ लोग यीशु मसीह के लिए बोलेगें। फिर भी, यह यीशु हर एक जन के मन के भेदों को खोलकर बता देगा। (लूका 2:25-35)।

7.पूरब से आये ज्योतिषियों को दी गयी चेतावनी।

इस दौरान यूसुफ व मरियम बेतलेहम के एक घर में बस गये। परमेश्वर ने पूरब से आये ज्योतिषियों की यीशु के जन्म स्थान तक अगुवाई करने के लिए एक तारे को ठहराया। ये ज्योतिषी सम्भवत: पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के बारे में जानते थे,जो शायद उन्होंने प्रवासियों (बेबिलोन में मेडो-परसियन साम्राज्य के समय)के जैसे जीवन व्यतीत करते समय सुनी होगीं। जब उन्हें यीशु मिल गया,तो उन्होंने उसे भेटें चढ़ाई, जो उस समय के कीमती उपहार थे और उसकी अराधना की। वे यीशु मसीह के सामने दण्डवत करने वाले लोगों में प्रथम थे। परमेश्वर द्वारा स्वपन में चेतावनी दिये जाने के बाद में कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएं,वे किसी और रास्ते से पूरब को लौट गये। राजा हेरोदेस और यरूशलेम में अन्य लोग मसीह-राजा के पैदा होने की खबर को सुनकर काफी परेशान थे। उसको खोजकर उसको दण्डवत करने के बजाय, लोग उसे मार डालने की मनसा से खोज रहे थे(मत्ती 2:1-12)।

8. मिस्र को जाना और इस्राएल वापस आना।

ज्योंतिषियों के जाने के बाद स्वर्गदूतों ने यूसुफ के पास जाकर कहा कि वह मिस्र देश को चला जाए,क्योंकि हेरोदेस राजा ने यीशु को घात करने की योजना बना ली थी। जब ज्योतिषि हेरोदेस राजा को मसीह-राजा के जन्म के बारे में कोई खबर देने वापस राजा के पास नहीं गये तो,राजा हेरोदेस ने बेतलेहम और आप पास के स्थानों में दो वर्ष से नीचे के सभी बालकों को मार डालने का आदेश दे दिया। जब तक अन्त नहीं सामने आया तब तक ऐसा प्रतीत होता रहा कि अब शैतान की जीत हो जाएगी।

लेकिन स्वर्गदूत ने यूसुफ को मिस्र देश में भाग जाने के लिए कहा। हेरोदेस के मरने के बाद परमेश्वर का स्वर्गदूत यूसुफ को दिखा और पुन: इस्राएल जाने का आदेश दिया। यूसुफ को स्वपन में ही सर्तक कर दिया गया था कि वह यहूदा में वापस ना जाए। अत: यूसुफ, यीशु ओर मरियम मिस्र से गलील के नासरत के लिए निकल पड़े,क्योंकि वे हेरोदेस के बेटे और नये राजा से डरते थे,जो यहूदा के बेतलेहम के नजदीक यरूशलेम में रहा करते था। अत: यीशु मसीह गलील में पला बढ़ा। (मत्ती 2:13-23)।

ड.यीशु मसीह के जन्म का अभिप्राय

1.यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर को मानवीय रूप में प्रगट करने के लिए पैदा हुआ।

यूहन्ना1:1,14,18 में लिखा है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मानवीय स्वभाव धारण करके मनुष्यों के बीच में डेरा किया जिससे कि हम परमेश्वर को जान सकें। यीशु ने कहा,"जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"(यूहन्ना 14:9)। कुलुस्सियों 1:15 में लिखा है कि "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है"।

क्रिसमस परमेश्वर की ज्योति का पर्व है। यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश है(इब्रानियों 1:3)।

2.यीशु मसीह मनुष्यों के बीच में पैदा हुआ ताकि वह पापों से पश्चाताप करने वाले लोगों को बचा सके।

यूहन्ना 3:16 में लिखा है,"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" और 1 यूहन्ना 4:10 में लिखा है,"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में हैं कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को भेजा"।

क्रिसमस, अनन्त जीवन प्रदान करने वाले परमेश्वर के प्रेम का पर्व है। उसके महान प्रेम के तहत,परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ उपहार(क्रिसमस उपहार):अर्थात इस संसार को यीशु मसीह दिया। यूहन्ना 3:16 हमें सार्वभौमिक प्रायश्चित के बारे में नहीं सिखाता। यूहन्ना 3:16 में जिस "संसार" के बारे में कहा गया, वह वो संसार है "जिसमें मानवजाति वास करती है, जो परमेश्वर के जीवन से पृथक,पाप में डूबा, न्याय के कगार पर खड़ा है और इसीलिए उसे उद्धार की आवश्यकता है"। यह

ऐसा संसार है जिसमें बिना किसी विशेष आदर या मान्यता के सभी देश व जाति के लोग सम्मिलित हैं। इसके अलावा यह ऐसे लोगों से बना संसार है जिन्हें परमेश्वर की देखभाल की आवश्यकता है। परमेश्वर ने लोगों का उद्धार करने के लिए यीशु को जगत में भेजा। जो कोई यीशु पर विश्वास करेगा वह निश्चय ही नाश न होगा,वरन अनन्त जीवन पाएगा।

3.यीशु मसीह अपने पापों से पश्चाताप न करने वाले लोगों का न्याय करने के लिए पैदा हुआ।

लूका 2:34-35 में लिखा है,"देख वह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए,और एक ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसके विरोध में बातें की जाएगी,इससे बहुतों के विचार प्रगट होगें।

क्रिसमस लोगों के अलग होने का पर्व है। यीशु मसीह के कारण बहुत से लोग गिरेगें ओर बहुत से लोग उठेंगे। इसलिए सभी लोगों को निर्णय लेना चाहिए कि वे यीशु के विरोध में हैं या मसीह के साथ में। मत्ती 21:42-44 और 1 पतरस 2: 6-8 के अनुसार यीशु बहुत से लोगों के लिए "कोने के सिरे का पत्थर बन जाएगा"। जो लोग उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते निश्चय ही ठोकर खाकर गिरेगें। संसार का कोई भी जन यीशु मसीह के प्रथम आगमन के सन्दर्भ में उदासीन अवस्था में नहीं रह सकता। कोई भी जन क्रिसमस के सन्देश को लेकर उदासीन अवस्था में नहीं रह सकता।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। मरकुस 4:20-7:37** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. **याद करें।** (2)शुद्धता: 1पतरस 2:11। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. क्रिसमस अर्थात यीशु के जन्म के स्मरणोत्सव" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ें**। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं। अगले अध्याय में यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय दिया जायेगा।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7- मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 2

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 4:20-7:37**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 4:20-7:37) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही चरित्र]* **(2) 1 पतरस 2:11**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) पवित्रता: 1 पतरस 2:11। हे प्रियो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं बचे रहो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[मसीही चरित्र]* **यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय**

बाइबल के सारे वचन यूहन्ना रचित सुसमाचार से लिये गये है।

आईये साथ मिलकर हम ***पढ़ें और चर्चा करें।***

क. यूहन्ना रचित सुसमाचार का लेखक

यूहन्ना रचित सुसमाचार का रचयिता स्वयं परमेश्वर,पवित्र आत्मा है(2 तीमुथीयुस 3:16; 2पतरस 1:20-21)
लेखक प्रेरित यूहन्ना है।

1.लेखक यहूदी था।

(1) वह इस्राएल की भौगौलिक परिस्थितियों से भली भांति परिचित है।

उदाहरण के लिए वह काना,कपरनहूम और गलील में बेतसैदा,शालेम के निकट ऐनोन(3:23),इफ्राईम नामक गांव (11:54)और खासतौर पर यरूशलेम जैसी जगहों को जानता है। वह यह भी जानता है "कि यरदन नदि के पार बैतनिय्याह (1:28) यरूशलेम से केवल " (दो या तीन मील की दूरी पर) पाये जाने वाले बैतनिय्याह से अलग है(11:28)।

(2) वह उस समय में इस्राएल की राजनीतिक परिस्थिति से भी परिचित था।

उदाहरण के तौर पर,वह अच्छी तरह से जानता था कि बहुत से यहूदी गैर यहूदी राष्ट्रों में रहते थे(11:52); वह जानता था कि "यहूदियों का सामरियों के साथ उठना बैठना नहीं था"(4:9)और यहूदियों पर रोमियों का राज्य चलता है(11:48)। वह जानता था कि यहूदी सिन्हेद्रिन को किसी को मृत्यु का दण्ड देने का अधिकार नहीं था और इस तरह का निर्णय केवल रोमी गर्वनर ही ले सकता है(18:28,31)।

(3) उसे पुराने नियम के उत्तम जानकारी थी।

वह पुराने नियम को इब्रानी व यूनानी दोनों ही भाषा में जानता था क्योंकि वचनों को उद्धत करते समय दोनो ही भाषाओं का इस्तेमाल किया है।

(4) उसने यहूदियों और सामरियों की धार्मिक मान्यताओं को हवाला दिया।

उदाहरण के लिए:"उद्धार यहूदियों में से है"(4:22)व "सामरी ग्रिरेसिम पर्वत पर आराधना करते हैं यरूशलेम में नहीं।"(4:20)।

(5) उसे यहूदी धार्मिक पर्वों की भी जानकारी है।

उदाहरण के लिए:"तैयारी का दिन" (19:31),"फसह का पर्व","तम्बू का पर्व"(7:2)"स्थापना पर्व"(10:22)

(6) उसने यहूदी रीतियों का वर्णन किया तथा स्वाभाविक तरीकों का परिचय दिया।

उदाहरण, यहूदियों के विवाहों की यह रीति थी कि वे अपने मेहमानों को पहले उत्तम दाखरस पिलाया करते थे और बाद में मध्यम।(2:10)। यहूदी लोगों में दफनाते समय शव को लिनेन के कपड़े से लपेटकर उसके साथ कुछ सुगन्धित पदार्थों व मसालों को रखा जाता था, कपड़ा उसके मुंह तक लपेटा जाता था, उसे किसी गुफा या कब्र में रखकर उसे एक बढ़े पत्थर से ढाँप दिया जाता था। (11:38,44;19:40)

2.लेखक एक चश्मदीद गवाह था।

लेखक ने यीशु के कामों को स्वयं अपनी आँखों से देखा था। उसे भलि प्रकार से याद था कि कौन सी घटना कब हुई थी,और बहुत सी बार उसने बिल्कुल ठीक समय का भी उल्लेख किया है। क्योंकि यीशु की मृत्यु पश्चात सदी के अन्त में गैर यहूदियों को लिख रहा था,सम्भवत:उसने समय को आंकने के लिए रोमी तरीके का इस्तेमाल किया, जिसके तहत समय या तो मध्य रात्रि या दोपहर से गिना जाता है। उदाहरण के लिए, उसे याद था कि वह यीशु से पहली बार उसके ठीक बपतिस्मा लेने के बाद मिला था। और यह दिन का करीब दसवां घण्टा था(1:35,39)अर्थात लगभग सुबह 10 बजे।
उसे याद था कि जब यीशु ने शमौन का "पतरस" नाम से सम्बोधित किया तब उसने उससे क्या बात की(1:42), यीशु ने अन्य चेलों को बुलाते समय तथा प्रचार करते समय भी ठीक वे ही शब्दों का इस्तेमाल किया। यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें दिखाता है कि लेखक ने केवल यीशु के शब्दों को ही नहीं सुना लेकिन उन बातों को भी लिखा जो यीशु ने अपने चेलों की बातों के जवाब में कही थीं। हो सकता है कि उसने यीशु की बातों को याद कर लिया हो।

3.लेखक यीशु के बारह चेलों में से एक था।

लेखक को यीशु के चेलों की प्रतिक्रियाओं,शब्दों और भावनाओं की अति घनिष्ठ जानकारी थी। उदाहरण के लिए, वह जानता था कि जब चेलों ने यीशु को स्त्री के साथ बातें करते हुए देखा तो वे अचम्भित हो गये(4:27),या जब उन्होंने यीशु को पानी पर चलते हुए देखा तो वे डर गये(6:19)।

4. लेखक प्रेरित यूहन्ना था।

(1) लेखन ने पूरी पुस्तक में अपना नाम कहीं नहीं लिया।

वह अपने बारे में लिखता है कि "वह चेला जिसे यीशु प्रेम करता था"।यही वह चेला था जो अन्तिम भोज के समय यीशु पर टेक लगाकर बैठा हुआ था(13:23,25)। यह वही चेला है जो आंखों देखी और कानों सुनी बातों की गवाही देता है (21:20-24; 1यूहन्ना 1:3)

(2) लेखक यीशु के प्रथम चेलों में से एक था।

यूहन्ना 1:35-40 और मरकुस 1:16-20 के अनुसार, यीशु द्वारा सबसे पहले चुने गये चेले इन्द्रियास व उसके भाई,शमौन पतरस, और यूहन्ना व उसके भाई थे। पतरस, याकूब और यूहन्ना यीशु के अति घनिष्ठ चेले थे (मत्ती17:1)। प्रेरितों 12 के अनुसार याकूब हो हेरोद मरवा दिया गया जब यूहन्ना 21:18-19 के अनुसार पतरस इस तरीके से मरा जिससे परमेश्वर को महिमा मिली। अत: एक मात्र चेला जो अपनी आंखों देखा हाल और अपने कानों सुनी बातों को लिख सकता था वह प्रेरित यूहन्ना था।

(3) लेखक जबदी का पुत्र था।

मत्ती 27:56,मरकुस 16:1 और यूहन्ना 19:25, उसकी माता सम्भवत: सलोमी थी जो सम्भवत: यीशु की माता मरियम की बहिन थी। यदि यह बात सत्य है तो यीशु और यूहन्ना आपस में मौसेरे भाई थे। यीशु का चेला बनने से पहले वह यीशु का अनुयायी था। यूहन्ना 1 के अनुसार,वह यीशु को उसके बपतिस्में के तुरन्त बाद मिला। यीशु द्वारा उसे बुलाये जाने के बाद भी वह लगभग एक वर्ष तक अपने पिता की नाव पर मछुवारे का काम करता रहा। बाद में उसने मछली पकड़ने के काम को छोड़कर "मनुष्यों को पकड़ने वाले" मछुवारा पसन्द किया" (लूका 5:1-11;मत्ती 4:19)

(4) ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना और याकूब जल्दी गुस्सा करने वाले जन थे।

उन्हें बाइबल में 'गर्जन के पुत्र'के नाम से सम्बोधित किया गया है(मरकुस 3:17)। उदाहरण के लिए, मरकुस 9:38-41 में यीशु यूहन्ना ने एक व्यक्ति को यीशु के नाम में सेवा निभाने से मना किया क्योंकि वह यीशु का एक चेला नहीं था। जब एक सामरियों के गांव वालों ने यीशु व उसके चेलों को स्वीकार करने से मना कर दिया(अर्थात उन्हें भोजन व रहने का स्थान नहीं दिया) तो यूहन्ना और याकूब के गुस्सा फूट पड़ा और वे कहने लगे,"हमें आज्ञा दे कि हम स्वर्ग से आग बुलाकर इन्हें नष्ट करें।"(लूका 9:51-56)?

(5) यूहन्ना सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रेरितों में से एक था।

चारों सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में भी अगर हम देखें तो यूहन्ना ज्यादातर पतरस के साथ ही रहा करता था। यीशु के पुनरूत्थान के बाद, यूहन्ना को पतरस व यीशु के भाई याकूब के साथ साथ "कलीयिसा के स्तम्भ" का दर्ज़ा दिया गया(गलातियों 2:9; प्रेरितों 15:6)। जब यहूदियों ने रोम के खिलाफ 66 ईसा प. विद्रोह किया, उस समय यूहन्ना और अन्य मसीहियों ने यरूशलेम छोड़ दिया था। कलीसिया के इतिहास के अनुसार, यूहन्ना जाकर इफिसुस में बस गया और वहीं काम करने लगा।

ख.यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखने का स्थान व तिथि

1. यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखने का स्थान

170 ईसा प. जीवित फादर इरीनाइस के अनुसार, यूहन्ना रचित सुसमाचार यूहन्ना द्वारा इफिसुस में रहते ही लिखा गया जो वर्तमान काल में टर्की के नाम से जाना जाता है।

2.यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखे जाने की तिथि।

(1) यूहन्ना रचित सुसमाचार 110 ईसा.प. में लिखा गया था।

यूहन्ना रचित सुसमाचार के दो पौराणिक अंश (यूहन्ना 18531-34 व 37-38) 130 ईसा.प. से पहले लिखे गये थे। अत: यह सम्भव है कि सुसमाचार भी उससे पहले ही लिखा गया होगा। फादर इरीनाइस लिखने है कि "इफिसुस की कलीसिया की बुनियाद पौलुस ने रखी थी, और यूहन्ना रोमी सम्राट ट्राजन के समय तक वहा स्थायी तौर पर रहा। ट्राजन ने 98-117 ईसा.प.तक राज्या किया। कलीसिया के फादर इग्नाटीअस, जो 10 ईसा.प. में शहीद हो गये थे,स्पष्टता से बताते हैं कि उन्होंने यूहन्ना रचित सुसमाचार को पढ़ा था। अत: हम कह सकते हैं कि यूहन्ना रचित सुसमाचार सम्भवत: प्रथम शताब्दि के अन्त में लिखा गया था।

(2) यूहन्ना रचित सुसमाचार 70 ईसा प. लिखा गया था।

प्रेरित यूहन्ना ने उन बातों को नहीं दोहराया जिसका अन्य सुसमाचारों में वर्णन किया गया है और उसे भरोसा था कि लोग उन्हें जानते हैं। उनका मकसद उन बातों पर प्रकाश डालना था जो अन्य सुसमाचारों में नहीं लिखी गयीं खास तौर पर वे बातें जो लोगों को विश्वास करने के लिए विवश करे कि यीशु की मसीह है(मसीह अर्थात अभिषिक्त जन)(यूहन्ना 20:31) और वह शतप्रतिशत ईश्वरीय है(यूहन्ना 1:1)। अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार बाकि के सारे सुसमाचारों के लिखने के बाद लिखा गया होगा, और सम्भवत: 63 ईसा प. लिखा गया होगा। क्योंकि यूहन्ना उस समय के प्रसिद्ध प्रेरित पतरस और पॉलूस के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करता जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस समय तक पहले ही मर चुके थे। इसके अलावा यरूशलेम और इसके मन्दिर के पतन के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार सम्भवत: यरूशलेम के पतन के कुछ वर्षों बाद 70 ईसा.प. लिखा गया था।

(3) इस तरह हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यूहन्ना रचित सुसमाचार 70 से 98 ईसा.प के बीच में लिखा गया था।

एलिक्ज़ेंड्रिया के फादर, जो 190 ई.प. भी जीवित थे, ने लिखा कि यूहन्ना के पतमुस टापू से वापिस लौटने के बाद भी यूहन्ना कलीसिया में मुख्य प्रशासक के रूप में सक्रिय सेवा करता रहा जो कलीसिया इफिसुस जिले में स्थित था। हमें यह जानकारी नही है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार यूहन्ना के पतमुस टापू पर सज़ा के रूप में भेजे जाने से पहिले लिखा गया था बाद में और हमें इस बारे में भी जानकारी नहीं है कि यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से पहले लिखा गया था कि बाद में।

ग.यूहन्ना रचित सुसमाचार का विभाजन

यूहन्ना रचित सुसमाचार को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसको हम यीशु की सार्वजनिक व निजी सेवाकाई कह सकते हैं। इन दो भागों को भी सात खण्डों में विभाजित किया जा सकता है:

भाग एक: यीशु मसीह की सार्वजनिक सेवाकाई

इसमें यूहन्ना 1 से 12 तक अध्याय शामिल हैं। इसे भी तीन निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:

खण्ड 1. यूहन्ना अध्याय 1 से 6

तम्बू के पर्व के पहले तक (7:2)।

यीशु मसीह, शब्द, दर्शाता है कि वह हमेशा लोगों से घिरा हुआ था,मगर लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

(1) यीशु मसीह का उदघाटन। यूहन्ना 1:1 से 2:12

दिसम्बर 26 ईसा प. से अप्रैल 27 ईसा प. तक (4 महीने)।

- यूहन्ना 1:1-14 सृष्टि से पहले,सृष्टि के समय, पाप में पतन के बाद तथा देहधारण के समय,जब परमेश्वर ने मसीह के रूप में मनुष्यों का रूप धारण किया, परमेश्वर के वचन की महिमा का वर्णन करते हैं।
- यूहन्ना 1:15 से 2:12 में वचन बताता है, कि यीशु मसीह ने अपने आप को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और अपने प्रारम्भिक चेलों पर प्रगट किया।

(2) यहूदिया और सामरिया में यीशु मसीह की प्रारम्भिक सेवाकाई । यूहन्ना 2:13 से 4:22। अप्रैल 27 ईसा.प. से दिसम्बर 27 ईसा.प.तक (8 माह)

- यूहन्ना 2:13 से 3:36में वचन अर्थात यीशु मसीह ने यरूशलेम में भीड़ पर अपने आप को प्रगट किया जिसमें निकेदमुस भी था।
- यूहन्ना 4 में वचन अर्थात यीशु मसीह ने अपने आप को सामरियों पर प्रगट किया।

(3) यीशु मसीह की गलील में महान सेवाकाई। यूहन्ना 4:43 से 6:71।

दिसम्बर 27 ईसा.प. से अप्रेल 29 ईसा प. तक (16 महीने)।

- यूहन्ना 4:43-54 ने अपने आप को गलीलियों पर प्रगट किया।
- यूहन्ना 5 में वचन अर्थात यीशु मसीह, बेतहसदा में चमत्कार करने के बावजूद अस्विकृत हुए।
- यूहन्ना 6 में वचन अर्थात यीशु मसीह को पांच हजार लोगों को भोजन कराने के बाद भी अस्विकृत किया गया।

खण्ड 2. यूहन्ना अध्याय 7 से 10 तक

तम्बू के पर्व से लेकर स्थापना के पर्व तक ।

(1) यीशु मसीह की सेवानिवृत सेवाकाई । यूहन्ना 7:1-9।

अप्रेल 29 ईसा.प. से अक्टूबर 29 तक (6 माह)

- यूहन्ना 7:1-9 दर्शाता है कि वचन अर्थात यीशु मसीह गलील में जाते हैं लेकिन बाद में वह गुप्त रूप में यहूदिया को चले जाते हैं।

(2) यहूदिया में यीशु मसीह की अन्तिम समय की सेवाकाई । यूहन्ना 7:10 से 10:39।

अक्टूबर 29 ईसा.प.से दिसम्बर 29 ईसा.प. तक (2माह)

- यूहन्ना 7:10-53 में मन्दिर में यीशु मसीह द्वारा भीड़ से की जानी वाली विनती को दर्शाया गया है।"यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा,जैसा पवित्रशास्त्र में आया है,उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।" (7:37-38)
- यहून्ना 8:1-59 में यीशु द्वारा व्यभिचार में पकड़ी गयी स्त्री से किये जाने वाले आग्रह को दर्शाया गया है। "जा फिर कभी पाप न करना।"(8:11)। यह भीड़ से किये गये आग्रह को भी दर्शाता है। "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"(8:12)
- यूहन्ना 9:1-41 में यीशु द्वारा जन्म के अन्धे से किये गये आग्रह को दर्शाया गया है। "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" "तू ने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वह वही है"।(9:35,37)
- यूहन्ना 10:1-39 में यीशु मसीह द्वारा फरीसियों और चेलों से किये गये आग्रह को दर्शाया गया है। "अच्छा चरवाहा हूँ, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।"(10:11,27)।

खण्ड 3 -यूहन्ना 10:40 से 12:50

स्थापना के पर्व के बाद

वचन अर्थात यीशु मसीह ने दो सामर्थ्यी चमत्कारों के द्वारा अपने आपको स्पष्ट तौर पर मसीह के रूप में प्रगट किया: लाज़र को मुर्दों में से जीवित करके तथा यरूशलेम में विजय प्रवेश के द्वारा।

पिरिया व बेतनिय्याह में यीशु मसीह की सेवाकाई। यूहन्ना 10:40 से 11:57
दिसम्बर 29 ईसा.प से 30 अप्रेल ईसा.प (4 महीने)।

- यूहन्ना 11:1-44। यीशु ने लाज़र को जीवित करने के लिए यरदन के एक छोर (पीरिया)से ले बेतनिय्याह तक यात्रा की, जो कि यरूशलेम के नज़दीक है।
- यूहन्ना 11:45-57 में सिन्हेद्रिन में यहूदी अगुवों की गोष्टी के बारे में बताया गया है जिसमें उन्होंने यीशु को मारने का षड्यन्त्र रचा।
- यूहन्ना 12:1-50 में बेतनिय्याह में यीशु के अभिषेक व यरूशलेम में यीशु के विजय प्रवेश का जिक्र किया गया है।

भाग 2-यीशु मसीह की निजी सेवाकाई

यीशु मसीह की निर्णायक सेवाकाई। यूहन्ना 13 से 21 तक।
अप्रेल 30 ई.प. से मई 30 ई.प तक (7 सप्ताह)।

इसमें यूहन्ना 13 से 21 अध्याय तक शामिल हैं। यह काल यीशु के इस धरती पर बिताए अन्तिम सात सप्ताह को दर्शाते हैं, जो यीशु के क्रूसीकरण (यूहन्ना 12:1)से प्रारम्भ होकर उसके क्रूसीकरण के छ: सप्ताह बाद (प्रेरितों1:3) तक चला। इसे भी चार निम्नलिखित भागों में खण्डित किया जा सकता है।

खण्ड 4: यूहन्ना अध्याय 13। अन्तिम भोज।

- यीशु ने एक दूसरे को प्रेम करने की नयी आज्ञा दी और उसे चेलों के पैर धोने के द्वारा करके दिखाया।

खण्ड 5: यूहन्ना अध्याय 14-17। अन्तिम भोज पर यीशु की प्रार्थना और उसके उपदेश।

- यूहन्ना अध्याय 14, यीशु अपने चेलों को सात्वनां प्रदान करते हैं। उसने उनसे पवित्र आत्मा की निरन्तर उपस्थिति की प्रतिज्ञा की और आश्वासन दिया कि उसके चेले उससे भी बड़े बड़े काम करेगें।
- यूहन्ना 15 में,यीशु ने अपने चेलों को प्रोत्साहित किया। यीशु ने उन्हें लगातार उसमें बने रहने, उसके वचनों को अपने जीवन में बसाने,प्रार्थना करने,फलवन्त होने,एक दूसरे से प्रार्थना करने, उसकी आज्ञा मानने और संसार में उसकी गवाही देने के लिए प्रोत्साहित किया।
- अध्याय 16 में,यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञाएं की। उसने उनसे प्रतिज्ञा की कि वह उन्हें कभी अकेला न छोड़ेगा वरन उनके लिए पवित्र आत्मा को भेजेगा और उसने प्रतिज्ञा की कि वे उसे उसके पुनरूत्थान के बाद पुन: देखेगें।
- अध्याय 17 में यीशु प्रार्थना करते हैं। वह अपने लिए(17:1-5),अपने चेलों के लिए(17:6-19) और सार्वभौमिक कलीसिया के लिए प्रार्थना करते हैं।

खण्ड 6: यूहन्ना अध्याय 18-19
यीशु मसीह की तकलीफें।

- यूहन्ना अध्याय 18, यीशु का गिरफ्तार किया जाना, हन्ना के समक्ष प्रस्तुत किया जाना, पतरस के द्वारा इनकार किया जाना, कैफा के सामने पूछताछ के लिए पेश होना, दो और बार पतरस द्वारा इनकार, और अन्त में पिलातुस के समक्ष पेश किया जाना।
- यूहन्ना 19 अध्याय, रोमी सैनिकों द्वारा यीशु को सताया गया, यहूदियों द्वारा यीशु को अस्वीकार करके क्रूस की मांग किया जाना,रोमियों द्वारा खोपड़ी के स्थान अर्थात गुलगुत्ता में क्रूस पर लटकाया जाना और अन्त में उसकी मृत्यु के पश्चात अरिमतिया के युसुफ और निकेदुमुस द्वारा उसे नये बगीचे की कब्र में गाड़ा जाना।

खण्ड 7: यूहन्ना अध्याय 20 से 21
यीशु का पुनरूत्थान तथा पुन:दर्शन

- यूहन्ना 20 अध्याय में,यीशु मरियम मगदिलीन को दिखाई दिये,फिर वे अपने चेलों को दिखाई दिये जिसमें थोमा शामिल नहीं था, फिर वह दोबारा अपने चेलों पर प्रगट हुआ और इस बार थोमा भी वहाँ था। यूहन्ना 20:30-31 में लेखक ने सुसमाचार के उद्देश्य को लिखा।

- यूहन्ना 21 अध्याय में, यीशु गलील की झील के पास अपने सात चेलों पर प्रगट हुआ तथा उसने वहाँ पतरस को प्रेरित के रूप में ज़िम्मेदारी सौंपी। इसके बाद लेखक ने सुसमाचार को बहुत से लोगों की गवाहियों और उनके विश्वासयोग्य कामों के उल्लेख के साथ समाप्त किया।

घ.यूहन्ना रचित सुसमाचार का विषय और उद्देश्य

प्रेरित यूहन्ना स्पष्ट रूप से यूहन्ना 20:30-31 में उसके उद्देश्य का वर्णन करता है। उसका उद्देश्य यह था कि उसके पाठक लगातार विश्वास करते रहें कि यीशु ही "मसीह" (प्रतिज्ञा किया हुआ अभिषिक्त जन है जिसके लिए सम्पूर्ण पुराने नियम में अपेक्षा की जा रही थी)और "परमेश्वर का पुत्र"(कि वह शतप्रतिशत ईश्वरीय है; कुलु 1:15;2:9) है। उसका उद्देश्य यह भी था कि वे यीशु के द्वारा जीवन पाएं जो परमेश्वर व मनुष्यों के बीच एक मात्र मध्यस्थ है।
अन्य तीन सुसमाचारों से हटकर, कुछ भिन्न बातों का उल्लेख यूहन्ना रचित सुसमाचार में किया गया है जो निम्नलिखित हैं:
अध्याय 1 में,यीशु को एक परमेश्वर के रूप में दर्शाया गया है जिसने मनुष्य का रूप धारण किया। यीशु मसीह ने अदृश्य परमेश्वर को मनुष्यों पर प्रगट किया।
अध्याय 3 में, यीशु ने निकेदुमुस पर यह प्रगट किया कि वह ही परमेश्वर का इकलौता पुत्र है, और उस पर विश्वास करने वालों को परमेश्वर अनन्त जीवन प्रदान करता है।
अध्याय 5 में, यीशु ने फरीसियों पर यह प्रगट किया कि परमेश्वर उसका पिता है और वह परमेश्वर के समान है(5:17-18)।
अध्याय 7 में, यीशु ने यरूशलेम में भीड़ के सामने यह प्रगट किया कि केवल वह ही मनुष्य की आत्मिक प्यास को बुझा सकता है। (7:37-39)
अध्याय 8 में,यीशु ने इस्राएल के धर्म गुरूओं पर यह प्रगट किया कि केवल वह की लोगों को पापों और मृत्यु से मुक्त कर सकता है। और उसने कहा कि वह निष्कलंक है और जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता,वह निश्चय ही पापों में मरेगा (8:46,24)
अध्याय 12 में, यीशु ने भीड़ अर्थात लोगों पर यह प्रगट किया कि वह राजा है और वह संसार के सारे लोगों को अपने पास खींच लेगा (12:13,32)
अध्याय 13 में, यीशु ने यूहन्ना पर प्रगट किया कि परमेश्वर पिता ने सभी चीज़ों का यीशु के अधीन कर दिया है(3:35;13:30) और जो कोई यीशु को ग्रहण करता है,वह परमेश्वर पिता को ग्रहण करता है(13:20)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)
1. समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. यूहन्ना रचित सुसमाचार के परिचय पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 8:1-11:19** में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। (3)**प्रेम: मरकुस 12:30-31।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 3

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।
अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 8:1-11:19**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 8:1-11:19) में शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]* **(3) मरकुस 12:30-31**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(3)प्रेम : मरकुस 12:30-31। तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से और अपने साथ प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी आज्ञा यह हे कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना:इसे से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया का पर्व]* **गुड फ्राइडे:मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव**

परिचय। गुड फ्राइडे मसीहियों का वह पर्व है जिसमें मसीही लोग यीशु मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव मनाते हैं। हम सीखेगें कि संसार भर के पापों के लिए यीशु की मृत्यु के बारे में बाइबल क्या शिक्षा देती है। हम सीखेगें कि उसकी मृत्यु के बारे में किस प्रकार से पुराने नियम में भविष्यद्वाणियां की गयी थीं, उसके क्रूस पर मरने से क्या हुआ और क्रूस पर उसकी मृत्यु हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।
यहूदी कलैण्डर में, यह शुक्रवार,बृहस्पतिवार को सूर्य ढलने पर प्रारम्भ हुआ और शुक्रवार को सूर्य ढलने पर खत्म हुआ। यीशु मसीह के साथ विश्वासघात हुआ,नालिश हुई,क्रूस पर चढ़ाया गया, मरा और शुक्रवार को ही दफन हुआ। ऐतिहासिक तौर पर हम मसीही लोग उस शुक्रवार को 'अच्छा' कहते हैं,क्योंकि इस दिन यीशु मसीह ने हमारे पापों के बदले मृत्यु सहकर हमारे दण्ड को अपने ऊपर ले लिया और जिसका परिणाम हमारा उद्धार हुआ,वही हमारे जीवन के लिए इससे बेहतर और कुछ हो नहीं सकता। हालांकि वह शुक्रवार सभी चेलों के लिए बहुत दु:खदायी दिन था,लेकिन वही दिन यीशु के पुनरूत्थान के बाद आनन्द का दिन बन गया। यीशु मसीह की मृत्यु मानवजाति के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटना का एक हिस्सा थी, खास तौर पर यीशु मसीह के प्रथम आगमन,उसका जीवन, उसकी मृत्यु और उसका पुनरूत्थान का।
इतिहास की कोई भी घटित घटना, कोई भी ऐसा कारनामा जो किसी किताब, पत्रिका या समाचार पत्र में छपा हो, कोई ऐसी खबर जो रेडियो, टेलीविजन या किसी और प्रसारण माध्यम से प्रसारित किया गया हो, इतना महत्वपूर्ण या प्रभावशाली नहीं है जितनी यीशु की मृत्यु व उसका पुनरूत्थान।

क. यीशु मसीह की मृत्यु से जुड़ी भविष्यद्वाणियां

1. गिनती 21 पुराने नियम में यीशु मसीह की मृत्यु का ही एक प्रारूप है।

(1) गिनती 21:4-9

करीब 1400 ई.पू., हम इस्राएली लोग धीरज खो बैठे और उन्होंने परमेश्वर व मूसा के विरूद्ध बोलने लगे। वे अपनी कठिन परिस्थितियों के लिए शिकायत करने लगे खास तौर पर मरूस्थल में मजबूरी में खाये जाने वाले भोजन के लिए। परमेश्वर ने उनकी इन शिकायतों को सुना और उनके हृदय से उठने वाली भावनाओं को जानकर उनके बीच जहरीले सर्प भेजे और उन्हें दण्ड दिया। मूसा की मध्यस्थता की प्रार्थना के बाद, परमेश्वर ने मूसा से एक पीतल का सांप बनाकर एक खम्बे पर टांग देने के लिए कहा ताकि हर कोई जन उसे देख सके। परमेश्वर ने कहा कि जब किसी को कोई सांप डंस ले और वह इस पीपल के सांप की ओर दृष्टि करे तो वह मरेगा नहीं वरन जीवित रहेगा। परन्तु यदि कोई परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करने और पीतल के सापं की ओर दृष्टि करने से इनकार कर दे तो वह निश्चस ही मर जाएगा। परमेश्वर ने यह मांग रखी कि पापियों को विश्वास करके उसके वचनों पर विश्वास करना चाहिए।

(2) यूहन्ना 3:14-16

नये नियम में,यीशु मसीह ने इस दृष्टान्त का अर्थ बताया। वह पीतल का सर्प जिसे उस खम्बे पर लटकाया गया था,वह यीशु मसीह का प्रतीक था, जो बाद में क्रूस पर लटकाया गया था। यीशु मसीह का क्रूस पर लटकाया जाना पुराने नियम की भविष्यवाणी का पूरा किया जाना था। जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करेगा वह नाश न होगा परन्तु अनन्त जीवन पाएगा।

2.यशायाह 52:13-53:12 यीशु मसीह की मृत्यु के सन्दर्भ में पुराने नियम की एक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी है।

पुराने नियम में मसीह से सम्बन्धित भविष्यवाणी। मैनुएल 5, परिशिष्ट 1।

(3) पुराने नियम में यीशु मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणियां।

(1) जर्कयाह 11:12-13

520ईसा.पूर्व में ही गयी यह भविष्यवाणी यीशु मसीह से विश्वासघात किये जाने के दाम के बारे में बताती है,और बताती है कि यहूदा ने उस पैसा का क्या किया और वह धन अन्ततः किस काम के लिए इस्तेमाल किया गया (मत्ती 26:14-16;27:3-10)

(2) जर्कयाह 12:10

यह एक सैनिक के बारे में की गयी भविष्यवाणी है जो यीशु की पसलियों में भाला घोपेगा। यूहन्ना ने देखा कि किस प्रकार उस सैनिक ने भाला 'घोपा' (यूहन्ना 19:34-37)।

(3) भजन 22 और भजन 69:20-21

ये भविष्यद्वाणियां 1000 ईसा पूर्व हुई थीं जिनमें यीशु की तकलीफों का वर्णन किया गया था। दुष्ट लोग उसे क्रूस पर चढ़ाएगें(भजन 22:16;यूहन्ना 19:16-18)। लोग उसके कपड़ों को आपस में बाटेंगे ओर चिट्ठियां डालेगें(भजन 22:18;यूहन्ना 19:23-24)। बुरे लोग उसे चारों ओर से घेर लेगें और उसका तिरस्कार करेगें,उसे तुच्छ जानेंगे, उसका मज़ाक बनाऐगें और उसकी बेइज्जती करेगें(भजन 22:6-7;मत्ती 27:39-44)। उसे भयंकर प्यास लगेगी (भजन 22:15;यूहन्ना 19:28)। और उसे परमेश्वर द्वारा अनाथों सा छोड़े जाने का सताव या दुःख सहना पड़ेगा। (भजन 22:1;मत्ती 27:46)

(4) भजन 31:5

यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह द्वारा कहे गये अन्तिम वचनों के बारे में बताती है(लूका 23:46)

(5) भजन 40:6-8

यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह की देह द्वारा दिये गये निर्णायक बलिदान के बारे में है, जिसने परमेश्वर की इच्छा से जानवरों की बलि को प्रतिस्थापित व पूरिपूर्ण किया, अर्थात एकमात्र बलिदान जो विश्वासियों को शुद्ध करता है(इब्रानियों 10:5-10)

ख.यीशु मसीह की मृत्यु के इर्द गिर्द होने वाली घटनाएं

1.मसीह की मृत्यु से सम्बन्धित नये नियम में पायी जाने वाली भविष्यद्वाणियां

(1) यीशु मसीह ने स्वयं अपनी मृत्यु के बारे में कम से कम तीन बार पहले ही बता दिया था।

पढ़ें मत्ती 16:21;मत्ती 17:22-23;मत्ती 20:18-19

यीशु की मृत्यु से पहले कम से कम तीन बार परमेश्वर ने यह भविष्यद्वाणी कर दी थी कि वह मरेगा और तीसरे दिन मुर्दों में से जीवित हो जाएगा। अतः मरकुस रचित सुसमाचार में लिखा है(44-46 ईसा पूर्व)जो लूका रचित सुसमाचार से लगभग 14वर्ष पहले लिखा गया था(60-61ईसा पूर्व)। कि उसने स्पष्ट रूप में भविष्यवाणी कर दी थी कि उसके साथ क्या क्या

होगा,कौन उसके साथ क्या करेगा,ये बातें कब घटेगीं और ये घटनाएं कहां घटेंगी। उसे यरूशलेम के अगुवों द्वारा पकड़वाया जाएगा(अर्थात महायजकों व सदूकियों द्वारा) वे उस पर मृत्यु दण्ड दिये जाने वाला आरोप लगाएंगे और रोमी शासकों के हाथों में सौंप देंगे। वे लोग उसका मजाक बनाएगें, उसे सताएंगे, उस पर थूकेगें और उसे मार डालेगें;लेकिन तीन दिन के बाद वह मुर्दों में से जी उठेगा। यीशु मसीह ने भविष्यद्वाणी की कि जो कुछ उसके बारे में पुराने नियम में लिखा गया है (अर्थात उसकी मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के बारे में) वह ज़रूर पूरा होगा, क्योंकि यह परमेश्वर की उद्धार की योजना का एक हिस्सा हैं क्योंकि ऐसा पुराने नियम में लिखा था और पापों के लिए प्रायश्चित करने का एकमात्र तरीका था।

हर एक चीज़ ठीक उसी तरह हुई जैसे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और यीशु मसीह ने अपने बारे में भविष्यद्वाणी की थी। कोई भी व्यक्ति जो स्वयं 'स्वयं' भविष्यद्वक्ता' होने का दावा करता है यीशु मसीह की बराबरी नहीं कर सकता। मानवीय इतिहास में कोई जन नहीं हुआ है जिसने इतना सटीक अनुमान लगाया हो। यीशु को वास्तव में क्रूस की द्वारा मारा गया और वह वास्तव में भविष्यद्वाणी के अनुसार तीसरे दिन मुर्दो में से जीवन उठा। मानवीय इतिहास में कोई भी व्यक्ति जिसने खुद को भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया हो मुर्दों में से जीवित नही हुआ। किसी भी धर्म के सभी नबी या भविष्यद्वक्ता आज कर्बो में विश्राम कर रहे हैं। यीशु मसीह ही एकमात्र भविष्यद्वक्ता है जो मुर्दों में से जिन्दा हुआ। यीशु मसीह ही भूतकाल के भविष्यद्वक्ताओं में से इकलौता ऐसा भविष्यद्वक्ता है जो आज भी जीवित है। ये सारे तथ्य प्रदर्शित करते हैं कि यीशु मसीह न केवल सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता है वरन वह एक भविष्यद्वक्ता से कहीं अधिक बढ़कर है।

2. यीशु का पकड़वाया जाना, गिरफ्तार होना और उस पर नालिश होना।

चारों सुसमाचारों में हम पढ़ते हैं कि कैस यहूदा ने मात्र चांदी के तीस सिक्कों के लिए यीशु मसीह को पकड़वा दिया। गतसमनी के बगीचे में प्रार्थना के तुरन्त बाद, सिपाहियों ने यीशु का गिरफ्तार कर लिया।

(1) यहूदियों के सामने तीन बार आरोप लगाना

पढ़ें यूहन्ना 18:12-14,19-24;मत्ती 26:57-68;लूका 22:66-71

मध्यरात्रि और शुक्रवार की सुबह,यीशु को हन्ना के समक्ष पेश किया गया, जो काइफा का ससुर था। उसके बाद उस वर्ष के महायाजक काइफा के सामने उसे पेश किया गया। और अन्त में सारे यहूदी नेता सिन्हेद्रिन में जमा हुए उस पर आरोप लगाने लगे।

(2) अन्यजातियों के समक्ष तीन बार आरोप लगाया जाना

पढ़ें लूका 23:1-25;यूहन्ना 18:28-40

शुक्रवार भोर होने से पहले, पिलातुस ने,जो यहूदा का रोमन शासक था, पहले यीशु से प्रश्नोत्तर किये। उसके पश्चात राजा हेराद,गलील के रोमी शासक ने उससे पूछताछ कीं और अन्त में पिलातुस ने पुन: उससे पूछताछ करने के बाद में उसे मृत्यु दण्ड दे दिया।

यीशु पर यहूदी व गैर यहूदी दोनों द्वारा आरोप लगाये गये,वह दोषी ठहराया व अस्वीकृत किया गया। वह जगत के धार्मिक व सरकारी अधिकारियों द्वारा दोषी ठहराया और मारा गया। उसके बावजूद भी वह निष्कलंक था।

3. यीशु का क्रूसीकरण।

पढ़ें लूका 23:26-56;यूहन्ना 19:16-4

निसान के महिने में(सम्भवत: अप्रैल में) शुक्रवार की सुबह लगभग 9 बजे,यीशु को 'खोपड़ी'नामक पहाड़ी पर क्रूस दी गयी। सैनिकों ने उसके दोनों हाथों और पैरों को लोहे की लम्बी कीलों द्वारा लकड़ी की बनी क्रूस पर ठोक दिया(भजन 22:16;लूका 24:39-40; यूहन्ना 20:25)। उसके बाद उन्होंने उस क्रूस को उठाकर एक गडढे में खड़ा कर दिया। घण्टों तक वह हाथों और पैरों में गढ़ी कीलों के सहारे लटका रहा। क्रूस द्वारा दण्ड दिया जाना सबसे खतरनाक व दर्दनाक मृत्यु दण्ड का तरीका था। हर एक बार सांस लेते समय उसे अपने बदन को ऊपर की ओर खींचना पड़ता था ताकि उसका दम न निकल जाए। क्रूस की सजा मिलने पर दोषी दर्द, थकान और दम घुटने की वजह से मर जाता था। लेकिन यीशु अपने घावों या किसी के द्वारा उसकी हत्या किये जाने की वजह से नहीं मरा। वरन उसने स्वेच्छा से अपने आप को मौत के हवाले कर दिया (यूहन्ना 10:18)।

रोमियों की यह रीति थी कि वे दोषी व्यक्ति का अपराध एक तख्ती पर लिखकर उसे क्रूस पर दोषी के सिर के ऊपर ठोक दिया करते थे। क्योंकि पिलातुस उसमें कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाया था उसने तख्ती पर लिखवाया "यह यीशु है,यहूदियों का राजा"। सैनिकों ने उसके कपड़ों पर चिटिठ्यां डाली और उन्हें आपस में बांट लिया। उसके पास से गुज़रने वाले यहूदियों और अन्य लोगों ने उसका मज़ाक बनाते हुए उससे कहा कि वह अगर सच में सामर्थी है तो क्रूस से नीचे उतर कर अपने आप को बचा ले। यीशु के साथ साथ दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ाया गया, दोनों उसके एक एक अलंग पर लटकाये गये और वह बीचोबीच था(यूहन्ना 19:18)।

क्रूस से यीशु ने उसे घात करने वाले लोगों को क्षमा किया(लूका 23:34)। दोपहर 12 बजे से लेकर 3 बजे तक पूरे देश में अन्धकार छा गया। अन्त में उसने अपनी मानवीय आत्मा को स्वर्गीय पिता के हाथों में सौंप दिया(लूका 23:46)। जब यीशु मरा तो मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया(मत्ती 27:51)।

यह घटना दर्शाती है कि उसकी मृत्यु के द्वारा यीशु ने सिर्फ मन्दिर में आराधना करने (अर्थात धार्मिक इमारत के)तथा लोगों द्वारा चढ़ाये जाने वाली पशुबलियों के महत्व को खत्म कर दिया। कोई धार्मिक स्थल या रीति रिवाज लोगों को उनके पापों से छुटकारा नहीं प्रदान कर सकते।

4.यीशु की मृत्यु के प्रति अनेकों प्रतिउत्तर।

शुक्रवार के दिन यीशु की मृत्यु की घटना में बहुत से लोग जुड़े हुए थे। अनेकों प्रकार के लोग यीशु की क्रूस के चारों ओर खड़े हुए थे। लेकिन हर एक जन का यीशु की मृत्यु के प्रति अपना व्यक्तिगत प्रतिउत्तर था।

खोजें व चर्चा करें। यीशु और उसकी मृत्यु के बारे में लोगों ने किस प्रकार प्रतिउत्तर दिये?

टिप्पणियां।

(1) यहूदा(यीशु का पकड़ने वाला) दिखाता था कि वह यीशु मसीह का चेला है मगर उसने यीशु को पकड़वाया। उसके बाद उसके पास पश्चाताप करने का कोई अवसर नहीं रहा(2 कुरिन्थियों 7:10-11)। उसने मन्दिर में जाकर तीन चांदी के सिक्कों को वापस कर दिया और खुद फाँसी लगा ली।(मत्ती 27:3-5; इब्रानियों 6:5-6)

(2) पतरस को अपने ऊपर बहुत घमण्ड था कि वह तो यीशु के साथ मरने को भी तैयार है,लेकिन उसने यीशु का तीन बार इनकार किया। (यूहन्ना 13:36-38;यूहन्ना 18:15-18,25-27)

(3) यूहन्ना डर के मारे उसे छोड़कर भाग गया,लेकिन बाद में प्रेम के कारण यीशु के पीछे पीछे चलता रहा, लेकिन नालिश वह उससे दूरी बनाये रहा(मत्ती 26:56;यूहन्ना 18:15)।

(4) हन्ना प्रथम न्यायी, जिसने बिना किसी सच्चे साक्षी के मुकदमा कर दिया, जो पुराने नियम के व्यवस्था के अनुसार ज़रूरी था(व्यवस्थाविवरण 17:6)। उसने सच्चाई को नजरअन्दाज़ किया। उसे "सत्य" से बढ़कर यीशु पर अपनी "सफलता" को लेकर अधिक रूचि थी। इसी कारण उसने यीशु ने उसके चेलों और शिक्षाओं के बारे में ऐसे प्रश्न किया जैसे कि उसके बारे में कोई जानता ही न हो। लेकिन यीशु ने अपने विरूद्ध साक्षी देने से इनकार कर दिया। यीशु ने कहा की उसने सदा खुले रूप में उपदेश दिये हैं और सभी लोग उसकी शिक्षाओं को सुना करते थे। यह कदम सिन्हेद्रीन के षड़यन्त्र के विरूद्ध साबित हुआ(यूहन्ना 18:12-14,19-24)

(5) काइफा, उसका दूसरा न्यायी,उसने जल्दबाजी में पेशी करवा दी और उसमें झूठे गवाहों का इस्तेमाल करके यह दिखाने का प्रयास किया गया कि उसने सारी नियमों को पालन किया है। उसने अपने आपको धर्मी न्यायी दिखाने का प्रयास किया,लेकिन उस जांच पड़ताल का परिणाम तो पहले ही निर्धारित किया जा चुका था। प्रमुख याजक और फरीसियों ने उसे पहले ही घात करने की योजना बना ली थी। लेकिन उसे मारने के लिए, यहूदी सिन्हेद्रिन को पहले उसे दोषी साबित करना जरूरी था। (मत्ती 12:14; लूका 22:2;यूहन्ना 11:49-53,57;यूहन्ना 18:14; मत्ती 26-57-68)।

(6)सिन्हेद्रिन , तीसरा न्यायी, इस्राएल के राजनैतिक व धार्मिक नेताओं से मिलकर बना एक दल था जिन्होंने एक झूठी आधिकारिक परीक्षण का आयोजन किया। वे लोगों पर यीशु के प्रभाव को देखकर जले हुए थे। इस सरकारी अदालत में उन्होंने उस निर्णय को लागू करने का प्रयास किया जिसका उन्होने पहले ही षड़यन्त्र रच लिया था(मत्ती 12:14)। उन्होंने हमेशा यीशु को मारने का असली कारण छुपा रखा(जलन, मत्ती 27:18)। सिन्हेद्रिन में उन्होंने यीशु पर ईश निन्दा का आरोप लगाया,परन्तु रोमी गर्वनर के सामने उन्होने सत्ता पलट करने का आरोप लगाया (लूका 22:66-71; लूका 23:1-2)।

(7)पिलातुस, उसका चौथा न्यायी था,उसने भी अनुचित परीक्षण किया। हालांकि वह पूरी तरह से निरूत्तर था कि यीशु निर्दोष है, फिर भी उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए लोगों के हाथों में छोड़ दिया। उसने स्वार्थी बनकर काम किया,क्योंकि वह अपने पद को खोने से डरता था। (मत्ती 27:11-26;यूहन्ना 18:28-19:16)।

(8) राजा हेरोद, उसका पांचवा न्यायी था, वह केवल यीशु द्वारा मनोरजंन प्राप्त करना चाहता था। वह आशा करता था कि यीशु कोई अदभुत चमत्कार करें। जब यीशु पूरी तरह से खामोश रहे,तब उसने अपने सैनिकों के साथ मिलकर यीशु का उपहास व मजाक बना सका (लूका 23:5-12)।

(9) यरूशलेम की स्त्रियां, कुछ स्त्रियां जो उसके साथ साथ चल रही थी उसके लिए रोती व विलाप करती थी। उन्होने उसकी अवस्था को देखकर उस पर तरस खाया लेकिन उन्हें अपनी दशा का अन्दाजा नहीं था। उन्हें इस बात का अन्दाजा नहीं था कि यीशु का भविष्य तो सुरक्षित है, और न ही वे यह जानते थे कि जब तक वे पश्चाताप न करें तब तक वे और उनके बच्चे सुरक्षित नहीं हैं। यरूशलेम के लोागों मे से ज्यादातर लोग जिद्दी थे। अत: यरूशलेम वाली अगर न फिरें तो उनके लिए कोई आशा नहीं थी(लूका 23:27-31)

(10) सैनिक, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, उन्होंने केवल आदेशों का पालन किया और वे सोचते थे कि वे तो बस उन्हें मिले आदेश को पूरा कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों से एक कदम आगे बढ़कर बढ़ी क्रूरता के साथ यीशु को मारा पीटा और उसका मजाक बनाया(मत्ती 27:27-31)।

(11) साधारण लोग,यहूदी तथा अन्य लोगों ने आते जाते सिर *हिला हिला कर उसकी निन्दा की*(मत्ती 27:39)।

(12) एक डाकू ने भी यीशु की निन्दा की,लेकिन दूसरे डाकू ने अपने पापों का अंगीकार किया और अपने आपको यीशु के हाथों में सौंप दिया (लूका 23:39-43)।

(13) सुबेदार, जो रामी सैनिकों का सेनापति था, यीशु का परमेश्वर का पुत्र कहने वाला पहला व्यक्ति था। (मत्ती 27:54)।

(14) अरिमतिया का युसुफ और निकेदुमुस, जो गुप्त में यीशु को माना करते थे, अब खुलेआम आगे आकर उसकी सेवा करने लगे। उन्होंने ही यीशु की देह को क्रूस से उतारा और उसे खाली कब्र में रखा(यूहन्ना 19:38-42)

(15) आज संसार का हर व्यक्ति यीशु के क्रूस के सामने खड़ा होता है। वह उस पर विश्वास करने वालों के पापों का पश्चाताप करने के लिए मरा और उन्हें क्षमा प्रदान की। परमेश्वर चाहते हैं कि हर एक जन यह जाने कि यीशु कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया हैं। आप और मैं भी यीशु के क्रूस के सम्मुख खड़े होते हैं। यीशु व उसकी क्रूस की मृत्यु के प्रति आपका प्रतिउत्तर क्या होगा? क्या आप यीशु को छोड़कर भाग जाएंगे या उसका अनुसरण करेगें? क्या आप अपने आपको धार्मिक ठहराने की कोशिश करेगें या अपने पापों का अंगीकार करेगें? क्या आप झूठ मूठ यह दर्शाना चाहते हैं कि आपको कुछ नहीं पता या फिर आप इस बात को मानते हैं कि यीशु क्रूस पर आपके बदले मरा? क्या आप यीशु मसीह व मसीहियों को सताना जारी रखेगें या फिर खुले आम प्रेम के साथ उसकी सेवा करेगें? क्या आप अविश्वास करके उसे अस्वीकृत करेगें या विश्वास के साथ उसे स्वीकार करेगें?

आपका प्रतिउत्तर क्या होगा?

ग.हमारे लिए यीशु की मृत्यु का अभिप्राय।

1.पहला कारण: यीशु मसीह पापों का पश्चाताप करने के लिए मरे।

पढ़ें रोमियों 3:23-25; रोमियों 8:7-10; यूहन्ना 6:35-44।

सबसे पहले मसीह हमारे लिए और हमारे पापों के बदले इसलिए मरा ताकि वह हमारे पापों को प्रायश्चित कर सके। उसे हमें परमेश्वर पिता की नज़रों में धर्मी ठहराकर उससे हमारा मेल करवा दिया। मानवीय स्वभाव से कोई भी मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न, उसके प्रति समर्पण नहीं करता या उसके पास नहीं आता।

जब मानवजाति अपनी स्वाभाविक अवस्था में थी, परमेश्वर ने हमारे लिए उद्धार का एक रास्ता तैयार किया। यीशु मसीह ने क्रूस(शाब्दिक अर्थ: उसके लहू के द्वारा) पर अपनी मृत्यु के द्वारा सार्वजनिक तौर पर खुद को प्रायश्चित[1] के बलिदान के रूप में प्रगट किया(खुलेआम प्रदर्शित किया, दिया,तैयार किया) (यूनानी भाषा में: प्रोटीथिमी),जिसे विश्वास के द्वारा स्वीकार किया जाना है(रोमियों 3:25)[2]।(परमेश्वर की सहनशीलता में पुरखाओं के समय से(ग्रीक: प्रोगीनोमाई) किये जाने वाले पापों को क्षमा (ग्रीक : पेरिस)करने के द्वार उसने अपने न्याय को प्रगट किया) यीशु हमारे पापों के दण्ड के रूप में मरा, अर्थात प्रायश्चित के लिए क्रूस पर किया गया बलिदान हमें परमेश्वर की नज़रों में धर्मी ठहराने के लिए एक उपाय बना। यीशु ने हमारे पापों के कारण हमारे प्रति उठे परमेश्वर के पवित्र व धार्मिक क्रोध को दूर करके परमेश्वर के साथ हमारा मेल मिलाप करवा दिया। "मेल मिलाप"[3] का यहां पर अर्थ हैं परमेश्वर के साथ टूटे हुए रिश्ते को बहाल करना।

2. दूसरा कारण: यीशु मसीह हमें व्यवस्था के श्राप से मुक्त करने के लिए मरा।

पढ़ें निर्गमन 20:1-2; गलातियों 2:21; गलातियों 3:10-29।

दूसरा कारण जिसके लिए यीशु हमारे बदले मरा, हमें व्यवस्था से मुक्त करना था। वह हमे धर्मी ठहराये जाने के उपाय के रूप में परमेश्वर की धार्मिक मांगों(व्यवस्था)से और हमारे विरूद्ध सारे नियमों से(जिन्हें मनुष्यों ने बनाया है)मुक्त करता है। पुराने नियम में "व्यवस्था" कभी धर्मी ठहराये जाने (उद्धार) का उपाय नहीं था। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को बचा लेने के बाद(मिस्र की गुलामी से),उसने बचे हुए लोगों को व्यवस्था के रूप में दस आज्ञाएं दी। परमेश्वर ने दस आज्ञाएं इस मनसा से नहीं दी थी लोग खुद को उसके आधार पर धर्मी ठहराएं, लेकिन ऐसे दैनिक नियमों के तौर पर दिये कि बचे हुए लोग(विश्वासी) उनके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें। नैतिक नियम (दस आज्ञाएं) लोगों को सिखाते हैं कि उन्हें इस संसार में कैसे परमेश्वर के बचाए हुए लोगों के समान रहना चाहिए या वे रह सकते हैं(निर्गमन 20:1-2)। इन नैतिक नियमों की पुष्टि नये नियमों में होती है(मत्ती 22:36-40)। आनुष्ठानिक नियम पुराने के नियम के लोगों को सिखाते हैं कि वे किस तरह आराधना ओर सेवा के लिए परमेश्वर के पास जा सकते हैं।

---

1 ग्रीक : हिलेस्टेरियन, प्रायश्चित

2 25-26 वचन का अनुवाद। "परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसके लहू बहाये जाने के द्वारा क्रोध शान्त करने वाला बलिदान बनाया(सार्वजनिक तौर पर प्रगट किया), जो की विश्वास के द्वारा क्रियाशील होता है।
3 ग्रीक : काटालाएज, मेल मिलाप

आनुष्ठानिक नियम(अर्थात याजकों और लेवियों,तम्बू व मन्दिर, सबत तथा पर्वों और खतना और बलिदानों के,शुद्धिकरण की रीति व भेटों के सम्बन्ध में) वे "वास्तविकता की छाया" थी जो बाद में यीशु में प्रमाणित हुई(कुलु 2:17;इब्रा 10:1)। यीशु ने आकर उन आनुष्ठानिक नियमों को पूरा किया ,रद्द किया और मिटा दिया।

दुर्भाग्यवश, बेबिलोन से निर्वासन के बाद से यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने व्यवस्था का उद्देश्य बदल दिया और व्यवस्था को ही प्रायश्चित करने व उद्धार का एक माध्यम बना दिया(प्रेरितों 15:1)। उसके बाद से "धर्मशास्त्र पर विश्वास करने वाले लोगो"(उदा. यहूदी,मुसलिम और रीतिरिवाजों पर चलन वाले मसीही) ने व्यवस्था पालन करने के द्वारा खुद को बचाने(धर्मी ठहराने) का प्रयास किया।

लेकिन बाइबल चेतावनी देती है कि, " जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं वे सब श्राप के आधीन हैं, क्योंकि लिखा है कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता वह श्रापित हैं। यह बात प्रगट है कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता"(गलातियों 3:10-11)। यीशु मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना,हमें मोल लेकर व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है। हम व्यवस्था के श्राप से बचे हैं। अब हम "व्यवस्था के अधीन नहीं" वरन "अनुग्रह के अधीन" है। (रोमियों 6:14)।

3. तीसरा कारण: यीशु मसीह यहूदियों का गैर यहूदी विश्वासियों के बीच मतभेद को नाश करने के लिए मरे।

पढ़ें मत्ती 5:17; इफिसियों 2:13-18; कुलु 2:14

तीसरा कारण जिसके लिए यीशु मरा, इस्राएलियों और अन्याजियों में आये विश्वासियों के बीच मतभेद को दूर करना। उसने दो समूहों को लोगों को परमेश्वर के नये लोगों में शामिल कर दिया(अर्थात कलीसिया में) और इस तरह से सारे जगत के सभी जातियों से आये विश्वासियों में शान्ति कायम हो गयी। इस्राएल देश के अस्तित्व में आने से बहुत पहले ही परमेश्वर ने यह वायदा किया था कि संसार की सारी जातियां अब्राहम के "वंश" अर्थात आने वाले, यीशु मसीह में होकर आशीष पाएंगे(उत्प 22:18)। फिर भी, यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक,"व्यवस्था इस्राएल तथा अन्य जातियों के बीच में एक अवरोधक या विभाजित करनेवाली शत्रुता की दीवार के समान खड़ी हो गयी।" विशेषकर के आनुष्ठानिक नियमों के क्षेत्र में जिसमें पवित्र लोगों,पवित्र स्थान, पवित्र समय और पवित्र कामों, और इस्राएल को बाकि सारे देशो अलग दिखाया जाता था। इस्राएल के लिए परमेश्वर का विशेष उद्देश्य बाकि सारे गैर यहूदी देशों को इस्राएल की "व्यवस्था के जुए की नीचे" लाना नहीं था, वरन परमश्वेर वह सारे राष्ट्रों के लिए इस्राएल से एक उद्धारकर्ता उत्पन्न करना चाहता थ। जब उद्धारकर्ता यीशु आया तो उसने आकार व्यवस्था की सभी धार्मिक मांगों को अपने जीवन व अपनी मृत्यु से पूरा कर दिया(मत्ती 5:17)। अत: उसने परमेश्वर के पास पहुचने के लिए आनुष्ठानिक व्यवस्था को एक माध्यम मानने से इनकार(कुलु. 2:14) व उसे समाप्त (इफि 1:14-!5)। उसने परमेश्वर के राज्य की शिक्षाओं के द्वारा इस्राएल के नागरिक कानूनों को बदल दिया।

यीशु मसीह की मृत्यु ने "बाधा व शत्रुता की दीवार को तोड़ दिया" और यहूदी तथा गैर यहूदी विश्वासियों का परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करवा दिया। उसने यहूदी और गैर यहूदी विश्वासियों को :

- मिलाकर एक परमेश्वर का राज्य बना दिया(मत्ती 21:42-440
- एक चरवाहे की भेड़ों का झुण्ड बना दिया(यूनना 19:16)
- एक देह (कलीसिया) का हिस्सा बना दिया(1कुरि 12:13)
- एक ऐसा आत्मिक मनुष्य बना दिया जिसकी आत्मा के द्वारा परमश्वेर पिता तक जान पहुंच है। (इफि 2:15-18)
- परमेश्वर के घराने का एक हिस्सा बना दिया जिसका एक भाग परमेश्वर भी है(इफि 2:15-18)
- परमेश्वर का एक चुना राष्ट्र बना दिया(1पतरस 2:9-10)

परमेश्वर ने हम में (यहूदियों मे से विश्वासियों) और उनमें (अन्यजातियों में से विश्वासियों) में को अन्तर नहीं बनाया है (प्रेरितों 15:9)! "यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालें के लिए उदार है!

4.चौथा कारण: यीशु जीवन का मकसद देने के लिए मरा।

पढ़ें रोमियों 14:8; 2 कुरिन्थियों 5:15; फिलिप्पियों 2:1-8।

चौथा कारण जिसके तहत यीशु हमारे लिए और हमारे बदले मरा वह मसीहियों को उनके जीवन का मकसद प्रदान करना था। मसीही लोग अपने लिए जीवन नहीं जीते वरन वे बाइबल के परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत करते और दूसरे लोगों की सेवा निस्वार्थ भावना से करते हैं।

5. पांचवां कारण: यीशु मसीह सारे भय को दूर करने के लिए मरा।

पढ़ें इब्रानियों 2:14-15; रोमियों 8:31-39।

पांचवा कारण जिसके तहत यीशु हमारे लिए और हमारे बदले मरा वह यह था कि वह सारे भय को हटाकर मसीहीयों को कठिन परिस्थितियों के बावजूद अनन्त जीवन का निश्चय प्रदान करना चाहता था। परमेश्वर हमारी ओर है तो कौन सी परिस्थिति हमारे विरूद्ध हो सकती है(रोमियों 8:31)! कोई भी चीज़ हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती(रोमियों 8:38-39)! यीशु मसीह सभी लोगों के भय के दूर करने के लिए मरा अर्थात परिस्थितियों का भय,शैतान का भय और मसीहियों के जीवन से हमेशा के लिए मृत्यु का भय।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2."गुड-फ्राइडे-यीशु मसीह की मृत्यु का स्मरणोत्सव मनाने के बारें में "-किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 11:20-14:72** में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। **(4) विश्वास: रोमियों 4:20-21।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। **यूहन्ना 1:1-18।** पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 4

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।
अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 11:20-14:72**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 11:20-14:72) में शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]* **(4) रोमियों 4:20-21**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।
(3) विश्वास : रोमियों 4:20-21। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह किया, पर विश्वास मे दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरी करने को भी सामर्थ्यी है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 1:1-18**

एक साथ मिलकर समूह में बाइबल पढ़ने का उद्देश्य यीशु मसीह तथा एक दूसरे के साथ रिश्ते को मज़बूत करना है। यह अध्ययन बाइबल का ज्ञान व समझ प्राप्त करने में एक दूसरे की सहायता करने तथा उससे मिले प्रकाशनों को अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए है।
इस कारण यह अति महत्वपूर्ण है कि समूह के सदस्य एक दूसरे को चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। समूह के सभी सदस्यों की प्रतिभागिता महत्वपूर्ण है। यदि किसी के द्वारा कही कोई बात पूरी तरह से सही साबित नहीं होती (शास्त्र के आधार पर)तो उसे समूह से बाहर नहीं कर देना चाहिए। वरन समूह के अगुवे को समूह के सभी सदस्यों को बाइबल के सत्यों को खोजने और उन पर चर्चा करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। समूह के हर एक व्यक्ति को महसूस होना चाहिए कि जब वह बोलता है तो दूसरे लोग उसकी सुनते,उसे गम्भीरता से लेते और उसकी बातों को स्वीकार करते हैं। समूह के सदस्य बाइबल के ज्ञान को लेकर आपस में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर रहे हैं,वरन वे एक दूसरे को बढ़ने और आत्मविश्वास के साथ अपनी बातें साझा करने में प्रोत्साहित करने के द्वारा प्रेम करते हैं।

नीचे दिया गया बाइबल अध्ययन का उदारहण समूह के अगुवे की बाइबल अध्ययन की तैयारी करने में सहायता करने या कठिन प्रश्नों पर चर्चा करने में सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। आपके सामुहिक चर्चा में सदस्यों की सामूहिक चर्चा ये भिन्न विषय व भिन्न प्रश्न हो सकते हैं
यूहन्ना 1:1-18 पर एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए पांच कदमों के बाइबल अध्ययन का इस्तेमाल करें।

परिचय: यूहन्ना अध्याय 1से 12 पढ़ें और उसे यीशु मसीह की सेवाकाई से जोड़ने का प्रयास करें। उसेने अपने आपको विस्तृत रूप में प्रगट किया, लेकिन अन्त में उसे अस्विकार कर दिया गया। यूहन्ना 1:1-14 में सृष्टि की रचना से पहले, सृष्टि के समय, पाप में गिरने के समय तथा देहधारण के दौरान,परमेश्वर के वचन की महिमा को प्रगट किया गया है,जब परमेश्वर ने मसीह के रूप में मानवीय स्वभाव धारण किया। यूहन्ना 1:15 से 2:12 दर्शाते हैं कि वचन अर्थात यीशु मसीह ने अपने आपको यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और प्रारम्भिक चेलों पर प्रगट किया।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 1:1-18 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

1:12-13

खोज 1. परमेश्वर की सन्तान बनना।

यूहन्ना 1:12-13 में लिखा है "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया है,उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया है अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं। वे न तो (वास्तव में)लहू (प्राकृतिक वंश में) से, न (वास्तव में)शरीर की(काम वासना) इच्छा से न मनुष्य की इच्छा से (स्वेच्छा)परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। ये वचन मुझे बताते हैं कि मैं कैसे परमेश्वर की सन्तान बन सकता हूँ।

परमेश्वर की सन्तान बनना परमेश्वर को सर्वश्रेष्ठ काम है। बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि जो सच में यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह परमेश्वर से जन्मा है(यूहन्ना 1:12-13)। जब कोई यह विश्वास करता है तो वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है(अर्थात वह नया जन्म पा लेता है):

- वह अपने स्वाभाविक वंश (ग्रीक : लहू) अर्थात अपनी राष्ट्रीयता के कारण नया जन्म नहीं पाता।उदाहरण: उदाहरण से जन्म लेना(यूहन्ना 8:31-59;लूका 3:8; गलातियों 3:11,28)
- अपने माता पिता के शारीरिक सम्बन्धों की वजह से नहीं(ग्रीक : शरीर की इच्छा से नहीं) (यूहन्ना 3:6)
- अपनी स्वतन्त्र इच्छा और निर्णयों के कारण नहीं (ग्रीक : मनुष्यों की इच्दा) (रोमियों 8:7-8;9:11,16)
- लेकिन केवल परमेश्वर ने जन्म लेने के द्वारा(ग्रीक : इग्नीथीसन) (ओरिस्ट, उदासीन)(यूहन्ना 3:3-8;यूहन्ना 17:2; रोमियों 8:29-30;इफिसियों 1:4-5)।

जो कोई सुसमाचार को सुनता है परमेश्वर की सन्तान बन सकता है। हालांकि यीशु मसीह ने संसार की रचना की, संसार में आये और लोगों के बीच में डेरा किया, कई लोगों ने उसका स्वागत व उन्हें स्वीकार नहीं किया। लेकिन बहुत से लोग हैं जिन्होंने उसे स्वीकार किया हैं। उसने लूका 2:34 में की गयी भविष्यद्वाणी को पूरा किया कि "यह बालक बहुत से लोगों के गिरने और बहुत से लोगों के उठने का कारण होगा।" केवल इस्राएल में नहीं वरन 1 पतरस 2:6-8 के अनुसार सारे संसार भर में। "वह ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है, जिसे के विरोध में बातें की जाएंगी, और इस से बहुत हृदयों के विचार प्रगट हो जाएंगे।" जब यीशु ने जो कोई कहा तो उसका अर्थ संसार के किसी भी देश या जाति के लोगों से था। यीशु मसीह केवल यीशु को बचाने के लिए ही नहीं आये,वरन वह दुनिया की सभी जातियों व देशों के लोगों के बचाने के लिए आये।

केवल यीशु मसीह में विश्वास करने वाले लोग ही परमेश्वर की सन्तान कहलाते हें। यीशु मसीह के "नाम में" विश्वास करने का अर्थ है कि हम उसे ठीक उस तरह मान्यता दें जिस तरह से उसने आपने आप को वचनों में प्रगट किय है।(वैसे नहीं जैसे दूसरे धर्म उसके बारे में कहते हैं।)कोई भी जन जो इन सत्यों को अपने हृदय में विश्वास के साथ जगह प्रदान करता है,वह यीशु मसीह को (मसीह की आत्मा को)अपने हृदय और आत्मा में स्वीकार करेगा। "ग्रहण करने" का अर्थ यीशु मसीह का *स्वागत करना*,उसे सार्वजनिक तौर पर मानना व उसका *अंगीकार* करना हैं कि वह उद्धारकर्ता व आपके भीतरी व बाहरी जीवन पर *अधिकारी* है।

यीशु उन्हें परमेश्वर की सन्तान "होने का" अधिकार देता है। जहां यहूदी खुद को "अब्राहम की सन्तान" कहलवान पसन्द करते हैं,वहीं यीशु ने विश्वासियों को "परमेश्वर की सन्तान" कहलाने का अधिकार व योग्यता प्रदान की है।
परमेश्वर की सन्तान बनने का अर्थ यह नहीं है कि विश्वासी केवल भविष्य में ही परमेश्वर की सन्तान बनते हैं। बल्कि इसका अर्थ है कि परमेश्वर के अकस्मात कार्य के द्वारा आप अभी परमेश्वर की सन्तान बन चुके हैं जिसे बाइबल में नया जन्म प्राप्त करना भी कहा जाता है। वे धर्मी ठहराये गये,क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त लोग हैं। अनका पद या उपाधि परमेश्वर की सन्तान कहलाना है।

लेकिन इसका अर्थ यह भी है कि उनके भीतर शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया शुरू हो गयी है अर्थात वृद्धि की एक प्रक्रिया जिसके तहत वे अधिक से अधिक परमेश्वर की सन्तान का स्वरूप धारण करने लगते हैं(2कुरि.3:18)। परमेश्वर के सन्तान हाने की सर्वोच्च अनुभूति महिमामित होना कहलाता है। तब विश्वासी जन अपनी मानवीय आत्मा(1यूहन्ना 3:1-3) और मानवीय देह में (फिलि 3:20-21) होने के बावजूद भी यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव में ढल जाएगें।

1:16-17

खोज 2: व्यवस्था व अनुग्रह में मूल अन्तर

यूहन्ना 1:16-17 में लिखा है,"क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह। इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई परन्तु अनुग्रह और सच्चाइ यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।" पुराने नियम में नैतिक व आनुष्ठानिक विधियों तथा सामाजिक नियमों का मिश्रण होता था। व्यवस्था में कुछ गड़बड़ी नहीं थी। परमेश्वर ने ही ये नियम मूसा को दिये थे(स्वर्गदूतों के द्वारा बोले गये संदेश)(इब्रानियों 2:2)।इसका उद्देश्य, मसीह अर्थात यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए लोगों के हृदयों को तैयार करना था। व्यवस्था का उद्देश्य, मसीह अर्थात यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए लोगों के हृदयों को तैयार करना था।

- एक तरफ व्यवस्था ने लोगों पर उनके पापों और उनकी भटकी अवस्था को प्रगट किया।
- दूसरी ओर व्यवस्था ने परमेश्वर के उद्धार को छुपा लिया(उदाहरण के लिए,पशुबलि ने प्रायश्चित हेतू मसीह के बलिदान को छुपा लिया)

लेकिन दो काम व्यवस्था कभी नहीं कर सकी।

- व्यवस्था लोगों को उनके पापों से क्षमा व उसकी खोई अवसीा में उनकी सहायता नहीं कर सकी।
- व्यवस्था उन पर व्यवहारिक रूप से सच्चाई या वास्तविकता को प्रगट नहीं कर सकी, जिसकी ओर वे संकेत कर रहे थे।
- उदाहरण के लिए: व्यवस्था ने पुराने नियम के मन्दिर,याजकता,बलिदान इत्यादि का वास्तविक स्वभाव प्रगट नहीं किया, जो कि नये नियम में वास्तविकता बन कर प्रगट हुए(कुलु 2:17;इब्रानियों 10:1)।

केवल यीशु की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के द्वारा
दूसरी ओर"वह अनुग्रह जो पापों को क्षमा करता तथा खोई अवस्था में सहायता प्रदान करता है" मोल लेकर उपलब्ध करवा दिया।
दूसरी ओर व्यवस्था को पूरा करके "परमेश्वर के उद्धार की योजना का स्वभाव या सच्चाई को प्रगट किया"(उदाहरण:क्रूस पर दिया गया यीशु का बलिदान,पुराने नियमों के सारे बलिदानों की पूर्ति करता है।)

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 1:1-18 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

1:1-3

***प्रश्न 1:* "वचन कौन है और उसने क्या किया?"**

नोट्स

वचन यीशु का एक महत्वपूर्ण नाम है।

(1) यीशु मसीह को इसलिए वचन कहा गया क्योंकि उसने ही परमेश्वर को प्रत्यक्ष रूप से प्रगट किया।

जब हम बोलते हैं तब हमारे शब्द हमारे भावों व अदृश्य विचारों को प्रगट करते हैं। इसी प्रकार से यीशु मसीह ने मनुष्यों पर परमेश्वर के भीतरी विचार व अदृश्य हस्ती को प्रगट किया। यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का मनुष्यों के सीमित शब्दों तथा धरती की रचना में प्रत्यक्ष प्रतिरूप है(कुलु 1:15)।

केवल यीशु ही स्वर्ग में परमेश्वर पिता के साथ मौजूद थे और केवल वह ही परमेश्वर के विचारों,योजनाओं और वचनों को जानते हैं। हमें जो कुछ परमेश्वर व उसकी योजनाओं के बारे में पता करने की आवश्यकता थी उन्हें यीशु मसीह ने हम पर प्रगट किया।"कोई पुत्र को नहीं जानता केवल पिता;और कोई पिता को नहीं जानता केवल पुत्र;और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे"(मत्ती11: 25-27)।

(2) यीशु मसीह प्रभु है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें बताता है कि यीशु मसीह प्रभु से कम नहीं है (इब्रानियों 1:3; 1यूहनना 5:20)। वह आदि में विद्यमान था और उसमें भी परमेश्वर पिता के समान ही स्वभाव पाया जाता है(मैनुएल 2 परिशिष्ठ 8। परमेश्वर का स्वभाव व परमेश्वर का पुत्र)।

(3) यीशु मसीह हमेशा परमेश्वर के साथ था।

वह कभी रचा नहीं गया। इस बात पर अधिक जोर डालने के लिए कि यीशु की रचना नहीं हुई थी,पद 1 व 2 में क्रिया के नियमित जारी रहने वाले काल का इस्तेमाल किया गया है। वह सदा अनन्त काल से ही विद्यमान था। वह सर्वदा परमेश्वर पिता की सर्वाधिक सम्भव घनिष्ठता और संगति में था। प्रारम्भ से ही वह परमेंश्वर पिता की ओर से चुना हुआ जन था।

अत: यूहन्ना रचित सुसमाचार यीशु मसीह के बारे तीन सच्चाईयों को बयांन करता है।

- वह वास्तव में ईश्वरीय है।
- वह सदाकाल से विद्यमान है।
- वह परमेश्वर पिता की ओर से एक चुने हुए व्यक्ति के रूप में विद्यमन था,,जिसके साथ वह हमेशा संगति करना पसन्द करता है।

(4) यीशु मसीह ने ही सौर्यमण्डल को रचा।

बिना किसी सन्देह के इस बात पर जोर डालने के लिए कि यीशु ने ही सारी चीजों को रचा था,पद 3 में क्रिया के सामान्य भूत तथा पूर्ण काल का इस्तेमाल किया गया है। "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ(सामान्य काल), और जो कुछ उत्पन्न हुआ(सामन्य) है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई(पूर्ण काल)।" यीशु मसीह ने अनगिनत सितारों,सूरज, चांद और अर्थ के साथ सम्पूर्ण तारामण्डल व मनुष्यों का निर्माण किया।

1: 4-5

***प्रश्न 2.* यीशु मसीह "जीवन" और "ज्योति " है का क्या मतलब है।**

नोट्स

"उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।"(यूहन्ना 1:4)। यीशु मसीह को "जीवन" कहा जाता है क्योंकि उसमें परमेश्वर के सारे गुण व विशेषताएं विद्यमान थी। वह सच में परमेश्वर है। और उसे 'ज्योंति' इसलिए कहा गया क्योंकि उसने प्रत्यक्ष में परमेश्वर के इन गुणों को प्रगट किया। यीशु मसीह ने ही मनुष्यों पर प्रत्यक्ष रूप में परमेश्वर को प्रगट किया।

इस तथ्य पर और गहराई से ज़ोर डालने के लिए वह 'ज्योति' यीशु मसीह में आदि से वास करती है,पद 4 में क्रिया के अपूर्ण भूलकाल का इस्तेमाल किया गया है:"था"। 'जीवन' परमेश्वर की परिपूर्णता का,उसके महिमित विशेषताओं,उदाहरण के लिए उसके

सत्य, उसकी सर्वशक्तिमान सामर्थ्य, हर जगह पर उसके मौजूद होने,उसकी पवित्रता, उसके प्रेम, उसकी श्रेष्ठता आदि गुणों का निचोड़ है। यह जीवन सृजे गये और आत्मिक जीवन दोनों का ही स्रोत है। वह मनुष्यों को प्रदान किये गये सामान्य व विशेष प्रकाशन का आधार है।

जब यह जीवन प्रत्यक्ष रूप में प्रगट किया गया, तो वह "ज्योति" कहलाया। अत: यीशु मसीह परमेश्वर व परमेश्वर के गुणों (ईश्वरीय विशेषताओं) का प्रत्यक्ष प्रकाशन (भाव) है। (यूहन्न 14:9;कुलु 1:15)। केवल यीशु मसीह द्वारा ही हम परमेश्वर को जान सकते व उसके प्रेम का अनुभव कर सकते हैं। पुराने नियम में मसीह को भविष्यद्वाणियों, प्रतिज्ञाओं और दृष्टान्तों(परछाईयों)में उस प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। उदाहरण के लिए, फसह का मेमना यीशु मसीह द्वारा किये जाने वाले प्रायश्चित की ओर संकेत करता है जिसने हमारे पापों के विरूद्ध उठे परमेश्वर के धर्मी क्रोध को शान्त कर दिया। मन्दिर में प्रतिदिन चढ़ाई जाने वाली पशुबलि मसीह के लहू की ओर सकेंत करती है जो क्रूस पर बहाया गया और पापियों को उनके हर अधर्म से शुद्ध करता है। "बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं है"(इब्रानियों 9:22)। मरूस्थल में काठ पर लटकाया गया सांप भी यीशु मसीह की ओर संकेत करता है जो क्रूस पर लटकाया गया था। मसीह न केवल पुराने नियम में वरन हमें सम्पूर्ण नये नियम में भी बहुतायत से दिखाई देता है। उसने कहा, "जिसने मुझे देख लिया, उसने पिता को देख लिया"। यीशु मसीह ने अपने स्वभाव, बातों और कार्यों से जो कुछ प्रगट किया वह अप्रत्यक्ष परमेश्वर का अंश था।

1:9

प्रश्न 3. किस तरह से यीशु मसीह हर एक व्यक्ति को ज्योति (प्रदीप) बना देते हैं?

नोट्स।

जब कोई व्यक्ति सुसमाचार सुनता है तो मसीह उसे प्रकाशित कर देते हैं। इस अर्थ है कि यीशु उसे आत्मिक समझ का एक उच्च स्तर प्रदान करते हैं। हो सकता है कि व्यक्ति को बोध होने लग जाये कि परमेश्वर के विद्यमान है। या हो सकता है कि वह समझ जाए कि वह अन्धकार में जीवन व्यतीत कर रहा है। (किसी दूसरे ईश्वर या देवताओं पर विश्वास करता है या गुलामी की एक या अन्य अवस्थाओं में जीवन व्यतीत कर रहा है)। या फिर उसको यह समझ में आ जाए कि परमेश्वर ने हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार का एक रास्ता तैयार किया है।

परन्तु यह आवश्यक नहीं है इस प्रकार के ज्ञान,समय या बोध होने से किसी का उद्धार हो ही जाए। सन्दर्भ हमें बताता है कि हर एक जन का उद्धार नहीं हुआ है।

- पद 5 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को न "समझा"या "पहिचाना"(उस पर भरोसा किया)।
- पद 10 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को "स्वीकार" या "ग्रहण" नहीं किया।
- पद 11 में लिखा है कि हर एक जन ने ज्योति को "ग्रहण" नहीं किया।

बहुत से लोग सुसमाचार तो सुनते हैं परन्तु उसे स्वीकार (ग्रहण) नहीं करते, क्योंकि वे अन्धकार में रहना पसन्द करते हैं(यूहन्ना 3:19-21)। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से बहुत से ऐसे लोग हैं जो यीशु को अपने उद्धारकता और प्रभु के रूप में स्वीकार कर लेते हैं और निश्चय ही उद्धार पाये हुए हैं(यूहन्ना 1:12-13;1यूहन्ना 5:11-13)। यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें सार्वभौमिक प्रायश्चित की शिक्षा नहीं देता(अर्थात वह शिक्षा कि हर एक जन का उद्धार हो चुका है)। परन्तु वह हमें उद्धार का निश्चय प्रदान करता है,अर्थात अगर किसी व्यक्ति का एक बार उद्धार हो गया तो वह हमेशा सुरक्षित बना रहेगा।

1:10

प्रश्न 4. "संसार" से उसका क्या मतलब है?

नोट्स

यूहन्ना रचित सुसमाचार में शब्द "संसार" (ग्रीक: कोसमोस) के अनेकों अर्थ हैं।

(1) क्रम से बनायी गयी सृष्टि के रूप में संसार।

(यूहन्ना 1:10,17:5,14)या पृथ्वी (यूहन्ना 21:25)।

(2) मानवीय इतिहास की रंगशाला रूपी संसार।

यह मनुष्यों का राज्य, धरती पर रहने वाले लोग, मानवजाति है। (यूहन्ना 1:9, 10; 3:19; 9:39; 11:27; 12:46; 14:31; 16:21,28;17:18; 18:36-37)।

1ग्रीक: काटालाम्बानों

2.ग्रीक : गीनास्को

3.ग्रीक : पारालाम्बानो

(3) सामान्य लोगों के रूप में संसारं

(यूहन्ना 7:4; 14:22)

(4) भटके हुए लोगों के स्थान के रूप में संसारं।

यह संसार परमेश्वर के जीवन से पृथक, पाप से भरा, परमेश्वर के दण्ड का हकदार और उद्धार की आवश्यकता में है(यूहन्ना 1:10;3:19)। इस अर्थ को छठे अर्थ के साथ भी जोड़ा जा सकता है।

(5) सारे देशों से आये लोगों से मिलकर बना संसार।

यह खोये हुए लोगों का संसार है(जैसा कि यूहन्ना 3:19 में अतिरिक्त विचारों के साथ लिखा है) जिसमें सभी जाति, राष्ट्रों और भाषाओं के लोग शामिल है(यूहन्ना 4:42) जो प्रत्येक जन के बारे में लिखी हुई बातों को नहीं मानते(यूहन्ना 1:29; 3:16;; 3:17; 4:42;6:33;,51;8:12; 9:5; 11:52; 12:32; 1यूहन्ना 2:2; 4:14-15)। यूहन्ना कहता है कि यीशु परमेश्वर का मेमना है जो संसार के पापों को अपने ऊपर उठा लिये जाता है। यहां पर संसार का अर्थ "वे सभी लोग नहीं हो सकते जिन्होंने अभी तक संसार में जन्म लिया है" क्योंकि बाइबल हमें यह नहीं बताती कि सभी लोगों का उद्धार हो जाएगा। यूहन्ना 3:16 में लिखी बातों का अर्थ यह है कि परमेश्वर सभी जाति, राष्ट्रों और भाषाओं के लोगों को यह जानते हुए भी प्रेम करता है कि वे प्रत्येक जन के बारे में लिखी हुई बातों को नहीं मानते(भजन 5:4-6; 11:5; लूका 14:26; रोमियों 1:18; 9:13; इब्रानियों 1:9; याकूब 4:4)।

(6) यह संसार शैतान का क्षेत्र है।

यह संसार ऐसे भटके हुए लोगों से भरा हुआ संसार है जो बुरा करते तथा परमेश्वर,मसीह और मसीहियों के खिलाफ रहते हैं(यूहन्ना 7:7; 8:23;12:31,ध्यान रहे कि यीशु के प्रथम आगमन पर शैतान से उसके अधिकार को छीन लिया गया है; 14:17,30,31;15:18;17:9;14-16,25;1यूहन्ना 5:19, 18वें वचन पर ध्यान दें कि शैतान नया जन्म पाये हुए मसीहियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

(7) परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में संसार ।

सारे राष्ट्रों से परमेश्वर के चुने हुए लोग(यूहन्ना 4:42; 1 यूहन्ना 4:14)।

इसलिए हमारे लिये यह जानना बहुत जरूरी है कि बाइबल में शब्द "संसार" के बहुत से अर्थ हैं।

1:14

प्रश्न 5. 'शरीर' शब्द का अर्थ क्या है?

नोट्स

यूहन्ना रचित सुसमाचार में शरीर शब्द के अनेकों अर्थ हैं।

(1) एक मानवीय देह, अर्थात एक मनुष्य।

यूहन्ना 1:13-14 में लिखा है कि," एक विश्वासी परमेश्वर से जन्मा होता है शरीर से नहीं"। यहां पर "शरीर" का अर्थ मनुष्य से है, जिसमें मानवीय स्वभाव तो है परन्तु नकारात्मक सोच नहीं है। नया जन्म प्रारम्भ से लेकर अन्त तक किसी मनुष्य का काम नहीं वरन परमेश्वर का काम है! यूहन्ना 1:14 में यह भी लिखा है कि"यीशु ने देहधारण किया"। यहां पर भी "शरीर" का अर्थ है कि मनुष्य में मानवीय स्वभाव तो है परन्तु नकारात्मक सोच नहीं है। अत: यीशु पापरहित होने के बावजूद, मनुष्य की प्राकृतिक कमजोरियों, थकान,दर्द, विपत्ती और मृत्यु के अधीन था, क्योंकि जब तक मनुष्य जाति को पापों से छुटकारा देने के लिए फिरौति की रकम का भुगतान नहीं कर दिया गया तब तक मनुष्य का स्वभाव पापों के श्राप से दबा हुआ था।

(2) पापमय मानवीय स्वभाव के रूप में शरीर।

यूहन्न 3:6 में लिखा है की,"जो शरीद से जन्मा है वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।" यहां पर "शरीर" का अर्थ मानवीय स्वभाव से है जो पापमय इच्छाओं के लिए एक वाहन या किसी कुर्सी के समान है; यह भाव प्रगट करता है कि मनुष्य स्वभाव से ही ऐसा होता है। प्रेरित पौलुस कई बार इस बोध में होकर शरीर शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

(3) यीशु के बलिदान के तौर पर शरीर।

यहन्ना 6:51-56 में यीशु कहते हैं"जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पियों तुम में जीवन नहीं। यहां पर यीशु क्रूस पर अपने रहस्यमयी प्रतिनियुक्त क्रूस पर बलिदान के बारे में बात कर रहे हैं, जिसे हर व्यक्ति को "खाना" चाहिए, अर्थात अनन्त जीवन पाने के लिए विश्वास द्वारा इस्तेमाल करना चाहिए।

(4) शरीर अर्थात बाहरी रूप या मानवीय स्तर।

यूहन्ना 8:15 में यीशु फरीसियों से कहते हैं कि "तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो"। यह पर शरीर से मनुष्य के बाहरी रूप व उसके स्तर को सम्बोधित किया जा रहा है।

1:14,18

प्रश्न 6. हमें "परमेश्वर के इकलौते पुत्र" वाक्य से क्या समझना चाहिए?

नोट्स।

"इकलौता पुत्र" वाक्य दर्शाता है कि यहां पर किसी सृजे गये संसार की वस्तु से जुड़ी बात नहीं हो रही है। यहां पर भूतकाल में प्रारम्भ हुई किसी बात की चर्चा नहीं की जा रही है। यह सम्बोधन मसीह के अभौतिक,सात्विक,अनन्त और त्रीएकता में पुत्र के अधीकार को प्रगट करता है।

यूहन्ना 3:16 साबित करता है कि यीशु के मानवीय रूप धारण करने से पहले ही वह परमेश्वर पिता से पैदा हुआ इकलौता पुत्र था।[5] यूहन्ना 1:18 यूनानी भाषा में लिखी प्राचीनतन हस्तपुस्तिका में (इकलौते पुत्र की बजाय) "एक मात्र उत्पन्न इकलौता पुत्र" लिखा है। क्योंकि परमेश्वर अनन्त है इसलिए जब मसीह से जुड़ा सम्बोधन अभौतिक,सात्विक,अनन्त और त्रीएकता में पुत्र के अधीकार को प्रगट करने वाला होना चाहिए। इसका अर्थ है कि अनन्तता से ही मसीह परमेश्वर का पुत्र है। आदि से ही परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा एक दूसरे की अद्भुत संगति का आनन्द उठा रहे हैं।

वे एक साथ मिलकर "एक ही परमेश्वर " के रूप में (मरकुस 12:29) और " परमेश्वर के एक अनोखे द्वारा" (मत्ती 29:19)विद्यमान हैं। उसका वजूद एक "आत्मा" के रूप में है (यूहन्ना 4:24; रोमियों 8:9-10)और उसके वजूद या पहिचान को किसी गणित के सूत्रों के आधार पर नहीं समझाया जा सकता। और उसकी एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने अपने आपको पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट किया है(मत्ती 28:19)। परमेश्वर ने प्रगट किया है कि इन तीनों के स्वभाव में भिन्नता पायी जाती है जिसे समझना मनुष्य की समझ से परे है, लेकिन हमें केवल उन बातों को मान लेना चाहिए। इस संसार के किसी भी धर्म का कोई जन परमेश्वर का नहीं जानता केवल पुत्र और जिस पर स्वयं परमेश्वर अपने आपको प्रगट करें। (मत्ती 11:25-27; यूहन्ना 10:15; 17:25-26)। इसीलिए लिखा है:"यीशु मसीह ने अपने आप को प्रगट किया"। "प्रगट किया" शब्द का अर्थ है: "प्रगट करना" "समझाया" "विस्तृत वर्णन करना"।

कदम 4. अनुप्रयोग

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 1:1-18 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

1. यूहन्ना 1:1-18 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।

1:12 यीशु मसीह के बारे में केवल ज्ञान प्राप्त करना ही काफी नहीं है। उसे अपने जीवन में बुलायें और ग्रहण करें।

1:13 जो कोई यीशु मसीह को अपने जीवन में बुलाता और ग्रहण करता है वह नया जन्म पा लेता है।

1:16 लगातार मसीह के अनुग्रह की भरपूरी में जीवन व्यतीत करें।

1:17 पुराने नियम दृष्टान्त की पर दर्शायी गयी चीजों जैसे मन्दिर, रक्त बलि और सबत केवल नये नियम में आकर यीशु द्वारा प्रगट किये गये।

1:18 यीशु मसीह ने अप्रत्यक्ष परमेश्वर को हम पर प्रगट किया।

4.मनुएल 2,परिशिष्ट 8।"परमेश्वर व परमेश्वर के पुत्र का स्वभाव"

5.इस उत्पत्ति को हम मानवीय शक्ति से होने वाली उत्पत्ति से जोड़कर नहीं देख सकते हैं।

6.क्योंकि वह सर्वव्यापी है।

2. यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर व्यक्तिगत अनुप्रयोगों या रीतियों के उदाहरण

मैं मसीहियों की इस बात को सुनिश्चित करने में सहायता करना चाहता हूँ कि उन्होंने यीशु मसीह का अपने जीवन व हृदय में स्वीकार किया हो। यूहन्ना अध्याश 1 हमें चौकस करता है कि संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रेम करते हैं। वे यीशु का स्वागत नहीं करते। वे यीशु को नहीं मानते वरन उसका तिरस्कार करते हैं। वे यीशु को ग्रहण न करते वरन उसे अस्वीकृत कर देते हैं। हालांकि यीशु मसीह ने यह वायदा किया है कि, जो कोई उसे ग्रहण करेगा वह उसी क्षण परमेश्वर की सन्तान बन जाएगा और धीरे वह अपने जीवन में मसीह की समानता को प्राप्त कर लेगा।

मैं अपना जीवन व्यवस्था के अनुसार नहीं वरन अनुग्रह और सत्य के द्वारा जीना चाहता हूँ। मैं ऐसे लोगों के बीच में जीवन व्यतीत करता हूँ जो सोचते हैं कि धर्म या भले काम उन्हें उद्धार प्रदान कर सकते हैं। लेकिन यूहन्ना 1 ने मुझे सिखाया कि व्यवस्था के काम मुझे क्षमा,छुटकारा और सहायता प्रदान नहीं कर सकते। लोग यीशु को अपने जीवन व हृदय में स्वीकार करने के बाद उद्धार पाते और अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **मरकुस 15:1-16:20** में से आधे अध्याय पर तथा **1 कुरिन्थियों के 1** अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

3.याद करें। **(5)नम्रता: फिलिप्पियों 2:3-4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

4.बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। यूहन्ना 1:1-18। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 5

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **मरकुस 15:1-16:20+1कुरिन्थियों 1**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 15:1-16:20 व 1 कुरिन्थियों 1) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही चरित्र]* **(5) फिलिप्पियों 2:3-4**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) **नम्रता:फिलिप्पियों 2:3-4।** विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो,पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं,वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय**

परिचय। ईस्टर मसीही पर्व हैं जिसमें हम यीशु मसीह के पुनरूत्थान को स्मरणोत्सव के रूप में मनाते हैं। हम इस अध्याय में सीखेगें कि बाइबल यीशु मसीह के पुनरूत्थान और उसके प्रभाव के बारे में क्या सिखाती है। हम सीखेगें कि उसके पुनरूत्थान के बारे में कौन कौन सी भविष्यद्वाणियां की गयी थीं,जब वह मृतकों में से जीवन उठा तो क्या हुआ, और उसका पुनरूत्थान आपके लिए महत्वपूर्ण है।

क. यीशु मसीह के पुनरूत्थान के सम्बन्ध में भविष्यद्वाणियां

1. यीशु मसीह के पुनरूत्थान से सम्बन्धित पुराने नियम में उपलब्ध भविष्यद्वाणियां।

(1) अय्यूब 10:25-27

अय्यूब की पुस्तक सम्भवत: पुराने नियम में सबसे पुरानी पुस्तक है जिसे लगभव 1900 ई.पू लिखा गया था। इतिहास के इतने वर्षों पहले भी अय्यूब कहता है कि वह उसके उद्धारकर्ता के पुनरूत्थान के बारे में जानता है(यीशु,जो परमेश्वर है और जो पृथ्वी पर खड़ा होगा)और वह खुद भी मृतकों में से जी उठेगा। वह कहता है "मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।और मेरी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद(अर्थात उसकी मृत्यु के बाद) भी, मैं शरीर(अर्थात मेरी देह) में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा।"

(2) भजन 16:8-11

करीब 1000 ईपू राजा दाऊद ने कहा कि परमेश्वर यीशु मसीह के प्राणों को यूँ त्याग न देगा, और न ही वह अपने अभिषिक्त जन को सड़ने देगा।

(3) भजन संता 118:22-24

जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना वह ही "कोने के सिरे का पत्थर बन गया",अर्थात वह ही सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक पत्थर है(इमारत की नींव का पत्थर या कोने का पत्थर)। मसीह, जिसे यहूदी लोग तुच्छ जानेगें और क्रूस पर चढ़ा

देगें,वह ही मृतकों में से जी उठा उद्धारकर्ता बन जाएगा। । वह ही पृथ्वी पर रहने वाले हर एक व्यक्ति की मंजिल को तय करेगा। (मत्ती 21:42-44; 1पतरस 2:4-8)!

(4) यशायाह 53:11-12।

मैनुएल 5, परिशिष्ट 1 देखें। 700 ई पू, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर का दास (यीशु मसीह) मृतकों में से जी उठेगा और सदा काल तक अमर रहेगा।

(5) यशायाह 25:8

यशायाह ने लोगों के पुनरूत्थान की भी भविष्यद्वाणी की। उसने यीशु मसीह के दूसरे आगमन को देखा और भविष्यद्वाणी की,"वह मृत्यु का सदा के लिए नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभों के मुख पर से आँसू पोछ डालेगा...."यीशु अपने दूसरे आगमन पर धर्मी और दुष्ट दोनों को पुन: जीवित करेगा। वह उनके विश्वास व अविश्वास के आधार पर उनका न्याय करेगा। धर्मिया को अनन्त जीवन की मीरास मिलेगी और अविश्वासियों को अनन्त दण्ड प्राप्त होगा। (मत्ती 25:46; प्रेरितों 24:15)।

(2) यीशु के पुनरूत्थान से सम्बन्धित नये नियम में की गयी भविष्यद्वाणियां।

सिखाएं। उसने मरने और पुन: जी उठने से पहले कई बार, यीशु मसीह ने बताया था कि वह मरेगा और पुन: जी उठेग। मरकुस 8:31,9:31; और 10:33-34 में वह स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी करता हैं कि वह अपने क्रूसीकरण के तीसरे दिन जिन्दा हो जाएगा। यीशु मसीह समय अन्तराल के बारे में (तीन पूरे दिनों) बात नहीं कर रहे थे, परन्तु वह समय की ओर इशारा कर रहे थे(उसके क्रूसीकरण के तीसरे दिन के बाद)। तीन दिनों के भीतर ही वह अपने देह के मन्दिर को पुन: खड़ा कर देगा। (उदा. यूहन्ना 2:19 तीन दिनों में)।

ख. यीशु मसीह के पुनरूत्थान के इर्द गिर्द होने वाली घटनाएं।

1. यीशु मसीह के पुनरूत्थान का समय।

पढ़ें मरकुस 18:1-6। यीशु अपने क्रूसीकरण के तीसरे दिन जी उठा। वह निसान के 17वें दिन भोर को बहुत जल्दी जी उठा। बाइबल में "रविवार" को सप्ताह का पहला दिन माना जाता है। क्योंकि यीशु मसीह का पुनरूत्थान रविवार के दिन हुआ था इसी कारण सारें संसार भर में लोग ईस्टर का दिन रविवार को मनाते हैं और रविवार को ही वे अपने जीवित परमेश्वर की आराधना करने के लिए जमा होते हैं!

जबकि मरकुस "तीसरे दिन" कहावत का इस्तेमाल करता है (ग्रीक: मेटा ट्राइस हेमेरास)(मरकुस 8:31,9:31 और 10:33-34),लेकिन मत्ती ने बताया कि "तीसरे दिन" का वास्तव में क्या अर्थ है(ग्रीक : टे ट्राईट हेमेरा)(मत्ती 16:21; मत्ती 17:22-33; मत्ती 20:18-19)। यूनानी भाषा में "दिन" शब्द का अर्थ दिन का कोई भी पहर हो सकता है। यीशु मसीह शुक्रवार देर रात से लेकर रविवार की सुबह तड़के तक कब्र में ही रहे।

2. कब्र पर आने वाली स्त्री।

पढ़ें मत्ती 28:1;मरकुस 16:1, लूका 24:9-10; यूहन्ना 20:1-2।

खोजें और चर्चा करें। रविवार की सुबह तड़के कितनी महिलाएं कब्र पर आयी थीं?

नोट्स।

यीशु की कब्र पर मिलने या देखने जाने वाली महिलाओं पर लिखित लेखे के सन्दर्भ में चारों सुसमाचारों में किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं है। मत्ती संक्षेप में लिखता है कि केवल दो महिलाएं ही कब्र पर गयी थी: मरियम मगदीलीन और मरियम(यूहन्ना की माता)। मरकुस तीन महिलाओं का जिक्र करता है: मरियम मगदीलीन, मरियम जो यीशु की माता थी और शलोमी। लूका भी चार से ज्यादा महिलाओं के समूह का जिक्र करता है लेकिन नाम केवल तीन ही के बताता है: मरियम मगदीलीन, मरियम जो यीशु की माता थी और जोएना। यूहन्ना कहता है कि कब्र पर एक से ज्यादा महिलाएं थी: (क्योंकि मरियम मगदीलीन ने कहा: "हमें" नहीं पता...)(यूहन्ना 20:2)। फिर भी यूहन्ना अपने लेखे को मरियम मगदीलीन तक सीमित रखता है। अत: सच्चाई यह है कि कब्र पर करीब चार महिलाओं से ज्यादा महिलाएं थी लेकिन हर एक प्रचारक ने अपने तरीके से घटना का वर्णन किया है।

स्त्रियों के कब्र पर आने के समय को लेकर भी कोई विरोधाभास नहीं था। जब वे कब्र पर जाने के लिए तैयार हुए उस समय अन्धेरा था लेकिन जब वे कब्र पर पहुँचे तो सूर्य उदय हो चुका था(मरकुस)।

3. कब्र पर पहलेदारों का ठहराया जाना।

पढ़ें मत्ती 17:62-28:15

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह निश्चय ही जी उठा है प्रमाणों को पहरेदारों की उपस्थिति किस प्रकार अधिक पुख्ता करती है?

नोट्स।

यीशु मसीह की देह को उसके अनुयायी चुरा न सके और यह न कह सके कि यीशु जीवित हो गया है इस कारण सरकार ने मुख्य याजक और फरीसियों से कहा कि वे वहां पर पहरेदारों को नियुक्त कर दें और कब्र को पत्थर से बन्द करके उस पर एक मुहर लगा दी जाए। कब्र पिलातुस की मुहर की छाप द्वारा मुहरबन्द पत्थर द्वारा पूरी तरह बन्द व सुरक्षित थी। करीब दस से तीन सैनिकों के बीच में पहरेदारों को कब्र की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया था,ताकि कोई उसके नज़दीक जाने की हिम्मत न कर सके।

इसके अलावा, यीशु मसीह के पुनरूत्थान के समय बड़ा भुईडोल हुआ और सैनिकों को डर के मारे लकवा मार गया। उसके बाद यहूदी धार्मिक अगुवों ने सैनिकों को यह कहने के लिए बड़ी रकम घूस के रूप में दी कि वे लोगों में यह बात फैला दें कि जब सैनिक सो रहे थे तो यीशु के चेलों ने यीशु की देह को चुरा लिया। हालांकि रोमी सिपाही कभी भी अपने कर्तव्यों में ढिलाई नहीं बरतते हुए सोए नहीं होगें। आज भी कई धार्मिक अगुवों के द्वारा वही अफवाह फैलाई जाती है कि यीशु का पुनरूत्थान नहीं हुआ था।

4. कब्र के मुंह को बन्द करने वाला पत्थर।

पढ़ें मरकुस 15:46-16::4; मत्ती 28:2

खोजें और चर्चा करें। कब्र के मुंह को बन्द करने वाले पत्थर को किसने हटाया?

नोट्स।

कब्र के मुंह पर गोल चपटा बड़ा पत्थर लुढ़का कर रखा गया था। कब्र में प्रवेश करने के लिए, चार बलवन्त पुरूषों की जरूरत पड़ती थी जो उस पत्थर को ऊपर ढलाव की ओर चढ़ा सकें। यीशु मसीह के चेले मौजूद नहीं थे और अगर होते भी तो सैनिक उन्हें ऐसा नहीं करने देते। लेकिन हम मत्ती में पढ़ते हैं कि बढ़ा भूइडोल हुआ और स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उतरा। इस स्वर्गदूत ने उस पत्थर को लुढ़काया(ग्रीक :अपोकुलियो)(सामान्य भूलकाल) (सम्भवत: उसने उस पत्थर को खांचे पर से उठाकर ज़मीन पर समतल रख दिया) और फिर उस पर बैठ गया। कब्र के मुंह पर से बिना किसी मनुष्य की सहायता के हटाया जान भी मृत्यु पर परमेश्वर की विजय का प्रमाण था। स्त्रियों ने यह घटना होते हुए अपनी आंखों से नहीं देखी। उन्होंने केवल परिणाम को देखा। स्वर्गदूत ने पत्थर यीशु को कब्र से बाहर निकालने के लिए नहीं हटाया था वरन इसलिए कि महिलाएं और दूसरे लोग यह देखने के लिए कब्र के *भीतर* जा सकें।

5. कब्र पर आया स्वर्गदूत।

पढ़ें मत्ती 28:2-3; मरकुस 16:5; लूका 24:4; यूहन्ना 20:11-12।

खोजें और चर्चा करें। कब्र पर कितने स्वर्गदूत थे?

नोट्स।

मत्ती ने एक स्वर्गदूत का जिक्र किया है जो बाहर उस बड़े पत्थर पर बैठ गया था। उसका रूप बिजली के समान और उसके कपड़े सफेद बर्फ के समान थे। मरकुस जिसने अपना सुसमाचार पतरस की गवाही के आधार पर लिखा था, लिखत है कि एक स्वर्गदूत कब्रं के भीतर भी बैठा हुआ था। लूका ,जिसने उन स्त्रियों से बातचीत की थी(लूका 1:1-4), दो स्वर्गदूतों के बारे में बताता है, कब्र के भीतर महिलाओं के पास में आकर खड़े हो गये और उनके कपड़े प्रकाश से चमक रहे थे। यूहन्ना बताता है कि बाद में वे मरियम मगदीलिनी आकर कब्र के बाहर रोने लगी। लेकिन जब वह कब्र में प्रवेश करने के लिए झुकी, तो उसने दो स्वर्गदूतों को अर्थात एक को यीशु के पैरों के पास और दूसरे को उसके सिर के पास बैठे हुए देखा था। यहां पर भी हम चारों सुसमाचारों में किसी प्रकार के विरोधाभास को नहीं देखते हैं,क्योंकि मत्ती और मरकुस ने यह नहीं कहा कि वहां केवल एक ही स्वर्गदूत था। वहां कम से दो स्वर्गदूत थे जो उस कब्र कें पास घूम रहे थे।

6. कब्र में पड़े हुए लिनेन के कपड़े।

पढ़ें यहन्ना 19:38-20:9; मरकुस 16:1-8 ;लूका 24:1-12।

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार यीशु की देह के बिना उसके लिनेन से बने कपड़े इस बात को और पुख्ता करते हैं कि यीशु मसीह नि:सन्देह मृतकों में से जीवित हुआ था?

नोट्स।

उस समय की रीति के अनुसार, अरिमितिया के युसुफ और नीकदूमुस ने यीशु की देह को बहुत बार लिनेन के वस्त्र से लपेटा और साथ में सुगन्धित द्रव्य और मसालों को रखा। उसके पश्चात उन्होंने यीशु की देह को नयी कब्र में रखा जो युसुफ की थी। जब स्त्रियां यीशु की कब्र पर पहुँची तो उन्हें पता चला कि पत्थर कब्र के मुँह पर से लुढ़का पढ़ा है। एक

स्वर्गदूत ने उन्हें कब्र में आने का और उस स्थान को देखने का आमन्त्रण दिया जहां यीशु को रखा गया था। और उन्होंने भीतर जाकर देख तो यीशु की देह वहां पर नहीं थी। कांपते और रोती हुई, वे कब्र से बाहर भागीं। पहले तो उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा(मरकुस) बाद में उन्होंने वापस जाकर यीशु के चेलों को बताया (मत्ती और लूका)।

यूहन्ना सुसमाचार कहता है कि मरियम मगदलीनी ने पत्थर को वहां से लुढ़का हुआ देखा, और उसने सोचा कि यीशु की देह को उठाकर किसी और स्थान पर रख दिया गया है। इस कारण वह दौड़कर यूहन्ना और पतरस के पास बताने के लिए गयी। मत्ती और लूका कहते हैं कि उस स्थान को देखने के बाद जहां यीशु को रखा गया था और स्वर्गदूतों द्वारा बताये जाने के बाद कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है, वे इस घटना के बारे में बताने के लिए यीशु के चेलों के पास गयीं। फिर भी, चेलों ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि "क्योंकि उनकी बातें उन्हें कहानी सी जान पड़ीं"(लूका 24:11)।

उसी बीच पतरस और यूहन्ना कब्र की ओर लपके, तो उन्होंने कब्र में घुसकर देखा कि बिना यीशु की देह के उसके कपड़े वहां तह बनाकर रखे हुए हैं। उन्होने उस कपड़े को भी देखा जो यीशु के सिर पर बांधा गया था, उसके सिरहाने तह बनाकर रखा हुआ देखा। यह सम्भव है कि लिनेन के कपड़े की पट्टियों में एक खाली कृमिकोष विकसित हुआ हो,जो इस बात को प्रमाणित करता है कि लिनेन से बनी कपड़े की पट्टियां भी यीशु की देह को पुर्नजीवित होने सक नही रोक सकी और वह उसे भेदकर बाहर निकल गया। इसके अलावा उसके कपड़ों का तह बनाकर वहां रखा होना इस बात को प्रमाणित करता है कि न तो चेले और न ही उसका कोई शत्रु उसकी देह को चुराकर ले गया। इतने प्रमाण पतरस और यूहन्ना के लिए यह विश्वास करने हेतू काफी थे कि यीशु मसीह मुर्दों में से जीवित हो गया है। शुरू में तो उन्हें भजन संहिता 16:10-11, भजन 118:22-24 और यशायाह 53:11-12 समझ नहीं आया होगा। लेकिन जो कुछ उन्होंने उस खाली कब्र में देखा उसे देखकर उनका विश्वास जागा और वे पुनरूत्थान के अभिप्राय को समझने लगे। वे समझ गये ही पुनरूत्थान परमेश्वर की योजना का एक 'आवश्यक' भाग है(लूका 9:22, 44-45; 18:31-34;22:37; 24:44)! पिन्तेकुस्त के बाद (अर्थात पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद) यह और ज्यादा स्पष्ट हो गया।

7.गलील में एकत्र होना।

पढ़ें मत्ती 28:5-7,16-17;लूका 24:33-36;यूहन्ना 20:17-20।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद यीशु अपने चेलों से कहां मिला?

नोट्स।

स्वर्गदूत ने चेलों को बताया कि यीशु अपने चेलों से पहले गलील पहुच जाएगा। फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु का प्रथम प्रगटीकरण गलील में नहीं, लेकिन यरूशलेम(यहूदिया में) में था। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि यीशु में प्रतिज्ञा की गयी बातों से अधिक करने का अधिकार व योग्यता है। लेकिन बाद में जब वह गलील को गया, तो इस बात के कोई प्रमाण नहीं है कि वह अपने चेलों के बाद में वहां पहुंचा था।

8.यीशु मसीह के पुनरूत्थान के चश्मदीद गवाह।

पढ़ें प्रेरितों 1:3; मरकुस 16:9-14; 1कुरि 15:1-8

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद उसका लोगों पर प्रगट होना एतिहासिक प्रमाणों में वृद्धि करता है कि यीशु मसीह निश्चय ही मृतकों में से जी उठे थे।

नोट्स।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान गुप्त रूप में नहीं हुआ। जिस प्रकार से प्राकृतिक विज्ञान अनुभवी परीक्षणों और प्रमाणों पर आधारित होता है,उसी प्रकार इतिहास का विज्ञान विश्वासयोग्य गवाहियों पर आधारित होता है। यीशु मसीह के पुनरूत्थान के सैकड़ों चश्मदीद गवाह थे। हालांकि आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान के पास आलौकिक कामों के बारे में कोई सफाई मौजूद नहीं है, यीशु मसीह का पुनरूत्थान एक ऐसा ऐतिहासिक कार्य है जिसका इनकार नहीं किया जा सकता।

प्रेरितों 1:3 में हम पढ़ते हैं कि 40 दिनों के अन्तराल में यीशु मसीह ने अपने चेलों को बहुत से ऐसे प्रमाण दिये जिससे साबित हो कि वह जीवित है। जब आप चारों सुसमाचारों को देखते हैं, तो आप पाएगें कि जिस रविवार को वह जी उठा उसी दिन वह पाँच बार लोगों पर प्रगट हुआ:

---

1 ग्रीक:इन्दुलीसो(सिद्ध काल)। शरीर को लिलेन के कपड़े से "लपेटकर"(लूका) और सिर से बंधा कपड़ा "लपेटकर"(यूहन्ना 20:7)

(1) मरियम मगदलीनी पर प्रगट हुआ

सूर्य उदय होने से पूर्व जब वह मरियम मगदलीनी कब्र पर पहुँचा, तो उसने पाया कि पत्थर को उठाकर वहां से अलग रख दिया गया था (पूर्ण काल)। इस कारण वह बताने के लिए यूहन्ना और पतरस के पास भागी। उसके बाद यूहन्ना और पतरस आगे आगे भागे और मरियम उनके पीछे पीछे भागी। जब उन्होंने देख लिया कि कब्र खाली है और वहां पर कपड़ों को छोड़कर और कोई नहीं है तो वे वापस घर आ गये। जब मरियम मगदलीनी कब्र पर वापस आयी, तो वहां न पाकर वह रोने लगी क्योंकि यीशु मसीह की देह को वहां पर न पाया और वह नहीं जानती थी उन्होंने उसे कहां रखा था। तब यीशु उस पर प्रगट हुआ और उसने यीशु के पैरों गिर पड़ी। यीशु ने उससे कहा कि वह चेलों के पास जाकर यह समाचार दे कि वह परमेश्वर पिता के पास स्वर्ग में जा रहा है। यह रविवार की सुबह पहली बार था जब यीशु मसीह किसी पर प्रगट हुआ(मरकुस 16:9;यूहन्ना 20:11-18)।

(2) दूसरी स्त्रियों पर प्रगट होना।

जब सुबह भोर होने से पहले स्त्रियां कब्र पर पहुँची, तो उसने पाया कि पत्थर कब्र के मुँह से लुड़का हुआ पड़ा है (ग्रीक:अपोकुलिओ) (पूर्णकाल)। वे कब्र में गये लेकिन उन्होनें वहां देह को नहीं पाया। वहां पर दो स्वर्गदूत थे जिन्होने उससे बातें की। लेकिन यूहन्ना और पतरस के अलावा और किसी ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया जो पहले की कब्र पर जाकर आ चुके थे। और उन स्त्रियों ने भी जो कब्र पर दुबारा आयी थी(लूका 24:9-11)। रास्ते में कहीं वह अचानक से उन्हें मिला और वे भी यीशु के पैरों पर गिरकर उसकी आराधना करने लगीं। यीशु ने उनसे कहा कि वे चेलों के पास जाएं और उनसे गलील में जाने को कहें जहां यीशु उनसे मिलेगा। यह दूसरी बार था जब वह रविवार के दिन प्रगट हुआ(मत्ती 28:9-10)।

(3) पतरस पर प्रगट होना।

उसके पश्चात यीशु पतरस पर प्रगट हुआ(लूका 24:34)।

(4) इम्माऊस के मार्ग पर अपने अनुयायियों पर प्रगट होना।

यह रविवार दोपहर की बात है(लूका 24:13-33)

(5) अपने चेलों पर प्रगट होना जब थोमा उनमें नहीं था।

रविवार की शाम को जब चेले एक कमरे में दरवाजा बन्द करके एकत्र थे यीशु उनके बीच प्रगट हो गया। (लूका 24:36-43;यूहन्ना 20:19-23)

(6) अपने चेलें पर प्रगट होना जब थोमा भी उनमें शामिल था।

एक सप्ताह के बाद यीशु रविवार को ही यीशु अपने सभी चेलो पर प्रगट हुआ जिसमे थोमा भी शामिल था(यूहन्ना 20:24-31)।

(7) अन्य जगहों पर प्रगट होना।

उसके बाद यीशु तिरबियास की झील के पास अपने चेलों पर प्रगट हुआ(यूहन्ना 21:1-14), ग्यारह चेलों को वह गलील की पहाड़ियों पर दिखाई दिया (मत्ती 28:16-20), 500 से ज़्यादा भाईयों को वह एक बार में प्रगट हुआ, वह याकूब पर प्रगट हुआ(जो यीशु का भाई था, जो बाद में यरूशलेम कलीसिया का अगुवा ठहरा और जिसने याकूब की पत्री को भी लिखा), सारे प्रेरितों पर प्रगट हुआ (1 कुरि 15:6-7), यरूशलेम में प्रेरितों पर प्रगट हुआ(प्रेरितों 1:4), अपने स्वर्गारोहण से पूर्व वह जैतून के पहाड़ पर अपने 11 चेलों को दिखाई दिया(प्रेरितों 1:6)और अन्त में वह दमिश्क के मार्ग पर पौलुस को दिखाई दिया (1कुरि 15:8)।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान एक अति प्रमाणित ऐतिहासिक घटना है।

ग.मसीहियों के लिये यीशु मसीह के पुनरूत्थान का क्या अभिप्राय है

सिखाएं। इतिहास का कोई भी भविष्यद्वक्ता या फिर जिसने खुद भविष्यद्वक्ता होने का दावा किया हो मृतकों में से जीवित नहीं हुआ। दूसरों धर्मो के सभी नबी व भविष्यद्वक्ता सभी अपनी अपनी कब्रो में विश्राम कर रहे हैं। यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा मनुष्य है जो मृतकों में से जी उठा और आज भी जीवित है।

1.यीशु मसीह यह दिखाने के लिए मृतकों में से जीवित हुए कि परमेश्वर पिता ने उद्धार के प्रति उसके किये हुए कार्यों को स्वीकार कर लिया हे।

पढ़ें फिलिप्पियों 2:5-11;1कुरिन्थियों 15:42-46; रोमियों 1:3-4।

(1) यीशु मसीह के पुनरूत्थान (सारे आकाशमण्डल में सर्वोच्च स्थान पर उठा लिये जाने)का प्रथम परिणाम यह है कि इससे प्रमाणित होता है कि परमेश्वर पिता ने उद्धार(प्रायश्यित का बलिदान) के निमित्त किये गये कामों को स्वीकार कर लिया है।

यीशु मसीह ने अपने आप को इस हद तक नम्र किया और क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बना रहा, इसलिए परमेश्वर ने उसे अति महान किया और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि यीशु के नाम के आगे हर एक घुटना टिके!

रोमियों 1:3-4 में लिखा है,"अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी;वह शरीर के भाव से तो दाऊद के वंसा से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।"

(2) यीशु मसीह का ईश्वरीय व मानवीय स्वभाव।

रोमियों 1:3-4 में यीशु मसीह की मानवीय स्वरूप में उच्चतम व निम्नतम स्थिति को दर्शाया गया है ।

यह हमारी समझने में सहायता करता है कि इस अनुच्छेद का अर्थ क्या है,"परमेश्वर का सुसमाचार" उसके अनन्त पुत्र के (उसके ईश्वरीय स्वभाव) सन्दर्भ में है जो उसके मानवीय स्वभाव के दो चरणों प्रगट हुआ: अर्थात,उसके पुनरूत्थान से पहले और उसके पुनरूत्थान के बाद।

(3) यीशु मसीह के दो मानवीय स्वभाव।

उसके पुनरूत्थान से पहले उसके मानवीय स्वभाव को प्रगट किया गया जिसे "शारीरिक भाव से" सम्बोधित किया जाता है(1कुरि15:50),जिसका अर्थ है, उसकी सम्पूर्ण मानवी कमजोरिया,क्योंकि वह दाऊद के वंश में मरियम से पैदा हुआ था, और दाऊद और मरियम दोनों में ही आदम के पाप में गिरने के कारण पतित मानवीय स्वभाव पाया जाता है(याकूब 14:4; भजन 51:5)। यीशु मसीह ने देहधारण के दौरान मानवीय स्वभाव को धारण किया और बिना अपने ईश्वरत्व का त्यागे मानवीय स्वरूप और अपनी सृष्टि में प्रवेश कर गया। इसे उसके मानवीय स्वभाव की निन्दित स्थिति कहा जाता है।

उसके पुनरूत्थान के बाद उसका मानवीय स्वभाव "पवित्रता की आत्मा" के नाम से जाना जाता है(1कुरि 15:44-45),अर्थात वह पूरी तरह पवित्र आत्मा से पूर्ण था, और वह "सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र"(अर्थात परमेश्वर का सामर्थी पुत्र जो सारे चमत्कारी कार्य करता है) "ठहराया"(ग्रीक: होरिजों: अनावृत, नियुक्त,अधिष्ठापित,घोषित,ठहराया गया)गया था।

उसके पुनरूत्थान के समय में यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव को महिमान्वित किया गया था,वह हर एक वस्तु और हर एक जीव पर प्रभुता करने के लिए नियुक्त किया गया था(मत्ती 28:18;इफिसियों 1:20-23;प्रकाशितवाक्य 19:16)। इसे हम उसकी मानवीय अवस्था को महिमान्वित दशा कहते हैं।

रोमियों 1:3-4 में मसीह के मानवीय स्वभाव व उसके ईश्वरीय स्वभाव में कोई विरोधाभास सामने नहीं आता है। यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र बन नहीं गये-वरन वह तो आदि काल से ही परमेश्वर का पुत्र थां। उसका मानवीय स्वभाव उसका ईश्वरीय स्वभाव नहीं बना। परमेश्वर के पुत्र में उसके देहधारण करने से पूर्व,उसके पुनरूत्थान से पहले व उसके मृतकों में से जी उठने के बाद भी ईश्वरीय स्वभाव विद्यमान था।

रोमियों 1:3-4 में मसीह के जन्म के पश्चात और उसके पुनरूत्थान से पहले की दशा की तुलना उसके मृतकों में से जीवउठने के पश्चात उसकी मानवीय स्वभाव की दशा से की गयी है। दोनों ही समयान्तराल में चाहे वह उसके पुनरूत्थान से पहले का समय हो या उसके पुनरूत्थान के बाद का समय उसका मानवीय स्वभाव उसके ईश्वरीय स्वभाव से अलग नहीं हुआ।

रोमियों 1:3-4 दो बातों में भेद प्रगट करता है:

- उसके जन्म के पश्चात उसके मानवीय स्वभाव की निन्दित दशा
- मृतकों में से जी उठने के पश्चात उसके मानवीय स्वभाव की प्रशसां।

पद 3 हमे उन विशेषताओं के बारे में बताता है जो उसके मनुष्य के रूप में जन्म लेने के कारण उसके मानवीय स्वभाव को व्यक्त करती है तथा पद 4 हमें उसके मृतकों में से जी उठने के मानवीय देह के बारे में बताता है।

(4) यीशु मसीह का जन्म

उसके जन्म की इस ऐतिहासिक घटना ने उसे ऐतिहासिक परिस्थितियों के अधीन कर दिया जिसके तहत उसे दाऊद के घराने में पैदा होना था: वह यहूदा के गोत्र में पैदा हुआ, यहूदियों की कानून व्यवस्था के अधीन तथा एक कुंवारी मरियम से पैदा

हुआ। उसके जन्म के द्वारा उसने पाप को छोड़ पवित मानव के सम्पूर्ण दशा को ग्रहण किया। उसका मानवीय स्वभापव "कमज़ोर",मगर इसलिए नहीं कि उसने कोई पाप किया था,वरन संसार भर के पापों के कारण, जो उसने अपने ऊपर उठा लिया और इन्ही पापों के कारण वह मरने भी जा रहा था।

(5) यीशु मसीह का पुनरूत्थान।

उसके पुनरूत्थान की ऐतिहासिक घटना घोषित करती है कि ऐतिहासिक व अनन्त दशा में वह पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा नियुक्त था। उसके पुनरूत्थान के द्वारा उसने मानवीय कमजोरियों व पाप और मृत्यु से जुड़ी हर चीज को अलग कर दिया। उसके पुनरूत्थान के बाद से उसका स्वभाव पूरी तरह से रूपान्तरित और पूरी तरह पवित्र आत्मा के वरदानों से परिपूर्ण हो गया, वह इस हद तक पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित हो गया कि हम उसे पवित्र आत्मा के रूप में ही जानने लगे। इसी कारण 2 कुरिन्थियों 3:17 में मसीह को "आत्मा " करके सम्बोधित किया गया है। "परमेश्वर आत्मा है"। और इसी कारण 1 कुरिन्थियों 15:45 में मसीह को "जीवन दायक आत्मा"के नाम से दर्शाया गया है! इसी तरह से रोमियों 1:4 में उसके पुनुरूत्थित मानवीय स्वभाव को "पवित्रता की आत्मा" के रूप में सम्बोधित किया जाता है। वह सर्वशक्तिमान के रूप में ठहराया गया और उसे विजयी शक्ति से परिपूर्ण किया गया था, जो सब बातों में शिरोमणी है(मत्ती 28:18) जो उसे उसकी मानवीय दशा में पहले भी दी जा सकती थी। उसके पुनरूत्थान के बाद, यीशु मसीह का मानवीय स्वभाव पवित्र आत्मा की सिद्ध सामर्थ्य और सम्पूर्ण प्रभुता को दर्शाता है।

यीशु मसीह ने दावा किया कि वह संसार का उद्धारकर्ता और सारे जगत का प्रभु है। उसका पुनरूत्थान उसके सारे दावों की वैद्यता का प्रमाण है। और यह उसकी सारी शिक्षाओं का सर्वशक्तिशाली प्रदर्शन है।

2. यीशु मसीह नये नियम की कलीसिया को स्थापित करने के लिए जी उठा।

पढ़ें. यूहन्ना 2:18-22; मरकुस 14:57-58

(1) मसीह के पुनरूत्थान का दूसरा परिणाम यह है कि यीशु मसीह ने नयी अराधना पद्धति के साथ नये मन्दिर का निर्माण किया, जिसे हम कलीसिया के नाम से भी जानते हैं और जिसमें आत्मा और सच्चाई के साथ परमेश्वर पिता की आराधना की जाती है।

यूहन्ना 2:18-22 में यीशु की मृत्यु का अर्थ पुराने नियम के मन्दिर को उसकी पुरानी आराधना पद्धतियों (व्यवस्था के अनुसार) के साथ तोड़ना है। और इसमें यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा नये नियम के मन्दिर अर्थात कलीसिया को उसकी नयी पद्धति के साथ (आत्मा और सच्चाई में आराधना)स्थापित करने को दर्शाता गया है।

(2) दृष्टान्त व उनके अर्थ।

जब यीश ने कहा,"इस मन्दिर को गिरा दो और मैं इसे पुन: तीन दिन में खड़ा कर दूंगा?" यह वाक्य यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुन: जीवित होने के लिए दृष्टान्त की रीति पर कहा गया वाक्य है। यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसके पुनरूत्थान से करीब तीन वर्ष पहले ही यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के बारे में भविष्यद्वाणी कर दी थी। यह वाक्य असल में एक पहेली थी क्योंकि इन शब्दों का दोहरा अर्थ था। "मन्दिर" का अर्थ पत्थरों से बनी हुई इमारत या मसीह की देह दोनों हो सकते हैं। "तोड़ने " का अर्थ इतारत का तोड़ा जाना भी हो सकता है या यीशु मसीह की देह की हत्या करना भी हो सकता है। और "जी उठने "का अर्थ इमारत को पुन: खड़ा करने से भी हो सकता है और मसीह की देह का पुनरूत्थान भी हो सकता है।

इस पूरे दृष्टान्त का अर्थ इस प्रकार से है: " मुझे क्रूस पर चढ़ाने के द्वारा, तुम यहूदी लोग मेरी देह के मन्दिर को ढा रहे हो, फिर भी मैं इसे तीन दिनों के बाद मैं पुन: जीवित हो जाऊँगा! मेरी हत्या करने के द्वारा तुम यरूशलेम में पत्थरों से बने मन्दिर को उसकी पुरानी अराधना की पद्धति के साथ तोड़ रहे हो। लेकिन मेरे पुनरूत्थान के परिणाम स्वरूप, मैं नयी आराधना पद्धति के साथ नये लोगों को बनाकर खड़ा कर दूंगा,अर्थात नयी कलीसिया को जो परमेश्वर पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में होकर किया करेगी(यूहन्ना 4:23-24)।"

(3)कोई भी दृष्टान्त से उसके मतलब को अलग नहीं किया जा सकता।

शास्त्र की भाषा में: रूप को कभी उसके प्रतिरूप से अलग नहीं किया जा सकता। "एक रूप" एक व्यक्ति,वस्तु या घटना है जो एक दृष्टान्त के रूप में प्रगट किया जाता है। उसी दृष्टान्ट की भविष्य में प्रगट होने वाली वास्तविकता उसका "प्रतिरूप" कहलाता है। इस्राएल का तम्बू या मन्दिर एक दृष्टान्त है जिसका अर्थ वह स्थान है जहां पर परमेश्वर का आत्मा वास करता है(1इतिहास 13:6)। इसका प्रतिरूप मसीह की देह है, जिसको और गहन मायनों में परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान कहा जा सकता है। "मसीह में होकर ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सजीव रूप में वास करती है।"(कुलुस्सियों 2:9;

कुलुस्सियों 1:15;यूहन्ना 1:1,18;14:9-10)। अत: जो कोइ दूसरे (मसीह की देह को)को नाश करता है,वह पहले को भी(आराधना की पुरानी पद्धति के साथ यरूशलेम के मन्दिर को)नाश करता है।

अत: जब यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, मन्दिर व उसके सारे अनुष्ठानों का कोई अर्थ नहीं रहा। इसी कारण जब यीशु मसीह क्रूस पर मरा, मन्दिर का पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक दो भागों में फट गया(मत्ती 27:51)। इसी कारण यीशु मसीह के पुनरूत्थान के बाद मसीही प्रचारकों ने प्रचार किया कि अब उस इमारत का कोई कार्य नहीं रह गया। "परमप्रधान उस हाथ के बनाए मन्दिर में नहीं रहता है"(प्रेरितों 7:48-49;17:24-25)। 70 ई.प. में यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के भयानक अपराध के परिणामस्वरूप पत्थरों से बना मन्दिर भी ढा दिया गया(लूका 19:41-44)। यीशु के पुनरूत्थान के बाद से यहूदी या गैर यहूदी विश्वासी यीशु मसीह में होकर परमेश्वर पिता के साथ सीधे पहुँच सकते हैं(इफिसियों 2:18;3:12)[2]।

(3)यीशु मसीह की देह का पुनरूत्थान नये नियम की कलीसिया की स्थापना को दर्शाता है।

यीशु मसीह के खिलाफ पेश की गयी गवाही झूठी थी क्योंकि उसके शब्दों का अर्थ यह लगाया गया था कि वह वास्तव में ईंटों से बने यरूशलेम के मन्दिर की इमारत को तोड़ने और फिर से बनाने के बारे में कह रहा है। जबकि, यीशु मसीह की बात का मतलब किसी दूसरे मन्दिर को बनाने से था,"जो किसी मनुष्य या मिटटी या गारे ने नहीं बनता"(मरकुस 14:58)। इस "दूसरे मन्दिर" का अर्थ कलीसिया है, जो नये नियम में लोगों अर्थात "जीवित पत्थरों" से मिलकर बनता है, जिसे कलीसिया या विश्वासियों की मण्डली अर्थात "परमेश्वर का मन्दिर" भी कहा जाता है(1 कुरि 3:16-17; 2 कुरिन्थियों 6:16; 2 थिस्लुनिकियों 2:4; 1 पतरस 2:4-10)! कलीसिया या नये नियम का मन्दिर वह स्थान है जहां पर परमेश्वर अपनी आत्मा में होकर वास करता है(इफिसियों 2:21-22)। और वे जीवित पत्थर जिनके द्वारा यह नये नियम का मन्दिर बना है वे सारे संसार में रहने वाले मसीही जन हैं(1पतरस 2:9-10)।

(4)यहूदी इस बात को समझने में असफल रहे कि दृष्टान्त के तौर पर कही गयी बात का अर्थ यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान से था।

यूहन्ना 2 में यहूदी केवल यरूशलेम में पत्थरों से बने मन्दिर को ही देख पाये, जिसे बनाने में हेरोद को 46 वर्ष का समय लगा था। यदि उन्होंने विश्वास करने वाले हृदय के साथ वचन को पढ़ा होता तो उन्हें पता चलता कि ईटों से बना और अनुष्ठानों से सुसज्जित यरूशलेम का मन्दिर मात्र एक दृष्टान्त(छवि)था, जिसे किसी और बात में पूरा होना था।

पुराने नियम के निम्नलिखित अनुच्छेद दर्शाते हैं कि ईटों से बना यह मन्दिर, वेदी और बलिदान सब अस्थाई थे।

- 1राजा 8:27 और 2 इतिहास 2:5-6 स्पष्ट रूप में हमें शिक्षा देते हैं कि जीवित परमेश्वर, जिसने सारी कायनात को बनाया है वह मनुष्यों के हाथों से बनाये मन्दिरों में वास नहीं करता। इसीलिए स्तीफनुस और पॉलुस हमें सिखाते हैं कि,"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता;न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वांस और सब कुछ देता है। (प्रेरितों 7:48-49; 17:24-25)
- यिर्मयाह 3:16 में, यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की उसका विचार भी लोगों के मन में न आएगा, और न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे और न ही उसकी मरम्मत की जाएगी।
- इब्रानियों 10:5-7 में यूनानी भाषा में पुराने नियम से भजन संहिता 40:6-7 को उद्धत किया गया है। वहा लिखा है,"मेल बलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता, तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं,होम बलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा।तब मैंने कहा,"देख,मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।" यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि यीशु मसीह की मृत्यु में पुराने नियम के सारे बलिदान पूर्ण हो जाते हैं।
- केवल यहूदी ही नहीं यीशु मसीह के चेले भी देखने में नाकमायाब रहे कि जिस "मन्दिर" के बारे में यीशु यूहन्ना 2 में बात कर रहे थे, वह स्वयं उसकी देह का मन्दिर था। केवल यीशु के तीसरे दिन मुर्दों में जी उठने के बाद वे यीशु की बातों के आत्मिक मतलब को समझ पाये थे!

2.इसी लिए "ट्रिब्यूलेशन टेम्पल" और "मिलेनियल टेम्पल" की व्यवस्थित शिक्षा देना बिल्कुल गलत है।

3. यीशु मसीह मसीहियों को एक नया शुद्ध जीवन प्रदान करने के लिए जी उठे।

पढ़ें रोमियों 6:1-7।

(1) यीशु मसीह के पुनरूत्थान का तीसरा परिणाम यह है कि यीशु मसीह मसीहियों को वर्तमान में एक नया व शुद्ध जीवन प्रदान करता है।

विश्वास के द्वारा(रोमियों 5:1;इफिसियों 1:13) ,विश्वासी आत्मिक तौर पर यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान से जुड़ गये हैं। रोमियों 6:1-7 में मसीह के पुनरूत्थान के साथ उनकी एकता प्राथमिक तौर पर पृथ्वी पर वर्तमान में रूपान्तरित जीवन व भविष्य में उनकी पुनरूत्थित देह को दर्शाती है। रोमियों 6:5 के आधार पर यह तर्क सामने आता है कि मसीह की मृत्यु और उसके दफन में एक होने को उसके साथ पुनरूत्थान में धनिष्टता से अलग नहीं किया जा सकता। मूल ग्रीक भाषा में भविष्यकाल भविष्य के कामों को नहीं दर्शाता वरन वर्तमान के निश्चय को प्रगट करता है। यह बात सुनिश्चित है कि मसीही लोग मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में धनिष्ठता से एक हो गये हैं और जिसके परिणाम स्वरूप एक तरफ तो उन्हें "धर्मी ठहराया गया है" और दूसरी ओर नैतिक पवित्रता प्राप्त हुई है। इसी तरह से, यह सुनिश्चित है कि मसीही घनिष्ठता से मसीह के पुनरूत्थान में एक हो चुके हैं और इसका परिणाम,"पवित्र जीवन" हुआ है। कानूनी तौर पर धर्मी ठहराये जाने का अर्थ है कि विश्वासियों को पाप के दण्ड से छुटकारा मिल चुका है। उन्होंने क्षमा पायी है,उन्हें धर्मी ठहराया गया और धर्मी जानकर ही व्यवहार किया गया है। नैतिक पवित्रता का मतलब है कि विश्वासियों को पाप की शक्ति से छुटकारा मिल गया है। वे अब अपने पापम स्वभाव के गुलाम नहीं वरन शुद्धता में उन्नति करने के योग्य हैं।

प्रायश्चित के तौर पर यीशु मसीह की मृत्यु धर्मी ठहराये जाने के लिए जरूरी थी और उसके कारण निश्चय ही विश्वासियों को धर्मी ठहराया गया है। इसी प्रकार से महिमित देह में यीशु मसीह का पुनरूत्थान भी विश्वासियों के पवित्रीकरण के लिए जरूरी था और जिसका परिणाम निश्चय तौर पर उनका पवित्रीकरण होगा। मसीहियों को निश्चित तौर पर इस धरती पर रहते हुए पवित्रता के क्षेत्र में मसीह के समान बनना चाहिए। रोमियों 6 की सारी चर्चा धर्मी ठहराये जाने और पवित्रीकरण के बीच सम्बन्ध के इर्द गिर्द की घूमती है।

(4)यीशु मसीह भविष्य में देह के पुनरूत्थान को सुनिश्चित करने के लिए पुन: जी उठा।

पढें. यूहन्ना 5:28-29; 1 कुरिन्थियों 15:42-54; फिलिप्पियों 3:20-21;1 थिस्लुनिकियों 4:14-16।

(1) मसीह के पुनरूत्थान का चौथा परिणाम यह था कि मसीहियों को यीशु के दूसरे आगमन पर यीशु के समान जी उठने का निश्चय प्राप्त हो गया।

यीशु मसीह का पुनरूत्थान इस बात की गारन्टी है कि मसीहियों की देह भी मृतकों में जिलायी जाएंगी। यीशु मसीह के पुन:आगमन पर, जितने मसीहियों ने इस धरती पर जीवन व्यतीत किया है वे तुरन्त मुर्दों में से जी उठेंगे और अनन्त मानवीय आत्मा में जुड़ जाएंगे जो यीशु मसीह के साथ आयी(1थिस्लुनिकियों 4:14;कुलुस्सियों 3:4)। और जितने मसीही लोग आज जीवित हैं यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पलक झपकते ही आत्मा में (1कुरिन्थियों 15:51-52) और देह में (फिलिप्पियों 3:21)रूपान्तरित हो जाएंगे। अत: सारे मसीही यीशु मसीह के समान अनन्त जीवन के लिए स्वर्ग और नयी धरती पर महिमित अमर आत्मा और देह प्राप्त करेगें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

अपनी बारी आने पर आपने जो कुछ आपने सीखा है *उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*
या समूह को दो या तीन भागों में बांट लें और आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण** : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.यूहन्ना रचित सुसमाचार के परिचय पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय**। 1 कुरिन्थियों 2-5 में से आधे अध्याय पर एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें। ड. श्रृंखला "मसीही चरित्र"** का पुनरावलोकन करें। (1) मसीह की समानता: 2कुरिन्थियों 5:17,(2)शुद्धता: 1पतरस 2:11, (3) प्रेम: मरकुस 12:30-31,(4) विश्वास: रोमियों 4:20-21,(5) नम्रता: फिलिप्पियों 2:3-4। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.**बाइबल अध्ययन:** अपने घर पर ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। **यूहन्ना 1:19-51।** बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करें।

6.**प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया। अध्याय 6

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उस की आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* *1 कुरिन्थियों2-5*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 2-5) में से अपने चुने हुए समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही स्वभाव]* *श्रृंखला ई की समीक्षा करें*

दो-दो करके ***श्रृंखला ई "मसीही स्वभाव"*** की 5 बाइबल आयतों की ***समीक्षा*** करें।

(1) मसीह की समानता में : 2 कुरिन्थियों 3:18 - परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं।
(2) पवित्रता : 1 पतरस 2:11 - हे प्रियों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।
(3) प्रेम : मरकुस 12:30-31 - और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना : इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
(4) विश्वास : रोमियों 4:20-21 - और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थी है।
(5) दीनता : फिलिप्पियों 2:3-4 - विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* *यूहन्ना 1:19-51*

प्रस्तावित करें। यूहन्ना 1:19-51 का एक साथ अध्ययन करने के लिए पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना के अध्याय 1-12 यीशु मसीह की लोगों के बीच में की गई सेवकाई से सम्बन्धित है। यूहन्ना 1:15 से 2:12 बताते हैं कि किस प्रकार वचन,यीशु मसीह,यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और अपने प्रारम्भिक चेलों के सामने अपने आपको प्रगट करत हैं।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 1:19-51 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

1:39-46

***खोज 1* : आना और देखना**

जब यीशु के चेलों, यूहन्ना और अन्द्रियास ने उससे पूछा कि वह कहाँ रहता है, तब उसने उन्हें नहीं बताया, बल्कि उन्हें ये कहकर निमंत्रण दिया कि "चलो और देखो।" यीशु ने अन्य लोगों को अपने जीवन और अपने घर में *शामिल* किया। उसने उन्हें नज़दीकी से अपने आपको जानने और समझने का अवसर दिया। वो चाहता था कि वे लोग उसके जीवन को देखें। शीघ्र ही उसके चेलों ने वैसा ही किया। जब नतनएल ने यह प्रश्न उठाया कि यीशु ही मसीह हो सकता है, क्योंकि वो नासरत जैसी छोटी जगह से आया था, फिलिप्पुस ने उससे कहा "चलकर देख ले!" चेले भी चाहते थे कि अन्य लोग यीशु को जानें और यीशु के जीवन में अपने आपको शामिल करें। इसलिए उन्होंने उन्हें यीशु के पास आने का निमंत्रण दिया ताकि वे स्वयं आकर देखें कि यीशु कैसा था।

यदि मसीही लोग चाहते हैं कि दूसरे लोग यीशु को जानें कि वो कौन है, मसीही लोग कैसे होते हैं और वो कैसे रहते हैं, तो उन्हें उन लोगों को अपने जीवन और अपने घरों में *शामिल* करना चाहिए। मैं यीशु के चेलों के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ। मैं भी चाहता हूँ कि अन्य लोगों को अपने घर और अपने जीवन में शामिल करूँ ताकि वे लोग भी जान सकें कि मसीही लोग कैसे रहते हैं और इस से वे यीशु को भी जान पाएँगे।

1:42

***खोज 2* - लोगों का अवलोकन कैसे करें?**

जब अन्द्रियास, अपने भाई शमौन को यीशु के पास लाया तब यीशु ने उस पर और उसके हृदय पर दृष्टि की। यीशु जानता था कि शमौन एक बड़ा व्यक्ति था, परन्तु उसका हृदय छोटा है। वह जानता था कि शमौन बड़े वायदे कर सकता है, परन्तु वास्तव में उन्हें सबके सामने बाहर लाने से डरता है। वह जानता था कि शमौन एक संवेदनशील व्यक्ति है। परन्तु यीशु एक महान भविष्यद्वक्ता है, जो किसी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति को ही नहीं वरन् उसके भविष्य को भी जानता है। वह जानता था कि शमौन का जीवन परिवर्तित हो सकता है और वह एक स्थिर, सीधा और दृढ व्यक्ति बन सकता है। यीशु ने शमौन की तरफ़ उस तरह नहीं देखा जो वह वर्तमान में था, परन्तु ऐसे देखा कि वह भविष्य में क्या बन सकता है। यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की कि किस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह उसे बदलेगा और परमेश्वर किस प्रकार अपनी इच्छा को उसके जीवन में पूरी करेगा। इसलिए, यीशु ने उसे एक नया नाम दिया और उसे "पतरस", कहा जिसका अर्थ है "पत्थर"। आगे मत्ती 16:18 में यीशु ने भविष्यद्वाणी की, कि "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा"। और प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार यीशु पतरस को पहली कलीसिया स्थापित करने के लिए यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में इस्तेमाल करता हैं।

मैं यीशु कि तरह बनना चाहता हूँ। मैं लोगों को उनकी वर्तमान स्थिति को नहीं, बल्कि यह देखना चाहता हूँ कि *परमेश्वर की करुणा के द्वारा वे भविष्य में क्या बन सकते हैं।* परमेश्वर की करुणा पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति

को परिवर्तित कर सकती है, मैं लोगों में आशा की किरण जगाना चाहता हूँ कि परमेश्वर की करुणा उन्हें बदल सकती है। लोगों की आलोचना और उनके सभी दोषों को देखने की बजाय, मैं लोगों को प्रोत्साहित करना और उनके मसीही जीवन में जो विकास हो रहा है, उसे देखना चाहूँगा।

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 1:19-51 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

1:21

प्रश्न 1 **: क्या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला "एलिय्याह" था या नहीं?**

नोट्स

मलाकी 4:5-6 में लिखा है, "देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ।" इस भविष्यद्वाणी की अपनी स्वयं की *शाब्दिक* व्याख्या के आधार पर यहूदियों को ऐसा लगता था कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह भविष्यद्वक्ता स्वयं इस पृथ्वी पर वापस आयेगा।

हालाँकि, लूका 1:17 में, परमेश्वर का स्वर्गदूत भविष्यद्वाणी करता है कि प्रभु यीशु मसीह के आने से पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आयेगा और "एलिय्याह कि आत्मा और सामर्थ्य" में होकर अपने कार्य करेगा। "...वो पितरों का मन बाल-बच्चों की ओर फेर देगा और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाए, और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे।"

मत्ती 17:12-13 में यीशु ने भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को 'एलिय्याह' कहा। यद्यपि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह नहीं था, परमेश्वर के स्वर्गदूत (पुराने नियम में यीशु) और खुद यीशु (नए नियम में) ने कहा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मलाकी 4 में की गई भविष्यद्वाणी को पूरा किया है। एलिय्याह 'उसी का रूप' उसकी 'परछाई' था और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला उसी का वास्तविक 'प्रतिरूप' था जिसने उसकी परछाई को पूरा किया। यीशु ने स्पष्टरूप से कहा कि एलिय्याह (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) आ चुका है, परन्तु इस्राएल के लोगों ने उसे न पहचाना और उसे मार डाला (लूका 9:9)।

1:25

प्रश्न 2 : **यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला लोगों को पानी से बपतिस्मा क्यों देता था?**

नोट्स

(1) याजकों द्वारा शुद्धिकरण

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने स्पष्टरूप से कहा कि वह मसीह नहीं था, और न ही मलाकी द्वारा भविष्यद्वाणी की जाने वाला एलिय्याह था (मलाकी 4:5-6)। और न ही वह भविष्यद्वक्ता था जिसकी भविष्यद्वाणी मूसा ने की थी (व्यवस्थाविवरण 18:18-19)। फरीसियों ने उससे पूछा की जब यह अधिकार सिर्फ मसीह या उसके राजदूत के पास है तो वह क्यों लोगों को पानी से बपतिस्मा देता है? उन्हें यह लगता था कि सिर्फ मसीह या एलिय्याह या भविष्यद्वक्ता ही पानी से बपतिस्मा दे सकता था। फरीसियों को निश्चित रूप से यह पता था कि ऐसे ही किसी को भी शुद्धिकरण के कार्य के लिए प्रशासन की अनुमति नहीं दी गयी थी जिसमें पानी से बपतिस्मा देना भी एक कार्य था (यूहन्ना 3:23-26)। लैव्यव्यवस्था 14:1-7 में, केवल याजकों को ही बलिदान किये गए पक्षी के लहू और पानी के मिश्रण में

जीवित पक्षी को *छोड़ने या बपतिस्मा* देने की अनुमति दी गयी थी। केवल याजक को ही अनुमति थी कि इस पानी और लहू के मिश्रण को कोढ़ से पीड़ित व्यक्ति पर सात बार *छिड़ककर* उसको शुद्ध ठहराए।

(2) मसीह के द्वारा किया गया शुद्धिकरण का वायदा

इसके अलावा अंतिम विश्लेषण में, लोगों को शुद्ध करने का अधिकार स्पष्टरूप से एक मसीही आज्ञा थी। यहेजेकेल 36:25 में परमेश्वर कहता है, "मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा।" यहेजेकेल 37:23 में उसने कहा, "मैं उनको उन सब बस्तियों से, जहाँ वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध करूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर हूँगा"।

(3) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा शुद्धिकरण

अगर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मसीहा या कोई अगुवा, जैसा कि वो लोग सोचते थे, नहीं था, तो उसने पानी से बपतिस्मा क्यों दिया? यह स्पष्ट है कि फरीसियों को नहीं पता था कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कौन था। वे उसे समझ नहीं पाए, जब उसने कहा कि वह व्यक्ति वो है जिसके बारे में यशायाह 40:3 में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी, "किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो"। इसके द्वारा यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह मसीहा के आगे भेजा गया *दूत* था और यह कि मसीहा स्वयं प्रभु (परमेश्वर) (यहोवा) से कम नहीं था (मरकुस 1:1-3)!

यूहन्ना ने यहूदियों से कहा कि मसीहा स्वयं तुम्हारे बीच में खड़ा था और उन्होंने उसे न पहचाना। उसने यहूदियों को चेतावनी दी, कि वे मसीहा को झूठा ठहराने की उत्सुकता में सच्चे मसीहा को अनदेखा कर रहे हैं। यूहन्ना 1:31 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा कि क्यों उसने पानी से बपतिस्मा दिया ताकि वह इस्राएलियों के सामने सच्चे मसीहा को ला सके। मरकुस 1:4 कहता है, "यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।" उसने ये प्रचार किया कि यहूदियों को अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए और मसीह को ग्रहण करने के लिए अपने हृदयों को तैयार करना चाहिए. इसी को दर्शाने के लिए वो पानी से बपतिस्मा देता था। पानी का बपतिस्मा आत्मिक शुद्धि के लिए उनकी आवश्यकता का प्रतीक था। यूहन्ना का बपतिस्मा अभी भी पुराने नियम के अनुसार शुद्धि कि विधियों में से एक था, जो लोगों की बाहरी और आत्मिक शुद्धि को सूचित करता था (परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के लिए)। उसने अपने प्रचार और पानी का बपतिस्मा देने के द्वारा समस्त इस्राएलियों का ध्यान परमेश्वर के मेम्ने की ओर केन्द्रित किया, जो संसार के सारे पापों को अपने ऊपर लेगा और पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों को बपतिस्मा देगा (यूहन्ना 1:33)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने केवल चिन्ह को दर्शाया, जबकि मसीहा, यीशु मसीह, उस को सच्चाई प्रगट करेगा : जो कि चिन्ह दर्शाते है, अर्थात पवित्र आत्मा के द्वारा आन्तरिक व आत्मिक शुद्धि और नया जन्म (मरकुस 1:8, यूहन्ना 3:5, तीतुस 3:4-6)!

1:29

***प्रश्न 3* - यीशु को "परमेश्वर का मेम्ना" क्यों कहा जाता है?**

नोट्स

यीशु मसीह को परमेश्वर का "मेम्ना कहा जाता है", क्योंकि उसने पुराने नियम में मेम्ने के विभिन्न उदाहरणों (प्रकारों) को पूरा किया। पुराने नियम में मेम्ना भविष्य की सच्चाई का एक प्रतिरूप (प्रकार, चित्रण) था, अर्थात् मसीहा।

(1) फसह का मेम्ना।

फसह के मेम्ने का फसह के दिन बलिदान चढ़ाया गया और मिस्र में विश्वासियों के घरों के अलंगों पर उसका खून लगाया गया ताकि मिस्र के अपश्चातापी लोगों पर परमेश्वर के क्रोध और न्याय (अन्त के दिन) को रोक सके। 1 कुरिन्थियों 5:7 में यीशु मसीह को : "फसह का मेम्ना कहा गया"। 1 पतरस 1:19 कहता है, "पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ"।

(2) दैनिक बलिदान के लिए मेम्ने की होमबलि।

गिनति 28:4 के अनुसार, याजकों को प्रत्येक भोर औरे प्रत्येक गोधूलि के समय एक मेम्ने की बलि चढ़ानी पड़ती थी।

लैव्यव्यवस्था अध्याय 1 के अनुसार, मेम्ना दोषरहित होना चाहिए था जो यह दर्शाता था कि यीशु पापरहित था। याजक को मेम्ने के सिर पर अपना हाथ रखना पड़ता था, जो यह दर्शाता था कि उस व्यक्ति का पाप यीशु मसीह पर रखा गया था। पुराने नियम में, पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस व्यक्ति की ओर से "होमबलि" को स्वीकार किया गया था। इसी प्रकार, नये नियम में, क्रूस पर यीशु मसीह का बलिदान विश्वासियों के लिए प्रायश्चित्त करने का एकमात्र प्रभावी तरीक़ा था (रोमियों 3:25)।

(3) वह मेम्ना जिसकी भविष्यद्वाणी यशायाह 53 में की गई थी।

यशायाह 53:6-7,10 कहता है, "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया, और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह ...जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय ...तौभी यहोवा को यही भाया ...कि उसे कुचले, और उसके प्राण को दोषबलि करे। तब वह अपना वंश देखने पाएगा..."। लैव्यव्यवस्था 5:114-16 हमें सिखाती है कि "दोषबलि" को इसलिए चढ़ाया जाता था ताकि अगर परमेश्वर की उन चीज़ों के लिए जिसको उसने करने के लिए कहा हो और उस कार्य को करने में कोई व्यक्ति विफल रहा हो, तो इस बलि के द्वारा प्रायश्चित करे। दोषबलि के द्वारा प्रायश्चित हो गया, यानि उसने अपने पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र क्रोध को दूर कर लिया।

इस प्रकार हम निष्कर्ष निकालते है कि पुराने नियम के सभी तीन मेम्ने, *दृष्टान्त (प्रकार)* है, जो नये नियम में यीशु मसीह में उनकी *पूर्ति (प्रतिरूप)* करते हैं!

1:32

प्रश्न 4 **- पवित्र आत्मा को प्राप्त करना यीशु मसीह के लिए ज़रूरी क्यों था?**

नोट्स

यूहन्ना रचित सुसमाचार के लेखक ने यह स्वीकार किया कि उसके पाठक अन्य तीन सुसमाचारों से परिचित हैं, जो कि यरदन नदी में यूहन्ना द्वारा यीशु मसीह को बपतिस्मा देने से सम्बन्धित है। उस समय, पवित्र आत्मा कबूतर के समान यीशु मसीह पर उतरा और उस पर बना रहा। हालाँकि पवित्र आत्मा का कोई शरीर नहीं होता और इसलिए उसे शारीरिक आँखों से नहीं देखा जा सकता, परमेश्वर ने यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को यह अनुमति दी कि वह पवित्र आत्मा को कबूतर के समान उतरते देखें। परमेश्वर ने कबूतर का रूप इसलिए चुना होगा क्योंकि कबूतर *पवित्रता, नम्रता और शान्ति का प्रतीक* है और ये सारी विशेषताएँ पवित्र आत्मा की भी है। परमेश्वर का आत्मा *पवित्र* है और इसलिए इफिसियों 4:30 के अनुसार, हर प्रकार का पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता है। पवित्र आत्मा *नम्र* है, क्योंकि यूहन्ना 16:8,13 के अनुसार, वह लोगों को सच्चाई पर चलने के लिए बाध्य नहीं करता, परन्तु धीरे-धीरे वह उन्हें पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करता है। पवित्र आत्मा *शान्ति* है, क्योंकि रोमियों 14:17-20 के अनुसार, वह कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे लोगों को ठोकर लगे, परन्तु वह वही करता है जिससे लोगों की उन्नत्ति होती है। यीशु पर पवित्र आत्मा कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष रूप से ठहरा रहा। स्वर्ग से पिता परमेश्वर की आवाज़ स्पष्टरूप से कहती है, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रेम करता हूँ और इससे मैं अति प्रसन्न हूँ (मत्ती 3:16-17)। यहाँ हम देखते हैं कि किस प्रकार त्रिएकता हमें अपने आपको पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है।

यीशु मसीह के लिए पवित्र को प्राप्त करना क्यों ज़रूरी था? परमेश्वर का पुत्र अपने *अनदेखे (दिव्य) स्वभाव के अनुसार* आत्मा है (2 कुरिन्थियों 3:17), लेकिन अपने *मनुष्य स्वभाव के अनुसार* आत्मा को प्राप्त किया। जब यीशु ने पानी से बपतिस्मे के द्वारा पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, तो उसने इसे अपने *मनुष्य स्वभाव* में प्राप्त किया, अपने स्वभाव में पवित्र आत्मा पाने के द्वारा, यीशु का पवित्र आत्मा के द्वारा *अभिषेक* किया गया, अर्थात् परमेश्वर द्वारा, उसे परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में अपने विशेष कार्य के लिए (सार्वजनिक रूप से) *नियुक्त* किया था, और वह इस कार्य को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा से *भरा* हुआ था। लूका 4:18-19 में, यीशु स्वयं यह शिक्षा देते हैं कि यशायाह 61:1-2 में की गई भविष्यद्वाणी उसमें पूरी हुई थी। वचन कहता है, "प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ, कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ, कि यहोवा के प्रसन्न रहने

के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ, कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ"। यूहन्ना 3:34 में, यूहन्ना कहता है, परमेश्वर ने यीशु को बिना नापे आत्मा को दिया है! यह बिल्कुल उसी प्रकार है जिस प्रकार पौलुस कुलुस्सियों 2:9 में कहता है, "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

1:47

प्रश्न 5 **- यीशु ने नतनएल को यह क्यों कहा, यह वह "इस्राएली है जिसमें कोई कपट नहीं"?**

नोट्स

51 आयत में स्वर्गदूतों का उतरना व चढ़ना यह दर्शाता है कि जब यीशु नतनएल को सम्बोधित कर रहा था, तब उसके मन में पूर्वज याकूब का ध्यान था। उत्पत्ति 27:35-36 में, इसहाक एसाव से कहता है कि उसका भाई *धूर्तता* से आया और एसाव के पहिलौठा का आशीर्वाद लेकर चला गया। एसाव कहता है कि उसके भाई का नाम "याकूब" बिल्कुल सही रखा गया है, जिसका अर्थ है "अड़ंगा मारनेवाला"। हालाँकि अपने स्वार्थी लाभ के लिए धोख़ा देने की यह विशेषता सिर्फ याकूब की ही नहीं थी। यह विशेषता उसके पुत्रों, यहूदियों में भी पाई जाती थी। उत्पत्ति 34 में, उन्होंने एक शहर के लागों को *धोख़ा* दिया, उन्हें मार डाला और उनकी सारी सम्पत्ति लूट ली।

एक सच्चा और ईमानदार इस्राएली, एक धोखा न देनेवाला यहूदी, एक अपवाद बन गया था, इसलिए जब यीशु नतनएल से मिला तो उसने तुरन्त कहा "यह सचमुच इस्राएली है इसमें कपट नहीं"। *धोख़ा देना* शायद सभी देश के लोगों की विशेषता है। यूहन्ना 2:24-25 में हम पढ़ते है कि यीशु सबको जानता है और वह यह भी जानता है कि मनुष्य के मन में क्या है। यीशु मुझे भी जानता है और मेरे अन्दर पाई जाने वाली सारी बातों को भी जानता है। वह मेरे विचारों को, उद्देश्यों और मेरे मन के भावों को भी जानता है। वह यह भी जानता है कि मैं कब धोख़ेबाज़ हो जाता हूँ। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मैं पवित्र आत्मा को मेरे मन, मेरे उद्देश्यों और मेरे दृष्टिकोण को बदलने की इज़ाज़त दूँ।

1:51

प्रश्न 6 **- परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र पर उतरते देखने का क्या अर्थ है?**

नोट्स

उत्पत्ति 28 में याकूब ने स्वप्न में पृथ्वी पर सीढ़ी को खड़े हुए देखा, जिसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचता था और परमेश्वर के स्वर्गदूत उस पर से चढ़ते-उतरते थे। यहोवा स्वयं उस सीढ़ी के ऊपर खड़ा था और याकूब को आशीर्वाद दे रहा था। उसने याकूब से यह वायदा किया कि, "तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा : और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा... मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोड़ूँगा" (उत्पत्ति 28:14-15)।

यूहन्ना के इस सुसमाचार में यीशु बताता है कि यह उदाहरण (प्रकार), यीशु मसीह (प्रतिरूप) के द्वारा पूरा होता है! यीशु मसीह स्वयं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक कड़ी है। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)! क्रूस पर अपना बलिदान देने के द्वारा वह परमेश्वर के साथ पापियों का और पापियों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कराता है।

यीशु ने नतनएल से कहा की वह इससे भी ज़्यादा बड़े-बड़े काम देखेगा। ये "बड़े-बड़े" काम क्या थे? चेलों ने देखा कि यीशु के आस-पास सरदार और भेद-भाव करने वाले लोग थे परन्तु यीशु ने सीधे नतनएल के हृदय को देखा। अब से चेलों को यीशु के और अधिक अनदेखे (दिव्य) गुणों को सीखना होगा। वह विशेषकर उसे क्रूस पर चढ़ते हुए देखेंगे, और यह भी देखेंगे कि किस प्रकार स्वर्ग को खोला जाएगा और मनुष्य परमेश्वर के क़रीब आयेंगे और संसार के सभी देशों के लोग उसके पास आयेंगे और परमेश्वर के साथ उनका मेल-मिलाप होगा (यूहन्ना 8:28; 12:32)। और अन्त में वे यीशु को देखेंगे जिसके पास प्रभुता और न्याय करने का अधिकार होगा और बाद में वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी पर शासन करेंगे (दानिय्येल 7:13-14)।

कदम 4. ***अनुप्रयोग***

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 1:19-51 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 1:19-51 में से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

1:22-23 जब पूछा जाए, तब लोगों को अपने कार्य और अपने जीवन में बुलाहट की स्पष्ट समझ देना।

1:29 लोगों के ध्यान को अपने ऊपर से हटाकर यीशु मसीह, परमेश्वर के मेम्ने की तरफ़ लगाना। लोगों को यीशु मसीह से अवगत कराना।

1:33 1 कुरिन्थियों 12:12-13, यूहन्ना 3:3-8 और तीतुस 3:4-8 में "पवित्र आत्मा के बपतिस्मे" के बारे में सबसे अच्छे तरीक़े से समझाया गया है। "पवित्र आत्मा से बार-बार पूरिपूर्ण" होने के बारे में इफिसियों 5:18-21 में सिखाया गया है।

1:39 मसीहियों के जीवन और उनकी सभाओं में लोगों को शामिल करें। उन्हें बोलें, "आइये और देखिये!" (पद 46 से तुलना करें)

1:42 अपने परिवार के सदस्यों को यीशु मसीह के समीप लाएँ।

1:42 लोगों की वर्तमान स्थिति को न देखें परन्तु यीशु मसीह के द्वारा वे भविष्य में क्या बन सकते हैं, उसे देखें।

1:43 यीशु ने हमें सिर्फ उसकी प्रशंसा करने के लिए ही नहीं, बल्कि उसकी बातों का पालन करने के लिए और उसके शिष्य बनने के लिए बुलाया है।

1:44 अपने मित्रों को यीशु मसीह के बारे में बताएँ। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से ही उसके बारे में लिखा हुआ है।

1:47 जब दूसरों की सराहना करने का समय हो, तो लोगों की सराहना ज़रूर करें।

1:49 सोचें, "यीशु को लेकर आप क्या अंगीकार करना चाहते हैं।"

2. यूहन्ना 1:19-51 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

"जाना और देखना" महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं नियमित रूप से मसीही सभा में भाग लेता हूँ, ताकि मैं देख सकूँ कि मसीही लोग कैसे होते हैं और वे क्या करते हैं। मैं यीशु को बेहतर रूप से जानना चाहता हूँ और इसके लिए मैं बाइबल अध्ययन समूह (शिष्यता समूह) से जुड़ गया हूँ।

यीशु ने पतरस की वर्तमान स्थिति को नहीं, परन्तु वह भविष्य में क्या बन सकता है, उसे देखा। इस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रोत्साहित किया क्योंकि यीशु मुझे भी उसी प्रकार देखता है कि मैं क्या बन सकता हूँ और उसकी करूणा के द्वारा भविष्य में क्या बनूँगा। यही कारण है कि मैं उम्मीद करता हूँ कि यीशु मसीह मुझे वह व्यक्ति बनाये जो वह चाहता है कि मैं बनूँ।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[निवेदन]* *दूसरों के लिए प्रार्थना करें*

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* *दूसरे अध्याय के लिए कार्य*

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. यूहन्ना 1:19-51 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 कुरिन्थियों 6-8** के आधे अध्यायों के लिए चुना हुआ समय निर्धारित करें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(1) (यूहन्ना 1:14)।** पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया। अध्याय 7

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[शान्त समय]* *1 कुरिन्थियों 6-8*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 6-8) में से अपने चुने हुए समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट)	*[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* *(1) यूहन्ना 1:14*

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।

(1) यूहन्ना 1:14 - वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट)	*[कलीसिया का पर्व]* *स्वर्गारोहण - मसीह के राज्याभिषेक के दिन को स्मरण करना*

प्रस्तावित करें। स्वर्गारोहण एक मसीही उत्सव है जिसमें हम यीशु मसीह के पृथ्वी से स्वर्ग तक जाने और राजाओं के राजा के रूप में राज्य करने के दिन को स्मरण करते हैं। हम ये सीखेंगे कि बाइबल, यीशु के जी उठने और उसके सिंहासन पर विराजमान होने और मसीहों के ऊपर इसके प्रभाव के बारे में क्या सिखाती है। हम सीखेंगे कि उसके स्वर्गारोहण और भविष्यद्वाणी कैसे की गयी; और कैसे उसका स्वर्गारोहण और सिंहासन सबको प्रभावित करता है।

क. यीशु के स्वर्गारोहण के बारे में की गयी भविष्यद्वाणियाँ

भजन संहिता की पुस्तक सन् 1000 ई.पू। लिखी गई थी। यशायाह की पुस्तक सन् 700 ई.पू। लिखी गई थी। और यीशु ने अपने स्वर्गारोहण की भविष्यद्वाणी अपनी मृत्यु के क़रीब 30वीं सदी में की थी, इस प्रकार वास्तव में यह 40 से अधिक दिनों से पहले हुआ।

1. भजन संहिता 24:1-10 - परमेश्वर के साथ मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए स्वर्गारोहण (जी उठना)
जब दाऊद के शहर के (सिय्योन) एक तम्बू में वाचा के सन्दूक को उसके नये स्थान पर ले जाया जा रहा था, तब दाऊद के इस भजन की रचना की हुई और इसे गाया गया (2 शमूएल अध्याय 6)। सन्दूक को पृथ्वी पर परमेश्वर के निवासस्थान के रूप में माना जाता था (1 इतिहास 13:6)। इस अवसर पर दाऊद ने पलिश्तियों से पहले से ही लिए गए सन्दूक को लाने के लिए 30 हज़ार चुने हुए पुरूष भेजे। उसने और इस्राएल के पूरे घराने में यहोवा के सामने गीत गाकर

डफ, वीणा, सारंगी, तुरहियाँ और साँझ बजाकर पर्व मनाया। लोग आनन्दित होकर चिल्लाए और तुरहियाँ फूँकी। उन्होंने गाया कि पृथ्वी, यहाँ की प्रत्येक वस्तु और इसमें रहने वाले प्रत्येक जीव सब **परमेश्वर** के हैं। जब यहोवा के सन्दूक उठाने वाले छः कदम चल चुके, तब उन्होंने एक बैल और एक पाला हुआ बछड़ा बलि कराया। और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन-मन से नाचता रहा।

तब एक प्रश्न पूछा गया : "यहोवा के पर्बत (सिय्योन) पर कौन चढ़ सकता है? उसके पवित्रस्थान में (जो सिय्योन में मोरिय्याह पर्बत के सामने था) कौन खड़ा रह सकता है?" इसके जवाब में उत्तर आया : "जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया (किसी और "परमेश्वर" की ओर, जो बाइबल का परमेश्वर नहीं है) या न कपट से शपथ खाई है। वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा और अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा।" बाइबल में आशीष, परमेश्वर का राज्य (मत्ती 25:34), वायदा किया गया पवित्र आत्मा (गलातियों 3:14), परमेश्वर के लेपालक बेटे-बेटियों, छुटकारा और क्षमा के रूप में पाई जाती है (इफिसियों 1:3-7)। धार्मिकता उद्धार से जुड़ी हुई है। भजन संहिता 24 के सन्दर्भ में इस तरह के लोगों के बारे में यह कहा जाता है कि "ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं" जो सच्चाई और परमेश्वर की उपस्थित को खोजते हैं।

लेकिन भजन 24 एक मसीही भविष्यद्वाणी, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण की ओर इशारा करता है! परन्तु नये नियम के अनुसार, यीशु मसीह के अलावा और कोई भी स्वर्ग पर नहीं चढ़ सकता और न ही परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में खड़ा रह सकता है! कोई भी स्वयं की योग्यता के आधार पर उत्तीर्ण नहीं हो सकता। किसी भी व्यक्ति के हाथ शुद्ध और पवित्र नहीं है (रोमियों 3:9-18)। व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता (गलातियों 3:10-11) और न ही भले कर्मों के कारण (इफिसियों 2:9-8)। सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों 3:23)।

परन्तु यीशु इस योग्य ठहरा! वह पूरी तरह से पाप रहित और सिद्ध है (इब्रानियों 4:15; 7:26,28)। यीशु मसीह हमारे प्रतिनिधि के रूप में स्वर्ग पर चढ़ा और परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में खड़ा है।

स्वर्ग में परमेश्वर के साथ मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए यीशु का स्वर्गारोहण हुआ

"क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्रस्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे" (इब्रानियों 9:24)। मसीह लोग इसको स्वर्गारोहण के पर्व के रूप में मनाते हैं।

2.भजन संहिता 68:16-20,24-25,28-30 - विजय प्राप्त लोगों को परमेश्वर के पास बन्धुवाई में ले जाने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

क्योंकि परमेश्वर पहले से ही इस्राएल के पर्बतों पर राज्य करता है, विशेषकर सिय्योन पर, इसलिए भजन 68:17 में सन्दूक को सिय्योन में लाने का उल्लेख पहली बार नहीं कर सकते। इसका उल्लेख काफी बार किया गया है कि सन्दूक को युद्ध में इस्राएल की सेना के साथ ले जाया गया था और उसे सिय्योन में अपने विश्राम स्थान पर लौटा लाया गया। ऊपर दी गई इसी रीति का प्रयोग किया गया (2 शमूएल 11:11; तुलना करें 1 शमूएल 4:3-9)।

यीशु मसीह को विजयी योद्धा के रूप में दर्शाया गया है जो युद्ध को जीतकर अपने निवासस्थान (सिय्योन) में जा रहा है, उसके पीछे उसके बेशुमार रथ, बन्दी और विजयी देशों से प्राप्त उपहार (भेंटें) हैं। फिर परमेश्वर की विजयी यात्रा का विस्तार इस प्रकार से किया गया : "मेरे ईश्वर, मेरे राजा की गति (उसके दिव्य विशेषताओं की महिमा) पवित्रस्थान (सिंहासन) में दिखाई दी है" (पद 24); गानेवाले आगे-आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे-पीछे गए, चारों ओर कुँवारियाँ डफ बजाती थी (पद 25)। परमेश्वर इसलिए आया ताकि वह अपने शत्रुओं के सिर को कुचले (पद 21), और परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध जो युद्ध करने से प्रसन्न रहते हैं, उन्हें तितर-बितर करे (पद 30; तुलना करें - यशायाह 27:1)। इन देशों को "नरकटों के बीच बनैले पशु" के रूप में वर्णित किया जाता है संभवतः जलगज (इब्रानी में : बेहेमोथ) (अय्यूब 40:15-24) या मगरमच्छ (इब्रानी में : लिब्यातान) (अय्यूब 41:1-11) और वे उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के लोगों को सताते और उन्हें दबाते हैं।

यीशु मसीह विजयी योद्धा के रूप में अपने साथ बन्दियों को लिए हुए स्वर्ग पर चढ़ा

"इसलिए वह कहता है, कि वो ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए। (उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था : और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करें)" (इफिसियों 4:8-10)। पुराने नियम में (भजन

68), परमेश्वर के बारे में जो कुछ कहा गया, उसे नए नियम में यीशु मसीह द्वारा पूरा किया।

3. यशायाह 9:6-7 - अपने राज्य को स्थापित करने, बढ़ाने और राज्य करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके काँधो पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा (यशायाह 9:6-7)।

पृथ्वी पर पैदा हुए बालक को "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जायेगा और उसका ईश्वरीय स्वभाव "अनन्तकाल के पिता" के समान होगा। जबकि यशायाह 10:20-22 में यहोवा को "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जाता है, यशायाह 9:6 में प्रभु यीशु मसीह को भी "पराक्रमी परमेश्वर" कहा जाता है। स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के बाद सारी प्रभुता उसके काँधों पर होगी। दुनिया के हर देशों में उसकी प्रभुता की वृद्धि का कोई अन्त नहीं है। यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा, परमेश्वर और मनुष्य के बीच में शान्ति उत्पन्न हुई (रोमियों 5:1-11)। उसने यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच शत्रुता को नाश किया और क्रूस के माध्यम से उनके बीच शान्ति स्थापित की (इफिसियों 2:14-17)। अगर आज यहूदी और गैर-यहूदी के बीच कोई शान्ति नहीं है तो यह इसलिए है क्योंकि वे इसे नहीं चाहते हैं। (वे परमेश्वर और उसकी योजना के खिलाफ विद्रोह करते हैं)! भविष्यद्वाणी कहती है कि यीशु मसीह अपने राज्य को स्थापित करेगा और उसे बढ़ायेगा (उस पर राज्य करके) और अपने पहले आगमन से (अनन्तकाल तक) अपने आने के समय तक इसे न्याय और धार्मिकता के साथ बनाए रखेगा।

सभी देशों और सम्पूर्ण जगत पर राज्य करने के लिए यीशु मसीह स्वर्ग पर चढ़ा।

4. यूहन्ना 3:9-13 - मनुष्यों को स्वर्ग और पृथ्वी की बातें प्रगट करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

स्वर्ग से मसीह स्वर्गीय बातों को प्रगट करता है और उसके स्वर्गारोहण के द्वारा उन बातों को पूरा किया गया जाता है।

(1) इतिहास में एकमात्र यीशु मसीह ही है जो स्वर्ग से *उतरा* और वापस स्वर्ग पर *चढ़ा*।

यीशु मसीह ने ये दावा किया कि मानव इतिहास में ऐसा कोई नहीं जो स्वर्गीय बातों का पता लगाने के लिए पृथ्वी से स्वर्ग पर चढ़ा हो। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में रहा और स्वर्ग से उतरा। केवल वह स्वर्गीय बातों को जानता है और स्वर्गीय बातों को प्रगट करता है (यूहन्ना 3:9-13)। यीशु पृथ्वी की निचली जगहों पर उतरा (सचमुच : पृथ्वी के सबसे नीचे के स्थानों में) और वह सारे आकाश के ऊपर भी *चढ़ गया* (हवा या वायुमण्डल से भी ऊपर, तारों और सम्पूर्ण जगत से भी ऊपर, वह स्वर्ग पर चढ़ गया जहाँ परमेश्वर रहता है)[1] कि सब कुछ पूरा करे (इफिसियों 4:9-10)। इतिहास का कोई अन्य भविष्यद्वक्ता या जिसने "एक भविष्यद्वक्ता" होने का दावा किया हो, कभी भी स्वर्ग से उतरा और न ही कभी स्वर्ग पर चढ़ा! हनोक और एलिय्याह स्वर्ग में उठा तो लिए गए परन्तु कभी भी वह स्वर्ग से नहीं उतरे। इस दुनिया में अन्य मतों (धर्मों) और सम्प्रदायों के सभी भविष्यद्वक्ता अभी भी अपनी कब्रों में मृत पाए जाते हैं। वे स्वर्ग से कभी नहीं उतरे और न ही वे स्वर्ग पर कभी चढ़े।

इतिहास में कई लोग मरे हुओं में से *जिलाए गए* हैं, लेकिन बाद में फिर से उनकी मृत्यु हो गई। यीशु मसीह ही एक ऐसा है जो मानवीय रूप में होते हुए मृतकों में से *जी उठा* और अभी भी जीवित है। यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा है जो स्वर्ग से उतरा और स्वर्ग पर चढ़ा। यह तथ्य साबित करता है कि यीशु मसीह सभी समय के जो बड़े भविष्यद्वक्ता थे उन सबसे कहीं अधिक बड़ा था! वह न केवल महायाजक, महान भविष्यद्वक्ता और सर्वशक्तिमान राजा है बल्कि परमेश्वर भी है! वह ऐसा परमेश्वर है जिसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को छोड़े बिना मनुष्य के स्वभाव को धारण किए रहा। वह ऐसा परमेश्वर है जिसने न सिर्फ स्वयं को बादलों और आग के बीच प्रगट किया (निर्गमन 3:2; 13:21; 19:18), बल्कि एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व, यीशु मसीह में भी अपने आप को प्रगट किया (यूहन्ना 14:14,18)। वह ऐसा मनुष्य नहीं है जो परमेश्वर दिखने का दिखावा करता हो, परन्तु वह ही परमेश्वर है जिसने अपने ईश्वरीय स्वभाव को छोड़े बिना मनुष्य के स्वभाव को धारण किया था!

(2) यीशु मसीह स्वर्ग से इसलिए उतरा ताकि मनुष्य जाति पर स्वर्ग और पृथ्वी की बातों को प्रगट करे (यूहन्ना 3:12)।

यूहना 3:11 में, यीशु ने कहा, कि वह स्वयं और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला "स्वर्गीय बातों" को जानते हैं और उसके

विषय में गवाही भी दी। परन्तु यहूदी धर्म को माननेवाले अगुवों ने उनकी इस गवाही को ग्रहण नहीं किया। यीशु यह कह सकता था, क्योंकि वह आप ही जानता था कि उनके मन में क्या है और यीशु उन्हें जो शिक्षा दे रहा था वह उस शिक्षा के प्रति उनकी हिचकिचाहट को देख सकता था (तुलना करें 2:25)।

यूहन्ना 3:12 में, यीशु ने कहा, "जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे?"

पृथ्वी की बातें।

यीशु मसीह उन बातों के विषय में कहा, जिनकी उत्पत्ति और स्वभाव स्वर्गीय है, परन्तु वे पृथ्वी पर पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए : "पृथ्वी की बातें" आदि और स्वभाव में स्वर्गीय हैं, परन्तु वे पृथ्वी पर पाई जाती हैं, जैसे कि :

- मसीह का अपने लोगों के बीच में आना (यशायाह 53:3; यूहन्ना 1:11)।
- मसीह की मृत्यु और उसका जी उठना (यशायाह 53:5; यूहन्ना 2:19)।
- संसार में पाये जाने वाले अन्य जातियों के लोगों को सुसमाचार सुनाना (यशायाह 49:6; यूहन्ना 1:16-17)।
- और पुनर्जन्म (पवित्रआत्मा का बपतिस्मा) जो बिल्कुल आवश्यक है (व्यवस्थाविवरण 30:6; यहेजकेल 36:25-28; यूहन्ना 1:33; यूहन्ना 3:3-8)।

पुराने नियम में परमेश्वर पहले से ही पृथ्वी की बातों के विषय में कह चुका था, "मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे" (यहेजकेल 36:25-27)। नये सिरे से जन्म लेना पृथ्वी पर मानव अनुभव के क्षेत्र के भीतर होता है। इसलिए जो कोई व्यक्ति पुराने नियम को पढ़ता है और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपनी स्वभाविक असमर्थता को दर्शाता है, वह व्यक्ति नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता को समझ चुका है।

हालाँकि पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के नये सिरे से जन्म लेने के विषय में स्पष्टरूप से पुराने नियम में और नये नियम में यीशु द्वारा सिखाया गया है, फिर भी अधिकांश यहूदियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। नीकुदेमुस और उसके जैसे लोग सोचते थे कि "पृथ्वी की ये बातें" अविश्वसनीय थीं। तो जब यीशु ने "स्वर्गीय बातों" के विषय में बात की तो वे इन बातों पर विश्वास कैसे करते?

स्वर्गीय बातें

जब तक की स्वर्गीय बातें मसीह द्वारा प्रगट न की जाएँ तब तक वे बातें मनुष्य के ज्ञान से बाहर (परे) रहती हैं। "कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे" (मत्ती 11:25-27)। केवल परमेश्वर का पुत्र हमेशा से ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा है और स्वर्ग में लिए गए सभी निर्णयों को जानता है। कोई भी व्यक्ति स्वर्गीय बातों के विषय में जानने के लिए स्वर्ग पर नहीं चढ़ा। केवल यीशु मसीह स्वर्ग से उतरा (भेजा गया) और वह ही स्वर्गीय बातों को जानता और उन्हें प्रगट भी करता है जैसे कि :

- परमेश्वर की प्रकृति (स्वभाव) (मत्ती 11:27)।
- परमेश्वर की स्वर्गीय योजना अपने लोगों को बचाने के लिए है, केवल यहूदियों को ही इस बात पर विश्वास नहीं, बल्कि संसार में हर देश के गैर-यहूदियों का भी यही मानना है (यूहन्ना 3:13-18)।
- परमेश्वर की स्वर्गीय योजना यह है कि अपने पुत्र, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा उन्हें बचाये।

"स्वर्गीय बातें" मनुष्य की पहुँच से, उनके ज्ञान से या उनकी कल्पना से, पूरी तरह से परे हैं, जब तक की वे मनुष्य के सामने प्रगट न की जाएँ। परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा कि वह कौन है (यूहन्ना 1:18)। कोई भी व्यक्ति उद्धार की परमेश्वर की योजना को समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 2:7-10)। यीशु मसीह न केवल परमेश्वर की स्वर्गीय योजनाओं को प्रगट करता है बल्कि उन्हें पूरा भी करता है (प्रकाशितवाक्य 5:1-5)।

5. यूहन्ना 14:1-3 - अपने चेलों के लिए एक जगह तैयार करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों के लिए एक जगह तैयार करने के लिए स्वर्ग पर पर चढ़ा।

जब यीशु ने यह कहा कि वह एक ऐसे स्थान पर जा रहा है जहाँ उसके चेले नहीं आ सकते (स्वर्ग में उसका

[1] Greek: κατεβη εις τα κατωτερα [μερη] της γης + αναβας υπερανω παντων των ουρανων

स्वर्गारोहण), तब वे व्याकुल हो गए। वे *दु:खी* थे क्योंकि यीशु मसीह ने कहा था कि वह उन्हें छोड़कर जाने वाला है। वे *शर्मिन्दा* थे क्योंकि वे इस बात पर आपस में झगड़ते थे कि हम में से बड़ा कौन है। वे *उलझन* में थे क्योंकि यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि उनमें से एक उसे धोखा देगा, दूसरा उसका इन्कार करेगा और बाकी सब भटक जाएँगे। उनका विश्वास *डगमगाया* हुआ था क्योंकि वे शायद यह सोचते थे कि मसीह को धोखा देना कैसे सम्भव है। एक तरफ वे यीशु से प्यार भी करते थे और दूसरी तरफ यह भी आशा रखते थे कि चीज़ें बदल जाएँगी। उनका विश्वास परखा गया। यही कारण है कि यीशु ने प्रोत्साहित किया "परमेश्वर और मुझ पर विश्वास करते रहो।"

यीशु ने कहा कि वह अपने चेलों के लिए जगह तैयार करने जा रहा था। मसीह के दूसरे आगमन से पहले (भजन 33:13-14; यशायाह 63:15) और *नई पृथ्वी* पर दूसरे आगमन के बाद (यशायाह 65:16-17; प्रकाशितवाक्य 21:1-3) "परमेश्वर का निवास-स्थान" *स्वर्ग* है। "कमरे" शब्द निवास-स्थान को दर्शाते हैं। "जगह" शब्द उस स्थान को दर्शाता है जहाँ मसीही लोग निवास करेंगे, उनकी स्थिति या राज्य और उनका अन्तिम गंतव्य होगा। यीशु की मृत्यु के द्वारा यह सम्भव हो पाया कि उसके चेले अनन्तकाल के लिए उसके साथ रह सकें। अपने पुनरूत्थान के द्वारा वह अपने चेलों को अनन्तकाल के लिए तैयार करता है। और अपने स्वर्गारोहण के द्वारा वह अनन्तकाल की उस जगह को अपने चेलों के लिए तैयार करता है।

वह वापस आयेगा और अपने साथ रहने के लिए उनको ले जायेगा। यीशु की प्राथमिक सोच एक विश्वासी की शारीरिक मृत्यु के विषय में नहीं थी, परन्तु वह अपने दूसरे आगमन के विषय में सोच रहा था। अपने दूसरे आगमन पर वह विश्वासियों का स्वागत करेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-17)। जैसे वे एक-दूसरे को गले लगाते थे और एक-दूसरे की आँखों में देखते थे। यही कारण है कि उसका स्वर्गारोहण एक आपदा नहीं बल्कि एक आशा है (तुलना करें - यूहन्ना 16:7)!

यह पद्यांश एक विश्वासी की शारीरिक मृत्यु पर भी लागू किया जा सकता है क्योंकि उसकी आत्मा का भी स्वागत किया जायेगा (फिलिप्पियों 1:21-23)। यह एक जीवित आशा (उम्मीद) है जो एक विश्वासी को यीशु मसीह पर विश्वास जारी रखने के लिए प्रेरित करती है!

6. यूहन्ना 16:7 - अपने चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेलने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेलने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु ने कहा कि वह उनके लाभ के लिए उनसे दूर जा रहा था (अर्थात् वह स्वर्ग पर चढ़ जायेगा) क्योंकि तभी पवित्र आत्मा उनके "समक्ष आयेगा" (इब्रानी में : प्रोस)। यीशु ने उनसे पहले से ही कह दिया था कि यह बात उनके लाभ (फ़ायदे) के लिए थी कि वह उनके बीच से जा रहा था, क्योंकि वह उनके लिए जगह तैयार करने जा रहा था (यूहन्ना 14:2,28)। वह उन्हें और भी अधिक बड़े काम करने की सामर्थ्य देगा (यूहन्ना 14:12)। वह उन्हें परमेश्वर पिता और पुत्र के बीच सम्बन्धों के विषय में गहन समझ प्रदान करेगा (यूहन्ना 14:20)। और वह पहले से भी अधिक उनके समीप आयेगा, क्योंकि वह न केवल उन लोगों के "साथ" होगा, बल्कि अपनी आत्मा के द्वारा उनके "अन्दर" वास करेगा (यूहन्ना 14:16,17,28)! इसलिए अपने चेलों के सामने से प्रत्यक्ष रूप में चले जाना दु:खद बात नहीं, बल्कि एक बड़े लाभ और विजय की बात थी!

लेकिन इस से पहले कि यह सम्भव हो पाता, यीशु का क्रूस पर मरना और अपने लोगों के उद्धार के लिए जी उठना अभी तक बाकी था। उद्धार को प्राप्त करने के अलावा ऐसी कोई बात नहीं थी जो उन्हें बचा सकती थी। इसलिए उसका सर्वप्रथम क्रूस पर मरना और मृतकों में से जी उठना अनिवार्य था। स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद ही पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु विश्वासियों के हृदयों और जीवनों में उद्धार के महत्व को लागू करेगा!

अपने *प्रत्यक्ष* और *सीमित मनुष्यत्व* में चेलों के पास से चले जाने के बिना, पवित्र आत्मा के रूप में उसकी उनके पास *अप्रत्यक्ष रूप* में वापसी नहीं हो सकती थी। अपने जन्म के समय, वह अदृश्य परमेश्वर को प्रगट करने के लिए और उनके पापों के प्रायश्चित के लिए पृथ्वी पर अपने प्रत्यक्ष मानव स्वभाव में आया। पवित्र आत्मा के उण्डेलने पर, वह पृथ्वी पर अपने अदृश्य ईश्वरीय स्वभाव (पवित्र आत्मा) में समस्त संसार में और पूरे इतिहास में विश्वासियों के जीवन के उद्धार के लिए अपने कार्य को लागू करने के लिए लौट आयेगा (तुलना करें - रोमियों अध्याय 8; गलातियों 4:4-7)!

उद्धार के इस कार्य में परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच सम्पूर्ण सामंजस्य है। परमेश्वर पिता ने आत्मा को

भेजा (यूहन्ना 14:26), परमेश्वर के पुत्र ने आत्मा को भेजा (यूहन्ना 15:26; 16:7) और आत्मा गया! आत्मा का समस्त संसार में (यूहन्ना 16:8-11) और कलीसिया पर (इफिसियों 2:22) अद्भुत प्रभाव होगा।

7. यूहन्ना 20:17 - अपने चेलों के साथ निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

यीशु मसीह अपने चेलों के साथ पृथ्वी पर निरन्तर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

मरियम मगदलीनी यीशु मसीह के पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण की पहली गवाह बनी। थोड़ी देर बाद यीशु ने अन्य स्त्रियों को जो हुआ था वह बताने के लिए कहा और यह कहा कि वह गलील में उनसे मिलेगा (मत्ती 28:7), उसने मरियम मगदलीनी को चेलों को उद्धार के इतिहास में हुई इस घटना के बारे में बताने के लिए कहा, जो कि उसके स्वर्गारोहण के विषय में थी!

यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी, कि वह स्वर्ग में अपने पिता के पास जा रहा था और इसलिए विश्वासियों का यीशु के साथ पहले जैसा सम्बन्ध नहीं रह पाएगा। यीशु की मृत्यु से पहले मरियम मगदलीनी ने बहुत समय तक यीशु का उसके चेलों के साथ संगति का अनुभव किया था। मृतकों में से यीशु के पुनरूत्थान के बाद उन्होंने यह मान लिया था कि उनकी यीशु के साथ पहले जैसी संगति फिर से हो सकती थी। इसलिए उसने आराधना के भाव में होकर उसके सामने दण्डवत् किया, जैसा कि दूसरी स्त्रियों ने थोड़ी देर पहले किया था (मत्ती 28:9)। यीशु ने उसे स्वयं को छूने से मना नहीं किया, जैसा कि बाद में उसने थोमा को छूने की इज़ाज़त दी (यूहन्ना 20:27)। परन्तु यीशु ने उससे कहा कि वह उसे ज़्यादा देर तक इस तरह पकड़ी नहीं रह सकती (उसको पकड़ना) ऐसा लग रहा था कि वह उसे ऐसा करके उसे जाने से (स्वर्ग में) रोक रही थी।

अपने चेलों के साथ दिन-प्रतिदिन प्रत्यक्ष रूप से साथ रहने की उसकी यह अवधि समाप्त हो गई थी। वह प्रत्यक्ष रूप से प्रगट होगा, अभी एक के लिए, बाद में सबके लिए। यही कारण है कि उसने उससे कहा कि उसे यह नहीं सोचना चाहिए की वह यीशु को इस तरह पकड़ कर (अपने पास रोककर) उसके साथ हमेशा के लिए रह सकती है। वह स्वर्ग में अपने पिता के पास चढ़ने वाला था। इसके बाद पृथ्वी पर यीशु और उसके चेलों के बीच पहले जैसा सम्बन्ध जारी नहीं रह पाया। पृथ्वी पर एक स्थान में यीशु के साथ प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध बनाने के बजाए, वे पृथ्वी पर हर जगह पवित्र आत्मा के द्वारा उसके साथ अपने सम्बन्ध को बनाए रखेंगे (तुलना करें - रोमियों 8:9-10; 2 कुरिन्थियों 3:16-18; यूहन्ना 14:16-18, 26; यूहन्ना 15:28; यूहन्ना 16:13-15)! आत्मा के द्वारा वे यीशु के साथ निरन्तर संगति में बने रहेंगे। यह संगति कहीं अधिक *फलवन्त* और धन्य होगी, क्योंकि यह पृथ्वी पर अपनी कलीसिया के साथ *स्वर्ग में जी उठने वाले प्रभु* की संगति होगी!

दूसरी ओर यीशु ने अपने और अपने चेलों के बीच में पाये जाने वाले *अन्तर* की ओर बल दिया। जब यीशु ने कहा, "मेरा पिता और तुम्हारा पिता" और "मेरा परमेश्वर और तुम्हारा परमेश्वर" उसने स्पष्टरूप से इन दोनों रिश्तों को अलग किया :

- यीशु मसीह *स्वभाव* से (मनुष्यत्व में) (आध्यात्मिक रूप से, वैज्ञानिक रूप से) परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:1,18; यूहन्ना 10:30-33)।
- विश्वासी (मसीही) परमेश्वर के *लेपालक* (आत्मिक रूप) पुत्र (और पुत्रियाँ) हैं (यूहन्ना 1:12-13; इफिसियों 1:4-5)।

फिर भी यीशु ने अपनी संगति की *घनिष्ठता* (*निकटता*) पर बल दिया। आत्मिक रूप से परमेश्वर जो यीशु का पिता है, वह चेलों का भी पिता है! यह परमेश्वर और पिता के लिए ही है कि यीशु स्वर्ग पर चढ़ रहा है।

ख. यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के आस-पास के घटनाक्रम

1. प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को सांसारिक दृष्टिकोण से देखती है।

पढ़ें। प्रेरितों के काम 1:3-11; लूका 24:50-53

मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु अपने चेलों और अन्य विश्वासियों को 40 दिन तक प्रत्यक्ष रूप से दिखता रहा। एक बार उसने यरूशलेम में अपने चेलों के साथ भोजन भी किया। उसने कहा, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।।।" (लूका 24:50-53)। "परन्तु जब पवित्र

आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों के काम 1:4-8)।

तब यीशु को उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया। बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। अचानक दो पुरूष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए और कहने लगे : "हे गलीली पुरूषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

यह धारणा है कि उसके बाद यीशु मसीह का शरीर विसरित हो गया या उसने ईश्वरीय रूप ग्रहण कर लिया, जिससे की वह सर्वव्यापी हो गया, इसका बाइबल में कहीं ज़िक्र नहीं पाया जाता। यीशु मसीह का महिमान्वित शरीर कोई भूत नहीं था, बल्कि शारीरिक शरीर (मांस और हड्डियों) का था जिसे स्पर्श किया जा सकता था (लूका 24:37-40) और वह अभी भी भोजन खा सकता था (लूका 24:41-43), लेकिन वह "(पापी) देह और (नश्वर) लहू" नहीं था (1 कुरिन्थियों 15:50)। बाइबल जो सिखाती है वह निम्नलिखित है :

- यीशु मसीह को "परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया" (प्रकाशितवाक्य 12:5)।
- वह परमेश्वर पिता की दाहिनी ओर बैठा है (मरकुस 16:19; इफिसियों 1:20)।
- जिस रीति से उसके चेलों ने उसे स्वर्ग को जाते देखा उसी रीति से वह फिर आयेगा (प्ररितों के काम 1:11)।

तब उसके चेले जैतून के पहाड़ से यरूशलेम को लौट आए और अन्य विश्वासियों के साथ ऊपरी कोठरी में एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे (प्रेरितों के काम 1:14)। प्रकाशितवाक्य 5:13 में हम देखते हैं, "फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।"

2. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को स्वर्गीय दृष्टि से देखती है।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 5:1-13

प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 का विषय है : "परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान मेम्ने के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है।"

(1) स्वर्ग में पुस्तक का संदेश (प्रकाशितवाक्य 5:1)।

परमेश्वर के पास स्वर्ग में एक पुस्तक है! यह पुस्तक एक सूची के रूप में पाई जाती है। पृथ्वी पर कोई भी धार्मिक पुस्तक इस पुस्तक की प्रतिलिपि नहीं है, क्योंकि यह मुहरबन्द है। इस पुस्तक के बारे में इतिहास में किसी भी भविष्यद्वक्ता को नहीं बताया गया है। इस दुनिया के इतिहास में केवल एक ही है जो मुहरों को *तोड़ने* और पुस्तक को *खोलने* के योग्य है! वही एकमात्र ऐसा है जो अपनी बातों को *प्रगट* करने और उन्हें *पूरा* करने में सक्षम है! वह व्यक्ति यीशु मसीह है, क्योंकि केवल वह ही है जो पापों के प्रायश्चित के लिए मर गया था और केवल उसे ही मृतकों में से जिलाया गया। केवल वही है जो हमेशा के लिए रहता है! सभी अन्य भविष्यद्वक्ता अपनी कब्रों में अभी तक मृत पाये जाते हैं। केवल वह स्वर्ग से उतर आया था, केवल उसे ही जिलाया गया था और केवल वह ही स्वर्ग में चढ़ गया था।

स्वर्ग में यीशु मसीह के स्वर्गारोहण और सिंहासन को प्रतिकात्मक रूप से चित्रित किया गया है, क्योंकि मेम्ना सिंहासन पर परमेश्वर पिता के हाथ से पुस्तक को ग्रहण करता है।

दोनों तरफ लिखी गई पुस्तक में संसार के इतिहास और संसार के भीतर कलीसिया के इतिहास के विषय में परमेश्वर के निर्णय पाये जाते हैं। इसमें अनदेखी योजना और परमेश्वर का उद्देश्य शामिल है जो "अनन्तकाल" (इब्रानियों 9:26; यूहन्ना 11;24) में उद्धार के इतिहास में ऐतिहासिक घटनाएँ बन चुकी हैं, जो कि नये नियम में उसके पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक के विषय में है। ये महान और सभी निर्धारित ऐतिहासिक घटनाएँ जो कि परमेश्वर के राज्य के आने की घोषणा करती हैं, अत्याधुनिक (भव्य और हिसंक) घटनाएँ है, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना (अपने लोगों के लिए) और निर्णय (अपने शत्रुओं) को प्रगट और पूरा करती हैं। जगत के केन्द्र में अपने सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर, इस पृथ्वी के लिए और अपने लोगों के लिए यीशु मसीह के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है। यीशु मसीह परमेश्वर के उद्धार और न्याय की अनन्त योजना को प्रगट और पूरा करता है।

पृथ्वी पर पाई जाने वाली अन्य सभी पुस्तकों की तुलना में यह पुस्तक पूरी तरह से अलग है! पृथ्वी पर धर्मनिरपेक्ष या

धार्मिक पुस्तकों में यह दर्ज किया गया कि पिछले कुछ समय में पृथ्वी पर कौन सी घटनाएँ हुई हैं। वे कुछ धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक लोगों के जीवन, उनके शब्दों और उनकी उपलब्धियों और उनके द्वारा लड़े गए युद्धों को उजागर करती हैं। लेकिन स्वर्ग में इस पुस्तक को खोलने और पढ़ने के द्वारा *पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को कार्यशील किया जाता है।* यह वह प्रगट नहीं करता की पहले क्या हुआ, लेकिन यह ये प्रगट करता है कि जल्द ही क्या होने वाला है (प्रकाशितवाक्य 1:3)! जिस समय यीशु मसीह ने मुहर तोड़ी, उस समय उस मुहर के नीचे की पुस्तक के शब्द प्रगट हुए और पृथ्वी पर मनुष्य के इतिहास में होने वाली घटनाओं की शुरूआत हुई। "खुलना" स्वर्ग में पाई जाने वाली पुस्तक वह है, जो कि वास्तव में उसके पहले आगमन से दूसरे आगमन तक की सभी घटनाओं और पृथ्वी के लोगों के विषय में बताती है।

परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के समय जो किया, यीशु मसीह अन्त में वही करता है! परमेश्वर के एक शब्द बोलने के द्वारा अनुभविक (दृश्यमान और मापने वाली सामग्री) चीज़ें जो अस्तित्व में नहीं थीं, वे अस्तित्व में आईं (उत्पत्ति 1:3; भजन 33:6; रोमियों 4:17; इब्रानियों 11:3)। यीशु मसीह मुहर को खोलकर इस पुस्तक में पाई जाने वाली उद्धार और न्याय के इतिहास की घटनाओं को अस्तित्व में लाता है। जिस समय मसीह मुहर को तोड़ता है, वह उसकी बातों को प्रगट करता हैं और उन्हें उजागर करता है (प्रकाशितवाक्य 6)।

(2) पुस्तक की मुहरों को तोड़ने का सन्देश (प्रकाशितवाक्य 5:2-4)।

समस्त जगत में लम्बे समय तक ऐसा कोई भी नहीं पाया गया जो इस पुस्तक की मुहर को खोलने, उसकी बातों को प्रगट करने और उन्हें कार्यशील करने के योग्य हो। जब तक की पुस्तक की मुहर बन्द रही, तब तक सृजित वस्तुएँ और पृथ्वी की ऐतिहासिक घटनाएँ स्थिर हो गई और उनमें कोई भी प्रगति नहीं हुई!

यदि पुस्तक की मुहरें बन्द रहती, तो कलीसियाओं की स्थिति में कोई बदलाव सम्भव नहीं होता। इफिसुस की कलीसिया एक मृतक रूढ़ीवादी कलीसिया बनी रहती जो सिर्फ मसीह सच्चाई पर चलती, लेकिन उनमें मसीही प्रेम का अभाव होता (प्रकाशितवाक्य 2:1-7)। सरदीस की कलीसिया अन्य मतों द्वारा एक सताई हुई कलीसिया ही रहती (प्रकाशितवाक्य 3:1-6)। लौदीकिया की कलीसिया हमेशा की तरह एक आत्मघातक, भौतिकवाद, समृद्ध और सांसारिक वस्तुओं में बन्धी रहती (प्रकाशितवाक्य 3:14-22)।

जब तक कि मुहरें बन्द रहती हैं, तब तक कलीसियाओं का उत्पीड़न और उनकी प्रताड़नाओं को मिटाया नहीं जा सकता, और अपनी अन्तिम महिमा के लिए वह फलवन्त भी नहीं हो सकती! तब तक पृथ्वी के इतिहास का अन्त होता नहीं दिखाई देता है और कलीसियाओं के संघर्षों को रोका नहीं जा सकता है। फिर सृजित वस्तुएँ और ऐतिहासिक घटनाएँ अपने अंतिम गंतव्य की ओर नहीं बढ़ सकती! पृथ्वी पर होनेवाली घटनाएँ अन्तिम गंतव्य के लिए सीधा मार्ग होने की बजाय वहीं घूमती रहती है! यह तथ्य पृथ्वी पर पाई जाने वाली सभी वस्तुओं को दु:खद बनाता है। यहाँ कोई भी निश्चत लड़ाई नहीं है और न ही उसकी कोई निश्चत जीत है! नये सुधारों के बाद नई विकृति, सांसारिक और मलिनता का पाया जाना शामिल है। छुटकारे के समय में दु:खद और शान्त मृत्यु होगी। कलीसिया चढ़ाव (ऊँची लहरों) और उतार (नीची लहरों) के समय इतिहास का अनुभव करती है। और संसार एक अन्तहीन चक्र के रूप में इतिहास का वर्णन करता है - सबकुछ बार-बार दोहराया जाता है। पृथ्वी[2] पर होने वाली निराशाजनक घटनाओं का कोई अन्त नहीं है।

जब तक मुहरें बन्द रहती है, तब तक शैतान की कोई निश्चित विजय नहीं होती है! वह कुछ विश्वासियों को मृत्यु के समय तक सता सकता है, लेकिन वह उन्हें नाश नहीं कर सकता! वह राष्ट्रों को यीशु मसीह से जुड़ी सभी वस्तुओं से ईर्ष्या करने के लिए उकसाता है, लेकिन वह यीशु मसीह के नाम को मिटाने में सफल नहीं होता है! इसके अलावा शैतान और उसके सहयोगियों ने उतार-चढ़ाव के समय इतिहास का अनुभव किया है।

न तो कलीसिया और न ही शैतान पुस्तक की मुहरों को तोड़ सकते हैं। न ही वे विजय प्राप्त करने में सक्षम हो सकते है! जब कलीसिया पृथ्वी पर इस संघर्ष का कोई अन्त नहीं देखती, तब वह निराश हो जाती है और खुद को सामर्थ्यहीन महसूस करने लगती है। जब कोई पुस्तक की मुहरों को तोड़ने में सक्षम नहीं होता है तो पृथ्वी पर होने वाली घटनाएँ अन्तहीन स्वप्न के रूप में बदल जाती हैं।

इस संसार का इतिहास लगातार असमंजस की कगार पर क्यों खड़ा रहता है? संघर्ष की यह नीरसता और इसका अन्तहीन चक्र क्यों कभी नहीं टूटता? हम इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते, लेकिन हम यह जानते हैं कि जीवन के कुछ छिपे हुए रहस्य हैं (व्यवस्थाविवरण 29:29; यशायाह 55:8-9) और इस संसार का इतिहास राज्य पाने के लिए एक संघर्ष से कही ज़्यादा है! यह कोई नहीं कह सकता कि अगर परमेश्वर चाहेगा, तभी वह शैतान को हरा सकता है, और इस संघर्ष

को समाप्त कर सकता है। क्योंकि शैतान का भी एक निश्चित दायरा है। पाप में मनुष्य के पतन के बाद से, एक विशेष तरीके के द्वारा बुरा संसार (मसीह के बिना संसार) शैतान के अधीन हो गया है। "समस्त संसार (मसीह के बिना) दुष्ट के वश में पड़ा है" (1 यूहन्ना 5:19)। शैतान को "इस संसार का (बुराई का) सरदार" (यूहन्ना 12:31) कहा जाता है। वह समस्त (बुरे) संसार को भरमाता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। और उसे "इस युग का ईश्वर कहा जाता है जिसने अविश्वासियों की बुद्धि को अन्धा कर दिया है" (2 कुरिन्थियों 4:4)। यही कारण है कि इस धरती पर होने वाली घटनाएँ इतनी पेचिदा, भयावह और भयानक हैं। ऐसा लगता है कि संसार बहुत आकर्षक है और ऐतिहासिक घटनाएँ इसी आकर्षण में बन्धी हुई हैं।

इस पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को केवल इस पुस्तक की मुहरों को तोड़कर ही एक निश्चित अन्त तक लाया जा सकता है! मुहरों को तोड़ने और पुस्तक को खोलने से यीशु मसीह सारे भ्रमों को मिटा देता है और इस संसार की वस्तुओं को उनके वास्तविक रूप में लाता है।

इस संसार के हाकिम हमेशा अपनी आर्थिक और सैन्य क्षमता और शक्तिशाली संघर्षों के संदर्भ में ही सोचते हैं। लेकिन परमेश्वर की सोच इन सबसे कहीं अलग है!

सिंह, मेम्ने और दाऊद के मूल का सन्देश (प्रकाशितवाक्य 5:5-7)।

एक बलवन्त स्वर्गदूत ने यह घोषणा की, "इस पुस्तक को खोलने और मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?" केवल एक ही है जो इस पुस्तक को खोल सकता है परन्तु अभी वह ऐसा नहीं करेगा। ऐसा लगता है कि वह यह देखने की प्रतीक्षा कर रहा है कि क्या कोई और है जो उसे इस महान कार्य को करने की चुनौति दे सकता है। परन्तु स्वर्ग में या पृथ्वी पर या आत्माओं के संसार में (दुष्टात्माओं) ऐसा कोई भी नहीं जो इस पुस्तक को खोले या इसे देख भी सके। इस संसार के इतिहास में ऐसी कोई दुष्टात्मा, कोई बलवन्त राजनीतिक राजा और कोई धार्मिक भविष्यद्वक्ता जिसने इस पुस्तक को खोलने के लिए अपने कदम को बढ़ाया हो!

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यीशु मसीह (यहूदा का सिंह, दाऊद का मूल और परमेश्वर का मेम्ना) एकमात्र ऐसा है जो मुहरों को तोड़ सकता है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5)! अनगिनत स्वर्गदूतों में से जो स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा करते हैं और चार जीवित प्राणियों में से जो परमेश्वर की सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं, उनसे एक भी नहीं है, लेकिन कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने वाले एक पुरूष को उत्तर देने का विशेष अधिकार दिया गया है। यूहन्ना को यह मालूम और महसूस होना चाहिए था कि वह एक द्वीप पर कई प्रश्नों के साथ अकेला नहीं खड़ा है। यूहन्ना परमेश्वर के विश्वव्यापी समुदाय के विश्वासियों का हिस्सा है, एक ऐसी कलीसिया जिसने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया है। उस शब्द से यूहन्ना दैनिक समस्याओं का उत्तर दे सकता है जिनका सामना कलीसिया करती है। "यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद का मूल विजयी हुआ है। वह पुस्तक और उसकी सातों मुहरें खोलने में सक्षम हैं।"

यीशु मसीह परमेश्वर के लोगों का सिंह है जिसे पुराने नियम में "यहूदा" (उत्पत्ति 49:10; इब्रानियों 7:14), नये नियम में "इस्राएल" (गलातियों 6:16) और दोनों नियमों में "कलीसिया" (इब्रानी में : ईकलीसिया) (भजन 107:32; 2 इतिहास 29:28; मत्ती 16:18) कहा जाता है। वह एक ऐसा "सिंह" नहीं है जिसने संसार को सांसारिक सेना द्वारा या धार्मिक "पवित्र युद्धों" द्वारा जीता हो। उसका सामर्थ्य उसके मौलिक रूप को प्रस्तुत करता है। वह सिंह है क्योंकि वह वो मेम्ना है जिसने क्रूस पर बलिदान होने के लिए स्वयं को दे दिया था जो उस संसार के लोगों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में स्वीकार किया जाता था। इस युग के शासकों में से कोई भी परमेश्वर की छुपी हुई समझ को जान नहीं पा रहा था, क्योंकि यदि उन्होंने समझा होता, तो वे मसीह को क्रूस पर नहीं चढ़ाते (तुलना करें - 1 कुरिन्थियों 2:8)। इसके अलावा यीशु ने अपने ज्ञान का प्रमाण दिया : "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

परमेश्वर की दृष्टि में वास्तविक महानता उन घमण्डी धार्मिक अगुवे या उग्र योद्धा और अजेय नायक में नहीं है जो अपने राजनीतिक, कानूनी और धार्मिक भूखण्डों और अपने धन और सेना के बल द्वारा लोगों और राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करते हैं। इस संसार के इतिहास को युद्ध और आतंकवादियों द्वारा उत्पीड़न, या रिश्वतखोरी और धार्मिक असत्य द्वारा, अपने अन्तिम गंतव्य तक नहीं लाया जायेगा। इस संसार के इतिहास को पूरी तरह से खोला जायेगा और उसके अंतिम महिमान्वित गंतव्य (नई पृथ्वी) तक लाया जायेगा, जो कि वह परमेश्वर है जिसने स्वयं को शून्य कर दिया और मनुष्यत्व को पहन लिया। फिर उसने स्वयं को और भी दीन किया और मनुष्य का दास होने के लिए खुद को दे दिया। अन्त में

[2] यह हिन्दूवादी और बौद्धिक धारणा है।

उसने स्वयं को क्रूस पर चढ़ाया और पापों के प्रायश्चित के लिए बलिदान का मेम्ना बन गया (फिलिप्पियों 2:5-8)। यीशु मसीह ही एकमात्र सिंह (एकमात्र राजा) है, क्योंकि केवल वह ही मेम्ना (प्रायश्चित का बलिदान) बन गया।

यीशु मसीह दाऊद का "मूल" और "वंश" है (प्रकाशितवाक्य 22:16)। पुराने नियम में ऐतिहासिक राजा दाऊद परमेश्वर के लोगों का राजा था। परन्तु पुराने नियम में सारी भविष्यद्वाणियाँ असली राजा, यीशु मसीह की ओर संकेत करती है, जो परमेश्वर का वास्तविक राज्य स्थापित करेगा। और इतिहास में परमेश्वर के सभी लोगों का राजा होगा। यीशु मसीह दाऊद राजा की सनातन ईश्वरीय उत्पत्ति (मूल) और उसकी मानवजाति (वंश) दोनों ही है।

इस सृष्टि में और मानव इतिहास में यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा हैं जो संसार में होने वाली घटनाओं के रहस्यमय चमत्कार और इस भ्रम को कि सारी वस्तुएँ और सब लोग वास्तविक रूप से कुछ और हैं, तोड़ सकता है। परमेश्वर केवल यीशु मसीह के हाथों में ही इस पुस्तक को देता है! अन्य सभी हाथों में यह पुस्तक मूर्तिपूजा का एक उद्देश्य बन जाएगी [3]।

(3) क्रूस की कथा (प्रकाशितवाक्य 5:8-12)।

जिस पल यीशु मसीह के हाथों में पुस्तक दी जाती है, उसी पल वही चौबीस प्राचीन (जो स्वर्ग में परमेश्वर की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं) और चार जीवित प्राणी (जो स्वर्ग में परमेश्वर की सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं) नीचे गिरकर दण्डवत् करते हैं, पुस्तक की आराधना करने के लिए नहीं बल्कि उसकी आराधना करने के लिए जो उस मुहर को खोलने के योग्य है। मसीही लोग स्वर्ग में उस पुस्तक की आराधना नहीं करते, परन्तु उसकी आराधना करते हैं जो इस पुस्तक की बातों को प्रगट और पूरा करता है! मेम्ना पुस्तक लेने और उसकी मुहरों को खोलने के योग्य है, क्योंकि केवल उसका वध हुआ और अपने लहू से उसने हर एक कुल और हर भाषा में से लोगों को मोल लिया है (प्रकाशितवाक्य 5:9-10)।

यीशु मसीह के पहले आगमन की मृत्यु और पुनरुत्थान सभी मानवीय इतिहास का आधार और केंद्र है। (1 कुरिन्थियों 15:3-4; तुलना करें - 1:22; 2:23-24; 3:13-15; 4:10; 5:30; 7:52-56; 8:32; 10:39-40; 13:28-31; 17:31; 26:23)! स्वर्ग में, धरती पर और नरक की सारी शक्तियाँ मानव इतिहास में इस एक घटना के आस-पास एकत्रित हुई हैं और इसके परिणाम के लिए लड़ती हैं। सृष्टि की रचना के बाद से सम्पूर्ण इतिहास क्रूस और जी उठने की ओर संकेत करता है। मसीह के पहले आगमन के बाद सम्पूर्ण इतिहास क्रूस की ओर संकेत करता है और मसीह का जी उठना उसके दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है। मानव इतिहास की इस एक घटना के द्वारा परमेश्वर और मसीह ने निर्णायक जय प्राप्त की। क्रूस पर शैतान और उसकी नरक की शक्तियों को और पृथ्वी पर उसके अनुयायियों को निर्णायक हार का सामना करना पड़ा! अपने पहले आगमन पर मसीह ने शैतान को बान्ध दिया और अपना राज्य स्थापित किया (मत्ती 12:28-30)! प्रत्येक व्यक्ति को यह चुनाव करना होगा कि वह "यीशु के साथ" है या "यीशु के विरुद्ध" है। इसके बीच का और कोई रास्ता नहीं है!

चार जीवित प्राणी, जो प्रकृति की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमें पृथ्वी पर आये अन्धकार, भूडोल और कब्रों के खुलने की याद दिलाते हैं (मत्ती 27:45-53)। परमेश्वर की सृष्टि को भी यह पता है कि इसका अन्त पूरी तरह से इस एक दिन (मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान) से जुड़ा हुआ है और वह आशाभरी दृष्टि से यह उम्मीद करती है कि वह आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी (रोमियों 8:19-21)!

चौबीस प्राचीन, जो पुराने नियम में परमेश्वर को और नए नियम में स्वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, हमें उन लोगों की याद दिलाते हैं जो क्रूस से डरते और उससे दूर भागते हैं। परमेश्वर के लोग (कलीसिया) भविष्यद्वक्ताओं की बातों और व्यवस्था को पूरा होते हुए देखेंगे। व्यवस्था ने पशुओं के बलिदान के बारे में सिखाया था (इब्रानियों 9:12-14) और भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के दास की भविष्यद्वाणी की थी कि उसका मेम्ने के रूप में वध किया जाएगा और हमारे

पापों के लिए उसे कुचला जाएगा (यशायाह 53:5,7)। और वे ये गीत गाते हैं कि उसने अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है (प्रकाशितवाक्य 5:9)।

[3] यह इस्लामिक धारणा है।

स्वर्ग में स्वर्गदूत हमेशा उस उद्धार के संदेश की एक झलक पाने के लिए प्रयासरत रहते थे जो कलीसिया (विश्वासियों)

को सौंपा गया था (1 पतरस 1:9-12)। स्वर्गदूतों ने यीशु मसीह के जन्म की घोषणा की (लूका 1:26-37 2:8-14)। उन्होंने यीशु मसीह की सेवा की (मत्ती 4:11)। उन्होंने उस समय यीशु मसीह को सामर्थ्य दी जब वह अपनी मृत्यु से पहले व्याकुल होकर प्रार्थना कर रहा था (लूका 22:43)। वे उसकी मृत्यु के उस भय के गवाह थे लेकिन उन्हें पुनरुत्थान की खुशी भी थी इसलिए उन्होंने लोगों को यह प्रगट करने के लिए कि यीशु मसीह जो मर गया था वह हमेशा के लिए जीवित है, उस कब्र का पत्थर लुढ़का दिया (प्रकाशितवाक्य 1:18; मत्ती 28:5-7)। वे उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं। क्रूस पर अपना लहू बहाने के द्वारा परमेश्वर ने न केवल पृथ्वी पर सारी वस्तुओं का बल्कि स्वर्ग में भी सभी वस्तुओं का अपने आप से मेल करवा लिया था (कुलुस्सियों 1:19 -20)। पाप में गिरने से स्वर्ग में स्वर्गदूतों पर भी असर पड़ा था लेकिन क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से स्वर्गदूतों के संसार को भी टूटने से बचा लिया गया।

(4) प्रकाशितवाक्य का यह संदेश आरम्भ से लेकर वर्तमान तक और अंत के समय तक की घटनाओं के बारे में है (प्रकाशितवाक्य 5: 13-14)।

प्रकाशितवाक्य 4:1-11 में दिए गए दर्शन अनन्तकाल में अपने सिंहासन पर शान्तिपूर्ण रीति से बैठे परमेश्वर के बारे में बताते है। परमेश्वर मध्य में है। लेकिन प्रकाशितवाक्य 5:1-12 में पाया जाने वाला दर्शन अपने समय पर मसीह के द्वारा किये जाने वाले कार्य के बारे में बात करता है। अब मसीह मध्य में है। परमेश्वर की परिपूर्णता मसीह में वास करती है और परमेश्वर, जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वो मसीह में एकत्र करता है (कुलुस्सियों 1:19-20; इफिसियों 1:9-10)।

प्रकाशितवाक्य 5:13-14 में अंतिम दर्शन उसकी महिमा और मेम्ने के बारे में बताता है जो सिंहासन पर *हमेशा-हमेशा* के लिए बैठा है। *एक बार फिर से परमेश्वर मध्य में है*, परन्तु अब वो परमेश्वर है जिसने स्वयं को यीशु मसीह, उसके पहले आगमन, क्रूस पर उसके बलिदान और उद्धार के उसके सम्पूर्ण कार्य में अपने आपको प्रगट किया (1 कुरिन्थियों 15:27-28)!

मसीह के आने से पहले इस संसार की वस्तुएँ आकर्षक लग रही थीं : संसार में पाई जाने वाली वस्तुएँ वैसी नहीं थीं जैसी वे लगती थीं। संसार में पाई जाने वाली वस्तुएँ बदलती हुई नज़र नहीं आ रही थीं। लेकिन मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, यीशु मसीह के स्वर्गारोहण और सिंहासन पर बैठने के द्वारा इस आकर्षण को तोड़ दिया गया। संसार की वस्तुएँ वैसी ही बनती जा रही हैं जो वे वास्तव में हैं। "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे" (प्रकाशितवाक्य 22:11)। और इस संसार का इतिहास अपने अन्तिम गंतव्य की ओर अग्रसर होता है। यह यीशु मसीह ही है जो मुहरों को तोड़कर और पुस्तक को खोलने के द्वारा राज्य करता है। इससे इतिहास की घटनाओं का एक क्रम बनता है जो सृष्टि में सारी वस्तुओं को उनके अंतिम गंतव्य तक ले जायेगा! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और उसके पहले आगमन के समय सिंहासन पर उसका विराजमान होना, समय और अनन्तकाल को एक साथ लाता है। उसके दूसरे आगमन पर सभी वस्तुओं को अनन्तकाल तक पहुँचाया जाएगा।

"कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि *जो कुछ स्वर्ग में है*, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ *वह मसीह में एकत्र करे*" (इफिसियों 1:9-10; इब्रानियों 2:8)। "कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है" (फिलिप्पियों 2:10-11)। "और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की" (कुलुस्सियों 1:20)। *जिस तरह से लोग परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन होंगे, उसमें एक अन्तर है।* पाप करने वाले पापी ही बने रहते हैं परन्तु उन्हें पश्चाताप् करने के लिए विवश किया जता है। वे शान्ति और मेल-मिलाप का स्वागत नहीं करते - इसके लिए उन्हें बाध्य किया जाता है (देखें रोमियों 16:20; 1 कुरिन्थियों 15:24-28; इफिसियों 1:21-22)। सृष्टि स्वेच्छा या बिना इच्छा से प्रभु मसीह के राज्य के तहत लाई जाती है। इसका संदर्भ सार्वभौमिक प्रायश्चित्त या सार्वभौमिक उद्धार की शिक्षा से नहीं है, क्योंकि मानवता का एक हिस्सा परमेश्वर और उसके लोगों का बैरी रहेगा (1 कुरिन्थियों 15:25) और यह भी कि "अनन्त दण्ड" एक अनन्त सत्य ही रहेगा (मत्ती 25:46; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

इसलिए समस्त पृथ्वी और सम्पूर्ण जगत और सभी छुड़ाए हुए लोग उसकी रचना और उद्धार के कार्य के कारण, परमेश्वर और मेम्ने की प्रशंसा करते हैं। सभी वस्तुएँ अंततः परमेश्वर की महिमा करेंगी (रोमियों 11:36)। उसकी इच्छा सब जगह पूरी होगी (प्रकाशितवाक्य 4:11)। सिंहासन राज्य करेगा, अर्थात्, परमेश्वर पिता अपने पुत्र के द्वारा राज्य करेगा। मेम्ना

राज्य करता है, इसलिए कलीसिया को सताव (परीक्षा और अत्याचार) से डरने की आवश्यकता नहीं है।

ग. यीशु मसीह के स्वर्गारोहण का हमारे जीवन में महत्व

यीशु मसीह समस्त वस्तुओं और सब पर राज्य करने के लिए सिंहासन पर जा बैठा, इस प्रकार उसने अंतिम चरण में अपने राज्य की स्थापना की।

1. मसीह के स्वर्गारोहण का पहला परिणाम सारी सृष्टि को उसकी पूर्ण विजय की घोषणा करना है।

पढ़ें 1 पतरस 3:18-22 (देखें : नियमावली 6, परिशिष्ट 8 - मृतक पूर्वजों के साथ सम्बन्ध)।

(1) **यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने के द्वारा पापों का प्रायश्चित और परमेश्वर के साथ टूटे हुए सम्बन्ध का मेल-मिलाप (1 पतरस 3:18)।**

यीशु को "देह सहित मार डालने" का मतलब है कि उसे तब मृत्यु दी गयी थी, जब वह अपने निर्बल मानव शरीर में था और उसके ऊपर मानवजाति के पापों का बोझ डाल दिया गया था (रोमियो 1:3)। उसकी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने अपने निर्बल मानव स्वभाव को अलग कर दिया और पाप और मृत्यु के साथ हर सम्बन्ध को तोड़ दिया।

यीशु को "आत्मा द्वारा जीवित" करने का अर्थ था कि पवित्र आत्मा द्वारा उसके मानव शरीर को जीवित कर दिया गया और मृतकों में से वह जी उठा। उसके जी उठने के बाद, उसकी पूर्ण देह महिमान्वित हुई और पवित्र आत्मा द्वारा उस पर पूरी तरह से नियंत्रण किया गया (रोमियों 1:4; कुलुस्सियों 2:9)! उसी क्षण से यीशु, अपने मानव स्वभाव के रूप में, अपने मनुष्यत्व में नहीं रह पाया, लेकिन पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरकर अपनी महिमान्वित देह में बदल गया। उसी क्षण से, परमेश्वर की महान सामर्थ्य ने यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर, सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता, और हर एक नाम के ऊपर बैठाया (मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

(2) **मसीह का जाना और प्रचार करना (1 पतरस 3:19)।**

ग्रीक शब्द स्पष्ट है, "आत्मा में होकर उसने एक बार सब लोगों को (participle, aorist time) सब जगह जाकर प्रचार किया।"

ध्यान दें :

- उसका जाना पुनरुथान से *पहले नहीं*, परन्तु पुनरुथान के *बाद* था।
- उसका जाना और प्रचार करना *मानवीय आत्मा में नहीं*, बल्कि *महिमान्वित (जी उठी) देह* में था।
- उसका जाना *अधोलोक* में नहीं था, परन्तु स्वर्ग तक परमेश्वर की दाहिनी ओर जाना था जहाँ स्वर्गदूत, अधिकार और शक्तियाँ उसके आधीन हैं (1 पतरस 3:22)! यीशु अधोलोक (इब्रानी में: सीओल, ग्रीक में : हेड्स) में नहीं गया जहाँ मृत लोगों की आत्मा रहती हैं, परन्तु ऊपर स्वर्ग में गया, जहाँ परमेश्वर रहता है।
- उसका प्रचार *बाइबल का सुसमाचार नहीं था, बल्कि उसकी विजय का प्रचार था।* उसका स्वर्गारोहण ही उसकी महान विजय का प्रमाण और साथ ही उसकी बातों की घोषणा भी थी।

(3) **कैदी आत्माएँ (1 पतरस 3:19)।**

इस प्रकार यीशु मसीह का स्वर्गारोहण "कैद में पाई जाने वाली आत्माओं" के लिए उसकी विजय का एकमात्र प्रचार था। ये आत्माएँ उन लोगों की आत्माएँ थी जिन्होंने पुराने नियम में जब नूह ने जहाज बनाया था तब परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया था। वे जलप्रलय में मारे गए और उनकी आत्माओ को अधोलोक में बन्दी बनाकर रखा गया है। उत्पत्ति 6:5 इस प्रकार कहता है कि वे बुराई करने वाले लोग थे और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता था वह निरन्तर बुरा ही होता था। 2 पतरस 2:5 कहता है कि नूह धार्मिकता का प्रचारक था। नूह ने परमेश्वर के वचन को ग्रहण किया और उसके कहने पर एक जहाज़ का निर्माण किया, इन बुरे लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया और उसके उपदेश का उपहास किया और उसकी चेतावनी को तुच्छ जाना। उन्होंने उसके प्रचार पर विश्वास नहीं किया और जहाज़ के बनाये जाने के आदेश का पालन नहीं किया, जिसे जलप्रलय द्वारा नाश किये जाने के निर्णय के रूप में कई सालों तक याद रखा गया। उन्होंने परमेश्वर की चेतावनी का उल्लंघन किया और फिर भी परमेश्वर संभवत: सौ वर्षों तक धीरज धरकर ठहरा रहा (1 पतरस 3:20; उत्पत्ति 5:32; 6: 3; 7: 6)। परन्तु जब जलप्रलय हुआ तो नूह का विश्वास सही साबित हुआ और बुरे लोगों के अविश्वास का अन्त हुआ (इब्रानियों 11: 6)। मत्ती 24:37-39 के अनुसार, यीशु मसीह यह

सिखाता है कि "नूह के दिनों में रहने वाले लोग" दुनिया के सभी उदासीन और आज्ञा न मानने वाले लोगों का प्रतीक हैं!

इसलिए, स्वर्ग में यीशु मसीह का चढ़ जाना उसकी विजय की घोषणा है, न केवल सभी बुरी शक्तियों पर बल्कि उन सभी अधर्मी और परमेश्वर को न मानने वाले लोगों पर भी, फिर चाहे वे यीशु मसीह के आगमन से पहले पाए जाते थे या बाद में। बाइबल के अन्य तथ्यों से हमें पता चलता है कि मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होना ही सभी दुष्ट की शक्तियों (इफिसियों 1:20-22), जैसे कि शैतान और उसकी सेना (यूहन्ना 12:31-32 प्रकाशितवाक्य 12:5-9 20:1:37) दुष्टात्माएँ (गिराए गए स्वर्गदूत) (लूका 8:31 कुलुस्सियों 2:15 2 पतरस 2:4 यहूदा 6 प्रकाशितवाक्य 9:1), पृथ्वी के न्यायियों (भजन 2:8-12) और पृथ्वी पर रहने वाले सभी दुष्ट और अधर्मी व्यक्तियों (1 पतरस 3:19) पर विजय की घोषणा है! स्वर्ग में मसीह का चढ़ जाना उसकी अपनी पूर्ण विजय की घोषणा है!

2. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का दूसरा परिणाम उसके सभी बन्दियों को दिखाना है : एक तरफ उसके छुड़ाए हुए लोग और दूसरी तरफ उसके शत्रु।

पढ़ें इफिसियों 4:7-10; 2 कुरिन्थियों 2:14; कुलुस्सियों 2:15

निम्नलिखित वचन एक ऐसी तस्वीर को उजागर कर रहे हैं जिसमे रोम का राजा अपनी जीत के बाद एक विजयी यात्रा लेकर रोम में प्रवेश कर रहा है। उसने एक युद्ध को जीत लिया है और अब शहर में विजयी यात्रा के साथ अपनी विजय का उत्सव मनाता है। उसके इस यात्रा में युद्ध के रथ, सभी योद्धा, विजय प्राप्त लोग और सारे बन्दी लोग हैं। जैसे-जैसे वह आगे अग्रसर होता जाता है, उस भीड़ को जो उन्हें उत्साहित करने आई है, भेंट प्रदान करता जाता है।

भजन 68:18 में पौलुस अपने शब्दों में यह कहता है, "जब तू ऊँचे पर चढ़ा, तब तू लोगों को बन्धुवाई में ले गया, तू ने मनुष्यों से भेंटें ली।" पुराने नियम में यह परमेश्वर का प्रतीक है, जिसने इस्राएल के आस-पास के देशों में से एक पर विजय प्राप्त की और फिर स्वर्ग में बन्दियों और युद्ध में बची हुई वस्तुओं (जो भेंट में उसे दिए गए) के साथ लौट आया। नए नियम में यह यीशु मसीह का प्रतीक है जो शैतान के ऊपर विजय प्राप्त करने के बाद विजयी होकर अपने बन्धुओं के साथ स्वर्ग में चढ़ता है और अपने लोगों को भेंट देता है।

(1) इफिसियों 4:7-8 में विजयी यात्रा

"जब तू ऊँचे पर चढ़ा, तब तू लोगों को बन्धुवाई में ले गया, तू ने मनुष्यों को भेंटें दी।" "जब मसीह स्वर्ग पर चढ़ गया, तो उसने अपने सभी बन्धुओं को अपने विजयी यात्रा में ले लिया। उसने उन्हें सुसमाचार में व्यक्त प्रेम, कृपा और सच्चाई के रूप में जीता या साथ में लिया। विजयी यात्रा यह दर्शाता है कि मसीह ने क्रूस पर अपने लोगों के लिए पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की और स्वर्ग में उसका विजयी होकर चढ़ जाना, उन सभी मसीहियों के सम्पूर्ण संसार के लिए एक घोषणा है जिसे उसने अपनी दया और अनुग्रह की सामर्थ्य से अपने अधीन कर लिया था!

वह अनुग्रह को भेंट के रूप में देता है (Greek: charis)। वह प्रत्येक मसीही को अपनी करुणा का एक हिस्सा प्रदान करता है। ये भेंट एक विशेष सुसमाचार का कार्य करने का अनुग्रह हो सकता है, लोगों के विशेष समूह से सम्बन्धित या कई आत्मिक भेंटों में से एक अनुग्रह हो सकता है। इस प्रकार प्रत्येक मसीही जन को अपनी आत्मिक भेंट (ग्रीक: करिश्मा) को स्वयं की योग्यता या सरलता के फल के रूप में नहीं देखना चाहिए। उसे इसे केवल कई भेंटों में से एक भेंट के रूप में जो सीमित रूप (एक मापी हुई भेंट के रूप) में है, देखना चाहिए और उसे इस भेंट का प्रयोग (अन्य मसीहियों के जीवन को बनाने के लिए, कलीसिया बनाने के लिए और परमेश्वर की महिमा के लिए) करना चाहिए।

(2) कुरिन्थियों 2:14-16 में विजयी यात्रा

"परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमें हमेशा मसीह के जय के उत्सव में ले चलता है और हमारे माध्यम से हर जगह उसके ज्ञान की सुगंध फैलती है। क्योंकि हम परमेश्वर मसीह की सुगंध उन लोगों के लिए हैं जो बचाए गए और जो नाश हो रहे हैं। एक के लिए हम मृत्यु की गंध हैं, दूसरे के लिए जीवन की सुगंध।" यहाँ पर मसीह के बन्धी मसीही लोग हैं और जब वे विजयी उत्सव में मसीह के पीछे चलते हैं तो वे लोगों के बीच हर जगह मसीह के ज्ञान की सुगंध फैलाते हैं। जो मसीह पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर का ज्ञान उन लोगों के लिए जीवन की सुगंध है। परन्तु वे लोग जो मसीह पर विश्वास नहीं करते उनके लिए यह मृत्यु की गंध है।

(3) कुलुस्सियों 2:15 में विजयी यात्रा

"और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लम-खुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।" वे स्वर्ग में विजयी प्रवेश के दौरान मसीह के विजय रथ के पीछे बेड़ियों

में जकड़े युद्ध के बन्दियों के रूप में चलते हैं! वे मसीह की शान्ति और सद्भावना का स्वागत नहीं करते हैं। इसके लिए उन्हें विवश किया जाता है (रोमियों 16:20)।

3. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का तीसरा परिणाम यह है कि मसीह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर सभी मसीहियों का एक स्थायी प्रतिनिधित्व है और लगातार स्वर्ग में परमेश्वर के साथ मसीहियों के लिए मध्यस्थ की प्रार्थना करता रहता है (इब्रानियों 7:22)।

पढ़ें इब्रानियों 9:24-28; इब्रानियों 7:23-28; रोमियों 8:34; 1 यूहन्ना 2:1-2; प्रकाशितवाक्य 8:3-5

(1) **पुराने नियम में शुद्ध करने की व्यवस्था, नए नियम में आत्मिक शुद्धता का प्रतीक है।**

इब्रानियों 9:24 कहता है, "क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे।"

इब्रानियों 9:23 में लेखक यह मानता है कि सांसारिक मन्दिर की व्यवस्था (पुराने नियम में शुद्ध करने की व्यवस्था) वास्तविक और प्रभावशाली थी, क्योंकि वे पृथ्वी की चीज़ों की शुद्धि के लिए प्रभावी थी, लेकिन वह ये नहीं मानता है कि आन्तरिक और आत्मिक अशुद्धता की शुद्धि के लिए भी उनका उपयोग किया जा सकता है। व्यवस्था द्वारा शुद्धता की विधि शारीरिक रूप के लिए पर्याप्त थी, लेकिन *आत्मिकतौर पर* प्रभावी शुद्धिकरण के लिए एक बेहतर त्याग आवश्यक है।

पुराने नियम की व्यवस्था केवल नए नियम की वास्तविकताओं की *प्रतियाँ या छाया* थी। "स्वर्गीय वस्तुएँ" जिसे आत्मिक शुद्धता की ज़रूरत थी, वह थी लोगों की अशुद्ध सोच। यह शुद्धता आत्मिकतौर से थी, न कि शारीरिकतौर पर। परमेश्वर के लोगों को आत्मिकतौर पर शुद्धिकरण की आवश्यकता है ताकि वे परमेश्वर की ओर पाप की अशुद्धता के बिना बढ़ सकें और ये कि वे परमेश्वर के साथ रहने योग्य बनें।

(2) **नये नियम का शुद्धिकरण यीशु मसीह के लहू के द्वारा होता है।**

मसीह की मृत्यु के द्वारा और इस तरह अपने लहू के छिड़काव से परमेश्वर के लोग "परमेश्वर का निवासस्थान" बन गए (इब्रानियों 3:6; 2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:5)। इस प्रकार का आत्मिक निवासस्थान होने के लिए, उन्हें "यीशु मसीह के लहू के छिड़काव" (1 पतरस 1:2,19,22) द्वारा नये सिरे से जन्म लेने और पवित्रता का अनुभव होना चाहिए। इस प्रकार, मसीह के लहू के छिड़काव से निम्नलिखित वस्तुएँ पवित्र हुई हैं :

- नई वाचा की पुस्तक (स्वर्ग में लिखा अनन्त सुसमाचार) (इब्रानियों 9:20)
- मसीही नगर (स्वर्गीय यरूशलेम) (इब्रानियों 12:18-24)
- परमेश्वर का इस्राएल (मसीही कलीसिया जो मसीह के क्रूस का अंगीकार करते हैं और जिनके सदस्यों की पवित्र आत्मा द्वारा गवाही दी गई है (गलतियों 6:16; रोमियों 2: 28-29)। उन सभी पर मसीह की मुहर लगी है।

पुराने नियम की *तैयारी* के समय ने नए नियम में *परिपूर्णता* के समय का स्थान लिया। मसीह के उद्धार के कार्य में निम्नलिखित बातें शामिल हैं :

- एक ओर धरती पर पापों के लिए प्रायश्चित्त का पूर्ण बलिदान।
- और दूसरी ओर स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में उसका महायाजक बनना।

इब्रानियों 9:24-26 में लेखक कहता है कि यदि पापियों को परमेश्वर के सामने उपस्थित होना है, यहाँ तक कि एक पापरहित महायाजक प्रतिनिधि द्वारा, तो उन्हें स्वयं को पापों से शुद्ध करना होगा, अन्यथा परमेश्वर की उपस्थिति अपवित्र हो जाएगी। पृथ्वी पर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार का कार्य पूरा करने के बाद, यीशु मसीह परमेश्वर की उपस्थिति में परमेश्वर के साथ हमारा अनन्त प्रतिनिधि होने के लिए स्वर्ग पर चढ़ा।

वह स्वर्ग में सभी मसीहियों का परमेश्वर के साथ प्रतिनिधित्व करता है जहाँ उनके लिए उसके प्रायश्चित का सिद्ध बलिदान परमेश्वर के सामने किया गया (1 यूहन्ना 2:1-2)।

- यद्यपि पुराने नियम में याजक बलिदान चढ़ाने के लिए प्रतिदिन मंदिर में प्रवेश करते थे, लेकिन यीशु मसीह ने हमेशा के लिए *स्वर्ग* में प्रवेश किया।
- यद्यपि पुराने नियम में याजक ने केवल *पशुओं का लहू* ही चढ़ाया, जबकि यीशु मसीह ने *एक बार ही में हमेशा के लिए अपना ही लहू बहा दिया।*
- यद्यपि पुराने नियम में याजक *औपचारिक शुद्धता/पवित्रता* का आश्वासन ही दे सकते था, लेकिन यीशु मसीह ने *हमेशा*

के लिए स्थायी आत्मिक शुद्धता/पवित्रता (सभी पापों के अपराध की क्षमा और सारी शर्मिंदगी से शुद्ध विवेक) का आश्वासन दिया।

(3) **"आखिरी दिन" शब्द का अर्थ है अन्त का समय**

"पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे" (इब्रानियों 9:26)। उसने पूर्ण रीति से पाप का निपटारा किया। ऐसा नहीं है कि अन्त के समय मसीह आने वाला था, बल्कि यह कि उसके आगमन के द्वारा वह समय "अन्त का समय" बन जायेगा! मसीह के पहले आगमन ने और उसके उद्धार के कार्य ने "अन्त के समय" का शुभारम्भ किया। "आखिरी दिन" (सदी का अन्त) मसीह के पहले आगमन और उसके दूसरे आगमन के बीच का समय है।

मसीह के पहले आगमन के समय "आखिरी दिनों में" निम्नलिखित घटनाएँ होती हैं :

- यीशु मसीह का "अन्त के समय" में प्रगटीकरण (उसका जन्म) (1 पतरस 1:20)।
- परमेश्वर ने "अपने पुत्र के द्वारा अन्तिम समय में" हमसे बात की (पृथ्वी पर उसका जीवन) (इब्रानियों 1:1-2)।
- मसीह ने हमेशा के लिए "सदी के अंत में" स्वयं के बलिदान (अपनी क्रूस पर चढ़ाई) के द्वारा पाप को दूर किया (इब्रानियों 9:26)।
- पवित्र आत्मा को "अंतिम दिनों में" (आत्मा में उसकी वापसी) उण्डेल दिया गया (प्रेरितों के काम 2:17)।

मसीह के दूसरे आगमन के समय में निम्नलिखित घटनाएँ "अन्तिम दिनों में" होती हैं :

- "अन्त के समय" में मरे हुओं में से जी उठना होगा (यूहन्ना 6: 39,40)।
- और जो लोग मसीह के वचन को ग्रहण नहीं करते उनका अंतिम न्याय "अन्त के समय में होगा" (यूहन्ना 12:48)।

इस प्रकार परमेश्वर का *दर्शन* सृष्टि की रचना से लेकर यीशु मसीह के पहले आगमन की ओर अग्रसर होता है। मसीह के पहले आगमन के साथ परमेश्वर का दर्शन पूरा हो चुका है! यीशु मसीह के अलावा कोई और दर्शन नहीं है। परमेश्वर ने "इन दिनों के अन्त में" ("आखिरी समय के अन्त में" या "अन्त के समय" या "अन्ततः") यीशु मसीह के माध्यम से बात की। पुराने नियम में यह वाक्यांश समय की अवधि को दर्शाता है जिसमें पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियों को पूरा किया जाएगा (उत्पत्ति 49: 1 व्यवस्थाविवरण 4:30 यशायाह 2: 2 यरीयाह 30: 24 यहेजकेल 38:16 दानिय्येल 10:14 होशे 3: 5 मीका 4:1)।

(4) **यीशु मसीह ही एकमात्र स्थायी महायाजक है।**

यीशु मसीह द्वारा पुराने नियम की बातों को पूरा करने के दो कारण थे।

- यीशु मसीह पूरी तरह से पापरहित था (इब्रानियों 7: 26 28)। उसका बलिदान सिर्फ वास्तविकता का एक चित्र या छाया नहीं थी, बल्कि वास्तविकता ही थी।
- यीशु मसीह मरे हुओं में से जिलाया गया और वह सर्वदा के लिए जीवित है (इब्रानियों 7: 23-24)! इसलिए वह स्थायी महायाजक और एक स्थायी याजक है।

(5) **यीशु मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता और एकमात्र मध्यस्थ है।**

फलस्वरूप, दो बातें ऐसी हैं जो केवल यीशु मसीह ही कर सकता है, कोई अन्य भविष्यद्वक्ता या याजक नहीं कर सकता :

- केवल यीशु मसीह ही लोगों को उनके पापों से छुटकारा दिला सकता है। प्रेरित कहता है, "और किसी दूसरे के द्वारा नही। क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों के काम 4:12)।
- केवल यीशु मसीह ही है जो परमेश्वर और लोगों के मध्य में है, और परमेश्वर के साथ हमारे लिए विनती करता है। इब्रानियों 7:25 कहता है कि यीशु मसीह उन लोगों के लिए जो बचाए गए हैं, विनती करने के लिए सर्वदा जीवित है।

(6) **यीशु मसीह ही केवल मध्यस्थ है और वह ही मसीहियों की प्रार्थनाओं को प्रभावशाली बनाता है।**

प्रकाशितवाक्य 8:3-5 सिखाता है कि सिंहासन के सामने चढ़ाने से पहले, पृथ्वी के धर्मी लोगों की प्रार्थनाएँ धूप के साथ मिलायी जाती हैं। फलस्वरूप, स्वर्ग से पृथ्वी पर आग को फेंक दिया जाता है।

- प्रकाशितवाक्य 5: 8 में धूप "धार्मियों की प्रार्थना" का प्रतीक है।
- लेकिन प्रकाशितवाक्य 8: 3 में धूप "यीशु मसीह की सिद्ध प्रार्थना" का प्रतीक है जो स्वर्ग में परमेश्वर की दाहिनी ओर पाया जाता है।

पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ स्वयं से परमेश्वर के नज़दीक नहीं पहुँच सकती, क्योंकि लोग पापी हैं और उनके बीच सबसे धर्मी लोग भी गलत तरीक़े से प्रार्थनाएँ करते हैं। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए, पवित्र लोगों की प्रार्थना को भी प्रायश्चित की आवश्यकता है! उनकी अपूर्ण प्रार्थनाओं को धूप में मिलाया जाता है, जो स्वर्गदूत को दी जाती हैं। धूप मसीह के उद्धार (प्रायश्चित्त) के पूरे काम का प्रतिनिधित्व करता है जिसे उसने क्रूस पर प्राप्त किया था और वह उन लोगों के लिए पवित्र आत्मा के माध्यम से और अपनी मध्यस्थ की प्रार्थना के द्वारा पूरा करता है। इस प्रकार, धूप विशेष रूप से पृथ्वी पर मसीहियों के लिए स्वर्ग में मसीह की निरन्तर और सही मध्यस्थता का प्रतिनिधित्व करता है, पृथ्वी पर उसकी सताई हुई कलीसिया के लिए (रोमियों 8:34; इब्रानियों 7: 24-25; 9:24)। स्वर्ग में मसीह की सिद्ध प्रार्थना पृथ्वी पर हमारी अपूर्ण प्रार्थनाओं को शुद्ध और पवित्र करती है। मसीह की प्रार्थनाएँ हमारी प्रार्थनाओं में से हर पापी उद्देश्य और सभी प्रकार की स्वार्थ की बातों को दूर करती हैं!

4. **स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का चौथा परिणाम यह है कि यीशु मसीह अब अपनी कलीसिया की ओर से सभी पर राज्य करता है । वह इतिहास की घटनाओं को अस्तित्व में लाता है और उन्हें कार्यशील करता है।**

पढ़ें रोमियों 4:17; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; 1 पतरस 2:22

(1) **यीशु मसीह सब पर राज्य करता है।**

रोमियों 4:17 कहता है, "जो बातें हैं ही नहीं, परमेश्वर उनका नाम ऐसे लेता है, कि मानो वे हैं।"

1 कुरिन्थियों 15:25 कहता है, "क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है।"

इफिसियों 1:20-22 में लिखा है : "जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर : सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया : और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया : और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।"

फिलिप्पियों 2:9-11 इस प्रकार कहता है : "इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है : कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें : और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"

1 पतरस 3:22 यह बताता है, "वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया; और स्वर्गदूत और अधिकारी और सामर्थी उसके आधीन किए गए हैं।"

यीशु मसीह स्वर्ग में चढ़ा और सम्पूर्ण जगत में हर सोचने वाली शक्ति और पृथ्वी से ऊपर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सिंहासन पर जा बैठा (मत्ती 28:18)। स्वर्ग में सभी स्वर्गदूत, आकाश की सभी दुष्टात्माएँ, पृथ्वी की सारी प्रभुता स्वेच्छा या अनिच्छा से राज्य करने वाले प्रभु के आधीन हैं। वह इस प्रकार सम्पूर्ण जगत और साथ ही पूरी कलीसिया का प्रमुख है। वह अपनी कलीसिया के हित में सम्पूर्ण जगत पर राज्य करता है! वह ऐसे राज्य करता है कि सम्पूर्ण जगत में हो रही हर घटना और पृथ्वी पर बीता हुआ इतिहास दोनों मिलकर कलीसिया के हितों की पूर्ति करता है! फिर से जी उठा और सिंहासन पर विराजमान प्रभु यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (प्रकाशितवाक्य 17:14)! पृथ्वी पर जो कुछ भी होता है, उसकी इच्छा या अनुमति के बिना नहीं होता। और जो लोग उसके जयवन्त उद्धार और अनुग्रह (उसकी दया और करुणा) के सामने अपने आप को समर्पित नहीं करते, वह न्याय के समय उसके सामने अवश्य झुकेंगे (तुलना करें रोमियों 11:22)!

(2) **यीशु मसीह, इतिहास की घटनाओं को उद्धार और न्याय की उसकी योजना के साथ जोड़ता है और उन्हें कार्यशील करता है।**

परमेश्वर अपने सिंहासन पर जो सृजे गए सम्पूर्ण जगत के केंद्र में है, पृथ्वी और उसके लोगों के लिए यीशु मसीह के माध्यम से अपनी योजना को पूरा करता है। जब यीशु मसीह एक मुहर को तोड़ता है और स्वर्ग में पुस्तक के उस हिस्से को खोलता है, तो वह उद्धार और न्याय की परमेश्वर की योजना को प्रगट करता है और इसे कार्यशील करता है। आपके साथ, आपकी कलीसिया के साथ या आपके देश में ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसमें परमेश्वर की इच्छा या अनुमति ना हो!

उदाहरण के लिए, यीशु मसीह पृथ्वी पर अपनी आँखों को लगाए रहता है और उद्धार के सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से लोगों के हृदयों और जीवनों पर विजय प्राप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 6:1-2)। लेकिन पाप में गिरने (उत्पत्ति 2:16-17) के कारण वह इस बात की अनुमति देता है कि मसीहियों को उनके शत्रुओं द्वारा सताया जाये और उनका वध

किया जाये (प्रकाशितवाक्य 6: 3-4)। वह यह भी अनुमति देता है कि मसीही लोग (और अन्य निर्धन और निर्बल लोग) राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और न्यायिक हाकिमों (प्रकाशितवाक्य 6: 5-6) द्वारा सताए जाएँ (प्रकाशितवाक्य 6:5-6)। और वह यह भी अनुमति देता है कि युद्ध, अकाल, महामारी और दुर्घटना (येहेजेकेल 14:21; प्रकाशितवाक्य 6: 7-8) के कारण मसीही लोगों के साथ-साथ गैर मसीही लोग भी मारे जाएँ।

फिर भी, वह अपनी कलीसिया के हित में सम्पूर्ण जगत और पृथ्वी पर राज्य करता है (इफिसियों 1:22; रोमियों 8:28)। उसने वायदा किया, "कि अधोलोक के फाटक कलीसिया पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)। समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (इफिसियों 1:10; कुलुस्सियों 1:19-20)। अन्त में, हर एक घुटना उसके सामने झुकेगा और हर एक जुबान उसका अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है!

5. स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का पाँचवां परिणाम यह है कि यीशु मसीह सम्पूर्ण जगत में परमेश्वर के राज्य और वास्तविकता को भरकर सम्पूर्ण जगत में परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण की स्थापना कर रहा है।

पढ़ें भजन 68:18; इफिसियों 1:9-10; इफिसियों 4:9-10

(1) **पुराने और नए नियम के वचन।**

भजन 68:18 में पुराने नियम में दिए गए शब्दों का सिर्फ *हवाला* ही नहीं दिया गया है, लेकिन उन्हें इफिसियों 4: 8 के नये नियम में *लागू* भी किया गया है। पुराने नियम में परमेश्वर के बारे में भजन जिस प्रकार कहता है, उसे नए नियम में यीशु मसीह द्वारा पूरा किया जाता है! क्योंकि पुराने नियम और नए नियम दोनों में लेखक यीशु मसीह की आत्मा ही है और क्योंकि पुराने नियम को नए नियम द्वारा बेहतर तरीके से समझाया गया है, इसलिए पौलुस के पास ये अधिकार है की जो कुछ पुराने नियम में परमेश्वर के बारे में कहा गया है उसे वह नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा लागू करे।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की, विजय प्राप्त लोगों से *भेंटें (युद्ध की चीजें) लीं* और बन्दियों के साथ उसका स्वर्गारोहण हुआ (कई बन्दियों को अपने साथ ले जाना)। परन्तु *नये नियम* में यीशु मसीह ने लोगों पर अपनी मृत्यु और पृथ्वी पर पुनरुत्थान के द्वारा विजय प्राप्त की, अपने लोगों को धरती पर *भेंट दी* और अपने साथ विजय प्राप्त बन्दियों को स्वर्ग में चढ़ा ले गया।

जैसा कि 2 कुरिन्थियों 2:14 और इफिसियों 4: 8 में, "बन्दी बनाये जानेवाले" मसीही हैं जिन्हें उसके प्रेम, दया (करुणा), अनुग्रह (क्षमा) और सच्चाई (यूहन्ना 1:17) ने जीत लिया है। अब वो यीशु मसीह के साथ उसके जय के उत्सव में उसका अनुसरण करते हैं। यीशु मसीह ने उसे युद्ध की सामग्री के रूप में ग्रहण किया और उद्धार के काम के लिए भेंट दी।

यीशु मसीह को इसलिए मिला ताकि वो दे। उसने "बन्धुवों" इसलिए अपने साथ लिया ताकि वह उन्हें अपना राज्य दे सके जिसमें वे पृथ्वी पर राज्य के कार्यो को करें। इफिसियों 4:11 में मसीह ने समस्त संसार की मसीही कलीसिया को प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, रखवालों और उपदेशकों को भेंट के रूप में इसलिए दिया है (लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि ये भेंट सभी स्थानीय कलीसियों के लिए है) ताकि मसीहियों को सेवा के अपने कार्यों के लिए और मसीह की देह का निर्माण करने के लिए तैयार किया जा सके। ये भेंटें कार्यालयों (नियुक्त सेवक) के बजाय कार्य (सेवा) है। महत्वपूर्ण यह है कि ये कार्यालय हर मण्डली के प्राचीनों की अगुवाई में कार्य करते हैं (प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1)।

(2) **निर्जल स्थान में उतरना और स्वर्ग पर चढ़ना (इफिसियों 4:9-10)।**

"पृथ्वी के निचले स्थान" या "पृथ्वी की निचली जगहें" "सारे आकाश से भी ऊपर की जगहों" के विपरीत हैं। पृथ्वी की निचली जगहों पर उसका उतर जाना उसके स्वर्गारोहण के एकदम विपरीत है। इफिसियों 4:9-10 में प्रेरित पौलुस और 1 पतरस 3:18-22 में प्रेरित पतरस यीशु को किसी जगह (अधोलोक या नरक) में उतरते हुए नहीं दर्शाते हैं, बल्कि वे एक स्थिति (अवस्था) को दर्शाते (जो किसी भी मनुष्य की तुलना में कम) हैं। यीशु मसीह पहले से ही मृत लोगों की आत्माओं को सुसमाचार प्रचार करने के लिए निचली जगह (या नरक) में नहीं उतरा परन्तु क्रूस की मृत्यु सहने के लिए वह पृथ्वी पर उतरा। यद्यपि यीशु मसीह पूर्ण रीति से परमेश्वर के तुल्य था, उसने स्वयं को इस महिमान्वित स्थिति (अवस्था) के लिए शून्य कर दिया, उसने मनुष्य के गिरते मानव स्वभाव को पहन लिया, उसने सभी लोगों के लिए दास का स्वरूप धारण किया, और क्रूस पर लोगों के पापों के लिए एक अपराधी के रूप में मारा गया (फिलिप्पियों 2-5-8) और अन्त में परमेश्वर ने उसे उसके मानव स्वभाव में होते हुए त्याग दिया (मत्ती 27:46)।

इसलिए परमेश्वर उसे ऊँचे स्थान पर बैठाता है ताकि एक दिन हर एक घुटना उसके सामने झुके और हर जीभ यह अंगीकार करे कि वो ही राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11; तुलना करें - 1 पतरस 3:22)। यीशु मसीह को छोड़ संसार के पापों को अपने ऊपर लेने के लिए कोई भी इस अवस्था में नहीं आया (1 पतरस 2:24) और न ही नरक की पीड़ा को सहा (मत्ती 27:46)! यीशु मसीह को छोड़ और कोई भी मृतकों में से जी उठकर परमेश्वर पिता के दाहिने ओर बेठने के योग्य न निकला, और उस अवस्था से परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करने और पूरा करने के योग्य कोई भी नहीं है।

(3) **अपने अंतिम चरण में परमेश्वर का राज्य।**

यीशु मसीह की विजय तब पूरी होगी जब वह पुराने नियम और नये नियम के प्रकाशन को पूरा करेगा और इससे सम्पूर्ण जगत भर देगा (पूरा, सिद्ध) (इफिसियों 4:9; कुलुस्सियों 1:19-20)। वह अपनी परिपूर्णता से मसीही कलीसिया को भर देगा (इफिसियों 1:23; तुलना करें 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 3:1-3)। वह तब तक राज्य करेगा जब तक की उसके सभी शत्रु उसके पैरों तले न आ जाए (1 कुरिन्थियों)। परमेश्वर स्वर्ग में और पृथ्वी पर की सब वस्तुओं को यीशु मसीह के आधीन कर देगा (इफिसियों 1:10)। उसका राज्य अन्ततः सम्पूर्ण जगत में फैल जायेगा (दानिय्येल 2:44)! और उसके राज्य का अन्त न होगा (यशायाह 9:7; 2 पतरस 1:11)!

6. **स्वर्ग में मसीह के स्वर्गारोहण का छठवां परिणाम यह है कि मसीह ने पवित्र आत्मा को अपने प्रतिनिधि के रूप में उण्डेल दिया।**

नियमावली 5, अध्याय 9 देखें।

5 प्रार्थना (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]*

परमेश्वर के वचन के लिए प्रार्थना करें

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6 तैयारी (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*

अगले अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "स्वर्गारोहण - मसीह के राज्याभिषेक के दिन को स्मरण करना" और उसकी शिक्षा का प्रचार करना, पढ़ाना या पढ़ना।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **1 कुरिन्थियों 9 - 12** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए समय चुन लें। सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(2) (यूहन्ना 1:16)**। पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। (**यूहन्ना 2)**। बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 8

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।
अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **1 कुरिन्थियों 9-12**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 9-12) में शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। नोट्स बनाएं।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में कुँजी वचन]* **(2) यूहन्ना 1:16**

दो दो करके पुनरावलोकन करें।
(2) यूहन्ना :1:16. क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 2:1-25**

परिचय। यूहन्ना 2:1-11 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाच कदमों का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 2:1-11 में दर्शाया गया है कि यीशु ने अपने आप को प्रारम्भिक चेलो पर प्रगट किया। यूहन्ना 2:12-25 में दिखाया गया है कि यीशु मसीह अपने आप को यरूशलेम में रहने वाले लोगों पर प्रगट करता है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें। आइये मिलकर यूहन्ना 2:1-25 पढ़ें।
आइये हम एक एक वचन करके तब तक पढ़ते रहे जब तक कि अनुच्छेद समाप्त नहीं हो जाता।

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**
ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। एक या दो मुख्य बातें आपको समझ में आयी हों उन्हें आप लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपनी कॉपी में उसे लिखें।
साझा करें।(जब समूह के सभी जन 2 मिनट तक सोच कर लिख चुकें हो,तो अपनी बात दूसरों के सामने रखें।
आइये अब हम आपस में साझा करें कि हमने इस अनुच्छेद से क्या सीखा। (**याद रखें:** हर एक छोटे समूह में,समूह के लोग अलग अलग बातों को साझा करेंगे)

2:11
***खोज* 1 . यीशु ने अद्भुत चमत्कार के द्वारा अपनी महिमा को प्रगट किया।**

प्रभु यीशु मसीह की महिमा वे सारे ईश्वरीय गुण हैं जो उसके मानवीय स्वभाव के पर्दे से होकर चमक रहे हैं। उसकी महिमा का एक उदारहण उसका अनुग्रह और प्रेम है। यूहन्ना 1:14-18 में यूहन्ना कहत है,"हमने उसकी महिता को देखा.... जो उसके अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण थी।" उसकी महिमा को देखने का अर्थ उसके ईश्वरीय गुणों का मूल्यांकन व उस पर चिन्तन करना है। यहां पर उसकी महिमा उसके अनुग्रह और सत्य है जो उसके कामों और उसकी बातों से प्रगट होती है।

उसकी महिमा के प्रगट होने का एक और उदारहण उसके अद्‌भुत चमत्कार है। यूहन्ना 2:11 में यीशु ने एक अद्‌भुत चमत्कार के द्वारा अपनी महिमा को प्रगट किया। उसने विवाह उत्सव में पानी को दाखरस में बदल कर अपने ईश्वरीय गुणों को प्रगट किया। यहां पर यीशु की महिमा निम्नलिखित बातों में समाई हुई है। उसने विवाह का आदर करके उसने अपने सिद्ध नैतिक मूल्यों को प्रगट किया। उसने बहुतायात से दाखरस का इन्तेजाम करके अपनी ईश्वरीय उदारता प्रगट किया और परेशान घर के स्वामी की सहायता की।

मैं और अधिक गहराई व सावधानी के साथ पुराने और नये नियम में प्रगट ही गयी मसीह की महिमा के विषय में देखना चाहूँगा।

2:24-25

खोज 2.यीशु ने खुद को दूसरों के भरोसे न रहें और न अपने कामों को छोड़ा।

जब यरूशलेम के लोगों ने यीशु द्वारा किये गये अद्‌भुत चमत्कारों को देखा तो, बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया(2:23)। लेकिन यीशु ने कभी अपने आपको उनके भरोसे नहीं सौंपा अर्थात वे उन पर कभी निर्भर नहीं हुए,क्योंकि वे उन्हें जानते थे। इसका मतलब यह है कि यीशु ने उन विश्वास करने वाले लोगों को सच्चे विश्वासी के रूप में नहीं पाया। केवल यीशु ही सब लोगों को जानता है। केवल यीशु ही जानता है कि लोगों के हृदय में क्या है। केवल यीशु ही जानते है कि कब कोई व्यक्ति सही मायने में नया जन्म पाता है। यूहन्ना 2:25 में लिखा है कि यीशु को किसी भी व्यक्ति के बारे में किसी दूसरे जन से गवाही या साक्षी सुनने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उसकी आर पार देखने वाली आखें मनुष्य के हृदय को परखकर सारा हाल जान सकती हैं।

यूहन्ना अध्याय 1 में, जब यीशु ने पहली बार शिमौन को देखा, तो उसे किसी से यह सुनने की जरूरत नहीं पड़ी कि शिमौन कौन था। उसकी आर पार देखने वाली आंखों ने स्वयं पहिचान लिया कि शिमौन कौन था। जब यीशु ने पहली बार नतेनयेल को देखा तब कि उसे किसी व्यक्ति से यह जानने की जरूरत नहीं पड़ी कि वह कौन हे। वह जानता था कि नतेनयेल एक सच्चा यहूदी है जिसके मन में कोई कपट नहीं था। अत: यीशु यूहन्ना अध्याय 2 में अच्छी तरह से जानते थे कि यरूशलेम वासियों में से बहुतों कि विश्वास सच्चा व उद्धार करने वाला विश्वास नहीं था।

अन्त:करण के भीतर झांकर देखने वाली उसकी आखों से वह सब लोगों के मन का हाल जान लेता है। वह उनके विचारों,उद्देश्यों और व्यवहार को जानता था। और यूहन्ना 3 में, यीशु जब पहली बार नीकेदुमुस से मिला तो उसे उसके बारे में बताने के लिए किसी की जरूरत नहीं पड़ी।

ये सारी आयते मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मैं इस बात को मानता हूँ कि यीशु मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं। उसकी आर पार देखने वाली आंखे मेरे मन,मस्तिष्क और मेरे जीवन में देखने के योग्य हैं(2 कुरि 16:9;इब्रानियों 4:13)। वह पतरस की कमजोरियों को जानता है, वह नतेनयेल की ईमानदारी को जानता है, वह सारे लोगों के विश्वास के समान मेरे विश्वास की दशा को भी जानता है और वह नीकेदुमुस के प्रश्नों के समान मेरे मन में उठने वाले प्रश्नों को भी जानता है।

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये हम यूहन्ना 2:1-25 में पाये जाने वाले सत्य को जानने का प्रयास करें और उन चीज़ों के बारे में प्रश्नों को पूछे जिन्हें हम अभी नहीं समझते।

लेखा। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव स्पष्ट हो सके बनाएं। फिर अपने प्रश्नों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सभी जन 2 मिनट तक सोच कर लिख चुकें हो,तो अपनी बात दूसरों के सामने रखें।

आइये अब हम आपस में साझा करें कि हमने इस अनुच्छेद से क्या सीखा।)

चर्चा करें। (तब, कुछ प्रश्नों का चुनाव करें और अपने समूह के सदस्यों के साथ मिलकर इन प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।

(निम्नलिखित कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर विद्यार्थी गण आपस में पूछ सकते हैं और प्रश्नों से सम्बन्धित कुछ टिप्पणियां हैं जिन पर वे चर्चा कर सकते हैं)

2:11

प्रश्न 1. बाइबल में चमत्कारों का क्या उददेश्य है?

नोट्स।

यूहन्ना "चमत्कारों" की बजाये "चिन्ह" शब्द का इस्तेमाल करना पसन्द करता है

(1) चिन्ह एक चमत्कार ही है जिसे ईश्वरीय अधिकार व प्रताप के रूप में देखा जाता है।

चमत्कार का उददेश्य दर्शकों के ध्यान को चमत्कार से हटाकर चमत्कार करने वाले परमेश्वर की ओर आकर्षित करना है। बाइबल में चमत्कार विशेष तौर पर उन जगहों पर होते हुए नजर आते हैं जहां पर किसी नये प्रकाशन का उदय होता है।

- मूसा : जब परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था को प्रगट किया, तब ही परमेश्वर ने उसके द्वारा चिन्हों को भी प्रदर्शित किया। उसने उसके शत्रु के खिलाफ दस विपत्तियां भेजी। उसने लाल समुद्र के पानी को इस्राएलियों के लिए दो भागों में बांट दिया ताकि वे सूखे में समुद्र पर कर सकें। उसने खारे पानी को मीठा कर दिया, इत्यादि। इन चमत्कारों के द्वारा परमेश्वर ने यह साबित किया कि जो भी व्यवस्था मूसा को दी गयी हैं वह परमेश्वर द्वारा प्रेरित व अधिकृत है।
- एलिय्याह और एलीशा: उन दिनों में जब यहूदा और इस्राएल दोनों परमेश्वर से फिर गये थे परमेश्वर ने अपनी वास्तविकता उन पर प्रगट की,परमेश्वर ने अपने दासों एलिय्याह और एलीशा के द्वारा अनेकों चिन्ह दिखाए। उसने एक गरीब विधवा के लिए भोजन का इन्तेजाम किया। उसने वेदी पर रखे बलिदान, चारों तरफ डले पानी और पत्थरों तक को जलाकर भस्म करने के लिए आग को भेजा ताकि यह साबित हो सके कि मूर्तियों में कोई शक्ति नहीं है। उसने मृतक बालक को जीवित कर दिया। उसने अग्निमय रखा की सुरक्षा देकर अपने दासों की सुरक्षा की।
- यीशु मसीह। जब परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मानवीय स्वभाव का धारण किया और हमारे बीच में आकर डेरा किया, तब उसने ज्यादातर और सर्वश्रेष्ठ चमत्कारों को अन्जाम दिया। उसने बीमारों को चंगा किया। उसने दुष्टात्मा ग्रसित लोगों को छुटकारा दिया। उसने बन्धुओं को आजाद कराया। उसने अन्धों को आंखें दी। लंगड़ा फिर से चलने लगा। कोढ़ी चंगे हो गये,बहरे सुनने लगे। मृतकों ने फिर से जीवन पाया। उसने हजारों की भीड़ को चमत्कारी ढंग से भोजन कराया और समुद्र में आये तूफान को शान्त कर दिया। लेकिन उससे भी बड़ें चमत्कार निम्नलिखित हैं:
  -कुंवारी से जन्म लिया।पवित्र आत्मा ने अपने मानवीय स्वभाव का कुवारी मरियम से पैदा होना सम्भव किया।
  -मृतकों में से उसका जी उठना। क्रूस पर मारे जाने के बाद वह मृतकों में से जी उठा और फिर कभी नहीं मरेगा।
  -उसका स्वर्गारोहरण। वह सबके देखते हुए स्वर्ग पर उठा लिया गया और तब से लेकर अब तक अनगिनत लोगों को पापों, मृत्यु और अनन्त विनाश से बचाने का सिलसिला नहीं रुका है।
  -लोगों को अनन्त उद्धार व रूपान्तरणं। उसने अपने लोगों को रूपान्तरित करके उन्हें परमेश्वर के राज्य का नागरिक बना दिया।

- यीशु के प्रेरित। जब परमेश्वर ने हर जगह अपने कार्यों और प्रेरितों के लेखों द्वारा अपनी कलीसिया की स्थापना की,उसने प्रेरितों के द्वारा बहुत से चमत्कारों को प्रगट किया। उन्होंने भी बीमारों को चंगा किया,दुष्टात्मा से ग्रसित लोगों को छुटकारा दिया, अन्धों और विकलांग लोगों को चंगाई प्रदान की और मुर्दो को ज़िन्दा किया। लेंकिन सबसे महत्वपूर्ण (क्योंकि उपरोक्त चमत्कार तो अस्थायी थे) बात यह है कि यीशु ने उन्हें जगत के छोर तक सुसमाचार

सुनाने के लिए, बहुतों के जीवन को रूपान्तरित करने के लिए,यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में मण्डली स्थापित करने के लिए तथा बाइबल की अन्तिम पुस्तकों को लिखने के लिए इस्तेमाल किया।

(2) चिन्ह शारीरिक क्षेत्र में शक्ति का काम है जो उस मुख्य सच्चाई या प्रकाशन का वर्णन करता है जो आत्मिक क्षेत्र में लागू होती है।

किसी भी चमत्कार का एक विशेष उददेश्य होता है। जो चिन्ह या चमत्कार सृष्टि के शारीरिक क्षेत्र में होता है वह अपने आप से हमारा ध्यान हटाकर उस चमत्कार की ओर इशारा करता है जो आत्मिक छुटकारे के क्षेत्र में घटित हुआ होता है। उदाहरण के लिए:

- यूहन्ना 6:14 में, रोटी का गुणन या अनेकों रोटियों में तबदील हो जाने के पीछ उद्देश्य लोगों के ध्यान को जीवन की रोटी की ओर अर्थात यीशु मसीह की ओर खींचना था(यूहन्ना 6:35),जो विश्वास करने वालों को अनन्त जीवन प्रदान करता है।
- यूहन्ना 9:16 में, जन्म के अन्धे को आंखो की ज्योति प्रदान करने का चमत्कार लोगों को यह दर्शाने के लिए किया गया कि यीशु जगत की ज्योति है(यूहन्ना 8:12), जो विश्वास करने वाले लोगों को आत्मिक ज्योति प्रदान करता है।
- यूहन्ना 11:47 और 12:18 में लाज़र को मुर्दों में से जिन्दा करने का चमत्कार लोगों को यह बताने के लिए था कि यीशु ही *पुनरूत्थान और जीवन है*(यूहन्ना 11:25), जो विश्वासियों को नया आत्मिक जीवन और उनकी मरणहार देह हो रूपान्तरित करके पुनरूत्थान के दिन अपनी देह के समान स्वर्गीय देह प्रदान करेगा(फिलिप्पियों 3:21)।

केवल उस चिन्ह का सन्दर्भ ही प्रगट करेगा कि उस चमत्कार में दूसरा आत्मिक मतलब छुपा है या नहीं। हर मामले में, एक चिन्ह, हमेशा ध्यान अपने ऊपर से हटाकर चमत्कार करने वाले की ओर खींचता है। यूहन्ना 2:11 में, किये गये चमत्कार को यीशु द्वारा किया गया प्रथम चमत्कार कहा जाता है। यीशु द्वारा किये गये चमत्कार लोगों को यह दिखाने के लिए के लिए किया गये थे कि यीशु इस संसार में पुरानी व्यवस्था को पूरा करने और उसके स्थान पर नये नियमों को देने के लिए आया है(यूहन्ना 2:19-21;मत्ती 5:17)। यीशु मसीह के प्रथम आगमन ने पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर दिया(मन्दिर,याजक,बलिदान और ईशकेन्द्रित देशों के महत्व को) और उसे नये नियम से परिवर्तित कर दिया(अर्थात आत्मा और सच्चाई में होकर परमेश्वर की आराधना करना, प्रायश्चित के लिए केवल एक ही बलिदान,सारे राष्ट्रों से आने वाले परमेश्वर के लोग इत्यादि)जिस प्रकार से दाखरस पानी से उत्तम है उसी प्रकार से नया नियम पुरानी व्यवस्था से उत्तम है!

(3) प्रगट किया गया चमत्कार विश्वास को पैदा नहीं करता वरन वह विश्वास को मज़बूत करता है।

मूल यूनानी भाषा में यूहन्ना 20:30-31 में लिखा है कि,"कि इन चमत्कारों के बारे में इसलिए लिखा गया है कि तुम लगातार विश्वास करते रहो" (अर्थात वर्तमान अपूर्ण काल) कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है"। वहां पर यह नहीं लिखा गया हैं कि,"तुम विश्वास करना प्रारम्भ कर दो", वरन "तुम लगातार विश्वास करते रहो"। केवल पवित्र आत्मा ही लोगों में वचन के सुनने के द्वारा (रोमियों 10:17)विश्वास उत्पन्न करता है(फिलिप्पियों 1:29)। चिन्ह के रूप में प्रगट किये गये चमत्कार का उददेश्य विश्वास पैदा करना नहीं, वरन सच्चे अर्थात उद्धारकरने वाले विश्वास को मज़बूत करता है। केवल पवित्र आत्मा विश्वास उत्पन्न करता है और इन चमत्कारों से जुड़ी शिक्षाएं विश्वास को शक्ति प्रदान करती हैं। प्रेरित यूहन्ना ने शत्रुओं और झूठे भविष्यद्वक्ता की मौजूदगी में विश्वासियों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार लिखा।

2:14-17

प्रश्न 2 यीशु ने मन्दिर को साफ क्यों किया?

नोट्स।

सभी यहूदियों के लिए प्रतिवर्ष यरूशलेम में फसह का पर्व मनाना(निर्गमन 23:14-17) और मन्दिर का कर चुकाना(निर्गमन 30:11-16) अनिवार्य थ। फसह के सात दिनों के दौरान परमेश्वर के लिए बहुत से जानवरों को बलि करके चढ़ा दिया जाता था(गिनती 28:16-25)। बहुत से यहूदी दूर देशों से आया करते थे इसलिए उन्हें अपने बलिदान के लिए जानवर यरूशलेम से खरीदने पड़ते थे। हनन्याह नामक, सिन्हेद्रिन का एक दुष्ट अधिकारी इन परिस्थितियों का फायदा उठाना चाहता था। इस कारण उसने बिक्री करने वालों और सर्राफों को यह अनुमति दी कि वे मन्दिर के बाहरी आंगन का इस्तेमाल कर सकते हैं,जो अन्यजातियों के लिए आंगन भी कहलाता था। जिसके परिणाम स्वरूप जानवरों और भेड़ों के सौदागर लालच में आकर जानवरों के ऊंचे दाम लगाया करते और अराधकों को लूटते थे।

इसके अलावा सर्राफों ने भी मन्दिर के इस आंगन का इस्तेमाल व्यवसाय के लिए इस्तेमाल किया। हर एक पुरूष अराधक को आधे शेकेल प्रतिवर्ष के हिसाब से वार्षिक शुल्क अदा करना होता था। अत: जो यहूदी दूसरे देशों में रहते थे उन्हें यहूदी मुद्रा प्राप्त करने के लिए विदेशी धन को बदलना पड़ता था। अत: यह तो स्वाभाविक था कि वे हर बार मुद्रा बदलने के शुल्क के रूप में उनसे पैसे कमाते थे। यहां पर भी धोखे और शोषण के बहुत से अवसर उपलब्ध थे।
अत: जब यीशु मन्दिर में आया तो उसने मन्दिर के बाहरी आंगन में लोगों को जानवर,भेड़े, कबूतर आदि बेचते हुए तथा सर्राफों को अपनी अपनी चौकियों पर बैठे हुए देखा। इस तरह से मन्दिर, अर्थात वह स्थान जिसे लोगों के प्रार्थना करने के लिए बनाया गया था, एक ऐसा बाजार बन गया जहां पर लोगों को रोज़ लूटा जा रहा था।

(1) यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने के नाते मन्दिर को साफ कर दिया।

यीशु ने मन्दिर को "मेरे पिता का घर" कहा (लूका 2:49)। मन्दिर को साफ करने के द्वारा उसने परमेश्वर पिता के इकलौते पुत्र होने के अधिकार का इस्तेमाल किया(इब्रानियों 3:1-6)जिससे उसके पिता का घर पवित्र रहें और वह अपनी मूल अवस्था में अर्थात आराधना के घर के रूप में बहाल हो सके।

(2) यीशु ने मसीह के रूप में मन्दिर को शुद्ध किया।

यहूदी खुद अपनी बाइबल को नहीं जानते थे। हजारों वर्ष पहले राजा दाऊद ने भविष्यद्वाणी की थी," मेरे पिता की धुन ने मुझे खा लिया है"(भजन 69:9)। मन्दिर की सफाई ने कुछ तरीकों से यीशु की मृत्यु में सहयोग प्रदान किया। भविष्यद्वक्ता मीका ने भविष्यद्वाणी की थी कि प्रभु (विश्वासी जिसकी खोज में थे)(अर्थात मसीह) अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा। वह "वाचा का दूत कहलाया"(इब्रानी: मालाक हा-बेरित)। वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान होगा,वह लेवियों के गोत्र के लोगों को शुद्ध करेगा(मलाकी 3:1-3)! इस तरह, पुराना नियम पहले ही साबित करता है कि मसीह को मन्दिर शुद्ध करने का अधिकार है। जब यीशु ने मन्दिर को साफ करना शुरू किया तब उसके चेलों को याद आया कि ये भविष्यद्वाणियां पुराने नियम में मसीह के बारे में लिखी हुई हैं।

यीशु मसीह ने मन्दिर को साफ करने के लिए अपनी ताकत का इस्तेमाल किया, क्योंकि उसके पास पिता के इकलौते पुत्र व मसीह होने के नाते किसी को दण्ड देने का वह हक(अधिकार)था।(यूहन्ना 5:22)

2:18-22

प्रश्न 3.यीशु द्वारा कहे इस वाक्य का क्या अर्थ है कि,"इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे पुन: तीन दिनों में बनाकर खड़ा कर दूँगा।"?

नोट्स।

(1) यीशु की पहेली।

यीशु ने कहा "इस मन्दिर को ढा दो और मैं इसे पुन: तीन दिनों में बनाकर खड़ा कर दूँगा।" यह एक प्रकार की पहेली थी, क्योंकि इन शब्दों का दोहरा मतलब था। मन्दिर का अर्थ उस मन्दिर से हो सकता था तो पत्थरों से यरूशलेम में बना मन्दिर था, या फिर इसका मतलब देह रूपी मन्दिर हो सकता था। ढा देने शब्द का अर्थ मन्दिर की इमारत को गिरा देने से या फिर इसे यीशु के देह के नाश करना लगाया जा सकता है। और शब्द "खड़ा कर दूंगा" का अर्थ इमारत के पुन: बनाया जाना भी हो सकता है और इसका मतलब देह का पुनरूत्थान भी हो सकता है।

(2) इस पहेली का अर्थ।

यीशु का इस पहेली से यह मतलब था। हालांकि यहूदी लोग मिलकर मसीह की देह को नाश कर देगें, लेकिन तीन दिन में वह पुन: जीवित हो जाएगा। मसीह की देह रूपी मन्दिर को तोड़ने के द्वारा,यहूदी लोग पत्थरों से बने अपने मन्दिर और उससे जुड़ी सारी रीतियों को भी नाश कर रहे हैं।
फिर भी, उसकी देह रूपी मन्दिर के पुनरूत्थान के परिणामस्वरूप, यीशु मसीह एक नये आत्मिक मन्दिर का निर्माण करेगा जिसमें नये तरीकों का इस्तेमाल किया जाएगा, जिसमें लोग आत्मा और सच्चाई के साथ परमेश्वर की आराधना करेगें(2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:4-5)।"मसीह परमेश्वर के भवन में उसके पुत्र के रूप में विश्वासयोग्य है। और हम उसका घर है....." (इब्रानियों 3:6)।

(3) दृष्टान्त और उसकी परिपूर्णता को बाइबल में एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

दृष्टान्त के रूप में इस्राएल के तम्बू को या मन्दिर की इमारत को लिया गया है, जिसे उस स्थान के रूप में माना जाता था जिसमें परमेश्वर का वास होता था। (निर्गमन 25:22)। उसकी परिपूर्ण मसीह की देह है, जिसमें हर तरीके से परमेश्वर ने वास किया। कुलुस्सियों 2:9 में लिखा है, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"
इसलिए जो कोई मसीह की देह को नाश करता है वह अपने आप यरूशलेम मे बने परमेश्वर के मन्दिर को उसे अनुष्ठानिक नियमों के साथ नाश करता है।

- जब यहूदियों और रोमियों ने मिलकर यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया, मन्दिर की इमारत और उसके आनुष्ठानिक गतिविधियों की मान्यता खत्म हो गयी। मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो भागों में फट गया।(मत्ती 27:51)
- स्तीफनुस और पौलुस ने स्पष्ट रूप से सिखाय कि अब मन्दिर की इमारत का कोई मायना नहीं रहा(प्रेरितों 7:48-49;17:24-25)।
- इब्रानियों की पत्री भी हमें शिक्षा देती है कि मन्दिर व उसकी आनुष्ठानिक क्रियाएं यीशु व उसके उद्धार के पूर्ण कार्यो से प्रतिस्थाापित हो गयी हैं।
- कुछ ही समय के बाद अर्थात 70 ई.प.,टाइटस के राज्य में रोमियों ने यरूशलेम के मन्दिर को पूरी तरह से नाश कर दिया।

ठीक इसी तरह से यीशु मसीह का पुनरूत्थान नये मन्दिर की पुन:स्थापना को दर्शाता है (नये नियम की कलीसिया), "दूसरा मन्दिर जो मनुष्यो द्वारा बनाया हुआ नहीं है"(मरकुस 14:58), जहां पर लोग "आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करते हैं (यूहन्ना 4:23-24)। नये नियम हमें सिखाता है की मसीह की देह या कलीसिया परमेश्वर का आत्मिक मन्दिर है"(1कुरिन्थियों 3:16-17;2कुरि 5:16;इफिसियों 2:21-22; 1पतरस 2:4-5)।

(4) यहूदी परिपूर्णता को देखने में असफल रहे।

यहूदियों ने केवल पत्थरों से बना हुआ मन्दिर ही देखा,जिसे बनने में 46 वर्षो का समय लगा था। यदि उन्होंने विश्वास करने वाले हृदय के साथ कलाम को पढ़ा होता तो वे निम्नलिखित बातों को अवश्य जानते:

- परमेश्वर ने सुलेमान को पहले ही चेतावनी दे दी थी कि "यह मन्दिर" परमेश्वर की निगाहों से उतार दिया जाएगा।"(1राजा 9:7)
- पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में भजन सहिंता 40:6-7(इब्रानियों 10:5-7) में लिखा है कि,"मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता, पर तू ने मेरे लिए एक देह को तैयार किया है। होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा। तब मैंने कहा,"मैं यहाँ हूँ, मैं आ गया हूँ....मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ।" यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान ने (क्रूस पर चढ़ाई उसकी देह ने)पुराने नियम के सारे बलिदानों को प्रतिस्थापित कर दिया।
- यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भी भविष्यद्वाणी की कि मन्दिर परमेश्वर का घर नहीं हो सकता था। (यशायाह 66:1-2)
- यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी की कि उसका विचार भी उनके मन में न आयेगा,न लोग उसकी चिन्ता करेगें और न ही उसके स्थान पर दूसरा सन्दूक बनाया भी नहीं जाएगा। (यिर्मयाह 3:16)।
- यीशु ने भविष्यद्वाणी में कहा, एक पत्थर पर पत्थर बचा न रह जाएगा(उस मन्दिर की इमारत के बारे में)। हर एक पत्थर ढा दिया जाएगा।(मत्ती 24:1-2; लूका 19:44;लूका 21:6)।
- इब्रानियों को लेखक सिखाता है,"पवित्र स्थान स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिरूप है(एक दृष्टान्त के समान है)(इब्रानियों8:5; इब्रा 9:23)। परमेश्वर द्वारा ठहराए गये पवित्र स्थान में यीशु मसीह महायाजक की सेवा निभाता है(इब्रानियों 8:1-2)।

(5) यीशु के चेले यह समझने में असफल रहे कि जिस मन्दिर की वह बात कर रहा था वह मन्दिर परन्तु उसकी देह थी।

केवल यीशु के मरने के बाद,जब मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट जाने के बाद और उसके तीसरे दिन मृतको में से जीव उठने के बाद, चेलों की यीशु द्वारा कही गयी बातों का आत्मिक अर्थ समझ में आया।

2:19

प्रश्न 4. बाइबल के किस अन्य उदाहरण में शारीरिक चीजों को आत्मिक चीजों का प्रतीक बनाया गया है?

नोट्स।

यहूदी लोग यह नहीं समझ पाये कि व्यवहारिक चीजें आत्मिक बातों का प्रतीक हो सकती है। बार बार उन्होंने यीशु की बातों का मज़ाक बनाया, जिनका अपना अलग आत्मिक अर्थ था। निम्नलिखित उदाहरण केवल यूहन्ना की पुस्तक से लिए गये हैं।

- यूहन्ना 3:3-8 में "नया जन्म पाने " या "स्वर्ग की ओर से जन्म लेने " का अपना आत्मिक मतलब था। नीकूदुमुस यीशु की बातों का एक शाब्दिक अर्थ समझता है(अर्थात नया जन्म पाने के लिए अपनी माता के पेट में दोबारा घुसना।)
- यूहन्ना 4:10-15 में, यीशु द्वारा दिया गया जीवन का जल, पवित्र आत्मा के प्रति संकेत है। सामरी स्त्री ने उसका शाब्दिक अर्थ निकाला(कुंआ तो बहुत गहरा है)।
- यूहन्ना 6:48-58 में "यीशु के बदन का खाया जाने का अर्थ विश्वास द्वारा यीशु को ग्रहण करना है। यहूदियों ने इसका शाब्दिक अर्थ नरभक्षी बताया।
- यूहन्ना 8:21-22 में" उस स्थान पर जाना यहूदी नहीं आ सके" अर्थात उसका स्वर्गारोहण। लेकिन यहूदियों ने इसका शाब्दिक अर्थ निकाला किय यीशु आत्म हत्या कर लेगा।

कदम 4. लागूकरण। अनुप्रयोग

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें और लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 2:1-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। कस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें। (याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 2:1-25 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।

2:1 विवाह को परमेश्वर का विचार व अनुसंधान जानकर उसका आदर करें।
2:1 एक मसीही होने के नाते गैर मसीहियों के साथ सामान्य गतिविधियों मे शामिल हो जाएं।
2:11 पुराने नियम व नये नियम में प्रदर्शित की गयी मसीह की महिमा पर मनन करें।
2:12 कुछ समय अपने परिवार व अभिभावकों के साथ गुज़ारें।
2:15-16 अधार्मिकता को देखकर क्रोध तो करो,परन्तु पाप न करो(इफिसियों 4:26)
2:22.पुराने व नये नियम में विश्वास करो। यीशु मसीह के वचनों पर विश्वास करें।
2:23. हर एक जन पर भरोसा न करें। लोगों के मन को परखना सीखें।
2:25 मसीह की उपस्थिति में रहने का अभ्यास करें। वह सब कुछ देखता और जानता है।

2. यूहन्ना 2:1-25 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं पुराने और नये नियम में मसीह की महिता की खोज करना चाहता हूँ। इसलिए जब भी कभी मैं बाइबल में एक कोई अनुच्छेद पढ़ता या उस पर अध्ययन करता हूँ, मैं अपने आप से प्रश्न पूछूंगा: "इस अनुच्छेद से मैं यीशु मसीह के बारे में और क्या सीख सकता हूँ?"

आज,मैंने सीखा कि यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के मन्दिर व उसकी आनुष्ठानिक रीतियों पर पूर्ण विराम लगा दिया। और मैंने यह भी सीखा कि यीशु मसीह के पुनरूत्थान ने एक नये मन्दिर का निर्माण किया, जो विश्वासियों से मिलकर बना है जिनमें पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर वास करता है (इफिसियों 2:22; 1पतरस 2:4-11) और जहां पर लोग परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई में होकर करते हैं।

मैं चाहता हूँ कि मेरा विश्वास और मेरी आराधना आत्माओं को बचाने के अनुकूल हो। पुराने नियम में मन्दिर में अन्यजातियों के लिए भी एक आंगन था ताकि उन्हें भी जीवते परमेश्वर को जानने और उसकी आराधना करने का अवसर मिल सके। हालांकि हनन्याह के समान यहूदी अगुवों और यहूदी व्यापारियों ने उस मन्दिर के आंगन को बाजार बना दिया जहां पर मशेवी,भेड़े बेची जाने लगी और वहां की मुद्रा में विदेशी मुद्रा को बदलने के नाम पर लोगों को लूट कर उस स्थान को डाँकुओं की खोह बना दिया गया। जिस स्थान को परमेश्वर न अन्यजातियों के लिए एक आशीष का स्रोत बनाया था उसे ही यहूदियों ने अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दिया। अत: इस तरह से यहूदियों ने इस बात को जाहिर किया कि वे खोये हुओं और अन्यजातियों को बचाने के बिल्कुल विरोध में थे। वे अपने विश्वास को केवल अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। यीशु मसीह अर्थात मूल मसीह आया और उसने इन सब बातों के प्रति चुनौति प्रस्तुत की। वह यहूदी और अन्यजातियों दोनों के लिए आया। उसने सारे विश्वासियों से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा किया और उसने संसार के हर भाषा और जाति,गोत्र से विश्वासियों को मिलाकर एक कलीसिया की स्थापना की। मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि मैं और मेरी मण्डली अभी तक सुसमाचार से वंचित लोगों के लिए आत्मिक सभाओं के दरवाज़े बन्द करके, कभी भी खोई हुई आत्माओं को बचाने का विरोध न करें।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 2:1-25 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट) *[प्रतिक्रियाएं]*

दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30;कुलुस्सियों 4:12)

6 तैयारी (2 मिनट) [निर्धारित कार्य]

अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 2 के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **1कुरिन्थियों 13-16** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। नयी बाइबल की आयत, **(3) यूहन्ना 2:25।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 9

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।
अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 1 कुरिन्थियों 13-16

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 9-12) में शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। नोट्स बनाएं।

3.	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में कुँजी वचन]* (3) यूहन्ना 2:25

दो दो करके पुनरावलोकन करें।
(3) विश्वास : रोमियों 4:20-21। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह किया, पर विश्वास मे दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरी करने को भी सामर्थ्यी है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया के पर्व]* पिन्तेकुस्त: पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का स्मरणोत्सव

परिचय। पिन्तेकुस्त एक मसीही पर्व है जिसे पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है। हम इस अध्याय में सीखेगें कि बाइबल पवित्र के उण्डेले जाने और मसीहियों पर उसके प्रभाव के बारे में क्या कहती है। हम जानेगें कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में क्या कहा गया है और,जब पवित्र आत्मा उण्डेला गया तो क्या हुआ, और आपके लिए पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना क्यों महत्वपूर्ण है।

क. पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से सम्बन्धि भविष्यद्वाणियां

1. पुराने नियम में फसल काटने का पर्व पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने की रीति पर दिया गया दृष्टान्त है।

पुराने नियम में, पिन्तेकुस्त एक कटनी का पर्व था,अर्थात आधिकारिक तौर पर उपज के अन्त का समय(निर्गमन 23:16)। यह फसह के सबत के उत्सव सात सप्ताह बाद पड़ने वाले रविवार के दिन मनाया जाता है(पहले महिने निसाल या मार्च-अप्रैल के 15वें दिन में) जब अनाज की उपज का पहले पूला महायाजक को दिया जाता है और वह उसे परमेश्वर के सामने हिलाता है(लैव्य 23:10-11)। इस तरह से फसह के बाद पचासवां दिन पिन्तेकुस्त कहलाता है। जो नई फसल की घोषणा करता है और बाद में यीशु मसीह के पुनरूत्थान को प्रगट करता है!

पिन्तेकुस्त को "साप्ताहिक पर्व" कहा जाता है, जो कि पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के दृष्टान्त को दर्शाता है(लैव्य 23: व्यवस्थाविवरण 16)। इस्राएलियों को जिस हिसाब से परमेश्वर ने आशीषित किया होता था उसी हिसाब से अपनी उपज के एक हिस्से को मन्दिर मे लाना होता था । वहां पर वे अपने परिवारों,दासों,लेवियों, जुड़े लोगों और शहर के गरीबों के साथ उत्सव मनाया करते थे। अत: पिन्तेकुस्त का पर्व परमेश्वर को अपनी उपज के लिए धन्यवाद देने का पर्व है।

नये नियम में इस कटनी के पर्व के दौरान (प्रेरितो 2)पवित्र आत्मा उण्डेला गया था। प्रेरितों ने सुसमाचार प्रचार किया,तीन हज़ार लोगों ने यीशु मसीह को ग्रहण किया और इस तरह से यरूशलेम में प्रथम मण्डली को निर्माण हुआ। *अत: पुराने नियम में कृषि की उपज का पर्व नये नियम में आत्मिक उपज का पर्व बन गया।* नये नियम में उपज के पर्व का परिणाम संसार भर में हर स्थान पर नये मसीही और नयी कलीसियाएं हुए।

2.पुराने नियम में पवित्र आत्मा से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित भविष्यद्वाणियों में पवित्र आत्मा के बारे में क्या भविष्यद्वाणी की गयी है?

(1) यशायाह 32:15; यशायाह 44:3

परमेश्वर ने कहा कि वह अपने लोगों पर पवित्र आत्मा उण्डेलेगा। जिस प्रकार से बंजर और सूखी भूमी पर स्वर्ग से वर्षा से निर्जल भूमि उपजाऊ भूमि तथा जगंल में तबदील हो जाती है, उसी प्रकार से स्वर्ग(जहां परमेश्वर वास करता है) से उण्डेले गयी पवित्र आत्मा का परिणाम बहुत सी आशीषे होगीं।

(2) यहेजकेल 36:25-28।

परमेश्वर ने कहा कि वह अपने लोगों पर शुद्ध जल छिड़ककर उन्हें उनकी अशुद्धता और मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा। वह उनमें से पत्थर का हृदय निकाल कर उनमें अपनी आत्मा डालेगा और इस तरीके से वे परमेश्वर के वचन का अनुसरण करेगें और उसे मानेगें।

(3) योएल 2:28-32

परमेश्वर ने कहा कि वह सभी प्राणियों पर अपनी पवित्र आत्मा उण्डेलेगा। वे भविष्यद्वाणी करेगें, स्वप्न और दर्शन देखेगें। जो कोई परमेश्वर का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

(4) जर्कयाह 4:6

परमेश्वर ने कहा कि वह अपना कार्य मानवीय शक्ति व उपद्रव के द्वारा नहीं(आतंकवाद, लड़ाई के द्वारा) परन्तु अपनी आत्मा के द्वारा पूरा करेगा। अत: पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का परिणाम:

- परमेश्वर को पुकारने वाले लोगों को उद्धार होगा।
- परिशुद्ध और परिवर्तित हृदय होगें।
- परमेश्वर के वचन का आज्ञापालन होगा।
- दर्शन और स्वपन होगा जिसका परिणाम उद्देश्यपूर्ण और फलदायक जीवन होगा!

3. नये नियम में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में की गयी भविष्यद्वाणियां

खोजे और चर्चा करें। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बारे में यीशु मसीह ने क्या भविष्यद्वाणी की?

1. यूहन्ना 7:37-39।

यीशु मसीह ने कई बार अपने लोगों (विश्वासियों) पर पवित्र आत्मा उण्डेले जाने के बारे में भविष्यद्वाणियां कीं। विश्वासियों को (उसकी मृत्यु व पुनरूत्थान के समय से पहले)यीशु के महिमा में उठा लिये जाने तक पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के लिए इन्तज़ार करना था(अर्थात उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होने तक)। उसके बाद ही पवित्र आत्मा "जीवन के जल की नदियों के समान) बह सकता था।

(2) प्रेरितों 1:5

यीशु ने कहा कि उसके चेले उसके स्वर्गारोहण के पश्चात पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाएंगे। यह पिन्तेकुस्त के दिन हुआ जिसका वर्णन प्रेरितों 2 में किया गया है। प्रेरितों 11:14-18 और प्रेरितों 15:6-11 हमें सिखाता है कि "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा"(पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना) व "पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाना" एक समान है।

ख. पवित्र आत्मा उण्डेले जाने को इर्द गिर्द हुई घटनाएं

1. पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना।

पढ़ें प्रेरितों 2:1-47

खोजें व चर्चा करें। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा किस प्रकार उण्डेला गया?

(1) पुराने नियम के समय में लोगों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

यद्यपि पवित्र आत्मा पुराने नियम के समय में पहले ही लोगो पर उतरता था, लेकिन पवित्र आत्मा का उण्डेला जाने व उसके स्थायी रूप में वास करने की प्रतिज्ञा विशेष तौर पर नये नियम में ही दी गयी (गिनती 11:17,25,29,; 1शमुएल 10:6; 116:13-14; 19:20-21; 2 शमूएल 23:2 ; यूहन्ना 20:21-23)।

(2) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के दस दिनों के बाद, उसने सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा को उण्डेल दिया, अर्थात उस समय में यीशु पर विश्वास करने वाले लोगों सभी विश्वासियों पर। वह दिन उपज के एकत्र करने का पर्व था। इसलिए रोमी साम्राज्य वर और भी जगहों जैसे दियापोरा से भी यहूदी लोग यरूशलेम में उत्सर्व मनाने के लिए आये। यरूशलेम के सभी यहूदियों के लिए तीन पर्वो का मनाना अनिवार्य था जिसमें से एक पिन्तेकुस्त का पर्व(व्यवस्साविवरण 16:16)

(3) पिन्तेकुस्त के दिन का अनोखा चिन्ह

- "बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का सा शब्द" पवित्र आत्मा की अदृश्य सामर्थी शक्ति को प्रगट करता है, जो लोगों को सर्वश्रेष्ठ तरीके से नया जन्म प्रदान करता (यूहन्ना 3:3-8) और जहां चाहे वहां काम करता है। (प्रेरितों 16:6-10)।
- "आग की सी फटती हुई जीभें जो लोगों पर आकर ठहर गयी थीं" संसार भर की अनेकों भाषाओं में ज्वलनशील जुनून, प्रेम और साहस व निरूत्तरता के साथ सुसमाचार प्रचार करने के वरदान दिये जाने को दर्शाता है। (प्रेरितों 2:3)।
- सुननेवालों ने मसीहियों को "आस पास के देशों की विभिन्न भाषाओं में" परमेश्वर के अदभुत कामों का गुणानुवाद करते हुए देखा(प्रेरितों 2:11)।
- मसीहियों ने यरूशलेम में "प्रथम स्थानीय कलीसिया की स्थापना की" और वे प्रेरितों के साथ "शिक्षा पाने, संगति करने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन रहे"(प्रेरितों 4:42)।

(4) प्रथम यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना, जो पहले से ही विश्वासी थे(मसीही)।

पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु मसीह के 120 चेलों पर पवित्र आत्मा उण्डेला गया। हालांकि वे पहले से ही विश्वासी थे, लेकिन उन्हें अभी तक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसलिए नहीं मिल पाया था क्योंकि यीशु मसीह अभी तक अपनी महिमा में नहीं पहुंचे थे(यूहन्ना 7:39)। लेकिन अब यीशु मसीह उठा लिये गये थे (अर्थात जी उठे थे, और उन्हें राजाओं के राजा के रूप में अभिषिक्त कर दिया गया था) वे लोग पवित्र आत्मा को स्थायी रूप से अपने जीवन में ग्रहण करने वाले लोग वहीं हुए(यूहन्ना 14:16-17)!

(5) प्रथम यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना, जो पिन्तेकुस्त के दिन विश्वासी बने।

प्रेरित पतरस ने अन्य प्रेरितों के साथ मिलकर पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों और यहूदी धर्म के प्रचारकों को सुसमाचार सुनाया(प्रेरितों 2:10)। अलग अलग देशों से लगभग तीन हज़ार यहूदियों ने (यहूदी धर्म के प्रचारको ने)मन फिराया और स्वर्ग से एक उपहार के रूप में पवित्र आत्मा का दान पाया(प्रेरितों 2:38,41;प्रेरितों9:31)। इस तरीके से यीशु मसीह के प्रेरितो ने प्रथम यहूदीयों के लिए परमेश्वर के राज्य के लिए द्वार खोल दिया(मत्ती 16:18-19)। नया जन्म पाये हुए लोगों के लिए पिन्तेकुस्त एक आत्मिक कटनी का पर्व बन गया। पिन्तेकुस्त के पर्व को नये नियम के काल में पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है। जिस किसी ने यीशु मसीह को ग्रहण किया उसने पवित्र आत्मा पाया (पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाया)और स्थानीय कलीसियाएं हर जगह फैल गयी(प्रेरितों 2:38,41; प्रेरितों 9:31)। नये नियम की पुस्तक में पवित्र आत्मा के बपतिस्में का सामान्य प्रमाण नये नये स्थानीय कलीसियाओं या घरेलू कलीसियाओं का प्रारम्भ होना था(मत्ती 18:20)।

2. पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना।

खोज और चर्चा करें। पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पवित्र आत्मा किस प्रकार उण्डेला गया?

(1) लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य को खोलने का अधिकार।

पढ़ें । मत्ती 16:18-19; मत्ती 18:18।

यीशु मसीह के पास वह कुँजियां हैं जो उस द्वार को खोलती और बन्द करती है(प्रकाशितवाक्य 3:7-8)। यीशु मसीह ने राज्य को खोलने और बन्द करने की कुँजियों को अपने चेलो को दिया। जिन्हें बाद मे यीशु मसीह के "बारह प्रेरित" कहा गया। उनके जीवन का मकसद यरूशलेम और यहूदिया के यहूदियों,सामरिया के सामरियों और जगत के अन्त तक रहने वाले अन्यजातियों में परमेश्वर के गवाह होना था (प्रेरितों 1:8)। यह उनके अधिकार में था कि वे सबसे पहले यहूदियों के

लिए(प्रेरितों 2), तदपश्चात सामरियों के लिए जो आधे यहूदी थे(प्रेरितों 8) और अन्ततः अन्यजातियों अर्थात गैर यहूदियों के लिए (प्रेरितों 10)परमेश्वर के राज्य के द्वार को खोलें।

(2) सामरियों अर्थात आधे यहूदियों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना जो बाद में विश्वासी बने।

पढ़ें. प्रेरितों 8:4-17।

यहूदी और सामरी पहले आपस में शत्रु थे और एक दूसरे को तुच्छ जानते थे। सामरियों ने प्रचारक फिलिप्पुस के द्वारा सुसमाचार सुनने के तुरन्त बाद पवित्र आत्मा का दान नहीं पाया,क्योंकि उन्हें स्वर्ग के राज्य के दरवाजे को खोलने के लिए यीशु मसीह के प्रेरित के आने का इन्तज़ार करना था। प्रेरित पतरस और यूहन्ना यरूशलेम से आये और उनके लिए हाथ रखकर प्रार्थना की जो इस बात का चिन्ह था कि उन्हें परमेश्वर की ओर से अधिकार दिया गया है। इस प्रकार से पतरस और यूहन्ना ने प्रथम आधे यहूदियों के लिए राज्य का द्वार खोला।

(3) गैर यहूदियों में पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना जो बाद में विश्वासी बने।

पढ़ें, प्रेरितों 11:14-18; 15:7-11।

यहूदी और अन्यजातियां भी पहले एक दूसरे के दुश्मन थे, क्योंकि अन्यजातियां मूर्तिपूजक थे और उन्होंने पुराने नियम में कई बार परमेश्वर के लोगों पर आक्रमण किया था। परमेश्वर का सबसे पहले गैर यहूदियों अर्थात कुरनेलुयस और यहूदियों अर्थात पतरस के व्यवहार में परिवर्तन लाना था। परमेश्वर को पतरस और कुरनेलियुस दोनों की सोच को बदलने के लिए उन्हें असाधारण तरीके से दर्शन के द्वारा प्रगट करना पड़ा(प्रेरितों 10:1-23)। जब अन्यजातियों में का पहले समूह ने सुसमाचार को सुना और अपने हृदय में परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करने लगे, तो उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया (अर्थात उन्होंने नया जन्म पाया)। इसी कारण उन्होने पानी का बपतिस्मा भी लिया(प्रेरितों 10:47-48)। इस प्रकार से पतरस ने सुसमाचार प्रचार किया और गैर यहूदियों के लिए परमेश्वर के राज्य का द्वार खोल दिया।

(4) नये नियम की कलीसिया यीशु मसीह के प्रेरितों की बुनियाद पर बनी है।

पढ़ें. इफिसियों 2:20 ; प्रकाशित वाक्य 21: 14

क्योंकि यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को सारे देशों व जातियों (जिन्हें नये नियम में तीन प्रमुख भागों में बांटा गया है: यहूदी, आधे यहूदी और गैर यहूदी)के लिए परमेश्वर के राज्य के द्वार खोलने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिये यीशु मसीह के प्रेरितों को "कलीसिया की नींव" कहा गया।

प्रथम यहूदियों,प्रथम सामरियो और प्रथम अन्यजातियों के बीच में इस ऐतिहासिक मसीही कलीसिया की शुरूआत के बाद(जो कि उद्धार के इतिहास का भाग है), जहां कहीं,जिस किसी ने सुसमाचार सुनकर यीशु मसीह के नाम में विश्वास किया पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया(इफिसियों 1:13;तीतुस 3:3-8;प्रेरितों 2:39; 4:4 5:32; 6:7)

ग.मसीहीयों के लिए पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का अभिप्राय

1. एक व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा (अस्तित्व)

(1) व्यक्ति

पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति नहीं है, वरन वह स्वयं एक व्यक्ति, परमेश्वर है(प्रेरितों 5:3-4)। वह त्रीएक परमेश्वर की त्रीएकता का वह अभिन्न भाग है जिसका वर्णन तो किया जा सकता है लेकिन अलग नहीं(मत्ती 28:19)।

परमेश्वर का ईश्वरीय स्वभाव बनाये गये इस जगत के गुणों से कहीं अधिक है।

- अगर हम उसके ईश्वरीय (स्वभाव)की बात करें तो वह एक *एकता* है।
- और अगर विविधता की बात करें तो वे (व्यक्तित्व) में भिन्न हैं।

पवित्र आत्मा स्थान और समय की सीमा से परे विद्यमान है।

(2) विशेषताएं।

उसमें भी परमेश्वर के समान, अनन्त होने का गुण पाया जाता है(इब्रानियों 9:14)। उसका भी प्रकृति के साथ वही सम्बन्ध है जैसा परमेश्वर पिता के साथ, अर्थात वह सर्वव्यापी है(भजन 139:7-10), सर्वशक्तिमान(यिर्मयाह 32:17,27)और सर्वज्ञानी है(भजन 139:1-4)।

1 देखें मैनुएल 2, परिशिष्ट 8. "परमेश्वर व उसके पुत्र का स्वभाव"

(3) नाम

पवित्र आत्मा के नाम उसकी ईश्वरीयता (रोमियों 8:9-10),उसके चरित्र को जैसे" सत्य, प्रेम व अनुग्रह"(यूहन्ना 14:17; रोमियों 15:30; इब्रानियों 10:29) या लोगों में उसके काम जैसे " बुद्धि"(यशायाह 11:2) को दर्शाते हैं।

(4) प्रतीक।

- पवित्र आत्मा के प्रतीक विश्वासियों में उसके कामों को प्रगट करते हैं।
- वह "कबूतर के रूप में" यीशु के ऊपर उतरा, जो कि शुद्धता, नम्रता और अनुग्रह का प्रतीक है(मत्ती 3:16;यूहन्ना 1:32)।
- "अकस्मात व प्रचण्ड आंधी के रूप में" उसने लोगों को नया जन्म और नया मन प्रदान किया(यूहन्ना 3:3-8)।
- "जीवन जल के रूप में" उसने लोगों को उद्धार दिया और सन्तुष्ट करके दूसरों के लिए आशीष का कारण बनाया। (यूहन्ना 7:37-39)।
- "आग से फटती हुई जीभों के रूप में" उसने विश्वासियों को संसार की भिन्न भिन्न भाषाओं में बिना भय और निरूत्तरता के साथ सुसमाचार सुनाने का प्रेरणा प्रदान की(प्रेरितों 2:1-4)।
- "तेल के रूप में" वह विश्वासियों को याजकीय, भविष्यसूचक और राजकीय सेवाकाईयों के लिए अभिषेक करता है।
- "मुहर के रूप में" वह विश्वासियों पर अपनी मुहर लगाता है। (रोमियों 8:16)।
- "जमा राशि के रूप में"(अर्थात पहली किश्त के रूप में)उसने विश्वासियों को विश्वास दिलाया की सिद्ध परिपूर्णता मार्ग में है।। (2कुरि 1:21-22)

2.यीशु मसीही से सम्बन्ध में पवित्र आत्मा का कार्य ।

(1) पवित्र आत्मा जगत के सारे मसीहियों के लिए प्रभु मसीह का प्रतिनिधी है। वह यीशु मसीह और परमेश्वर पिता को इस संसार में प्रत्यक्ष रूप में प्रगट और वह ही बाइबल की सारी प्रतिज्ञाओं के पूरा होने का जामिन या निश्चय है। (2 कुरिन्थियों 1:22)।

पढ़ें. यूहन्ना 16:7; यूहन्ना 14:16-18

पवित्र आत्मा की अस्तित्व व कार्य। पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति नहीं(जैसा कि केन्द्रीकरण वादी विश्वास करते हैं),वरन एक ईश्वर हस्ती है जिसकी अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं हैं(यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 15:26; प्रेरितों 15:28; रोमियों 8:26; 1 कुरि 12:11; 1 तीमु 4:1; प्रकाशित 22:17)। परमेश्वर पिता और पुत्र के समान पवित्र आत्मा भी एक हस्ती है(मत्ती 28:19; 1कुरि 12:4-6; 2 कुरि 13:14; 1पतरस 1:1-2)। उसमें भी परमेश्वर पिता और पुत्र के समान ईश्वरीय स्वभाव है और ये तीनों आपस में घुले हुए हैं।

त्रीएक परमेश्वर के कार्य परमेश्वर के सत्तामूलक तत्वों (अभौतिक, अनन्त त्रीएक) पर आधारित हैं। पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) परमेश्वर पिता का काम(प्रेरितों 2:17;प्रेरितों 11:16-17) और साथ साथ परमेश्वर पुत्र का(मत्ती 3:11 ; प्रेरितों 2:33) काम है। ठीक इसी प्रकार से परमेश्वर पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा शिक्षा देते हैं(यूहन्ना 14:26); मसीहीयों की सारे सत्य में अगुवाई करते(यूहन्ना 16:13) और लोगों को उनके पापों और अधार्मिकता के प्रति निरूत्तर करते हैं(यूहन्ना 16:8)।

यीशु मसीह का मृतकों में से जी उठना,यीशु मसीह का स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा का लोगों पर उण्डेला जाना, अनोखी ऐतिहासिक घटनाएं(उद्धार की कहानियां) हैं। इस प्रकार की घटनाएं आपको अन्य किसी धर्म में नहीं मिलेगीं।

यीशु मसीह परमेश्वर पिता से उसके चेलों को पवित्र आत्मा देने के लिए कहते हैं। यीशु ने कहा, "मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे"(यूहन्ना 14:16)। ग्रीक भाषा में "प्रार्थना" के लिए दो शब्द है: मांगना और निवेदन करना।

-क्रिया "मांगना" (ग्रीक:ऐटिओ) शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई निम्न स्तर का/ दास, उच्च स्तर के या किसी महान व्यक्ति से कुछ मांग रहा हो। इस शब्द का इस्तेमाल का लोग परमेश्वर से "विनती" करते समय करते हैं(यूहन्ना 4:9-10;15:7,16; 16:23-24,26)।

-क्रिया "निवेदन करना"(ग्रीक: ईरोटाओ) शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति अपनी बराबरी वाले व्यक्ति से कुछ मांग रहा हो। इस शब्द का इस्तेमाल केवल तब किया गया जब यीशु मसीह अपने स्वर्गीय पिता से अपनी समानता के आधार पर प्रार्थना करते हैं (यूहन्ना 14:16;17:9;15,20)!

हमें कभी भी यीशु मसीह को इस तरह से नही देखना चाहिए जैसे कि वह परमेश्वर पिता से भीख मांग रहा है। यीशु मसीह ने उद्धार का काम पूरा करने के द्वारा हमारी सारी प्रार्थनाओं के जवाबों को कमा लिया है।

इस धरती पर पवित्र आत्मा मसीहियों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। यीशु ने कहा," "मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।"(यूहन्ना 14:16)
"सहायक" शब्द का मूल अर्थ (ग्रीक: पैराक्लेटौस): "किसी को आपकी मदद करने के लिए बुलाया गया है"। इसका अर्थ लैटिन भाषा के समान उदासीन नहीं है अर्थात: "समर्थक" या "सलाहकार" और न ही ग्रीक भाषा का उदासीन अर्थ है(जैसा कि अय्यूब 16:2 में दिया गया है)। इसका अर्थ सक्रिय "सहायक" "मध्यस्थ" और "प्रतिनिधी" है जैसा कि बहुत से ग्रीक के साहित्यों में इस्तेमाल किया गया है।

- स्वर्ग में प्रतिनिधित्व (ग्रीक: पैराक्लेटोस)करने वाला मसीह है। यूहन्ना की पहली पत्री में यीशु को धरती पर विश्वासियों का स्वर्गीय प्रतिनिधि के रूप में सम्बोधित किया गया है। वह परमेश्वर पिता से मसीहियों की ओर से बात करता है(1यूहन्ना 2:1)। वह स्वर्ग में लगातार परमेश्वर पिता से निवेदन करता है। अत: यीशु मसीह स्वर्गीय सहायक या धरती पर मसीहियों का प्रतिनिधित्व करने वाला है।
- धरती पर पवित्र आत्मा प्रतिनिधि (ग्रीक : पैराक्लेटोस)है। यूहन्ना के सुसमाचार में पवित्र आत्मा धरती पर मसीहीयों के बीच यीशु मसीह का प्रतिनिधी है। वह स्वर्ग में यीशु मसीह की ओर से मसीहियों से बात चीत करता है(यूहन्ना 14:16-17;यूहन्ना 16:13-15)। पवित्र आत्मा यीशु मसीह और मसीहियों के बीच में मध्यस्थ है। वह यीशु मसीह की बातों को लेकर स्पष्ट रूप में समझाता है(यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:14)। वह यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के कार्यों (नया जन्म, धर्मी ठहराये जाने, शुद्धिकरण) को धरती पर रहने वाले लोगों के जीवन में लागू करता है। वह इस धरती पर यीशु की महिमा करता है(यूहन्ना 16:13-15)। वह यीशु धरती पर रहने वालों के बीच में यीशु मसीह का प्रतिनिधी है।

पवित्र आत्मा "दूसरा" प्रतिनिधि हैं, लेकिन इस अर्थ यह नहीं है कि वह यीशु से अलग है। जिस प्रकार से पवित्र आत्मा स्वर्ग में मसीहियों का प्रतिनिधि है ठीक उसी प्रकार से वह पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि भी है। पवित्र आत्मा मसीह का आत्मा है जो मसीहियों के साथ और मसीहियों में रहता है(यूहन्ना14:16-1)। वह "आपमें रहने वाला मसीह" है(रोमियों 8:9-10; 2कुरिन्थियों 3:17-18)। जब यीशु मसीह इस दुनिया में देहधारित अवस्था में रहते थे तो वह एक समय में एक ही स्थान पर हो सकते थे। लेकिन अब वही यीशु मसीह पवित्र आत्मा के रूप में, धरती के हर कोने में एक ही समय में उपस्थित हैं। आज मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा वह सब कुछ है जो यीशु मसीह इस धरती पर रहते हुए उनके लिए होता। इसलिए यीशु ने कहा," मेरा(अर्थात मानवीय स्वभाव में यीशु का जाना) जाना तुम्हारे लिए अच्छा होगा", क्योंकि तब ही पवित्र आत्मा (ईश्वरी स्वभाव में प्रभु यीशु मसीह)आ सकता है(यूहन्ना 16:7)। यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की,"मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूगां: मैं तुम्हारे पास आता हूँ"(यूहन्ना 14:18)। और "देखो मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे साथ हूँ"(मत्ती 28:20)

पवित्र आत्मा अल्प-आयु वाले बच्चों व गुलामों को जो व्यवस्था के अधीन हैं अपनी परिपक्व सन्तानों और परमेश्वर के वारिस के रूप में बदल देता है। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद यीशु मसीह का आत्मा मसीहियों के "साथ" और मसीहियों में होगा अर्थात वह सदा उनकी सहायता के लिए मौजूद होगा और उनके जीवन व उनके हृदय में रहेगा। परमेश्वर (मसीह) पवित्र आत्मा के द्वारा मसीही कलीसिया (इफिसियों 2:22)में रहने के लिए और कलीसिया के सदस्यों को राजा, याजक और संसार के सारे देशों के लिए भविष्यद्वक्ता बनाता है(1पतरस 2:9-10)।

- पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से पहले, परमेश्वर के बच्चे(पुराने नियम के समय के दौरान)" अल्प-आयु वाले बच्चे व गुलाम अर्थात व्यवस्था के अधीन थे"।
- लेकिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद, परमेश्वर के बच्चे(नये नियम के काल में)"अनुग्रह के अधीन परिपक्व सन्तान व परमेश्वर के वारिस) हैं। (गलातियों 4:1-7; 5:4; रोमियों 6:14)।

परमेश्वर के नये नियम के लोग "परमेश्वर का आत्मिक मन्दिर हैं"(1 कुरिन्थियों 6:16)। परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों(इस्राएल में विश्वासियों) ने अपने राष्ट्रीय चरित्र(यहूदी मत) को छोड़ दिया और अब वे अन्तर्राष्ट्रीय लोग बन गये।

(यूहन्ना 10:16;प्रकाशित वाक्य 5:9-10)। यहूदी और गैर यहूदी मसीहियों ने अपने "स्वतन्त्र" (जो गुलाम नहीं हैं) और "पुरूष" (स्त्री न होने) के घमण्ड को छोड़कर अब वे "अब्राहम की सन्तान व वारिस" बन गये हैं। (गलातियों 3:28-29)।

(2) पवित्र आत्मा मसीह द्वारा किये गये सारे उद्धार के कामों को मसीहीयों के जीवन में लागू करता है।

यीशु ने कहा,"प्रतिनिधि या सहायक सत्य का आत्मा है। संसार (गैर मसीही पापों में डूबे लोग) इसे स्वीकार नहीं कर सकता,क्योंकि वह उसे न तो देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।(यूहन्ना 14:17)। और यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु मसीह को "सत्य" (यूहन्ना 14:6)कहा गया है क्योंकि उसने पुराने नियम को पूरा (मत्ती 5:17),अस्विकार (कुलुस्सियों 2:14) और रद्द (इफिसियों 2:14-15)किया और नये नियम की "वास्तविकता" को परिचित करवाया है(यूहन्ना 1:17; कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5 इब्रानियों 10:1)। उसे "सत्य के आत्मा" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि सम्पूर्ण इतिहास में वह नये मसीहियों के जीवन में यीशु मसीह के उद्धार के निमित्त किये गये कामों का इस्तेमाल करता है।

"संसार" पवित्र आत्मा को ग्रहण नहीं कर सकता वह उन लोगों से मिलकर बना संसार है जो अंधकार को ज्योति से ज्यादा प्रेम करते है, क्योंकि उनके काम बुरे हैं(यूहन्ना 3:19)। यह संसार खुले तौर पर मसीह, मसीही कलीसियाओं और मसीहियों का विरोधी है(यूहन्ना 15:18)। यह संसार शैतान के झूठ पर विश्वास करता है(यूहन्ना 8:44;यूहन्ना 14:30), आत्मिक मामलों को न तो ग्रहण कर सकता है न समझ सकता है(1 कुरिन्थियो 2:12-14)और पवित्र आत्मा को मान्यता नहीं देता(यूहन्ना 12:22-37;प्रेरितों 2:12-17)। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद से यह संसार पवित्र आत्मा को (मसीह की आत्मा को)स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि न तो वे उसे देखते हैं(निरीक्षण) और न ही वे उसको जानते या उसे स्वीकार करते हैं।

दोनो क्रियाएं अर्थात "देखना" और "जानते" दोनों ही वर्तमान अपूर्ण करल में हैं। लेकिन सच्चे विश्वासी उसे व उसके कामों को अपनी आत्मिक आंखों से देखते, मानते और अपने जीवनों में उसका अनुभव करते हैं।

(3) पवित्र आत्मा यीशु मसीह की उपस्थिति को मसीहियों के लिए सजीव बनाती है।

यीशु ने कहा,"मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूगा;मैं तुम्हारे पास आता हूँ (यूहन्ना 14:18)। हालाकि यीशु मसीह अपने प्राकृतिक मानवीय रूप में इस धरती से अपने चेलों को छोड़कर स्वर्ग चले गये, लेकिन वह पवित्र आत्मा के रूप में उनके पास वापस आ गये(पिन्तेकुस्त)।

पवित्र आत्मा मसीहियों को हर वह बात स्मरण कराता है जो यीशु मसीह ने इस दुनिया में रहते समय उन्हें सिखाई थी और जो उन्हें जानना चाहिए(यूहन्ना 14:26), मसीह की गवाही देती है(यूहन्ना 15:26),मसीह की महिमा करती है(यूहन्ना 16:13-15)अर्थात वह मसीहीयों के लिए ईश्वरीय विशेषताओं को हकीकत तथा इस संसार में रहने वाले मसीहियों के लिए यीशु मसीह को केन्द्र बिन्दू बना देता है।

अत: पवित्र आत्मा के पिन्तेकुस्त के दिन उण्डेले जाने के द्वारा, यीशु मसीह अपने मानने वालों के पास धरती पर पुन: वापस आ गये। यूहन्ना 14:18 भविष्य में यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बारे में लिखा गया वचन नहीं, वरन यीशु मसीह के पवित्र आत्मा के रूप में वापस आने के सम्बन्ध में लिखा गया वचन है। इसी कारण मसीह के साथ उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान में होकर घनिष्ठ सम्बन्ध का ज्ञान व अनुभव पवित्र आत्मा का एक फल है(रोमियों 8:9-11,15-17; 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र, पवित्र आत्मा के रूप में मसीहियों के साथ तथा उनमें रहते हैं(यूहन्ना 14:23)।

3. लोगों में पवित्र आत्मा के कार्य।

(1) पवित्र आत्मा इस संसार में लोगों को निरूत्तर करता है।

वह इस संसार के लोगों को उनके पापों(उनकी मूर्तियों),धार्मिकता(मसीह की) और न्याय(यदि तुम धार्मिकता को अस्वीकार करो)के प्रति निरूत्तर करता है। (यूहन्ना 16:8-10)।

(2) पवित्र आत्मा इस संसार में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है(यूहन्ना 15:26;16:13-15)।

वह इस संसार में मसीहियों के लिए वह सब कुछ होने के लिए उण्डेला गया जो मसीह होता अगर वह संसार में इस समय उपस्थित होता।

(3) पवित्र आत्मा लोगों को रूपान्तरित करता है।

वह लोगों को नया जन्म देता है (यूहन्ना 3:3-8; तीतुस 3:3-7), वह लोगों को परमेश्वर का वचन सुनने में मदद करता है(यूहन्ना 14:26;इफिसियों 6:17) और लोगों को परमेश्वर का वचन पालन करने में मदद करता है(1पतरस 1:2)। वह मसीहियों को ज्यादा से ज्यादा शुद्ध करता है(गलातियों 5:13-26) और मसीहियों को कठिनाईयों के बावजूद सुरक्षित रखता है(रोमियों 8:26-27)।

4.कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य

(1) पवित्र आत्मा यीशु मसीह को महिमान्वित करता है।

वह मसीहियों के जीवन और उनके अनुभवों में हमेशा यीशु मसीह को महिमा देता है(यूहन्ना 16:14)।

(2) पवित्र आत्मा कलीसिया का संचालन करता है।

नये जन्म (पवित्र आत्मा में बपतिस्मा)के द्वारा वह एक विश्वासी को मसीही कलीसिया का एक सच्चा सदस्य बनाता है(1कुरिन्थियों 12:12-13)। वह हर एक मसीही को परमेश्वर का निवासस्थान बनाता है(इफिसियों 2:22;1पतरस 2:4-5)। वह प्राचीनों का कलीसिया का सच्चा अध्यक्ष ठहराता है(प्रेरितों 15:28)। वह ही मसीही सभाओं और सम्मेलनों की अगुवाई करता है(इफिसियों 5:18-19)। वह अद्‌भुत तरीके से मसीहियों को आत्मिक वरदान देता है ताकि वे दूसरों की सेवा कर सकें तथा कलीसिया बनाने में मदद कर सकें(रोमियों 12:4-8)।

(3) पवित्र आत्मा इस संसार में मसीही मिशन को कार्यान्वित करता है।

वह सुसमाचार सुनाने,चेला बनाने और नयी मण्डलियों की स्थापना करने के लिए अलग अलग मसीहियों को चुनता है(प्रेरितों 13:1-4)। वह प्रत्येक मसीही कार्यकर्ता को अपना अलग लक्ष्य प्रदान करता है(1कुरिन्थियों 3:5-9;12:4-6,11)। और वह सताव के दौरान मसीहियों कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करता है। (प्रेरितों 13:49-52)।

घ.पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

1.अभिव्यक्ति "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"।

(1) अभिव्यक्ति"पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"।

यह अभिव्यक्ति "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा"(ग्रीक :बैपटाइज़ो)नये नियम में केवल सात बार सामने आता है(मत्ती 3:10-12; मरकुस 1:8;लूका 3:16;यूहन्ना 1:33; प्रेरितों 1:5;प्रेरितों 11:14-18 व 1 कुरिन्थियों 1:5; प्रेरितों 11:14-18 और 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। सातों स्थानों में इस अभिव्यक्ति का अर्थ मसीही जीवन की शुरूआत(पवित्र आत्मा में नया जन्म)है। "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" स्पष्ट तौर पर परमेश्वर के राज्य में विश्वासियों एकत्र होने से जुड़ा है, जबकि "आग से बपतिस्मा" विश्वासियों के अन्तिम न्याय से जुड़ा है(मत्ती 3:10-12)। "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" लोगों के विश्वास करने पर प्राप्त बपतिस्मा को (प्रेरितों 10:43-44; प्रेरितों 15:7-9; यूहन्ना 1:12-13 ;7:37-39; प्रेरितों 19:2;1कुरिन्थियों 12:3; इफिसियों 1:13; तीतुस 3:4-8) या लोगों के परिवर्तित होकर उद्धार पाने और कलीसिया में जुड़ने को दर्शाता है(प्रेरितों 2:38-41; प्रेरितों 11:18)।

(2) भविष्यद्वाणी और उनका पूरा होना।

भविष्यद्वाणी।

पवित्र आत्मा के बपतिस्में के बारे में पहले ही पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गयी है(यहेजकेल 36:25-27;योएल 2:28-32)

भविष्यद्वाणियों का उद्धार के इतिहास में पूरा होना।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा निम्नलिखित क्रम में हुआ:

- यीशु मसीह के प्रथम चेलों के लिए इसका जिक्र प्रेरितों 2:1-4 में किया गया है
- पहले यहूदी के सम्बन्ध में इसका जिक्र प्रेरितों 2:37-41(प्रेरितों 1:8, यरूशलेम और यहूदिया)।
- पहले सामरी के लिए इसका जिक्र प्रेरितों 8:12-17 में किया गया है(प्रेरितों 1:8, सामरिया)
- पहले अन्यजातियों में से बने विश्वासी का जिक्र प्रेरितों 10:34-48 में दिया गया है(प्रेरितों 1:8;11:14-18; 15:7-11)जगत के छोर तक)

सामान्यत: पूरा होना।

इसलिए जो कोई सुसमाचार सुनता और यीशु मसीह में विश्वास करता है,"पवित्र आत्मा पाता है"(प्रेरितों 2:38-39),"पवित्र आत्मा की छाप पाता"(इफिसियों 1:13-14) या "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाता है"और इस तरह वह मसीह की देह (सार्वभौमिक कलीसिया) का एक अंग बन जाता है (1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

2. पवित्र आत्मा में बपतिस्में का अर्थ।

(1) पवित्र आत्मा में बपतिस्में को व्यक्त करने के लिए बाइबल में विभिन्न वाक्यों का इस्तेमाल किया गया है

- परमेश्वर में जन्म पाना(यूहन्ना 1:12-13), आत्मा में जन्म पाना(यूहन्ना 3:5) नया जन्म/ स्वर्ग से जन्म पाना(यूहन्ना 3:3,7)
- पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा पाना (प्रेरितों 1:5;11:16; 1 कुरिन्थियों 12:13)।
- पवित्र आत्मा का उन पर उण्डेला जाना(प्रेरितों 2:17,33;तीतुस 3:6)।
- पवित्र आत्मा प्राप्त करना(प्रेरितों 8:15; 10:47)
- पवित्र आत्मा का उतरना(प्रेरितों 8:16; 10:44; 11:15)
- ऐसे वरदानों को प्राप्त करना जिसमें पवित्र आत्मा स्वयं शामिल है(प्रेरितों 2:38;11:17;15:8)
- पवित्र आत्मा द्वारा छाप लगना(इफिसियों 1:13)
- पवित्र आत्मा द्वारा नये जन्म का स्नान और नया बनाने के द्वारा(तीतुस 3:5;प्रेरितों 11:14,18;यूहन्ना 3:3-8)
- ये सारी अभिव्यक्तियां किसी व्यक्ति द्वारा यीशु मसीह पर विश्वास करने पर पवित्र आत्मा प्राप्त करने को व्यक्त करती हैं।

(2) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति नया जन्म प्राप्त करता और उद्धार पाता है।

जब अन्यजाति में लोगों ने पहली बार सुसमाचार सुना और यीशु मसीह पर विश्वास किया, तो पवित्र आत्मा ठीक उस रीति से उन पर उतरा जिस प्रकार से वह प्रारम्भ में चेलों पर उतरा था। परमेश्वर ने उन्हें बहुत से वरदानों को दिया जिसमें पवित्र आत्मा स्वयं शामिल था और इस घटना को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा कहा गया(प्रेरितों 11:15-17)। यह अन्यजातियों का प्रथम पिन्तेकुस्त था! जिसके परिणाम स्वरूप जिन लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया, उन्होने यहूदियों के समान अर्थात जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया था, उद्धार पाया(प्रेरितों 2:18,21;11:14; 15:11; इफिसियों 1:13)। परमेश्वर ने उन्हें भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है(प्रेरितों 11:18)। *परमेश्वर ने उनके हृदयों को शुद्ध किया* (प्रेरितों 15:9)।

(3) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति मसीह की देह और उसकी कलीसिया का एक भाग बन जाता है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा कि यीशु मसीह लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा और इस तरह से वह गेहूँ को खत्ते में इकट्ठा करेगा(मत्ती 3:11-12)। पौलुस ने पिन्तेकुस्त के 26वर्षों के पश्चात यहूदियों और कुरिन्थियों में रहने वाले अन्यजातियों में से आये विश्वासियों को लिखा कि केवल कुछ खास समूह के लोगों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला था, बल्कि"हम सभी लोगों ने एक आत्मा द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया" जिसे मसीह की देह कहा जाता है। जिसमे दुनिया भर के प्रेरित व विश्वासी भी शामिल हैं(1कुरिन्थियों 12:12-13)। अत: जब लोग यीशु मसीह में विश्वास करने लगे तो उन्होंने एक आत्मा द्वारा मसीह की एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया(इफिसियों 1:22-23)।

(3) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का अर्थ पवित्र आत्मा पाना है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा विश्वासी में रहने और काम करने के लिए आता है।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाते समय, पवित्र आत्मा, जो कि वास्तव में यीशु मसीह का आत्मा है(रोमियों 8:9-10) एक विश्वासी की देह में वास करने के लिए आता है(यूहन्ना 7:37-39;1 कुरिन्थियों 6:19-20)। तब पवित्र आत्मा यीशु मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त पूरे किये गये कामों को विश्वासी के जीवन में कार्यान्वित करना प्रारम्भ कर देता है। समय बीतने पर यह प्रमाणिक हो जाता है कि पवित्र आत्मा ने मसीहीयों को अनेकों वरदान दिये हैं।

ड़.पवित्र आत्मा द्वारा भरा जाना

1. पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ।

(1) पवित्र आत्मा कोई भाववाचक नहीं वरन एक सामर्थी व्यक्ति है।

" पवित्र आत्मा से भरे जाने" का अर्थ क्या है? यदि पवित्र आत्मा कोई भाववाचक शक्ति होता, जिसे आप किसी पैमाने से नाप कर प्राप्त कर सकते (जैसे 30%)तो आपका प्रमुख प्रश्न होता कि,"मैं किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा पवित्र आत्मा को पा सकता हूँ(उदाहरण 60% या 100%)?

लेकिन यदि,पवित्र आत्मा एक शक्ति शाली व्यक्ति अर्थात स्वयं परमेश्वर है, जो मसीहीयों में वास करने के लिए आया है, तो आपका प्रमुख प्रश्न यह होना चाहिए कि,"पवित्र आत्मा किस तरह मुझ पर ज़्यादा कब्ज़ा कर सकता है?" मसीही कभी पवित्र आत्मा पर कब्ज़ा नहीं करता बल्कि पवित्र आत्मा उस पर कब्ज़ा करता है। पवित्र आत्मा से भरे जाने (पवित्र आत्मा की परिपूर्णता)का प्रश्न, जिसे पवित्र आत्मा ही पूरा कर सकता है, असल में हमारे जीवन और हृदय में यीशु मसीह की आत्मा द्वारा प्रभुता करने का प्रश्न है।"किस तरह यीशु मसीह एक राजा और प्रभु के रूप में मेरे जीवन को प्रभावित व निर्धारित कर सकते हैं?"

पवित्र आत्मा से भरे जाने का अर्थ है कि मैंने अपने जीवन को पूरी तरह से परमेश्वर के अधीन कर दिया है और अब परमेश्वर पूरी तरह मेरे जीवन पर नियन्त्रण करता है। इसका अर्थ है कि मैंने अपने जीवन से अहम को निकार दिया है और अब मैं अपनी महिमा नहीं वरन, केवल उस त्रीएक परमेश्वर की महिमा चाहता हूँ(रोमियों 11:36)। इसका अर्थ है कि परमेश्वर मेरे जीवन का बाइबल के अनुसार चलाता,और मुझे ज्यादा से ज्यादा मसीह के समान बनाता और मेरी सेवाकाई को अधिक फलदायी बनाता है।

(2) पवित्र आत्मा से भरे जाने के सम्बन्ध में की गयी प्रतिज्ञा।

यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा से भरे जाने के बारे में क्या प्रतिज्ञा की थी? यीशु ने मसीहियों से प्रतिज्ञा की है कि उनमें से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगीं(यूहन्ना 7:37-39)। उसने अपने चेलों से विशेष रूप में प्रतिज्ञा की कि वे जगत के छोर तक उसके गवाह होने की सामर्थ्य पाएंगे(प्रेरितों 1:8)

(3) पवित्र आत्मा से भरे जाने का वर्णन ।

किस प्रकार से बाइबल में उद्धार का इतिहास पवित्र आत्मा से भरे जाने का वर्णन करता है?

इसके बहुत से सम्भावित परिणाम हैं: लेकिन आप इस बात का ध्यान दें कि ये केवल ऐतिहासिक चित्रण है कोई आज्ञा या आदेश या शिक्षा नहीं जिस वर्तमान मसीही कलीसियाओं में लागू करना ज़रूरी हो।

- 1शमूएल 10:6-12। शाऊल नबियों के समूह के बीच में नबूवत की।
- लूका 1:41-43। एलिज़ाबेथ को विशेष संज्ञान प्राप्त हुआ कि मरियम की सन्तान मसीह था।
- लूका 1:67-79 जकर्याह ने मसीह के आने और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के भविष्य के बारे में भविष्यद्वाणी की।
- लूका 4:1-2। यीशु ने शैतान की परिक्षाओं पर विजय प्राप्त की।
- प्रेरितों 2:4। यीशु के सभी चेलों ने(लगभग 120) उस समय में विद्यमान व नयी भाषाओं में परमेश्वर के अद्भुत कामों की प्रशसां करने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 4:8 पतरस को अगुवों की मण्डली को सम्बोधित करने की प्रेरणा मिली। (मरकुस 13:11)
- प्रेरितों 4:31. चेलों ने परमेश्वर के वचन को बांटने का हियाव पाया।
- प्रेरितों 6:3, 8:-10. प्रथम डीकन, विशेष करके स्तीफनुस ने आश्चर्यजनक बुद्धिमानी और चमत्कारों के साथ लोगों को सम्बोधित किया।
- प्रेरितों 7:55, स्तीफनुस ने परमेश्वर की महिमा और जी उठे मसीह का दर्शन देखने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 9:17-22. पौलुस सामर्थी ढंग से बढ़ता गया और उसने अपने शत्रुओं को विफल करने की योग्यता प्राप्त की।
- प्रेरितों 11:24. बरनबास को बहुत से लोगों को मसीह में लाने की योग्यता मिली।
- प्रेरितों 13:9-11। पौलुस ने झूठे भविष्यद्वक्ता के विरूद्ध परमेश्वर के न्याय की उदघोषणा करने का अधिकार पाया।
- प्रेरितों 13:52. नये विश्वासियों सताव के बावजूद आनन्द मनाने की योग्यता प्रदान की गयी।

जो घटनाएं पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने से पहले कभी कभार हुआ करती थीं, वह आत्मा के उण्डेले जाने के बाद नियमित तौर पर होने लगीं। पवित्र आत्मा से भरे गये विश्वासी भी अपने जीवन में आत्मा के कामों को देख पाए।

2. पवित्र आत्मा से भरे जाने की शिक्षा।

पढ़ें. इफिसियों 5:15-21.

खोजें और चर्चा करें। पवित्र आत्मा से भरे जाने के बारे में बाइबल की शिक्षा क्या स्पष्ट करती है?

नोट्स।

(1) मसीहीयों को लगातार पवित्र आत्मा द्वारा भरे जाने की आवश्यकता है।

इफिसियों 5:18-21 में मुख्य क्रिया " पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" है(5:18)। यह बात एक आज्ञा है (आदेशसूचक भाव),जो कि लगातार इस्तेमाल करने योग्य बात(वर्तमान काल) है और इसका इस्तेमाल परमेश्वर के तरीके (निष्क्रिय स्वर)से हुआ है। अत: बाइबल स्पष्ट रूप से आज्ञा देती है कि मसीहीयों को नियमित तौर पर या बार बार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन को ही सामान्य मसीही जीवन कहा जाता है।

(2) आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन अपनी बातों,गीतों, संगीत,धन्यवाद व अधीनता के कारण पहिचाने जाते हैं।

मुख्य क्रिया से जुड़ी हुई पाँच क्रियाएं अर्थात बोलना,गाना,संगीत बजाना,धन्यवाद देना और अधीन रहना(इफिसियों 5:19-21) हैं, जो मुख्य क्रियाओं से जुड़ी होती हैं। वे मुख्य क्रिया के साथ बारी बारी करके काम करती है और अपने आप में उस आज्ञा का पालन लगातार या बार बार करती हैं। अत: बाइबल बताती है कि आत्मा से परिपूर्ण मसीहियों में निम्नलिखित गुण पाये जाते हैं:

- एक आत्मा से पूरिपूर्ण मसीही जन अनैतिक पार्टियों में भाग नहीं लेता जहाँ पर मदिरा पान, दंगा फसाद और अनैतिक बातें होती हैं (इफिसियों 5:3-13; 1पतरस 4:3-4)। इसके बदले वह दूसरे लोगों के साथ मिलकर संगति करना और भजन कीर्तन करना, और आपस में एक दूसरे की उन्नति करने व परमेश्वर की महिमा के लिए संगीत बजाना पसन्द करेगा। यह आत्मा के फलों व संयम का एक उदाहरण है(गलातियों 5:23;1कुरिन्थियों7:9;9:24-27)।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन लोगों व परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक नहीं होता। वह कभी शिकायत करनेवाला और बहस करने वाला नहीं होगा(फिलिप्पियों 2:14) और न ही असन्तुष्ट और कृतघ्न होगा। बल्कि वह सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट (1 थिस्लुनिकियों 5:18)। यह आत्मा के फल आनन्द का एक उदारहण है(गलातियों 5:22)।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन घमण्डी या व्यक्तिगत स्वाधीनता पर अर्थात किसी पर निर्भर न होने वाले नहीं होते। वह कभी असहयोग करने वाला,फूट डालनेवाला और स्वार्थी नहीं होगा। वरन वह अधीन रहनेवाला होगा। उदाहरण के लिए। वह सबसे छोटा बनने के लिए तैयार होगा। वह उन स्थानों पर जाना पसन्द करेगा जहां और कोई नहीं जाना चाहता या नही जा सकता(यूहन्ना 13:1-17)। वह दूसरों को खुद से बढ़कर मानेगा(रोमियों 12:10)। वह सर्वदा दूसरों की भलाई की खोज करेगा(फिलिप्पियों 2:4)। वह मैत्री स्वभाव का, शिष्ट,भ्रद,नम्र और समझदार व्यक्ति होगा। यह आत्मा के एक फल नम्रता का उदाहरण है(गलातियों 5:23)।

(3) आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन को उसके व्यवहार, बुद्धि,प्राथमिकताओं,ज्ञान और आज्ञाकारिता के द्वारा पहिचाना जाता है।

नये नियम के ग्रीक अनुवाद में इफिसियों 5:17 व इफिसियों 5:18 के बीच में एक संयुक्तबोधक "और" पाया जाता है। अत: आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन में सारे गुण होते हैं जिन्हें हम इफिसियों 5:15-17 में पाते हैं।

- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन अपने व्यवहार या अपनी जीवन शैली को लेकर सावधान रहता है। वह ऐसा जन नहीं होता जो परमेश्वर को अच्छे लगने वाले कामों को करने की बजाय अपनी ही दृष्टि में सही लगने वाले कामों को करता रहे(न्यायियों 21:25)। वह अपने सारे कामों व व्यवहारों से प्रदर्शित करेगा कि उसने अपने पुराने मनुष्यत्व व जीवन शैली का उतारकर नये पवित्र और धार्मिक जीवन शैली को पहिल लिया है।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन पूरी तरह से व्यवहारिक बुद्धि से पूरिपूर्ण होता है। वह सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता है। वह अपने बाइबल के ज्ञान को अपने व्यवहारिक जीवन में इस तरह इस्तेमाल करने का प्रयास करता है जिससे परमेश्वर को महिमा मिले।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन परमेश्वर द्वारा दिये गये समय और अवसर का इस्तेमाल करता है।
- आत्मा से परिपूर्ण मसीही जन लगातार बाइबल में बताए तरीके द्वारा परमेश्वर को जानने और उसकी इच्छा पूरी करने का प्रयास करता है।

च.पवित्र आत्मा के फल

पढ़ें. रोमियों 8:9-16; गलातियों 5:13-25

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से पापमय स्वभाव या पवित्र आत्मा की उपस्थिति एक मसीही व्यक्ति के जीवन में अपने आप को प्रगट करता है?

नोट्स।

1. पापमय स्वभाव का प्रगटीकरण।

मनुष्य के जीवन में बसा हुआ पापमय स्वभाव अपने आप को शारीरिकत पापों जैसे यौन अनैतिकता या अधिकता,आत्मिक पापों जैसे मूर्तिपूजा और जादू टोना और सामाजिक पापों जैसे स्वार्थी महत्वाकाक्षाओं और झगड़ों में प्रगट करता है।

2. पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण।

हमारे भीतर वास करने वाला आत्मा अपने आपको आत्मा के फलों द्वारा प्रगट करता है। वह अपने आपको आत्मिक गुणों जैसे प्रेम, आनन्द और शान्ति;सामाजिक गुणों जैसे धीरज, कृपा और भलाई ; रिश्तों के गुणों जैसे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता,लोगों के प्रति शिष्टाचार और अपने आप में संयम द्वारा प्रगट करता है।

अगर आप एक मसीही जन हैं, तो आप यीशु मसीह के हैं और यीशु मसीह का आत्मा आपकी देह में वास करता है। इसके अलावा आप अपने पापमय स्वभाव के अधीन रहने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन आपका कर्तव्य होता है कि आप अपने भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा के चलाए चलें। पवित्र आत्मा पापमय स्वभाव के विपरीत है और वह पापमय स्वभाव को मारने में आपकी मदद करेगा। पवित्र आत्मा आपके भीतर प्रेम, आनन्द,शान्ति,धीरज और भलाई, कृपा, विश्वासयोग्यता, नम्रता और धीरज उत्पन्न करेगा। पवित्र आत्मा आपको उस मार्ग में चलाएगा जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है(भजन 32:8;भजन 143:10)। इस तरह से पवित्र आत्मा आपके जीवन को चलाने वाला चालक शक्ति बन जाता है और आप ज्यादा से ज्यादा उसके प्रति प्रतिबद्धता दिखाते और उसके साथ सहयोग करते हैं।

छ. पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान

1. आत्मिक वरदानों का स्वरूप।

(1) आत्मिक वरदान वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है जिसमें उसकी योग्यताएं या भूमिकाएं शामिल हो सकती हैं।

"आत्मिक वरदान भिन्न प्रकार के हैं"(1कुरिन्थियों 12:4)। ये साधारण या विशेष योग्यताएं या भूमिकाएं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ मसीही जनों को भविष्यद्वाणी (प्रचार करने का) की साधारण या विशेष योग्यता(सेवाकाई),किसी को शिक्षा देने या प्रोत्साहित करने(रोमियों12:6-8) की सेवाकाई प्राप्त होती है जबकि कुछ लोगों को साधारण या विशेष कार्य करने अर्थात भविष्यद्वाणी(प्रचारक)शिक्षक व पासबान की जिम्मेदारी या भूमिका (कार्यालय)प्राप्त होती है(इफिसियों 4:11; रोमियों 12:4)। ये कार्यालय तुरन्त अगुवाई के पद प्रदान नहीं करते वरन वे उन विशेष क्षेत्रों में सेवा करने के लक्ष्य प्रदान करते हैं(1पतरस 4:10)।

(2) आत्मिक वरदान आत्मा के भिन्न प्रगटीकरण हैं।

विभिन्न प्रकार के विभिन्न वरदान विश्वासियों के भीतर पाये जाने वाले पवित्र आत्मा के कामों और उसकी उपस्थिति के विभिन्न प्रगटीकरण होते हैं(1कुरिन्थियों 12:7)।

(3) आत्मिक वरदान विभिन्न सेवाकाईयों में प्रदर्शित होते हैं।

"और सेवा भी कई प्रकार की हैं"(1कुरिन्थियों 12:5)। उदाहरण के तौर पर, आत्मिक वरदान लोगों में परमेश्वर के वचनों का प्रचार करने के दौरान प्रगट हो सकता है,खोई हुई आत्माओं को सुसामाचार सुनाने में प्रदर्शित हो सकता है और उद्धार पाये हुए लोगों को शिक्षा देने या उनकी चरवाई करने में प्रगट हो सकता है(इफिसियों 4:11-12)।

(4) आत्मिक वरदानो के प्रभाव अलग होते हैं।

"प्रभावशाली कार्य अलग होते हैं"(1कुरिन्थियों 12:6)। उदाहरण के लिए चंगाई के वरदान(बहुवचन)उन वरदानों की ओर इशारा करते हैं जो लोगों को शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक चंगाई प्रदान कर सकते हैं। इसके अलावा इन आत्मिक चंगाई का अर्थ सामान्य तरीकों की सहायता से चंगाई प्राप्त करना (जैसे किसी वैद्य की सहायता)या चमत्कारी ढंग से (विश्वास व प्रार्थना के द्वारा)चंगाई प्राप्त करना हो सकता है(1कुरिन्थियों 12:9)।

2. आत्मिक वरदानों की सीमाएं।

(1) आत्मिक वरदानो की अपनी एक सीमा होती है।

बहुत से आत्मिक वरदानों की सूची रोमियों 12:4-8;1 कुरिन्थियों 7:1,7; 12:7-10,28-30;14:6,26;इफिसियों 4:11; 1पतरस 4:10-11 में दी गयी है। इनमें से कोई एक सूची पूर्ण सूची होने का दावा नहीं करती है। इसके अलावा भी बहुत से ऐसे वरदान हैं जिनका जिक्र इन सूचियों में नहीं किया गया है। उदाहरण के तौर पर, पोशाके बनाने का विशेष गुण(निर्गमन 28:3;35:25,35), सब प्रकार हस्थकला की कारीगरी का कौशल(निर्गमन31:1-6); इमारतें बनाने का गुण(निर्गमन 35:10;36:1), संगीत तैयार करने का गुण(भजन 33:2-3), कविताएं व गीत लिखने का गुण (भजन 45:10) अगुवाई करने का गुण(भजन 78: 72)।

(2) आत्मिक वरदान देने वाले की ओर से सीमित हैं।

परमेश्वर अपने अनुग्रह के तहत अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न आत्मिक वरदान देता है। वह ही निर्णय लेता है कि किसको कौन सा आत्मिक वरदान दिया जाना चाहिए (1कुरिन्थियों 12:11)।

कोई भी जन सारे आत्मिक वरदानों को प्राप्त नहीं करता और न हीं सभी मसीहियों को एक समान वरदान दिये जाते हैं। उदाहरण के लिए, सभी मसीही अगुवे नहीं होते और न ही सारे मसीही अन्यान्य भाषा में बातें करते हैं(1कुरिन्थियों 12:29-30)।

जब हर मसीही जन के आत्मिक वरदान प्राप्त करने के सवाल पैदा होता है तो लोगों के जवाब अलग अलग हो सकते हैं।

- "हर एक" जन का अर्थ "हर एक जन जिसने इस संसार में जीवन व्यतीत किया है"(रोमियों 2:6)या "इस संसार में जीवन व्यतीत करने वाला हर एक मसीही जन " हो सकता है(प्रेरितों 2:38;रोमियों 12:3;14:12)। इसलिए कई मसीही विश्वासी विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7,12:7,14:26 और 1पतरस4:10 का मतलब था कि हर एक मसीही जन ने आत्मिक वरदान प्राप्त किया है। यह सम्भव है।
- फिर भी,"हर एक जन" का अर्थ सीमित तौर पर किसी समूह या वर्ग से जुड़े लोगों से जुड़ा हो सकता है। उदाहरण के लिए, हर एक कपटी(लूका 13:15),एक बड़ी भीड़ में का हर एक सदस्य(यूहन्ना 6:7) या यहूदा का हर एक जरूरतमन्द मसीही(प्रेरितों 4:35)। इसलिए मसीही लोग विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 757,12:7, 14:26 व 1 पतरस 4:10 में पाये जाने वाले शब्द "हर एक" मतलब मसीह की देह के अंगों से है जिन्हें पवित्र आत्मा ने सर्वश्रेष्ठ तरीके से एक आत्मिक वरदान प्रदान किया है(1कुरिन्थियों 12:11,28-30)। इसलिए यह कहना उचित नहीं होगा कि पवित्र आत्मा ने इस संसार में रहने वाले हर एक मसीही जन को एक आत्मिक वरदान दिया है।

इफिसियों 4:7 में लिखा है,"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।" वहां पर यह नहीं लिखा है कि हर एक मसीही ने "एक आत्मिक वरदान "प्राप्त किया है,परन्तु हर एक मसीही को "अनुग्रह" मिला है। परमेश्वर का अनुग्रह उसके वरदानों से अधिक बढ़कर है। उदाहरण के तौर पर, कई मसीहियों को आत्मिक नींव डालने में महारथ हासिल है(1कुरिन्थियों 3:10), जबकि दूसरे मसीहियों को दूसरों की तुलना में अधिक कठिन कार्य करने की ताकत मिली हुई है(1कुरिन्थियों 15:10)। कई मसीहियों को कठिन परिस्थितियों के बावजूद बचत करने का वरदान मिला होता है(2 कुरिन्थियों 12:9), जबकि बहुत से मसीहियों को विदेशों में जाकर मिशन कार्य करने का वरदान मिला होता है(गलातियों 2:9)। इसी तरह से कुछ मसीहियों को परमेश्वर की ओर से विशेष योग्यताएं व भूमिकाएं मिली हुई हैं जिन्हें आत्मिक वरदान कहा जाता है (इफिसियों 4:11;1 पतरस 4:10-11)।

(3) आत्मिक वरदानों का प्रभाव क्षेत्र सीमित होता है।

केवल "अनुग्रह" ही नहीं वरन परमेश्वर के वरदान भी अपने प्रभाव क्षेत्र में सीमित होते हैं-उनकी सदा अपनी एक "परिमाप" होती है(इफिसियों 4:7)। इसका मतलब हैं कि मसीह द्वारा ठहरायी गयी परिमाप के अनुसार ही मसीहियों को आत्मिक वरदान दिये गये हैं। उदाहरण के तौर पर, किसी मसीह को बच्चों को सिखाने का वरदान मिला है और किसी को व्यस्क लोगों को। किसी विश्वासी को कहानियां सुनाने के द्वारा शिक्षा देने का वरदान मिला है परन्तु किसी को बाइबल की व्याख्या करते हुए शिक्षा प्रदान करने का वरदान। संसार में कोई सब कुछ नहीं सिखा सकता और न ही कोई शिक्षक इतना सिद्ध शिक्षक नहीं है(यीशु को छोड़कर)जो शिक्षा के हर तरीके का इस्तेमाल कर सके।

3. आत्मिक वरदानों को उद्देश्य।

आत्मिक वरदानों को ग्रहण करने के चार भिन्न उद्देश्य हैं।

- आत्मिक वरदान अपनी बढ़ौतरी या प्रशसां के लिए नहीं वरन दूसरे मसीहियों की सेवा करने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।(1 पतरस 4:10-11)
- आत्मिक वरदान का इस्तेमाल सार्वभौमिक कलीसिया का निर्माण करने के लिए किया जाना चाहिए न की किसी एक डिनोमिनेशन या मण्डली का निर्माण करने के लिए (1कुरिन्थियों 12:7;14:12)
- आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल सार्वभौमिक कलीसिया में सेवा निभाने हेतू मसीहियों को तैयार करने के लिए किया जाना चाहिए(इफिसियों 4:12)।
- आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल हर चीज़ में परमेश्वर को महिमा देने के लिए इस्तेमाल होना चाहिए। (1 पतरस 4:11)।

ज.पवित्र आत्मा से सम्बन्धित अन्य शिक्षाएं।

1. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसकी भूमिका। **देखें** मैनुएल 2, अध्याय 21।
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, भरा जाना और उसके फल। **देखें** मैनुएल 4, अध्याय 45
3. पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान। **देखें** मैनुएल 7,अध्याय 36।
4. अधिक आत्मिक वरदान। **देखें** मैनुएल 7, परिशिष्ट 12

	प्रार्थना (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएं]***
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के लोगों के साथ "पिन्तेकुस्त-पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने का स्मरणोत्सव" के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2कुरिन्थियों 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। बाइबल की नयी आयत **(4) यूहन्ना 3:16** को याद व मनन करें। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। (**यूहन्ना 3)।** बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

6.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7.मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया। अध्याय 10

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* *2 कुरिन्थियों 1-3*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 1-3) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।

जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* *(4) यूहन्ना 3:16*

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(4) यूहन्ना 3:16 : क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* *यूहन्ना 3:1-36*

प्रस्तावित करें। **यूहन्ना 3:1-21** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल की पाँच चरण की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना 3:1-21 बताता है कि यीशु मसीह नीकुदेमुस के सामने स्वयं को प्रगट करता हैं। यूहन्ना 3:22-36 बताता है कि किस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला स्वयं को पीछे खींचने लगता है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**
पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 3:1-36 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**
ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(1) परमेश्वर अनन्तकाल के समय से प्रेम करता है।

एरोस्ट समय में ये परमेश्वर का *एकमात्र कार्य* है जो *अनन्तकाल तक जाता है और अनन्तकाल तक फैला हुआ है।* बाइबल में परमेश्वर का प्रेम एक महान, एकमात्र सच्चाई और सबसे बड़ी वास्तविकता है जो अनन्तकाल तक बनी रहती है (उससे भी पहले जब सृष्टि में "समय" की रचना हुई थी)। जिस प्रेम के द्वारा उसने हमें सृष्टि की रचना से पहले चुना, वह यीशु मसीह के देह धारण और मृत्यु में सबसे ज़्यादा सम्भव अभिव्यक्ति पाता है, और अब जब हम विश्वास करते हैं तो वह हमारे उद्धार में दिखता है।

(2) परमेश्वर ने जगत से महान प्रेम किया।

बाइबल और यूहन्ना रचित सुसमाचार में "जगत" शब्द के कई अलग अर्थ हैं (तुलना करें यूहन्ना 1:10)। यहाँ यूहन्ना 3:16 में, "जगत" शब्द "खोए हुए लोगों के जगत" को दर्शाता है, न कि जाति या राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में किसी भेदभाव को। यह परमेश्वर के जीवन से विमुख उन लोगों को सन्दर्भित करता है, जो हर जाति, देश और पृथ्वी पर बोली जाने वाली भाषा से सम्बन्ध रखते हैं जो पापों से भरे हुए हैं, जिन्हें न्याय और उद्धार की ज़रूरत है। यह पृथ्वी पर पाये जाने वाले किसी विशेष व्यक्ति पर ज़ोर नहीं डालता परन्तु यह पूरे समुदाय को दर्शाता है। जगत को यहाँ बुराई के दायरे के रूप में नहीं देखा गया, जो खुलेआम परमेश्वर का, मसीह का और मसीही लोगों का विरोध करते हैं, जैसे की यूहन्ना 15:18 में। परमेश्वर बुराई से बैर रखता है और इसलिए वह उन लोगों से प्रेम नहीं रखता जो परमेश्वर, मसीह और मसीही लोगों से बैर रखते हैं (तुलना करें : भजन 5:4-6; रोमियों 1:18)। परमेश्वर जाति और राष्ट्रीयता में भेदभाव किये बिना "जगत" के खोये हुए लोगों से प्रेम करता है।

(3) परमेश्वर ने बहुमूल्य भेंट के रूप में अपना प्रेम दिया।

परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। यह शारीरिक, आत्मिक या प्रतीकात्मक पुत्र होने को नहीं दर्शाता है, बल्कि परमेश्वर की आत्मिक, शास्त्रीय, अनन्त और त्रिएकता में पुत्र होने को दर्शाता है (देखें नियमावली 2, पूरक 8, परमेश्वर का स्वभाव और परमेश्वर का पुत्र)। ये यह दर्शाता है कि मसीह अनन्तकाल का परमेश्वर है (यूहन्ना 1:14,18), सृष्टि की रचना से भी पहले (गुरुत्वाकर्षण के बल, इसके प्रकाश की ऊर्जा, सौरमण्डल जिसे मापा जा सकता है और समय केवल एक ही दिशा में चलता है)। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने अपने *पुत्र को दे दिया* जिसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने पापों के लिए प्रायश्चित्त के बलिदान के रूप में अपना सबसे उत्तम बहुमूल्य बलिदान दिया था।

(4) केवल विश्वासियों को अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

यीशु यहाँ उन सभी लोगों के विषय में बात कर रहा है जो उसे *दृढ़ता* और विश्वास के साथ ग्रहण करते हैं। यहाँ क्रिया "विश्वास करने के लिए" *वर्तमान समय* में है और ये यह दर्शाता है कि यह उन लोगों का उल्लेख नहीं करता है, जिन्होंने एक बार विश्वास का भाव बना लिया, लेकिन बाद में उन्होंने विश्वास करना बन्द कर दिया और वापस पीछे हट गए। ऐसे लोगों का विश्वास *केवल बौद्धिक* या *भावनात्मक विश्वास* होता है, *एक अस्थायी, ऐतिहासिक विश्वास, जिसके द्वारा बचा नहीं जा सकता।* वास्तविक विश्वास प्रत्येक दिन यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध में बन्धा रहता है और अन्त तक कायम रहता है।। हालाँकि सुसमाचार जगत में हर जाति, देश और भाषा के लोगों को प्रचार किया जाता है, परन्तु सुसमाचार सुननेवाला हर कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता है। लेकिन जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करता है, चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति, जिस समय वह विश्वास करता है उसी समय वह अनन्त जीवन को प्राप्त कर लेता है।

(5) अनन्त जीवन का स्वभाव

जिस पल आप यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानने लगते और उसके साथ संगति रखने लगते हैं, वो ही "अनन्त जीवन" है (यूहन्ना 17:3)। यह एक नया जीवन है जिसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं : उद्धार का आश्वासन (यूहन्ना 10:28), परमेश्वर के लिए प्रेम, और शान्ति, अपने हृदय में प्रेम और जीवन में एक उद्देश्य और उसकी पूर्ति! यह एक ऐसा जीवन है जो इस युग के जीवन से एकदम भिन्न है और कभी खत्म नहीं होता है! यह आश्वासन है कि मसीह के दूसरे आगमन के बाद आप निश्चिततौर पर भविष्य में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर महिमान्वित यीशु मसीह के साथ अद्भुत जीवन में हिस्सा लेंगे।

3:17-18

***खोज 2* : अविश्वास के लिए परमेश्वर का निर्णय।**

(1) यहूदियों का मानना था कि केवल वे ही विशेष रूप से परमेश्वर का चुना हुआ राष्ट्र थे।
उनका मानना था कि मसीह केवल अन्यजातियों को ही दण्ड देगा, क्योंकि इन जातियों ने इस्राएलियों पर अत्याचार किया था। उनका मानना था कि परमेश्वर इस्राएल का न्याय नहीं करेगा। हालाँकि, भविष्यद्वक्ता आमोस ने यहूदियों को चेतावनी दी थी कि अन्तिम न्याय के दिन में यहूदियों का भी न्याय होगा (आमोस 3:2)!

(2) यीशु सिखाता है कि परमेश्वर के उद्धार की योजना जगत के सभी देशों के लिए है।
उसने कहा कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (यूहन्ना 3:17)। यूहन्ना 3:16 के ही समान, "जगत" का यहाँ अर्थ हर जाति, देश और भाषा में खोए हुए लोगों के जगत से है। परमेश्वर की योजना न केवल लोगों को पाप के *दण्ड* से बचाने के लिए थी, बल्कि *पाप और उसकी शर्मिंदगी* से बचाने और उन्हें अनन्त जीवन देने के लिए भी थी।

(3) यीशु सिखाता है कि उद्धार या नाश के फल को इसी जीवन में निर्धारित किया जाता है।
यद्यपि यीशु मसीह के पहले आगमन का मुख्य उद्देश्य उद्धार करना था, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य नाश करना होगा। यूहन्ना 3:18 में लिखा है : जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, *वह दोषी ठहर चुका,* इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। किसी को भी अपने न्याय को प्राप्त करने के लिए अंतिम न्याय के दिन का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है। आप बचेंगे या आपका नाश होगा (मरेंगे), इसका निर्णय *इसी जीवन में* तय किया जाना है! अंतिम न्याय के दिन वे सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उनका नाश नहीं होगा (यूहन्ना 5:24)। क्योंकि उन्हें पहले ही क्षमा किया जा चुका है, उनके विरूद्ध मृत्यु की कोई सजा नहीं पढ़ी जाएगी!

हालाँकि, अंतिम न्याय के दिन सभी लोग जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुथान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)। इसका मतलब यह नहीं है कि उनका केवल अन्तिम दिन में न्याय किया जायेगा और उन्हें दण्ड दिया जायेगा, बल्कि उनके दण्ड की सार्वजनिक रूप से घोषणा की जाएगी। जिन्होंने मसीह पर विश्वास न करके उसका इन्कार किया है, उन लोगों को अंतिम न्याय के दिन के आने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, जैसे कि उनके लिए न्याय के दिन को स्थगित कर दिया गया हो। सभी अविश्वासियों को पहले से ही दण्ड का भागी ठहरा दिया गया है। यूहन्ना 3:36 कहता है, कि परमेश्वर की नाराज़गी और क्रोध सभी लोगों पर निर्भर करती है, जो एक वास्तविक

और अटल विश्वास के द्वारा उसे स्वीकार करने से इन्कार करते हुए मसीह की आज्ञा नहीं मानते हैं। मृत्यु के बाद, आपको यीशु मसीह पर विश्वास करने का कोई दूसरा अवसर नहीं मिलेगा! उद्धार और दण्ड का निर्णय इसी जीवन में होगा!

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये यूहन्ना 3:1-36 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। **लिखें:** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।) **चर्चा करें।**(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

3:3,5,7

***प्रश्न 1* – "नए सिरे से जन्म लेने" का क्या अर्थ है?**

नोट्स।

नीकुदेमुस वास्तव में यह जानना चाहता था कि : "मैं ऐसा कौन-सा भला काम करूँ, जिससे कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकूँ?" उसके कहने का तात्पर्य यह था कि "मैं अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करूँ?" यीशु ने एक दृष्टान्त के रूप में इसका उत्तर दिया। उस दृष्टान्त में उसका उत्तर छिपा हुआ था। यीशु ने कहा, "कि जब तक कोई नए सिरे से न

जन्मे, तब तक वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

(1) नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ है "नया" और "ऊपर से" जन्म लेना, अर्थात पवित्र आत्मा द्वारा जन्म लेना।

नए सिरे से जन्म लेने का शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि *ऊपर से,* परमेश्वर की ओर से जन्म लेना जो कि स्वर्ग में रहता है (यूहन्ना 3:31)। इसका अर्थ यह भी है कि आप *नए सिरे से जन्म* लेते हैं, अर्थात् *शारीरिक रूप से जन्म लेने के बाद आत्मिक रूप से पैदा होना* (तुलना करें : गलातियों 4:9, फिर से)। यूहन्ना 3:6 में यीशु कहता है कि "क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" शरीर से जन्म लेने का अर्थ एक पापी मनुष्य स्वभाव के साथ शारीरिक रूप से पैदा होना। आत्मा से जन्म लेने का अर्थ एक नए आत्मिक स्वभाव के साथ आत्मिक रूप से जन्म लेना है।

(2) जल से बपतिस्मा लेना पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा लेने का केवल एक संकेत और मुहर है।

यूहन्ना 3:5 में, यीशु ने कहा, "जब तक कोई मनुष्य *जल और आत्मा* से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" मत्ती 3:11 में भी हम *जल और आत्मा* के बारे में पढ़ते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहता है कि "मैं तुम्हे जल से बपतिस्मा देता हूँ... परन्तु यीशु मसीह तुम्हे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।" इसका अर्थ यह है लोगों के हृदयों और जीवनों में पवित्र आत्मा के कामों के द्वारा ही उनका नए सिरे से जन्म होता है। जब पवित्र आत्मा लोगों को फिर से जीवित करने के लिए परमेश्वर के सुसमाचार या शिक्षा का प्रयोग करता है, तब लोगों का नए सिरे से जन्म होता है (1 पतरस 1:23)। लोग केवल जल से बपतिस्मा लेकर ही नए सिरे से जन्म नहीं ले सकते। जल से बपतिस्मा लेना एक प्रत्यक्ष संकेत (या चित्रमय प्रस्तुति) और वास्तविक मुहर (पुष्टिकरण) है अर्थात् आत्मा के साथ अप्रत्यक्ष रूप से बपतिस्मा लेना। जब किसी वस्तु के साथ संकेत जुड़े हुए होते हैं, तब संकेत का मूल्य होता है। जब जल से बपतिस्मा लेने का अर्थ है कि आपका पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेने के द्वारा नया जन्म हो चुका है तो क्या जल से बपतिस्मा लेने का कोई महत्व बाकी रह जाता है। चूँकि हम यूहन्ना 3:6-8 में "जल से जन्म" लेने के बारे में नहीं, केवल "आत्मा से जन्म" लेने के बारे में पढ़ते हैं, वह यह साबित करता है कि "आत्मा से बपतिस्मा" लेना एक महत्वपूर्ण बात है!

(3) पवित्र आत्मा द्वारा फिर से जन्म लेना अति आवश्यक और परमेश्वर का एक उत्तम कार्य है।

यूहन्ना 3:7-8 में यीशु कहता है, "अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से कहा, कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" सभी यहूदियों के समान, नीकुदेमुस का भी यह मानना था कि व्यवस्था के द्वारा लोगों को बचाया जा सकता है। अब यीशु ने उन्हें यह बताकर आश्चर्यचकित कर दिया कि उद्धार को परमेश्वर के अनुग्रह की भेंट के रूप में दिया गया है, न कि मनुष्य द्वारा अर्जित कार्यों के द्वारा। यीशु ने बताया कि व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा ही मनुष्य नए सिरे से जन्म ले सकता है।

आदि में उद्धार परमेश्वर का एक सार्वभौमिक काम है और मनुष्य पूरी तरह निष्क्रिय है। पृथ्वी पर कोई ऐसा नहीं जो हवा की दिशा को बदल सके या उसे आदेश दे सके। यह किसी मनुष्य पर निर्भर हुए बिना स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करती है। इसी प्रकार, पृथ्वी पर कोई भी अपने उद्धार को (पुनर्जन्म) नियंत्रित या निर्देशित नहीं कर सकता। पवित्र आत्मा मनुष्य पर निर्भर हुए बिना स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करता है। नये सिरे से जन्म लेना परमेश्वर का एक सार्वभौमिक काम है जिसे मनुष्य नियंत्रित नहीं कर सकता। पुराने नियम के अनुसार नीकुदेमुस को यह पता होना चाहिए था कि वह एक अधर्मी मनुष्य है (तुलना करें : उत्पत्ति 6:5; अय्यूब 14:4; भजन 51:5; यिर्मयाह 17:9) और स्वयं को बचाने में असमर्थ है (तुलना करें : यशायाह 43:10-11)। उसे यीशु द्वारा दी गई शिक्षा पर इतना अचम्भित नहीं होना चाहिए था।

3:3,5

***प्रश्न 2* – "परमेश्वर का राज्य" क्या है?**

नोट्स

(1) परमेश्वर का राज्य

परमेश्वर का राज्य (हृदय और जीवन) एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर का अनुग्रह पाया जाता है और जहाँ मसीह के द्वारा परमेश्वर के राज्य को मान्यता, अंगीकार और उसका पालन किया जाता है (लूका 17:20-21)। परमेश्वर के राज्य (शासन) को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया गया है :

- विश्वासियों का उद्धार (मरकुस 10:24-27) आदि से (उनकी आत्माओं का उद्धार) अन्त तक (उनका शारीरिक उद्धार)।
- संवैधानिक रूप से और पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में विश्वासियों की वृद्धि (मत्ती 16:18-19)।
- मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के भले कार्य (प्रभाव) (मत्ती 25:34-40; रोमियों 14:17) (बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आतिमक)।
- नया स्वर्ग और नई पृथ्वी (इब्रानियों 12:22-24; 2 पतरस 3:10-13)।

(2) पुनर्जन्म और विश्वास के माध्यम से प्रवेश करना।

"परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना" "अनन्त जीवन प्राप्त करने" या "बचाये जाने" के समान है। इस प्रकार, यूहन्ना 3:3-8 और यूहन्ना 3:16-17 के बीच की तुलना सिखाती है कि "परमेश्वर का उत्तम कार्य" (आत्मा के द्वारा पुनर्जन्म) "मनुष्य के कार्य से" (यीशु मसीह पर विश्वास करना) पहले होता है (यूहन्ना 6:44,37; यूहन्ना 17:6)।

परन्तु मनुष्य यह नहीं समझ पाता है, कि उसकी अपनी सोच के अनुसार, *परमेश्वर के द्वारा नये सिरे से जन्म लेना* और *मनुष्य का विश्वास करना* दोनों एक ही बात है। उसकी अपनी सोच के अनुसार *परमेश्वर के द्वारा जन्म लेना* और *मसीह को ग्रहण करना* या *मसीह पर विश्वास करना* एक ही समान है। यूहन्ना 1:12-13, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया - वह सन्तान जो प्राकृतिक वंश द्वारा उत्पन्न न हुई हो (*शारीरिक वंश*, उदाहरण - अब्राहम से) अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से (शारीरिक इच्छा, नर और नारी द्वारा बनाये गए सम्बन्ध), न मनुष्य की इच्छा से (*इच्छा शक्ति* या मनुष्य के निर्णय) (रोमियों 8:7-8), परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं (अलौकिक, ईश्वरीय, ऊपर से)।"

3:9-13

प्रश्न 3 - स्वर्गीय बातों के विषय में जानने और उसकी गवाही देने के विषय से यीशु का क्या अर्थ है?

नोट्स

यूहना 3:11 में, यीशु ने कहा, कि वह स्वयं और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला "स्वर्गीय बातों" को जानते हैं और उसके विषय में गवाही भी दी। परन्तु यहूदी धर्म को माननेवाले अगुवों ने उनकी इस गवाही को ग्रहण नहीं किया। यीशु यह कह सकता था, क्योंकि वह आप ही जानता था कि उनके मन में क्या है और यीशु उन्हें जो शिक्षा दे रहा था वह उस शिक्षा के प्रति उनकी हिचकिचाहट को देख सकता था (तुलना करें : यूहन्ना 2:25)।

(1) पृथ्वी की बातें।

यूहन्ना 3:12 में यीशु कहता है, "जब मैंने तुम से *पृथ्वी की बातें* कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते।" वह उन बातों के विषय में बात कर रहा था जो स्वभाव और मूल में स्वर्गीय हैं, लेकिन पृथ्वी पर होती हैं है जैसे आत्मा के साथ बपतिस्मा और जल के साथ बपतिस्मा। हालाँकि यहेजकेल 36:25-27 में, पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के नये सिरे से जन्म लेने के विषय में स्पष्टरूप से पुराने नियम में और नये नियम में यीशु द्वारा सिखाया गया है, फिर भी अधिकांश यहूदियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" नये सिरे से जन्म लेना पृथ्वी पर मानव अनुभव के क्षेत्र के भीतर होता है। इसलिए जो कोई व्यक्ति पुराने नियम को पढ़ता है और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपनी स्वभाविक असमर्थता को दर्शाता है, वह व्यक्ति नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता को समझ चुका है!

अन्य "पृथ्वी की बातें" हैं : मसीह का अपने लोगों के लिए पहला आगमन (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1-2), परमेश्वर के दास की मृत्यु और उसका फिर से जी उठना और समस्त जगत में पाई जाने वाली अन्यजातियों के लोगों को सुसमाचार सुनाना (यशायाह 49:6)। नीकुदेमुस और उसके जैसे लोग सोचते थे कि "पृथ्वी की बातें" अविश्वसनीय थीं, तो जब यीशु ने "स्वर्गीय बातों" के विषय में बात की तो वे इन बातों की प्रतीति कैसे करते?

(2) स्वर्गीय बातें।

यूहन्ना 3:13 में यीशु ने कहा, "और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।" "स्वर्गीय बातें" स्वयं परमेश्वर (यूहन्ना 1:18) और परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना हैं जिसकी व्याख्या यूहन्ना 3:13-18 में की गयी है। केवल परमेश्वर का पुत्र ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा और स्वर्ग में किए गए सभी निर्णयों को जानता है। इसलिए यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के द्वारा जगत के हर देश से लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना तब तक मानव ज्ञान की सीमा के बाहर है जब तक कि वह मनुष्य को प्रगट नहीं की जाती। केवल यीशु मसीह स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आया और केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में चढ़ गया (इफिसियों 4: 9-10)[1]। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना को जानता है। केवल यीशु मसीह ने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धार की योजना को उजागर किया और केवल यीशु मसीह उस योजना को पृथ्वी पर ले जाता है (मत्ती 11:25-27)। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में पुस्तक को खोलता है और इसकी बातों को प्रगट करता है (प्रकाशितवाक्य 5:1-5)!

3:14-15

प्रश्न 4 **- जब यीशु कहता है, "उसका ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है" तो इसका क्या अर्थ है?**

नोट्स

(1) पुराने नियम में दिये गए उदाहरण और उनका नए नियम में पूरा होना।

परमेश्वर के उद्धार की योजना को :

- पुराने नियम के उदाहरणों (प्रकार) में आंशिक रूप से उजागर किया गया था
- लेकिन केवल नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा इसको पूरी तरह से उजागर किया गया।

पुराने नियम में गिनती की पुस्तक के अध्याय 21 में परमेश्वर के उद्धार की योजना का चित्रण (या प्रकार) जंगल में एक खम्बे पर पीतल के एक सर्प के द्वारा किया गया था। उद्धार की परमेश्वर की योजना की पूर्ति परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाने से हुई!

पुराने नियम में पाए जाने वाले उदाहरण और नये नियम में इसकी पूर्ति के बीच समानता पाई जाती है। दोनों उदाहरणों में, मृत्यु पाप की सजा के रूप में दर्शायी गयी है। दोनों ही उदाहरणों में, परमेश्वर स्वयं अनुग्रह का एक उपाय प्रदान करता है। दोनों उदाहरणों में किसी न किसी को सार्वजनिक दृष्टिकोण से उठाया जाना चाहिए था। दोनों ही उदाहरणों में, केवल वे लोग जो अपने हृदय में विश्वास रखते हुए सर्प को या यीशु मसीह की ओर देखते हैं, वही लोग मृत्यु से बचाए जाते हैं।

(2) मेशा की तरह, पूर्ति (वास्तविकता) दृष्टान्तों (चित्रण) से परे है।

पुराने नियम में, केवल इस्राएलियों को मृत्यु का भय था, लेकिन नये नियम में जगत के सभी लोगों को अपने पापों के कारण आत्मिक, शारीरिक और अनन्त मृत्यु का भय है। पुराने नियम में, पीतल का सर्प ही एक ऐसा प्रतीक था जो लोगों का ठीक नहीं कर सकता था। लेकिन नये नियम में यीशु मसीह एक सच्चाई है, अर्थात परमेश्वर जिसके पास विश्वासियों को बचाने और अविश्वासियों को नाश करने की सामर्थ्य है।

(3) क्रूस पर यीशु मसीह के चढ़ाये जाने को एक "आवश्यक" कार्य के रूप में दर्शाया गया है।

यीशु मसीह कहता है कि उसका "ऊपर" चढ़ाया जाना आवश्यक है। क्रूस पर चढ़ाया जाना जगत के कई उपायों में से एक नहीं है - क्रूस ही एकमात्र सम्भव उपाय है जिसके द्वारा पाप और अनन्त मृत्यु से बचा जा सकता है (तुलना करें : 1 कुरिन्थियों 1:22-24)! लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर की अपेक्षा एक तरफ 100% धर्मी और पवित्र जीवन है और दूसरी ओर पाप का दण्ड 100% है! यीशु मसीह के अलावा कोई मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता था! केवल यीशु मसीह के परिपूर्ण जीवन और उसकी मृत्यु के द्वारा उन लोगों के पापों के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर के उद्धार पाने की अपेक्षा की पूर्ती हो सकती है। केवल क्रूस पर ही परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता का उसके प्रेम और दया के साथ मेल-मिलाप हुआ! केवल क्रूस के द्वारा ही लोगों के पापों के खिलाफ परमेश्वर का धर्ममय क्रोध, खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर के अवर्णनीय प्रेम के साथ आया!

---

[1] "जाहिर तौर पर मृत्यु" का अनुभव जिसमें लोग स्वर्ग या नरक में होने का दावा करते हैं और फिर वे स्वर्ग या नरक का वर्णन करते हैं, सब झूठ है! यीशु मसीह स्वप्न और दर्शन के द्वारा प्रगट होता है। परन्तु केवल यीशु मसीह ही जानता है कि स्वर्ग कैसा दिखता है (मत्ती 11:27)!

उसको "ऊपर चढ़ाने" का अर्थ उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने से था लेकिन मृतकों में से उसके पुनरुत्थान, उसके स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर बैठाये जाने को इससे अलग नहीं किया जा सकता है (प्रेरितों के काम 2:33)। यद्यपि सभी लोगों की दृष्टि में मसीह को ऊपर चढ़ाया गया, लेकिन फिर भी सभी लोग नहीं बचाए गए हैं, क्योंकि सभी लोग विश्वास नहीं करते हैं।

3:19-21

प्रश्न 5 - **क्यों कुछ लोगों को अपराधी (दोषी) ठहराया गया है?**

नोट्स

कुछ लोगों को दोषी इसीलिए ठहराया गया है क्योंकि वे अपने हृदय को कठोर कर चुके हैं और यीशु मसीह में परमेश्वर के दर्शन को ग्रहण करने से इनकार करते हैं। यीशु मसीह ने परमेश्वर को प्रगट किया : उसने मनुष्य के सामने परमेश्वर के गुणों को प्रगट किया (यूहन्ना 1:3-4)। यीशु मसीह ने अपने सम्पूर्ण पवित्र और धार्मिक जीवन से उद्धार को प्राप्त किया और मनुष्य के अपवित्र और अधर्मी जीवन के लिए मोल चुकाया। यीशु मसीह ने परमेश्वर के सिंहासन की घोषणा की और लोगों को पश्चाताप् करने और विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया (मरकुस 1:14-15)। मनुष्य को बचाने के लिए जो कुछ आवश्यक था वो सब कुछ यीशु मसीह ने किया।

जो लोग यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं, जो अंधकार में अपना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें पहले से ही दोषी ठहरा दिया गया है (यूहन्ना 3:18; 1 यूहन्ना 3:6-9)। लेकिन ज्योति (यीशु मसीह और उसकी सच्चाई) सभी अन्धकार की बातों को दूर करती है। जो कोई भी ज्योति में आने से इनकार करेगा, वह अन्धकार में ही रहेगा। जो कोई भी मसीही सभाओं से दूर रहता है, बाइबल पढ़ने से या अपने भाई के साथ मिलाप करने से इन्कार करता है, वह ज्योति से बैर रखता है। वह अपने आप को अन्धेरे में छिपाता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि ज्योति उसके अन्धकार को उजागर करे। लेकिन ज्योति में आने वाले सभी लोग यह साबित करते हैं कि मसीह के द्वारा परमेश्वर उन में कार्य कर रहा है (1 यूहन्ना 1: 5-7)! वे अपने जीवन की नई जिंदगी के द्वारा अपने विश्वास की वास्तविकता को साबित करेंगे।

इस प्रकार, इस जगत के सभी लोग यीशु मसीह (यूहन्ना 3:18,36; लूका 2:3) के साथ अपने सम्बन्ध के आधार पर खड़े होते हैं या गिरते हैं।

3:22-26

प्रश्न 6 - **जल से बपतिस्मा (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और मसीह के चेलों का बपतिस्मा) और यहूदियों की शुद्धिकरण की व्यवस्था (बपतिस्मा देने की विधि) के बीच क्या सम्बन्ध था?**

नोट्स

मसीह की सेवकाई के पहले वर्ष के दौरान यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की लोगों को जल से बपतिस्मा देने की और प्रचार करने की सेवकाई में समानता थी (यूहन्ना 4:1-2)। यूहन्ना शालेम के निकट एनोन में (जो शोमरोन से यरदन के पार दिकापुलिस प्रान्त में है) बपतिस्मा देता था (यूहन्ना 3:23)। यीशु और उसके चेलों ने शायद यहूदिया प्रान्त में यरीहो के करीब यरदन नदी के उथले स्थानों में बपतिस्मा लिया। यीशु ने स्वयं जल से लोगों को बपतिस्मा नहीं दिया, परन्तु उसके चेलों ने ऐसा किया (यूहन्ना 4: 2)। यह दर्शाता है कि यीशु मसीह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कहीं अधिक महान था, क्योंकि उसने आत्मा से लोगों को बपतिस्मा दिया और अपने चेलों (तुलना करें : मत्ती 28:19) को जल के द्वारा बपतिस्मा देने दिया। यह मई से दिसम्बर 27वीं ई. के करीब हुआ जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बन्दी बनाया गया था (मत्ती 4:12)। यहूदी इस बात से प्रसन्न थे कि यूहन्ना को बन्दी बना लिया गया है, क्योंकि वह हमेशा ये प्रचार करता था कि उन्हें पश्चाताप् करने की ज़रूरत है। लेकिन जब उन्होंने यह सुना कि यीशु और उसके चेले यूहन्ना की तुलना में और भी अधिक चेले बना रहे हैं तब उनका ये आनन्द ज़्यादा समय तक बना नहीं रहा। यह अभिव्यक्ति कि "हर कोई उसके पास आता है" (यूहन्ना 3:26) एक अलंकार है : एक अतिरंजित (एक अतिशयोक्ति) है।

यरूशलेम के यहूदी याजकों और लेवियों ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मे को शुद्धिकरण की विधि के रूप में

माना (यूहन्ना 1:25; इब्रानियों 6:2)। इसके अलावा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और उसके चेलों ने बपतिस्मा को शुद्धिकरण की एक विधि के रूप में माना : "पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का एक बपतिस्मा" (मरकुस 1:4)। इस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और यहूदियों के अनुयायियों के बीच यहूदियों की शुद्धिकरण की विधि को लेकर एक विवाद उत्पन्न हुआ (यूहन्ना 3:25)। इस विधि को "धर्मान्तरित का बपतिस्मा" कहा गया। जब एक गैर-यहूदी, यहूदी धर्म में शामिल होने के लिए इच्छुक होता था, तो वह स्नान (अपने ऊपर जल डालने के द्वारा) ले लिया करता था, और शारीरिक तौर पर उसका खतना होता था और वह पुराने नियम की व्यवस्था का पालन करने का वायदा करता था (तुलना करें : इब्रानियों 6:2)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों का तर्क शायद यह था कि उन्होंने अपने शिक्षक, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मे को, यहूदियों के धर्मनिरपेक्ष बपतिस्मे और यीशु के चेलों के बपतिस्मे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बताया था। यही कारण है कि वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्यों ज्यादातर लोग यीशु के पास जल से बपतिस्मा लेने के लिए गए। इस प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का और यीशु का जल द्वारा बपतिस्मा (यूनानी : बेपटिजो) (यूहन्ना 3:23,26) यहाँ यहूदी शुद्धिकरण की विधि (ग्रीक: कथारिस्मोस) (यूहन्ना 3:25) से जुड़ा हुआ है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जल से बपतिस्मे ने मसीहा, यीशु मसीह को इस्राएल (यूहन्ना 1:31) के सामने प्रगट किया और इस प्रकार उन्हें यीशु मसीह और उसके द्वारा उद्धार का कार्य प्राप्त करने के लिए तैयार किया।

लेकिन जल से मसीही बपतिस्मा मसीह के आगमन से पहले और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार के उसके पूरे कार्य से जुड़ा हुआ है। जल के साथ मसीही बपतिस्मा लेना एक संकेत और मुहर है कि उस विश्वासी का :

- यीशु मसीह और उसके उद्धार (अतीत में, पाप से पश्चाताप और वर्तमान में पाप की चीजों से और भविष्य में पाप की सजा और पाप की उपस्थिति) में एक हिस्सा है।
- आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा नए सिरे से जन्म हुआ है (प्रेरितों 10:44-48; तीतुस 3:4-7)।
- उसके सारे पाप धुल चुके हैं (प्रेरितों के काम 22:16), अर्थात् उसे पूर्ण रीति से क्षमा किया जा चुका है और परमेश्वर की दृष्टि में वह अब निर्दोष है।
- परमेश्वर की वाचा वाले लोगों का या कलीसिया का सदस्य बन चुका है (गलातियों 3:27-29; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

3:34

प्रश्न 7 **- इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर ने आत्मा को बिना नापे यीशु को दिया है?**

नोट्स

इसका अर्थ यह है कि जैसा पौलुस कुलुस्सियों 2:9 में कहता है, "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

यूहन्ना रचित सुसमाचार अक्सर कहता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा (यूहन्ना 3:17,34; 5:36,38; 6:29, 57:7:29; 8:42; 9:7; 10:36; 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21) और यह कि यीशु मसीह की गवाही परमेश्वर के वचन ही हैं (इब्रानियों 1;1-2)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक साधारण भविष्यद्वक्ता था (तुलना करें मत्ती 11:13) जिसने एक सीमित रूप में पवित्र आत्मा और आत्मा के वरदानों को प्राप्त किया था। लेकिन यीशु मसीह दूसरे भविष्यद्वक्ताओं (प्रेरितों के काम 3:22-26) की तरह एक साधारण भविष्यद्वक्ता नहीं है, क्योंकि यीशु मसीह को पवित्र आत्मा "बिना नापे" प्राप्त हुआ था, जो कि उसकी पूर्णता में है (यूहन्ना 1:32; तुलना करें : कुलुस्सियों 2:9)। इसका अर्थ यह है कि यीशु मसीह अदृश्य त्रिएकता है जो परमेश्वर की छवि को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाता है। यीशु मसीह पवित्र आत्मा है (2 कुरिन्थियों 3:17-18) और पवित्र आत्मा यीशु मसीह की आत्मा है (रोमियों 8:8-10; 1 पतरस 1:9-12)।

3:35-36

प्रश्न 8 **- सभी लोग यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्धों में क्यों दृढ़ता से खड़े रहते या गिर जाते हैं?**

नोट्स

यीशु मसीह पृथ्वी की सब वस्तुओं को अपने हाथों में रखता है। परमेश्वर पिता पुत्र से प्रेम रखता है और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं (यूहन्ना 3:35; तुलना करे यूहन्ना 13:3)। परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया (यूहन्ना 14:6; मत्ती 11:27; कुलुस्सियों 1:15,19; कुलुस्सियों 2:9)। परमेश्वर ने अपने आखिरी और अन्तिम शब्द को यीशु मसीह के द्वारा बोला (यूहन्ना 12:49; इब्रानियों 1:1; प्रकाशितवाक्य 19:10; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। कोई भी व्यक्ति जो यीशु मसीह के बाद आया हो और स्वयं को "एक भविष्यद्वक्ता" कहता हो, वह बाइबल के परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है!

- परमेश्वर ने यीशु मसीह को पृथ्वी की सब वस्तुओं के ऊपर अधिकार दिया है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-23)।
- परमेश्वर केवल यीशु मसीह के द्वारा लोगों को बचाता है (यूहन्ना 3:16,18,36; 6:37; 14:6; 17:2; प्रेरितों के काम 4:12; 1 यूहन्ना 5:11-12)।
- परमेश्वर मृतकों को यीशु मसीह के द्वारा जिलायेगा (यूहन्ना 5:28-29)।
- और परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा जगत में रहने वाले लोगों का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:22)।

इसलिए सभी लोग यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्धों में दृढ़ता से खड़े रहते या गिर जाते हैं (यूहन्ना 3:36)। यूहन्ना की अन्तिम गवाही यह थी कि "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह अनन्त जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" विश्वास करने का अर्थ *लगातार और दृढ़ता* के साथ विश्वास करने से है। अनाज्ञाकारी होने का अर्थ अनाज्ञाकारिता में जीवन व्यतीत करने से भी है।

विश्वासियों के अधर्म और अपवित्रता के विरूद्ध परमेश्वर का धर्ममय क्रोध उन पर रहता है। *तीनों क्रियाएँ वर्तमान समय में पाई जाती है।* यह यीशु मसीह के विषय में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही को समाप्त करता है।

कदम 4. ***अनुप्रयोग***

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 3:1-36 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

3:1. यदि आप दिन में यीशु मसीह के पास आने से डरते हैं तो आप रात में यीशु मसीह के पास आयें।

3:3,8. विचार करें "कि क्या मेरा नये सिरे से जन्म हुआ है या नहीं?" यह देखने के लिए कि आप विश्वास में है या नहीं, स्वयं की जाँच करें (2 कुरिन्थियों 13:5)।

3:16. यूहन्ना 3:16 याद करें। यह संक्षेप में सुसमाचार का सन्देश है।

3:18. आश्वस्त रहें कि आपके परिवार, मित्रों, पड़ोसियों, सहकर्मियों और देशवासियों, जिन्होंने सुसमाचार सुना है परन्तु उस पर विश्वास नहीं करते है, उन्हें पहले से दोषी ठहरा दिया गया है।

3:19-21. कभी भी एक गुप्त संगठन में शामिल न हों। कोई भी काम अन्धकार में न करें परन्तु हमेशा अपने जीवन को ज्योति में व्यतीत करें। पारदर्शी रहें।

3:30. स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख दीन और नम्र करें ताकि यीशु मसीह आप में बढ़ सके।

3:36. विश्वास करें कि जो लोग यीशु को ग्रहण नहीं करते, वे अनन्त जीवन को नहीं देखेंगे।

2. यूहन्ना 3:1-36 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं अपने लिए परमेश्वर के प्रेम के विषय में सोचना जारी रखना चाहता हूँ। मैंने यूहन्ना 3:16 को याद कर लिया है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" मैं कभी भी यह नहीं भूलना चाहता हूँ कि इससे पहले कि मैं उससे प्रेम करता,

परमेश्वर ने मुझसे प्रेम किया। परमेश्वर ने पहले मुझे प्रेम किया। मैं कभी भी यह भूल नहीं सकता कि परमेश्वर ने अपने प्रेम के बदले अपने एकलौते पुत्र का बलिदान देकर मूल्य चुकाया। यह उसका स्वेच्छा से दिया गया प्रेमरूपी बलिदान था। मैं कभी भी यह भूलना नहीं चाहता हूँ कि परमेश्वर अभी भी मुझसे वैसा ही प्रेम करता है जैसा कि वह हमेशा से करता आया है।

मैं नम्रता में बढ़ना चाहता हूँ। मैं इस तरह से अपने जीवन और सेवकाई का संचालन करना चाहता हूँ कि उसके द्वारा यीशु मसीह बढ़ें और मैं घटूँ। यह महत्व नहीं रखता कि मैंने मसीह के लिए क्या किया, बल्कि यह महत्व रखता है कि मसीह ने मेरे लिए क्या किया। यही कारण है कि मैं उसकी महिमा करना चाहता हूँ और जिन बातों से परमेश्वर प्रसन्न होता है उन बातों को स्वयं पर अधिकार देना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 3:1-36 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5 प्रार्थना (8 मिनट) *[निवेदन]*

दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और जगत के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*

दूसरे अध्याय के लिए

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. यूहन्ना अध्याय 3 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 कुरिन्थियों 4-6** के आधे अध्यायों के लिए शान्त समय निर्धारित करें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों **(5) (यूहन्ना 4:24)** पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें। पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन संहिता 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के विषय में अपनी नोटबुक में लिख लें। जो नोट्स आपने अपने चुने हुए समय में बनाए थे, जिन नोट्स को आपने याद किया था, अपने बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्य के नोट्स को भी इसमें शामिल करें।

कलीसिया। अध्याय 11

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 कुरिन्थियों 4-6**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 4-6) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।

जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* **(5) यूहन्ना 4:24**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(5) यूहन्ना 4:24 : परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसियाई उत्सव]* **प्रभु का दिन : विश्राम, संगति और सेवकाई का दिन**

प्रस्तावित करें। "प्रभु का दिन" वो दिन है जिसमें मसीही लोग विश्राम करते हैं व आपस में मिलकर संगति करते हैं, आराधना करते हैं और सेवा करते हैं। हम सीखेंगे कि बाइबल "सब्त के दिन" के बारे में क्या सिखाती है, जिसे *सप्ताह के सातवें दिन* रखा गया था। और हम "प्रभु के दिन" के बारे में सीखेंगे, जो कि बाइबल में *सप्ताह का पहला दिन* होता है। क्यों पूरे विश्व में मसीही लोग आराधना करने के लिए प्रभु के दिन में मिलते हैं? मसीहियों को प्रभु के दिन में क्या करना चाहिए?

सप्ताह के दिनों को अलग-अलग संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न तरह से विभाजित किया गया है। पुराने नियम के दिनों में, विश्राम दिन या सब्त का दिन सप्ताह के आखिरी दिन, अर्थात् *सातवें दिन या शनिवार को रखा गया था।* नए नियम के दिनों में मसीहियों ने *सप्ताह के पहले दिन,* प्रभु के दिन को मनाया, *अर्थात् रविवार को।* दुनिया के कई मसीही लोग उनके इसी उदाहरण का पालन करते हैं और रविवार को यानी सप्ताह के पहले दिन, अर्थात् रविवार को परमेश्वर की आराधना करते हैं।

लेकिन ऐसे देशों में रहने वाले मसीही जहाँ परिस्थितियाँ ठीक नहीं हैं वे लोग अपने राष्ट्रीय दिवस के दिन को प्रभु के दिन के रूप में मनाते हैं, जो गुरुवार, शुक्रवार या शनिवार हो सकता है, और ये उनके देश की संस्कृति पर निर्भर करता है। "प्रभु के दिन का उद्देश्य" ज़्यादा महत्व रखता है न की यह कि "किस दिन इसे मनाया जाता है"।

क. पुराने नियम और नए नियम में व्यवस्था

1. पुराने नियम की व्यवस्था।

पुराने नियम की व्यवस्था को निम्नलिखित में विभाजित किया जा सकता है :

(1) नैतिक व्यवस्था।

नैतिक व्यवस्था (निर्गमन 20:1-17; व्यवस्थाविवरण 5:6-21) वह तरीका है जिसमें परमेश्वर चाहता है कि उसके बचाए गए लोग *जीवित* रहें।

(2) औपचारिक व्यवस्था।

औपचारिक या धार्मिक व्यवस्था (नीचे देखें) वह तरीका था जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम की अवधि के दौरान अपने लोगों (विश्वासियों) को *जाने, आराधना करने और उसकी सेवा करने* के लिए कहा था।

(3) नागरिक व्यवस्था।

नागरिक व्यवस्था वह थी जिसमे पुराने नियम की अवधि के दौरान परमेश्वर चाहता था कि पुराने नियम के लोग, इस्राएल एक (ईश्वरीय) राज्य के रूप में कार्य करे। इसमें संपत्ति, उधार लेना और देना, विवाह, मुकद्दमों, गुलामी, युद्ध, हत्या आदि के बारे में कानून शामिल थे (निर्गमन 21:1 से 23:9; व्यवस्थाविवरण 16:18 से 26:19)।

2. पुराने नियम की रीति के अनुसार व्यवस्था।

पुराने नियम की रीति के अनुसार जो व्यवस्था है उसमे आराधना के चार क्षेत्रों के संबंध में नियम और विनियमों का प्रावधान है: पवित्र व्यक्ति, पवित्र स्थान, पवित्र समय और पवित्र क्रियाएँ।

(1) पवित्र लोग

यह व्यवस्था याजकों और लेवियों के लिए थी (निर्गमन अध्याय 28-29, 39; लैव्यव्यवस्था अध्याय 8-10, 21-22, गिनती अध्याय 8)।

(2) पवित्र स्थान

ये व्यवस्था तम्बू और बाद में यरूशलेम में मंदिर के लिए थी (निर्गमन 20:24-26; निर्गमन अध्याय 25-27,30,35-38; लैव्यव्यवस्था 24:1-9; व्यवस्थाविवरण 12)।

(3) पवित्र समय

ये व्यवस्था उपवास के दिन के लिए (लैव्यव्यवस्था अध्याय 16,23:27; गिनती अध्याय 28-29; यशायाह 58:1-12; जकर्याह 8:19 और लूका 18:12 के साथ इसके विपरीत) और अन्य नियुक्त समारोह (निर्गमन) 23:14-19; लैव्यव्यवस्था 23:1-44; व्यवस्थाविवरण 16:1-17), खासकर सब्त के दिन, सब्त के वर्ष और जुबली के वर्ष के लिए थी (निर्गमन 23:10-13; 31:12-17; लैव्यव्यवस्था 25:1-28)।

(4) पवित्र क्रियाएँ

यह व्यवस्था खतना (उत्पत्ति अध्याय 17), शुद्धिकरण की विधि (लैव्यव्यवस्था अध्याय 12-15; गिनती का अध्याय 1 9), शुद्ध भोजन खाना (लैव्यव्यवस्था अध्याय 11,15; व्यवस्थाविवरण 14:3-21), बलिदान चढ़ाना (लैव्यव्यवस्था अध्याय 1-7,22; गिनती 28:1-15), मनुष्य और जानवरों के पहिलौठा और फसल का पहले फल (निर्गमन 13:1-16; गिनती 18:14-20; व्यवस्थाविवरण 15:19-23; तुलना करें : न्यायियों 13:7; 1 शमूएल 1:28) और तीन अलग-अलग प्रकार के दशमांश (लैव्यव्यवस्था 27:30-33; गिनती 18:20-32; व्यवस्थाविवरण 12:17-19; 14:22-29; तुलना करें 16:16-17) के लिए थी।

3. नए नियम की व्यवस्था

(1) नैतिक व्यवस्था को नए नियम में *बनाए* रखा गया है।

मत्ती अध्याय 5 में नैतिक व्यवस्था को सही रीति से समझाया गया है; मत्ती 22:36-40, मरकुस 12:30-31 और रोमियों 13: 8-10; में इसे दोहराया गया; और यूहन्ना 13:34-35 में मसीही जीवन के लिए यह एक मानक है। नैतिक व्यवस्था उसी तरह से रहती है जिस तरह परमेश्वर चाहता है कि उसके बचाए हुए लोग रहें।

(2) औपचारिक व्यवस्था को *पूरा किया गया, रद्द कर दिया गया और तोड़ दिया गया।*

औपचारिक व्यवस्था मसीह के आगमन द्वारा **पूरी हुई** (मत्ती 5:17) और इसलिए **रद्द भी हुई** (कुलुस्सियों 2:14) और इसे **तोड़ भी दिया** गया (समाप्त) (इफिसियों 2:14-15)।

(3) इस्राएल के राष्ट्र-राज्य की नागरिक व्यवस्था की जगह परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों ने ली।

इसे राज्य के विषय में दी गयी यीशु द्वारा शिक्षाओं के साथ बदल दिया गया (मत्ती अध्याय 5,6,7,13 और 18 राज्य के विषय में दिये गये अन्य दृष्टान्तों में भी)। परमेश्वर चाहता है कि जगत के सभी देशों के लोग परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में कार्य करें।

4. नया नियम पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था के विभिन्न भागों के बारे में क्या सिखाता है।

(1) पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था नई नियम की *वास्तविकताओं* का *प्रतिरूप* थीं।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5,13; 10:1. औपचारिक व्यवस्था के नियम केवल वास्तविक चीज़ों के *प्रतिरूप थे जो होने वाली थीं।* रोमियों, गलातियों और इब्रानियों के नये नियम की पुस्तकों में स्पष्ट रूप से सिखाया गया है कि यीशु मसीह ने पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था को कैसे पूरा किया और स्वयं वास्तविकताओं को प्रगट किया।

(2) पुराने नियम के याजक नए नियम के मसीह और मसीहियों के प्रतिरूप थे।

पढ़ें इब्रानियों 7:23-28। मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र *याजक* यीशु मसीह है, क्योंकि वह पूरी तरह से पापरहित और हमेशा के लिए जीवित है। केवल यीशु मसीह ही हमारे अंगीकार का प्रेरित और महायाजक (इब्रानियों 3:1), *चरवाहा* (पासबान) और हमारे प्राणों का रखवाला (शाब्दिक : बिशप) (1 पतरस 2:25), *परमेश्वर के झुण्ड का प्रधान रखवाला* (1 पतरस 5:4) है। नया नियम याजकों के समाज के बारे में बताता है (1 पतरस 2:9-10)।

(3) पुराने नियम का मंदिर नए नियम की कलीसिया का प्रतिरूप था।

पढ़ें इफिसियों 2:21-22 और 1 पतरस 2:4-11 - मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र *मंदिर* विश्वासियों का विश्वव्यापी संगठन यानी कि कलीसिया है।

(4) पुराने नियम के सब्त का दिन प्रभु के नये नियम के दिन का प्रतिरूप था।

पढ़ें इब्रानियों 4:1-11

- सप्ताह के सातवें दिन को परमेश्वर के सृजन के कार्य और धरती पर जीवन की शुरुआत के पूरा होने के रूप में मनाया जाता है।
- परन्तु सप्ताह का पहला दिन मसीह में उद्धार के परमेश्वर के कार्य और नए (अनन्त) जीवन की शुरुआत के पूरा होने के उत्सव के रूप में मनाया जाता है।
- मसीहियों के लिए अंतिम सब्त का दूसरा दिन तब आता है जब उनकी मृत्यु होती है और हमेशा के लिए वह परमेश्वर (मसीह) की उपस्थिति में रहते हैं, शुरू में स्वर्ग में और बाद में नई पृथ्वी पर।

पुराने नियम में सब्त के कार्य निम्न थे :

- सप्ताह के एक दिन को दैनिक श्रम से अलग किया गया ताकि उस दिन अपने जी को ठण्डा किया जा सके (निर्गमन 23:12)।
- एक पवित्र सभा में एक साथ मिलना (लैव्यव्यवस्था 23:3)।
- भला करना और प्राण बचाना (मरकुस 3:4)।

इन कार्यों को रविवार के दिन पूरा किया गया, उस दिन जब परमेश्वर ने मसीह के द्वारा अपने उद्धार के कार्य को पूरा किया और पृथ्वी पर नए जीवन की शुरुआत हुई।

(5) पुराने नियम का उपवास नए नियम के आनन्द का प्रतिरूप था।

पढ़ें मरकुस 2:18-22 यूहन्ना 16:19-22 मसीहियों के लिए *विलाप के साथ उपवास* के दिन को हर्ष और कभी भी खत्म न होने वाले आनन्द के दिनों से बदल दिया गया है (जकर्याह 8:19) क्योंकि यीशु मसीह ने उद्धार के लिए आवश्यक हर चीज़ को पूरा किया और लगातार (मत्ती 28:20) वह ऐसा करता रहता है।

(6) पुराने नियम के फसह का पर्व नए नियम के गुड फ्राइडे और प्रभु भोज का प्रतिरूप था।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 5:6-13; 1 कुरिन्थियों 11:18-32 - मसीहियों के लिए, फसह का मेम्ना यीशु मसीह के प्रायश्चित्त का प्रतिस्थापन बलिदान है और वह इस दिन को द्वेष और दुष्टता के पुराने खमीर के साथ नहीं, वरन् ईमानदारी और सत्य की खमीर वाली रोटी के साथ इस पर्व को मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 5:7-8)। वे क्रूस पर मसीह की देह और लहू के स्मरण के लिए नियमित रूप से प्रभु भोज के दिन को मनाते हैं (1 कुरिन्थियों 11:24-26)।

(7) पुराने नियम का खतना नये नियम के पुनर्जन्म का प्रतिरूप था।

पढ़ें रोमियों 2:28-29 और कुलुस्सियों 2:11 - मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा द्वारा पुनर्जन्म के माध्यम से अपने पापी दिल का *खतना* ही सही मायने में खतना है।

(8) पुराने नियम की शुद्धिकरण की विधि नए नियम में जल के साथ बपतिस्मे का प्रतिरूप थी।

पढ़ें मरकुस 1:8; यूहन्ना 3:22-25; प्रेरितों के काम 10:47-48; प्रेरितों के काम 22:16 - मसीहियों के लिए एकमात्र *शुद्धिकरण की विधि* जल के साथ बपतिस्मा है, जो आत्मा के साथ बपतिस्मा लेने का प्रतीक है (और इस प्रकार मसीह के उद्धार के कार्य के हम भागीदार बनते हैं, जैसे उदाहरण के लिए पापों को धोना या पापों की पूर्ण क्षमा)।

(9) पुराने नियम में केवल (औपचारिक) स्वच्छ भोजन खाना, नए नियम के पवित्र जीवन का प्रतिरूप था।

पढ़ें मरकुस 7:19; 1 तीमुथियुस 4:3-5 - मसीहियों के लिए सभी प्रकार का *भोजन शुद्ध* और खाने के योग्य है। यहूदियों और मुसलमानों के विपरीत, मसीहियों के लिए "शुद्ध या अशुद्ध" भोजन मुद्दा नहीं है, न कि "जो मुँह में प्रवेश करता है," लेकिन "वह चीज़ें जो मुँह और उसके मन से निकलती हैं"! "पर जो कुछ मुँह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है। यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता" (मत्ती 15:18-20)!

(10) पुराने नियम के बलिदान मसीह के प्रायश्चित के नये नियम के बलिदान का प्रतिरूप थे।

पढ़ें रोमियों 3:25, इब्रानियों 2:17; 9:28; 1 यूहन्ना 4:10 - मसीहियों के लिए, उनका एकमात्र प्रतिस्थापन बलिदान क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु है।

(11) पुराने नियम का पहला जन्म नए नियम में मसीह के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता का प्रतिरूप था।

पढ़ें मत्ती 6:33; लूका 9:23 - मसीहियों के लिए न केवल *पहिलौठा* (जानवरों का और फसल का पहला फल), परन्तु सब कुछ परमेश्वर द्वारा पवित्र ठहराए गए हैं और उसी को समर्पित (अर्पित) करने के लिए हैं।

(12) पुराने नियम का दशमांश नये नियम में भेंटरुपी बलिदान का प्रतिरूप था।

पढ़ें लूका 6:38; 2 कुरिन्थियों 9:6-15 - पुराने नियम में तीन अलग-अलग दशमांश को एक ओर यरूशलेम में याजकों और आराधना को सँभालने के लिए और दूसरी ओर गरीबों के लिए सामाजिक कर के रूप में दिया गया था। मसीहियों के लिए इच्छारूपी और हर्ष द्वारा दिये गये दशमांश को परमेश्वर के राज्य (और विश्वव्यापी कलीसिया) को आगे बढ़ाने के लिए बदल दिया गया।

निष्कर्ष। बाइबिल स्पष्ट रूप से बताती है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था को अलग नहीं किया, लेकिन इसे पूरा किया (मत्ती 5:17) और इसे बदल दिया (इब्रानियों 7:12)।

- यीशु मसीह ने नैतिक व्यवस्था को (दस आज्ञाओं) बहाल किया और उसे बरकरार रखा (मत्ती 22:36-40)।
- लेकिन औपचारिक व्यवस्था को इसकी आवश्यकताओं के साथ खत्म कर दिया (कुलुस्सियों 2:14) और इसे मिटा दिया (इफिसियों 2:14-15)।

औपचारिक व्यवस्था को मसीही कलीसिया में फिर से प्रस्तावित नहीं किया जायेगा और इस प्रकार फिर से उन लोगों के बीच विभाजन होंगे, जो औपचारिक व्यवस्था को मानते और जो लोग औपचारिक व्यवस्था को नहीं मानते हैं (इफिसियों 2:14-15)! गंभीर चेतावनी को ध्यान दें : "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलतियों 5: 4)!

ख.पुराने और नए नियम में सब्त का दिन

1. सब्त के दिन का पालन करना पुराने नियम में औपचारिक व्यवस्था का एक हिस्सा था।

खोजें और चर्चा करें : सब्त के दिन से परमेश्वर का उद्देश्य क्या था?

(1) पुराने नियम का सब्त - अलग किया गया दिन।

पढ़ें निर्गमन 20:8-11; व्यवस्थाविवरण 5:12-14 - यहोवा ने उन लोगों को जिसने उसे मिस्र की गुलामी से बचाया था दस आज्ञाएँ इसलिए नहीं दी थी ताकि उन नियमों के द्वारा वह लोग बच सकें, परन्तु *इसलिए दी ताकि इन नियमों के*

अनुसार वे परमेश्वर द्वारा बचाए गए लोगों के रूप में जी सकें! इन दस आज्ञाओं की चौथी आज्ञा "सब्त के दिन (सप्ताह का अंतिम दिन) को पवित्र" मानने के सम्बन्ध में है। "पवित्र" शब्द का अर्थ है कि *इस दिन को सप्ताह के दूसरे दिनों से अलग रखना* और *इस दिन उस उद्देश्य को पूरा करना* जिस उद्देश्य के लिए परमेश्वर ने उस दिन को ठहराया था।

(2) पुराने नियम का सब्त - विश्राम दिन।

पढ़ें उत्पत्ति 2:2-3; निर्गमन 23:12 - सब्त के दिन को बाकी के छः दिनों से अलग करने का परमेश्वर का प्रथम उद्देश्य यह था कि मनुष्य इस दिन *विश्राम करे और अपने जी को ठण्डा करे (नयी ऊर्जा प्राप्त करें)*।

(3) पुराने नियम का सब्त - संगति करने का दिन।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 23:3 सब्त के दिन को बाकी के छः दिनों से अलग करने का परमेश्वर का दूसरा उद्देश्य यह था कि इस दिन पवित्र सभा में *लोग परमेश्वर से और अन्य लोगों के साथ संगति करें।*

इस प्रकार, चौथी आज्ञा सप्ताह के सात दिनों में से एक दिन को विश्राम और जी ठण्डा करने और आराधना और सेवकाई के लिए अलग करने के विषय में सिखाती है।

2. यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था की भावना को बदल दिया था।

खोजें और चर्चा करें। यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था की भावना को कैसे बदल दिया था?

(1) यहूदी धार्मिक अगुवों ने चौथी आज्ञा को बदल दिया।

पढ़ें यशायाह 29:13; मरकुस 2:23-3:6 - पहले से ही यशायाह भविष्यद्वक्ता (740-680 ई.पू.) के समय में इस्राएल के धार्मिक अगुवों ने आराधना की सभी प्रकार की व्यवस्थाओं का निर्माण करना शुरू किया। विशेषकर पुराने नियम की आख़िरी पुस्तक और नए नियम की पहली पुस्तक के बीच 400 साल की अवधि के दौरान, यहूदी धार्मिक अगुवों ने कई *नयी व्यवस्थाओं* का *निर्माण* किया, जिसमें उन्होंने कहा कि ये पुराने नियम की व्यवस्था की उनकी व्याख्या थी।

सब्त शुक्रवार को सूर्यास्त के साथ शुरू होता है और शनिवार के सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता है। यहूदियों के धार्मिक अगुवों ने सब्त के दिन 39 वर्जित कार्यों की सूची तैयार की। उदाहरण के लिए, सब्त के दिन किसी भी तरह का काम करना मना था; सब्त के दिन यात्रा करना मना था; कि सब्त के दिन, खाना पकाना मना था; या सब्त के दिन कुछ भी लाना मना था, आदि। उन्होंने चौथी आज्ञा तोड़ने के लिए, यीशु के चेलों पर, जो स्वयं यहूदी थे, यह आरोप लगाया, कि वे सब्त के दिन क्यों खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ते हैं। "बोना" भी सब्त के दिन मना था। उन्होंने सिखाया था कि लोगों को सब्त का दिन मानने के लिए बनाया गया था। परमेश्वर की व्यवस्था के साथ ऐसी व्यवस्था को जोड़कर यहूदी धार्मिक अगुवों ने व्यवस्था को एक बोझ के रूप में बदल दिया था, जिसे लोग उठा नहीं पा रहे थे। यही कारण है कि यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा" (मत्ती 11:28)।

(2) यहूदी धार्मिक अगुवों ने पुराने नियम की व्यवस्था का पूरा अर्थ बदल दिया।

पढ़ें गलातियों 3:25-27; कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1; प्रेरितों के काम 15:1,5; रोमियों 9:30-33; मत्ती 23:3-4 - पुराने नियम की व्यवस्था को वास्तविकता यानी आने वाले उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, की ओर इशारा करते हुए एक प्रतिरूप के रूप में देखने के बजाय, यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने व्यवस्था को औचित्य (उद्धार) के तौर पर बदल दिया! उन्होंने सिखाया कि केवल व्यवस्था का पालन करके एक मनुष्य को बचाया जा सकता है (परमेश्वर की आँखों में उचित)। उनका मतलब न केवल पुराने नियम की व्यवस्था से था, बल्कि विशेषकर उन सैकड़ों व्यवस्था से था जिन्हें उन्होंने बनाया और इस व्यवस्था के साथ जोड़ दिया। वे विशेष रूप से खतना कर रहे थे और सब्त के दिन का पालन उद्धार के लिए अनिवार्य किया (प्रेरितों के काम 15:1)!

परन्तु यहूदी धार्मिक अगुवे ढोंगी थे, क्योंकि वे स्वयं व्यवस्था को नहीं मानते थे, परन्तु वह ये उम्मीद रखते थे कि उनके अनुयायी इन व्यवस्था का पालन करें. "वे कहते तो हैं पर करते नहीं। वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बाँधकर उन्हें मनुष्यों के काँधों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते" (मत्ती 23: 3-4)। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को असहनीय बोझ में बदल दिया था!

लेकिन बाइबल चेतावनी देती है : "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो" (गलातियों 5:4)।

(3) यहूदियों के धार्मिक अगुवों ने अपनी परम्पराओं के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को बदल दिया।

पढ़ें मरकुस 7:1-13 - यीशु ने कहा था कि यहूदियों के धार्मिक अगुओं और शिक्षकों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को टाल दिया ताकि वे अपनी मूर्ख रीतियों का पालन कर सकें। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को 365 मानव-निर्मित प्रतिबन्धों और 248 मानवनिर्मित आदेशों के तहत दफन किया (कुल 613 पारम्परिक व्यवस्थाओं में)। उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था की उनकी व्याख्याओं का विरोध किया जिन्हें परमेश्वर अपने मुताबिक बनाना चाहता था।

परमेश्वर इन व्यवस्थाओं को ऐसा बनाना चाहता था ताकि आनेवाले उद्धारकर्ता के लिए एक *तैयारी* हो सके और ये उसके उद्धार के कार्य की ओर इशारा कर सकें! उदाहरण के लिए, बलिदान के मेम्ने ने परमेश्वर के मेम्ने द्वारा पाप के प्रायश्चित्त के बलिदान की ओर इशारा किया (2 कुरिन्थियों 5:7)। लेकिन यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था को उद्धार के साधन के रूप में बदल दिया था। उन्होंने यह सिखाया कि व्यवस्था उन्हें परमेश्वर के सामने सही साबित कर सकती है! इसलिए, पापों से उद्धार के लिए किसी उद्धारकर्ता की कोई ज़रूरत नहीं होगी! उन्होंने सिखाया था कि आने वाला मसीहा पापों के लिए उनका एक उद्धारकर्ता नहीं होगा, बल्कि गैर यहूदी राष्ट्रों द्वारा यहूदियों के राजनीतिक दमन से उन्हें बचाएगा और यह कि मसीहा पूरी दुनिया को एक यहूदी राज्य में बदल देगा। बाद में दुनिया के अन्य धर्मों ने व्यवस्था को उद्धार का साधन बनाने में उनकी इस मिसाल का पालन किया। वे सब गलत थे!

3. नए नियम में यीशु द्वारा सब्त का अर्थ।

खोजें और चर्चा करें। यीशु ने सब्त के दिन को किस दृष्टिकोण से देखा?

(1) पुराने नियम में सब्त के दिन को मनुष्यों की सेवा करने के लिए बनाया गया था।

पढ़ें मरकुस 2:18-27; मत्ती 5:4; रोमियों 12:15; 2 कुरिन्थियों 1:3-7 - औपचारिक व्यवस्था केवल भविष्य की वास्तविकता का एक प्रतिरूप था जो यीशु मसीह में पाया जाता है (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1)। औपचारिक व्यवस्था को *पुराने दाखरस (पुरानी सामग्री) द्वारा पुरानी मशकों (पुराने रूपों) में रखे जाने के रूप में* दर्शाया गया है। मसीह के उद्धार का पूरा काम *नए दाखरस (नई सामग्री) द्वारा दर्शाया गया है जिन्हें नई मश्कों (नए रूपों) में डाला जाएगा (और ऐसा होना भी चाहिए)।*

उदाहरण के लिए : यीशु ने ज़ोर देकर कहा कि जो लोग उसकी उपस्थिति में जी रहे हैं, उन्हें शोक के साथ उपवास करने के बजाय आनन्द के साथ उपवास करना चाहिए। शोक करने की बजाये उन्हें आनन्दित होना चाहिए। यह उत्सव एक आत्मिक उत्सव और एक ऐसा आनन्द है जो हृदय के भीतर मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य और उसकी निरन्तर उपस्थिति के कारण होता है। ऐसा बिल्कुल नहीं है कि अगर अन्य कोई मसीह दु:खी है तो उसके साथ शोक न मनाया जाये!

अपने पहले आगमन के बाद, यीशु मसीह ने एक नए आदेश (इब्रानियों 9:8-11) की शुरुआत की। वह नयी बातों को अस्तित्व में लाया, अर्थात्, प्रतिरूप की बजाय वास्तविकताओं को और इन नयी वास्तविकताओं के लिए नए रूपों की आवश्यकता है!

उपवास के दिन और सब्त के दिन पुराने आदेश से सम्बन्धित हैं। यीशु ने कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये" (मरकुस 2:27)। मनुष्यों के निर्माण के बाद सब्त के दिन का गठन इसलिए नहीं किया गया कि वह उन पर बोझ हो बल्कि इसलिए हुआ ताकि ये दिन मनुष्य के लिए आशीष का दिन ठहरे। इसे इसलिए नहीं बनाया गया कि कम से कम मनुष्य 39 मानवनिर्मित व्यवस्था का पालन करे बल्कि इसलिए बनाया गया ताकि मनुष्य पिछले सप्ताह के अपने दैनिक कामों से विश्राम पा सके और अपने जी को ठंडा करे और उसे परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक पवित्र सभा में अन्य विश्वासियों से मिलने का अवसर मिल सके। यह सब्त के पहले दो उद्देश्य थे।

(2) पुराने नियम में सब्त के दिन को परमेश्वर की सेवा करने के लिए बनाया गया था।

पढ़ें मरकुस 2:28-3:6 - यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।" यहूदियों के धार्मिक अगुवों को सब्त के दिन के लिए व्यवस्था बनाने का कोई अधिकार नहीं है! केवल यीशु मसीह के पास ही यह अधिकार है! उदाहरण के लिए : जब भी दाऊद जैसी परिस्थिति में पड़े लोगों को बचाने की वास्तविक ज़रूरत पड़े (1 शमूएल 21:1-6; 1 शमूएल 22:14-20) या मरकुस 3:4 की तरह लोगों को ठीक करने की आवश्यकता हो तो चौथी आज्ञा (*सातवें दिन पर विश्राम*) के औपचारिक व्यवस्था को अनदेखा किया जा सकता है। यीशु ने कहा, "क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना" (मरकुस 3:4)?

इसलिए सब्त का तीसरा उद्देश्य विशेषरूप से भलाई करके और उन्हें भोजन देकर और उन्हें कपड़े देकर और उन्हें सुसमाचार सुनाकर परमेश्वर की सेवा करना था (मत्ती 11:5)। यीशु की शिक्षा से पता चलता है कि यीशु ने बुद्धिमानी, आत्मिक और रचनात्मक सिद्धान्तों के साथ चौथी आज्ञा (अर्थात् सातवें दिन) के औपचारिक पहलू को बदल दिया है (भला करने और प्राण बचाने के लिए)।

प्रथम मसीहियों ने विशेषरूप से सप्ताह के पहले दिन इन सिद्धान्तों को लागू किया। उन्होंने इसे "प्रभु का दिन" कहा क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने व्यवस्था को (मत्ती 5:17) और सप्ताह के पहले दिन अपने उद्धार के कार्य (पुनरुत्थान और आत्मा को उण्डेलना) को पूरा किया था!

ग. नए नियम में भगवान का दिन

- पुराने नियम में "सब्त के दिन" (सप्ताह के सातवें दिन) ने परमेश्वर के सृजन के कार्य और पृथ्वी पर *जीवन की* शुरुआत (उत्पत्ति 2:1-3) को पूरा किया।
- नए नियम में "प्रभु के दिन" (सप्ताह के पहले दिन) ने परमेश्वर के कार्य (यीशु मसीह में उद्धार) और पृथ्वी पर मसीहियों के लिए नए और अनन्त जीवन की शुरुआत को पूरा किया (लूका 24:1-8)!

प्रभु का दिन मसीहियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इतिहास में होने वाली उद्धार की सभी घटनाएँ सप्ताह के पहले दिन हुई! समय की नई नियम अवधि के दौरान सप्ताह का पहला दिन "एक रविवार था"।

खोजें और चर्चा करें। नए नियम में प्रभु का दिन इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. सप्ताह के पहले दिन यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा था।

(1) नया नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है जब मसीह मुर्दों में से जी उठा था।

पढ़ें मत्ती 28:1 - सुसमाचार बहुत स्पष्टरूप से बताता है कि "सब्त के बाद" (सातवें दिन, शनिवार), "सप्ताह के पहले दिन (रविवार) की सुबह", प्रभु यीशु मसीह को मृतकों से पुनर्जीवित किया गया था।

(2) नए नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है जो ये प्रमाणित करता है कि मसीह ने इसी दिन उद्धार का कार्य पूरा किया।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:54-57; इब्रानियों 2:14; फिलिप्पियों 2:8-11 - यीशु मसीह का शारीरिक रूप से जी उठना यह साबित करता है कि पाप और मृत्यु और शैतान पर विजय प्राप्त की गई थी! यीशु मसीह का शारीरिक रूप से जी उठना दुनिया के लिए परमेश्वर का प्रमाणीकरण है कि उन्होंने यीशु के पापियों के लिए दिए गए प्रायश्चित्त के बलिदान को स्वीकार कर लिया है और मसीह को सब चीज़ों के ऊपर सर्वोच्च स्थान दिया है।

(3) नए नियम में "प्रभु का दिन" वह दिन है, जो वास्तव में नए नियम में शुरू हुआ।

पढ़ें इब्रानियों 8:6,13, 10:1

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के दर्शन को समाप्त कर दिया।
- यीशु मसीह के पुनरुत्थान के दर्शन की शुरुआत नए नियम में हुई।

नए नियम में मसीह के द्वारा पुराने नियम की छाया (चित्र या प्रकार) और भविष्यद्वाणियाँ और पुराने नियम का उद्धार के कार्य का अन्त हो चुका है! पुराने नियम के सातवें दिन (पुराने नियम के औपचारिक व्यवस्था के भाग के रूप में) को *पूरा किया गया* है और इस तरह इसे *रद्द कर दिया गया* है (खत्म किया गया)। नए नियम में नई वास्तविकताओं का खुलासा किया जा रहा है।

उदाहरण के लिए :

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पुराने नियम के पशुओं के बलिदानों को पूरा किया और उसने इनकी जगह ले ली (इब्रानियों 10:8-10)।
- प्रभु भोज ने पुराने नियम के फसह का स्थान ले लिया था, जिसने याद दिलाया कि परमेश्वर ने पापों पर जय पाई है जब उसने प्रायश्चित्त के बलिदान का लहू देखा (1 कुरिन्थियों 11:23-26)।
- खतने की जगह जल से बपतिस्मे ने ली और आत्मा के साथ अदृश्य बपतिस्मा का स्पष्टरूप में और परमेश्वर की दया की वाचा में प्रवेश किया (रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11-12; गलतियों 3:26-29; तुलना करें : उत्पत्ति 17:7,10-11)।

- मलिकिसिदक के रूप में यीशु मसीह ने स्वर्गीय महायाजक के पद को पूरा किया और पृथ्वी के महायाजकीय हारुन के पद की जगह ली (इब्रानियों 7:11-28)।
- यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने ने मंदिर के पर्दे की जगह ले ली (मत्ती 27:51) और इस तरह मंदिर और मंदिर की सेवा को पूरी तरह खत्म कर दिया गया (यूहन्ना 2:19-22; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:14-15) और इसे आत्मा और सच्चाई के साथ कलीसिया और उसकी सेवा में बदल दिया गया (यूहन्ना 4:23-24)।
- और परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों ने इस्राएल के मसीही राष्ट्र के नागरिक कानूनों को बदल दिया (मत्ती 5-7; 8:10-12; 13:40-43; 21:42-44)।
- लेकिन ध्यान दें : परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों, इस्राएल को नए नियम की कलीसिया के साथ न ही बदला गया और न ही इसे समाप्त किया गया, लेकिन उच्च स्तर पर इसे जारी रखा गया (जिसमें व्यवस्था और भविष्यद्वाणियाँ अब किसी का प्रतिरूप नहीं थीं, लेकिन वह पूरी हुई और सच्चाई बन गई) और पृथ्वी पर सभी देशों के यीशु मसीह में विश्वास रखनेवालों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार (विस्तारित) किया गया (रोमियों 1:16; 10:12-13; इफिसियों 211-22; 3:2-6; 1 पतरस 2:4-10)।
- इसी तरह, प्रभु के दिन (सप्ताह का पहला दिन) को दूसरे दिन से अलग (पवित्र) किया गया और इसे सब्त के दिन (सप्ताह के सातवें दिन) से बदल दिया गया!

पुराने नियम में, सप्ताह के आख़िरी दिन (सप्ताह के सातवें दिन) ने विशेषरूप से परमेश्वर की सृष्टि के अपने कार्य के समापन के दिन के रूप में विशेष महत्व पाया (तुलना करें : उत्पत्ति 2:2-3)। विश्वासियों ने अपने साप्ताहिक काम से विश्राम किया और एक पवित्र सभा में एक साथ संगति की।
नए नियम में, सप्ताह के पहले दिन ने विशेषरूप से परमेश्वर के अपने कार्य (उद्धार) के पूरा होने के दिन के रूप में विशेष महत्व ले लिया (तुलना करें यूहन्ना 19:30; 20:1)! विश्वासी जन परमेश्वर की आराधना करने के लिए, प्रभु भोज के दिन को मानने के लिये, वचन का प्रचार करने के लिये, प्रार्थना करने के लिये, एक दूसरे के साथ संगति करने और कलीसिया के बाहर भले कार्य करने और जीवन को बचाने के लिए एक साथ एकत्रित हुए।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान परमेश्वर का ठोस प्रमाण था कि परमेश्वर ने उद्धार के मसीह के पूर्ण (समाप्त) कार्य को स्वीकार कर लिया। यह यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही है जिसने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को इतना महत्वपूर्ण बना दिया।

सब्त के दिन को पवित्र रखने के बारे में चौथी आज्ञा आंशिक रूप से औपचारिक थी और इसलिए सब्त के दिन के पुराने नियम के प्रतीक में बदलाव होना आवश्यक था (तुलना करें : इब्रानियों 7:12 में "व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन")। पुराने नियम के प्रतीक (सातवें दिन) को नए नियम के प्रतीक (सप्ताह के पहले दिन) से बदल दिया गया था।

- सातवें दिन को परमेश्वर द्वारा की गयी सृष्टि की रचना और पृथ्वी पर *जीवन की* शुरुआत के दिन के रूप में मनाया जाता है।
- सप्ताह के पहले दिन को मसीह के *पुन:* (उद्धार) और *अनन्त जीवन* की शुरुआत के दिन के रूप में मनाया जाता है।

इसलिए सप्ताह के पहले दिन को सातवें दिन की तुलना में अधिक महत्व मिला। यह मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा यीशु मसीह की विजय का प्रतीक था! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने पुराने नियम के दर्शन के प्रतिरूप, दृष्टान्त (चित्र), भविष्यद्वाणियाँ और इतिहास को पूर्ण किया, और इस तरह पुराने नियम की समस्त व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं पर विजय प्राप्त की, जिसमें सब्त की आज्ञा के औपचारिक पहलू भी शामिल थे।

2. फिर से जी उठने के बाद यीशु मसीह सप्ताह के पहले दिन लोगों को दिखाई दिया।

पढ़ें मरकुस 16:9-14; यूहन्ना 20:26 - अन्य तथ्य बताते हैं कि नए नियम में सप्ताह का पहला दिन (रविवार) बहुत महत्वपूर्ण है। सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को वह पुनर्जीवित किया गया था।

- यीशु मरियम मगदलीनी को "सप्ताह के पहले दिन" दिखाई दिया (मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:11-18)।
- और अन्य महिलाओं को दिखाई दिया (मत्ती 28:9)।
- वह दोपहर के दौरान पतरस को दिखाई दिया (लूका 24:35; 1 कुरिन्थियों 15: 5),
- वह "लगभग संध्या" (लूका 24:29) का समय था जब वह इम्माऊस के रास्ते में मसीह के दो अन्य चेलों को दिखाई दिया।
- वह अपने दस चेलों और उनके साथियों को "सप्ताह के पहले दिन की संध्या को" (लूका 24:33,36; यूहन्ना 20:19)

दिखाई दिया। क्योंकि यूहन्ना का सुसमाचार, संयुक्त सुसमाचार से बहुत बाद में लिखा गया था, यूहन्ना ने यहूदी कैलेण्डर के द्वारा अनुमान नहीं लगाया जिसमें नया दिन सूर्यास्त में शुरू होता है। यह एक मसीही कलीसिया के लिए यीशु मसीह की पहली उपस्थिति थी।

- वह सप्ताह के पहले दिन पर एक हफ्ते बाद भी अपने ग्यारह चेलों को भी (इस समय थोमा के साथ) दिखाई दिया (यूहन्ना 20:26)।

3. सप्ताह के पहले दिन पवित्र आत्मा को उण्डेला गया।

पढ़ें प्रत्येक 2:1; लैव्यव्यवस्था 23:15-16 - *पिन्तेकुस्त के दिन पर पवित्र आत्मा का उतरना भी सप्ताह के पहले दिन (रविवार) पर था।*

4. सप्ताह के पहले दिन नए नियम की कलीसिया की स्थापना की गई थी।

पढ़ें प्रेरितों 2:42 - पहली मसीही कलीसिया यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन पर स्थापित की गयी थी। परमेश्वर ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को एक बहुत ही ख़ास दिन बनाया, क्योंकि रविवार को यीशु मसीह का पुनरुत्थान हुआ, वह रविवार को अपने शिष्यों को दिखाई दिया, उसने रविवार को अपनी आत्मा को उण्डेल दिया और रविवार को पहली कलीसिया की स्थापना की!

5. सप्ताह के पहले दिन मसीही लोग संगति करते हैं।

(1) यहूदी मसीही सप्ताह के पहले दिन (रविवार) पर एक साथ संगति किया करते थे।

पढ़ें प्रेरितों के काम 2:42; 21:20-21; 1 कुरिन्थियों 9:19-23 - पिन्तेकुस्त के दिन से पहले यहूदियों के बीच के मसीही समुदाय के लोगों ने अन्य यहूदी लोगों के साथ सब्त के दिन (शनिवार) मिलते थे, क्योंकि वे स्वयं को भी यहूदी महसूस करते थे। वे पुराना नियम पढ़ने के लिए, प्रचार करने और प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हुए। हालाँकि नए नियम में कोई भी ऐसा सन्दर्भ नहीं है कि यहूदी मसीहियों ने सातवें दिन प्रभु भोज का दिन मनाया।

लेकिन पिन्तेकुस्त के दिन के बाद से यहूदियों के बीच के मसीही समुदाय के लोगों ने अन्य यहूदियों के अलावा "प्रभु के दिन" (रविवार) को मनाया। एक जगह एकत्रित होकर उन्होंने शास्त्रों को पढ़ा, जिसमें व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं, लेख और सुसमाचार और प्रेरितों के पत्र (2 पतरस 3:1-2, 15-16) शामिल थे, उन्होंने एक साथ मिलकर रोटी तोड़ी और प्रार्थना की (प्रेरितों के काम 2:42)।

(2) सप्ताह के पहले दिन (रविवार) गैर यहूदी मसीही मिलते थे।

पढ़ें प्रेरितों के काम 20:5-12; 1 कुरिन्थियों 16:2 - वे परमेश्वर की आराधना के लिए, प्रभु भोज के लिए, परमेश्वर के कार्यों के बारे में बातचीत करने और भेंट लाने, उपदेश और वचन को सिखाने के लिए एक साथ मिलते थे!

(3) पूरे इतिहास में मसीहियों ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) मिलना जारी रखा।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:10 - प्रकाशितवाक्य 1:10 में *प्रभु का दिन*, हमेशा प्रारम्भिक कलीसिया के पिता और आधुनिक यूनानी भाषा के लेखन में सप्ताह के पहले दिन को संदर्भित करता है। इस प्रकार, मसीही समुदाय के लोगों ने सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को संगति करना जारी रखा और उन्होंने इस दिन को "प्रभु का दिन" कहा।

सारांश। इस प्रकार, नए नियम के समय से, सप्ताह का पहला दिन (रविवार) मसीहियों द्वारा आराधना करने, प्रभु भोज के लिये, प्रचार के लिए और परमेश्वर की बातों के विषय में बात करने के लिये ठहराया गया।

केवल कुछ सौ साल पहले, रोमन साम्राज्य के सीजर कॉन्सटैंटाइन ने पूरे रोमन साम्राज्य के लिए सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को आधिकारिक दिन बनाया। पर उसके पास बाइबल द्वारा दिया गया कोई अधिकार नहीं है. क्योंकि यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया था (मत्ती 5:17). अन्य संस्कृतियों में मसीही लोग आराधना या विश्राम के दिन प्रभु का दिन मना सकते हैं, जो सप्ताह के किसी भी दिन हो सकता है। प्रभु के दिन के उद्देश्य का महत्व है या इस बात का कि इसे सप्ताह के किस दिन मनाया जाता है!

घ. यहोवा के दिन का उद्देश्य

परिचय दें। बाइबल में, सप्ताह के सातवें दिन (शनिवार) को "सब्त का दिन" कहा जाता था और सप्ताह के पहले दिन (रविवार) को "प्रभु का दिन" कहा जाता था। नए नियम में ऐसा कोई निश्चित आदेश नहीं है कि पुराने नियम के

सातवें दिन की तरह (सब्त का दिन) सप्ताह के पहले दिन को ही प्रभु का दिन माना जाये। सप्ताह के पहले दिन (प्रभु का दिन) को पुराने नियम के सातवें दिन (सब्त के दिन) की तरह रखने के लिए नए नियम में कोई स्पष्ट रीति से मना भी नहीं किया गया है। पूरे युग में और सभी देशों में मसीहियों ने सब्त का आत्मा रखा है (निर्गमन 20: 8-11)।

- मसीहियों ने चौथी आज्ञा की बातों में बुद्धिमानी के साथ सिद्धान्तों को बनाए रखा है (विश्राम करने के लिए, जी ठण्डा करने के लिए, संगति करने के लिये, भले कार्य करने के लिए और प्राण बचाने के लिए)
- लेकिन चौथी आज्ञा (सप्ताह के सातवें दिन) के रूप में इसे समाप्त कर दिया और सप्ताह के पहले दिन के साथ इसे बदल दिया!

क्योंकि सप्ताह के पहले दिन को (प्रभु का दिन) पुराने नियम के सातवें दिन (सब्त के दिन) की तरह मानने का कोई स्पष्ट आदेश नहीं है, निम्नलिखित मसीहियों के लिए केवल दिशानिर्देश हैं कि उन्हें इस दिन क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए।

1. प्रभु के दिन का उद्देश्य मसीह के उद्धार के कार्य (उसके पुनरुत्थान, पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना और उनकी निरन्तर उपस्थिति) को पूरा करने के लिए खुशी के साथ मनाना है।

2. प्रभु के दिन का उद्देश्य काम से विश्राम करना, आत्मिक रूप से बढ़ना, अन्य मसीही लोगों के साथ सहभागिता और परमेश्वर की आराधना और सेवा करना है।

(1) परमेश्वर से मिलने और धार्मिकता और पवित्रता में आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए मसीही लोग "प्रभु के दिन" का उपयोग कर सकते हैं।

पढ़ें यशायाह 56:6-7; यशायाह 58:13-14 - प्रभु के दिन का उद्देश्य यह नहीं है कि आप अपनी ही राह पर चलें और वही करें जो स्वयं को अच्छा लगता हो, लेकिन प्रभु की इच्छा पूरी करने और उसे प्रसन्न करने के लिए इस दिन का प्रयोग करें। मसीहियों को अपनी खुशी का अनुभव करना चाहिए, स्वयं में नहीं, बल्कि प्रभु में। प्रभु के दिन का उद्देश्य परमेश्वर से प्रेम करना, आराधना करना और उसकी धार्मिकता और पवित्रता के साथ सेवा करना है!

(2) "प्रभु के दिन" पर मसीही लोग अन्य मसीहियों के साथ *मिलकर* परमेश्वर से मिल सकते हैं।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 23:3; प्रेरितों के काम 2:42; 20:5-12; इब्रानियों 10:24-25 - प्रभु के दिन का उद्देश्य एक पवित्र संगति करना है, प्रभु भोज के दिन को मनाना है, परमेश्वर के वचन का प्रचार और उसे सिखाना, एक दूसरे के साथ बाइबल के बारे में बातचीत करना, प्रार्थना करना और एक दूसरे के साथ प्रार्थना करने के लिये संगति और सहभागिता करना है।

(3) मसीही लोग सच्चे रूप से "प्रभु के दिन" पर सक्रिय रूप से भले कार्य और प्राण बचाने के लिये शामिल हो सकते हैं।

पढ़ें मरकुस 3:4; यशायाह 58:6-12; लूका 4:16-21 - प्रभु के दिन का उद्देश्य समय को सिर्फ ऐसे ही व्यर्थ करना नहीं है (काम न करना), लेकिन भला करना और जीवन को बचाना है। उदाहरण के लिए, लोगों को भोजन और कपड़े देने में, उन्हें सुसमाचार का प्रचार करने या उन्हें छुड़ाने (जादूई शक्तियों और झूठी शिक्षाओं से) में सहायता करें।

(4) मसीही अपने दैनिक कार्यों से प्रभु के दिन पर *विश्राम* कर सकते हैं।

पढ़ें निर्गमन 23:12; मरकुस 2:18-27 - प्रभु के दिन का उद्देश्य यह है कि मसीही लोग अपने सामान्य छह दिनों के काम से विश्राम करें और अपने जी को ठण्डा करें। यह एक अच्छा समय है कि मसीही लोग अपने जीवन पर चिन्तन करें, विश्राम करें और अपने परिवार और मित्रों से मिलें। प्रभु के दिन का उद्देश्य मनुष्य पर बोझ डालने के बजाय मनुष्य की सहायता करना है।

3. "प्रभु के दिन" का उद्देश्य हर दिन अनन्तकाल के दृष्टिकोण के साथ जीना है।

पढ़ें इब्रानियों 4:9-11; प्रकाशितवाक्य 14:13 - "परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है" यह नहीं कहता है : "सब्त के दिन", लेकिन "सब्त का विश्राम"! ये वाक्यांश यह नहीं सिखाता है कि सप्ताह के सातवें दिन को (शनिवार) पुराने नियम के सब्त के विश्राम दिन के रूप में माना जाये। यह अनन्त जीवन के बारे में सिखाता है, जो अभी भी पृथ्वी पर मनुष्यों के सामने है। "सब्त का विश्राम" स्वर्ग या नया स्वर्ग और नई पृथ्वी के लिये एक शब्द है। जब मसीही लोग अपना जीवन और पृथ्वी पर अपना परिश्रम समाप्त कर चुके होंगे, तो वे परमेश्वर में विश्राम पाएँगे और पृथ्वी पर अपने परिश्रम से विश्राम लेंगे (प्रकाशितवाक्य 14:13), जैसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने सृष्टि के कार्य से

विश्राम किया!

इस्राएलियों की तरह, अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के द्वारा वे परमेश्वर के सब्त के विश्राम में प्रवेश करने में विफल नहीं होने चाहिए। सिर्फ "प्रभु के दिन" पर ही नहीं, बल्कि अपने जीवन के हर दिन में मसीही लोगों को आनन्द के साथ अनन्त विश्रांति की आशा करनी चाहिए जो परमेश्वर के लोगों के साथ बनी रहती है! यह बताता है कि क्यों प्रभु के दिन के उपयुक्त उद्देश्यों को सप्ताह में किसी एक दिन तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। लक्ष्य हैं :

- परमेश्वर से प्रेम करना, उसकी आराधना करना और उसकी सेवा करना।
- एक दूसरे को प्रेम और भले कामों के लिए प्रेरित करने के लिए मसीहियों के रूप में मिलना (इब्रानियों 10:24-25)।
- परमेश्वर के वचन का अध्ययन, चर्चा, प्रचार और सिखाना।
- अच्छे काम करना (गलातियों 6:9-10)।
- प्राण बचाना (मरकुस 3:4)
- चेला बनाना (मरकुस 28:19)

ये गतिविधियाँ सप्ताह के हर दिन के लिए भी हैं!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रिया]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]*
		अगले अध्याय के लिए तैयारी

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "प्रभु का दिन : विश्राम, संगति और सेवकाई का दिन" पर प्रचार करें, शिक्षा दें और अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2 कुरिन्थियों 7 - 10** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए शान्त समय चुन लें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। **यूहन्ना की आयतों की समीक्षा करें** (1) यूहन्ना 1:14; (2) यूहन्ना 1:15; (3) यूहन्ना 2:25; (4) यूहन्ना 3:16; (5) यूहन्ना 4:24 - पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें (**यूहन्ना 4**)। बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 12

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज सुनने के लिए **प्रार्थना** करे।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* 2 कुरिन्थियों 7-10

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 7-10) में शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (5 मिनट) [यूहन्ना में कुँजी वचन] यूहन्ना के मुख्य वचनों का पुनरावलोकन

यूहन्ना से अन्तिम 5 आयतों को दो दो लोग साथ मिलकर **पुनरावलोकन** करें।

1.यूहन्ना 1:14. और वचन देहधारी हुआ; और अुनग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी,जैसे पिता के इकलौते की महिमा।

2.यूहन्ना 1:16.क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।

3.यूहन्ना 2:25.और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे,क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है।

4.यूहन्ना 3:16. क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।

5. यूहन्ना 4:24.परमेश्वर आत्मा है,और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* यूहन्ना 4:1-54

परिचय। एक साथ मिलकर अध्ययन करते हुए बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों को इस्तेमाल करें। यूहन्ना 4:1-42 में दर्शाया गया है कि यीशु अपने आप को सामरी स्त्री पर प्रगट करता है। यूहन्ना 4:43-54 में दर्शाया गया है कि यीशु ने अपने आपको गलीलियों पर प्रगट किया। यूहन्ना 3 और यूहन्ना 4 में कुछ महत्वपूर्ण विविधताएं पायी जाती हैं। यूहन्ना 3 अध्याय में,यीशु मसीह एक यहूदी से बात कर रहे हैं जो एक उच्च अधिकारी भी है। लेकिन यूहन्ना 4 में,यीशु एक महिला से बात कर रहे हैं, जो सामरिया की रहने वाली थी और जीवन अनैतिक था।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 4:1-54 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

4:10

***खोज1.* साधारण जल और जीवन के जल में जो यीशु हमें देता है, क्या फरक होता है।**

यूहन्ना 4:10 में यीशु ने कहा,"यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला, तो तू उससे माँगती और वह तुझे जीवन का जल देता।" जब यीशु ने जीवन के जल के बारे में बात की, तब सामरी स्त्री को लगा कि यीशु साधारण जल के बारे में बोल रहे हैं, जो वह कुँए से निकाल सकती थी। उसने सोचा कि यीशु ज़मीन से फूटने वाले सोतों से निकले वाले पानी के उन बुलबुलों के बारे में बोल रहा है जो कुँए के तल में निकलते हैं। इसीलिए उसने कहा कि यीशु के पास तो रस्सी से बंधी हुई बाल्टी भी नहीं है जिससे वह पानी निकाल सके।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुलपति याकूब ने इस कुँए को खोदा था इसीलिए सामरी स्त्री ने पूछा कि क्या वह कुलपति याकूब से बड़ा है। लेकिन यीशु ने कहा, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा,परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,वह फिर अनन्तकाल तक प्यास न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यीशु मसीह उससे जीवन के जल अर्थात उद्धार के बारें में बात कर रहा था जो पवित्र आत्मा उसको प्रदान करने वाला था। उसने साधारण जल और जीवन के जल में भेद किया। जब भी कभी आप साधारण जल पीते है तो निश्चय ही आपको दुबारा प्यास लगेगी,लेकिन यदि आप जीवन जल अर्थात (उद्धार) पाते हैं जो यीशु हमें देता है, आप हमेशा के लिए सन्तुष्ट हो जाएंगे। आम पानी आपके प्राण से बाहर रहता है और आपके प्राणों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन जीवन का जल(उद्धार और उसकी सारी आशीषें) आप प्राण में प्रवेश करके आपकी अर्न्तात्मा की प्यास को सन्तुष्ट करता है। अत: अनन्त सोते या झरने के समान, यीशु मसीह का जीवन जल भी आपको तरो ताज़ा और सन्तुष्ट करने में कभी विफल नहीं होगा।

खोज 2. यीशु किस प्रकार उस स्त्री को कायल करके जीत लेते हैं।

नीतिवचन 11:30 में लिखा है, "बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है"। यीशु हमारे सामने उदाहरण देते हैं कि उसने किस प्रकार से सामरी स्त्री को जीता। यीशु को यहूदा से गलील के मार्ग में,सामरिया से होकर गुज़रना अवश्य था। एक दोपहर वह थका हुआ एक कुँए के पास बैठ गया, और उसके चेले पास के नगर में भोजन लेने गये थे। वहीं पर वह एक चरित्रहीन सामरी स्त्री से उसे परमेश्वर के राज्य के लिए जीतने की मनसा से बात करने लगा।

(1) यीशु ने उसके घड़े में से थोड़ा सा पानी पीने के लिए मांगने के द्वारा **उससे सहायता मांगी**। किसी भी व्यक्ति के जीवन में प्रवेश करने का सबसे प्रभावशाली तरीका उस व्यक्ति से कुछ मदद मांगना या उसकी कुछ मदद कर देना है। यीशु ने दोनों ही तरफ से काम किया। उसने महिला से पानी मांगा और उसके सामने जीवन जल रखने का प्रस्ताव रखा।

(2) यीशु ने यह कह कर **उसमें जिज्ञासा उत्पन्न की** कि, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला, तो तू उससे माँगती और वह तुझे जीवन का जल देता"। उस सामरी स्त्री ने यह सोचा कि यीशु (आत्म-समपन्न)यहूदी है और उसे मदद की जरूरत है और वह सामरी स्त्री उसकी जरूरत को पूरा करने में सक्षम है। लेकिन यीशु ने तो मेज़ ही पलट दी और उसे जता दिया कि वह स्त्री एक जरूरतमन्द स्त्री है, उसे जीवन के जल की आवश्यकता है और यीशु स्वयं जल का वह स्रोता है जो उसे वह जल दे सकता है। इससे उसकी जिज्ञासा बढ़ गयी। लोगों की जिज्ञासा बढ़ाने के लिए लोगों को बताएं कि परमेश्वर कौन है और वह उन्हें क्या देना चाहता है।

(3) यीशु ने यह कहते हुए उसमें **सन्तुष्टि प्राप्त करने की लालसा को उसकाया**,"परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,वह फिर अनन्तकाल तक प्यास न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यीशु ने साधारण जल और जीवन के जल में भेद किया। जब भी कभी आप साधारण जल पीते है तो निश्चय ही आपको दुबारा प्यास लगेगी,लेकिन यदि आप जीवन जल अर्थात (उद्धार) पाते हैं जो यीशु हमें देता है, आप हमेशा के लिए सन्तुष्ट हो जाएंगे। आम पानी आपके प्राण से बाहर रहता है और आपके प्राणों की जरूरत को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन जीवन का जल(उद्धार और उसकी सारी आशीषें) आप प्राण में प्रवेश करके आपकी अर्न्तात्मा की प्यास को सन्तुष्ट करता है। अत: अनन्त सोते या झरने के समान, यीशु मसीह का जीवन जल भी

आपको तरो ताज़ा और सन्तुष्ट करने में कभी विफल नहीं होगा। किसी भी व्यक्ति के भीतर अनन्त जीवन के प्रति लालसा उत्पन्न करने का सबसे अच्छा तरीका उसके सामान्य जीवन के साथ सामान्य जीवन की तुलना करना है।

(4) जा अपने पति को बुला ला कह कर उसने उस स्त्री के **विवेक को जागरूक किया।** यीशु जानते थे कि उसमें तब जीवन जल की सच्ची प्यास उत्पन्न न होगी जब तक कि वह अपने पाप को पहिचान नहीं जाती। जैसे ही यीशु ने उसके पति का जिक्र किया, उसे शर्मिन्दगी हुई, क्योंकि उसके पास कोई एक पति नहीं था। वह एक अनैतिक जीवन व्यतीत कर रही थी। लोगों के मन में उद्धार के निमित्त सच्ची जागरूकता उत्पन्न करने के लिए लोगों को अपने गुनाहों का अहसास होना जरूरी है।

(5) यीशु ने धीरे धीरे करके अपनी पहिचान को उसके सामने प्रगट किया। जैसे जैसे उसने अपने आपको उस स्त्री पर प्रगट किया वैसे ही धीरे धीरे उस स्त्री ने (अपनी असफलताओं, मूर्तियों और गुलामी का)अंगीकार किया। उसने पहले यीशु को एक यहूदी बाद में एक भविष्यद्वक्ता और अन्त में एक मसीह के रूप में देखा।

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये यूहन्ना 4:1-54 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। **लिखें:** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।) **चर्चा करें।**(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

4:20-24

प्रश्न 1. सच्ची आत्मिक आराधना क्या है?

नोट्स।

(1) वह स्थान जहां मसीही लोग अराधना करते हैं।

सामरियों और यहूदियों में उस स्थान को बहुत अधिक महत्व दिया जाता था जहां पर वे लोग आराधना के लिए मिला करते थे। वे विश्वास करते थे कि उन्हें अपने देश में आराधना के लिए एक इमारत की आवश्यकता थी। यहूदी मानते थे कि परमेश्वर की आराधना केवल यरूशलेम के मन्दिर में ही की जानी चाहिए। जबकि सामरी लोगों को मानना था की परमेश्वर की आराधना गेरेजिम पहाड़ पर बने मन्दिर में की जानी चाहिए। जरा भारतवर्ष में बने मन्दिरों, तुर्की में बनी मस्ज़िदों और यूरोप में बने चर्चों की इमारतों के बारे में सोच कर देखिये। लेकिन यीशु ने जवाब दिया,"हे नारी वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे और न यरूशलेम में। परन्तु वह समय आता है वरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।" यीशु ने सिखाते हैं कि आराधना के लिए स्थान महत्वपूर्ण नहीं है वरन महत्वपूर्ण वह रवैया व सत्य जिससे हम परमेश्वर की आराधना करते हैं। इसलिए सच्ची आराधना में शारीरिक अवस्थाएं कोई बाधा नहीं वरन वह गलत रवैया और दिमाग में भरा झूठ है जिसके द्वारा वे आराधना करते हैं। मसीही लोग अपने घर में, कलीसिया की इमारत में, बन्दीगृह में या खुले मैदान कहीं भी परमेश्वर पिता की आराधना कर सकते हैं।

(2) वह सच्चाई जिसके अनुसार मसीही आराधना करते हैं।

वह रवैया जिसके द्वारा हमारा मन आराधना करता है आराधना के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वस्तु की सच्चाई या प्रकाशन पर आधारित होता है। परन्तु परमेश्वर की सच्चाई क्या है? परमेश्वर से जुड़ा सत्य वह नहीं है जो लोग परमेश्वर के बारे में कहते हैं या लोग परमेश्वर के सन्दर्भ में विश्वास करते हैं परन्तु सत्य वह है जो परमेश्वर स्वयं सृष्टि में और बाइबल में(भजन 19)में प्रगट करते हैं। परमेश्वर ने हम पर प्रगट किया है कि वह कौन है और वह कैसा है। परमेश्वर ने हम पर अपनी विशेषताएं,अपने वचन और अपने कामों को प्रगट किया है(इब्रानियों1:1-2)।

परमेश्वर द्वारा हम पर प्रगट की गयी एक सच्चाई यह है कि परमेश्वर एक आत्मा है। परमेश्वर अपने आप में पूरी तरह आत्मिक है। वह पत्थर,पेड़,पहाड़,मन्दिर का देवता नहीं है, कि उसकी आराधना किसी पत्थर की मूर्ति के रूप में या किसी पेड़ के नीचे या किसी विशेष पहाड़ पर या किसी विशेष मन्दिर में की जाए। परमेश्वर गणित के आंकड़ों, शारीरिक

नियमों,शक्ति स्थान और जगत के समय के आधार पर परिभाषित किया जाने वाला या सीमित परमेश्वर नहीं है,क्योंकि परमेश्वर पूर्ण रूप में आत्मा और उन सारी प्राकृतिक वास्तविकताओं से परे है जिन्हें उसने स्वयं रचा है। परमेश्वर किसी विशेष धर्म या मत का देवता नहीं है और न ही वह एक भविष्यद्वक्ता या संस्थापक या अगुवे के द्वारा स्थापित किया गया परमेश्वर है।

एक मात्र विद्यमान परमेश्वर ने अपने आपको अपनी सृष्टि में और अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा मानव इतिहास में और अन्त में उसने अपने आपको मानवीय स्वरूप अर्थात यीशु मसीह के रूप में प्रगट किया है।

परमेश्वर ने अपने आपको निम्नलिखित लोगों पर प्रत्यक्ष रूप में प्रगट किया:

- दर्शन द्वारा अब्राहम पर(उत्पत्ति 15:1)
- हाजिरा और इश्माईल पर परमेश्वर के एक स्वर्गदूत के रूप में(उत्पत्ति 16:7-13)
- जलती झाड़ियों के बीच में मूसा पर प्रगट किया(निर्गमन 3:2-6)
- तीन पुरूषों में होकर अब्राहम पर प्रगट किया(उत्पत्ति 18:1-14)
- यीशु मसीह में होकर मनुष्यों के रूप में(यूहन्ना 1:1,14;यूहन्ना 14:9-10)।

परमेश्वर ने बिना अपने ईश्वरत्व को त्यागे मानवीय स्वरूप को धारण किया और यीशु मसीह में होकर मानव इतिहास में प्रवेश किया।

परमेश्वर की आराधना उसी रूप में करनी चाहिए जिस रूप में उसने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है। परमेश्वर अपने स्वभाव में पूरी तरह से आत्मिक है। इसका अर्थ है कि उसका कोई शारीरिक रूप नहीं हैं और लोग उसे देख नहीं सकते। वह अनोखा है। वह ही एकमात्र परमेश्वर है(व्यवस्था 6:4)। परमेश्वर को छोड़ और कोई "ईश्वर" या "उद्धारकर्ता" (यशायाह 43:10-11)। वह अपने आप में स्वावलम्बी है और उसे आवश्यकता नहीं कि लोग उसकी सेवा करें(प्रेरितों 17:24-25)। वह एक व्यक्तिगत सम्बन्ध रखने वाला परमेश्वर है और लोगों को परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध ही बनाना चाहिए। लोग सर्वेश्वरवाद का अनुपालन करते हुए कभी भी परमेश्वर के साथ एक नहीं हो सकते। परमेश्वर की आराधना उसी तरीके से होनी चाहिए जिस तरीके से उसने अपने आपको बाइबल में यीशु मसीह में होकर व प्रकृति में प्रगट किया है।

यूहन्ना 4:24 में यीशु ने कहा,परमेश्वर आत्मा है, और यह जरूरी है कि उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई में की जाए"। इसलिए सच्ची आराधना केवल उस परमेश्वर के लिए ही समर्पित है जिसने अपने आपको प्रकृति व बाइबल में और अपने उद्धार के कामों में प्रगट किया है।

(3) जिस आत्मा में होकर मसीही लोग आराधना करते हैं।

जिस रवैया में हम अपनी आत्मा में परमेश्वर की आराधना करते हैं वह आराधना करने के बारे में परमेश्वर की सच्चाई के प्रति आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है। बहुत से धार्मिक लोग मानते हैं कि आराधना करने के तरीके में प्रार्थना करने की अवस्था, निर्धारित प्रार्थनाएं या मंत्र, प्रार्थना के नियुक्त स्थान,विशेष धार्मिक पर्व और परिधानों, भोजन और पीने, उपवास,तीर्थ स्थानों की यात्रा, दान दक्षिणा इत्यादि मायने रखता है। उदारहण के लिए,यहूदी लोग खड़े होकर अपने हाथों को उठाये हुए या यरूशलेम की ओर मुँह करके घुटने टेककर प्रार्थना करते हैं, प्रतिवर्ष तीन बार यरूशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाते हैं, कोई अशुद्ध भोजन नहीं खाते, प्रति सप्ताह दो बार उपवास रखते हैं, और उन्हें अपनी कमाई में से तीन अलग अलग तरीके के दशमांस देने पड़ते हैं!

इसके बावजूद, हर प्रकार की आराधना परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली नहीं होती। न ही हर एक तरीके का कलीसिया में इस्तेमाल किया जा सकता है। उदारहण के तौर पर, यशायाह 1:13-15 में परमेश्वर ने कहा,"व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ;धूप से मुझे घृणा है....मुझे महासभाओं का प्रचार करना बुरा लगता है...नियम पर्वों के मानने से मैं जी से बैर करता हूँ.. .तुम कितनी भी प्रार्थना क्यों न करो,तौभी मैं तुम्हारी न सुनूँगा।" इसलिए मसीहियों को अपने विश्वास का दिखावा नहीं करना चाहिए, लेकिन उनकी आराधना आत्मा में होनी चाहिए। मसीहीयों को क्षमा की आत्मा के साथ, अपने पापों को अंगीकार करते हुए, अपनी आत्मा को समर्पित करते हुए, प्रतिबद्धता के साथ परमेश्वर के सत्ता व उसके कामों के लिए उसकी स्तुति और उसका धन्यवाद करते हुए परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। अत: सच्ची आराधना में सम्पूर्ण भीतरी मनुष्य और सम्पूर्ण दैनिक जीवन शैली शामिल होती है।

(4) जिस नम्रता के साथ मसीही लोग अराधना करते हैं।

यूहन्ना 4:23 में लिखा है कि आत्मा और सच्चाई में आराधना करने वाले वे अराधक हैं जिन्हें परमेश्वर मन से चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर एक लोगों की खोज में हैं जो अपने आपको ऐसा अराधना बनाते हैं। बल्कि, इसका मतलब यह है कि परमेश्वर बचाये गये लोगों को इस प्रकार का अराधक बनाने की ललक रखता है! लोगों को खोजने और उन्हें उद्धार देने के लिए परमेश्वर पिता ने पहल की है(लूका 19:10)। वह बचाए गये लोगों को आत्मा और सच्चाई से अराधना करने वाले लोगों में परिवर्तित करने के द्वारा परमेश्वर उस उद्धार (फिलिप्पियों 1:6)को पूर्ण करने की पहल कर रहा है।

4:27

प्रश्न 2. चेले यीशु को उस स्त्री से बात करता देखकर हैरान क्यों हो गये थे?

नोट्स।

यूहन्ना 4:27 में, यीशु के चेले यह देखकर हैरान थे कि यीशु उस महिला से बात कर रहा है। वे इसलिए हैरान थे, क्योंकि यहूदी शास्त्रियों की शिक्षा यह कहती है कि,"कोई भी पुरूष सड़क पर किसी स्त्री से बातचीत न करें, यहां तक कि अपनी पत्नी से भी नहीं। आज बहुत से शास्त्री या धर्म प्रचारक महिलाओं पर भारी बोझ डाल देते हैं। वे सिखाते हैं कि स्त्रियों का वजूद केवल पुरूषों को प्रसन्न करने के लिए है;कि स्त्रियों को केवल बताए गये तरीके से ही वस्त्र पहिनना चाहिए; कि स्त्रियों को हमेशा घर में ही रहना चाहिए; कि पुरूषों को दूसरी महिलाओं से बोलने का कोई अधिकार नहीं है; कि पुरूष केवल कुछ चुनी हुई महिलाओं से ही विवाह कर सकते हैं; कि पुरुष किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है; कि पुरुष अपनी पत्नी को पीट और चाहे तो मार भी सकता है।

यीशु मसीह ने महिलाओं के आदर को लेकर दुनिया का दृष्टिकोण बदल दिया। उसने अपने चेलों को सिखाया कि महिलाओं की विमुक्ति का अर्थ क्या है। सच्ची महिला विमुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग स्त्री और पुरूष के बीच बनाये उस भेद या अन्तर को नज़रअन्दाज़ करें जो परमेश्वर ने बनाया है। इसका मतलब यह भी नहीं है कि मनुष्य उन जिम्मेदारियों के प्रति अनाज्ञाकारी हो जो परमेश्वर ने विवाह और कलीसिया के अर्न्तगत पुरूष और स्त्री को सौंपा है। परमेश्वर की नज़रों में, महिमा का प्राण भी उतना ही बहुमूल्य है जितना कि पुरूष का(गलातियों 3:28)। और कलीसिया तथा घर में भी उनका सहयोग समान तौर पर मूल्यवान है। समाज में उनका सम्मान भी बराबर महत्वपूर्ण है। यीशु ने हमेशा स्त्रियों के साथ शुद्ध व कुलीन व्यवहार किया। हालांकि चेले यीशु को उस सामरी स्त्री के साथ बातें करते देख हैरान हुए, लेकिन किसी ने भी उससे कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की कि, "तू उस स्त्री से क्या चाहता है?" अगर पूछा जाता तो जवाब जरूर होता कि वह उससे पीने के लिए पानी चाहता है। और न ही किसी ने पूछा," तू उससे क्यों बातें कर रहा है?" उसका जवाब सम्भवत: यह होता "मैं उसे जीवन का जल देना चाहता हूँ"। यीशु ने महिलाओं के साथ हमेशा दया और आदर के साथ व्यवहार किया है।

4:35-38

प्रश्न 3.यीशु ने बोने वाले और लवने वाले के बीच सम्बन्ध के बारे में क्या बताया?

नोट्स।

(1) इस अनुच्छेद में बोने वाले यीशु और सामरी स्त्री दोनों ही हैं।

यीशु ने सामरी स्त्री की आत्मा को जीता। इसके बदले में वह स्त्री गयी और जाकर अपने गांव के लोगों को जीत लिया। जब सामरी स्त्री कुएं से दस मिनट पैदल यात्रा की दूरी पर बसे हुए अपने नगर में पहुँची तो उसने यह नहीं कहा कि यीशु ही मसीह है, लेकिन उसने लोगों से आकर परखने के लिए कहा। उसने कहा,"आकर देखो.....",ठीक इसी प्रकार से यीशु ने भी अपने दो चेलों के साथ किया था। उसने कहा, "इस व्यक्ति ने मुझे वे सारी बता दी जो मैंने की थी। कहीं यही तो मसीह नहीं?" ठीक यहूदियों के समान,सामरी लोग भी अपेक्षा करते थे कि मसीह व्यवस्थाविवरण 18:18-19 का भविष्यद्वक्ता होगा। अत: लोगों की भीड़ यीशु को देखने के लिए उमड़ पड़ी।

(2) आत्मिक फसल का कोई विशेष मौसम नहीं होता।

इसी बीच यीशु ने अपने चेलों से कहा,"क्या तुम यह नहीं कहते हो,चार महीने के बाद कटनी का समय आ जाएगा?" इस क्षेत्र में सामान्यत: कटाई का समय अप्रेल के महीने में हुआ करता था। जबकि, जिस समय में यीशु की मुलाकात सामरी

स्त्री से हुई वह महीना दिसम्बर का था। यह सम्भवत: 27 ई.प.दिसम्बर का महीना रहा होगा। दिसम्बर के महीने में गेहूँ की फलस पक कर तैयार नहीं होती।

लेकिन आत्मिक खेती काटने का कोई नियम समय या मौसम नहीं होता। वह फसल हमेशा काटने के लिए तैयार है। इस घटना में सुसमाचार के बीज बोने और अनन्त जीवन की फसल काटने के बीच में कोई समय अन्तराल नहीं था।यीशु ने सामरियों को अपने नगर से खेत में कुएं की ओर आते देखकर कहा,"अपनी आखें उठाकर देखो, खेत पके हैं।" यीशु स्पष्ट रूप से अपनी बातों में दर्शा रहे थे कि वह उसके राज्य के लिए इन लोगों की कटनी काटने के लिए अपने चेलों को भेज रहे हैं। इस स्थान पर आमोस 9:13 की भविष्यद्वाणी पूरी होती है। भविष्यद्वक्ता आमोस ने भविष्यद्वाणी की थी,"देखो, ऐसे दिन आते हैं कि हल जोतनेवाला लवने वाले को और दाख रौंदनेवाला बीज बोनेवाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाड़ियों से बह निकलेगा।

(3) बाइबल के इस अनुच्छेद में लवने वाले चेले हैं।

यूहन्ना 4:38 में यीशु ने कहा,"मैं तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: और ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।" यीशु मसीह और सामरी स्त्री दोनों ने ही सामरिया के लोगों में काम किया-यीशु ने सामरी स्त्री के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप में और सामरी स्त्री ने सामरिया के लोगों में सीधे तौर पर काम किया। और अब यीशु ने अपने चेलों को अनन्त जीवन की फसल काटने के लिए भेज दिया।

(4) आत्मिक जगत में सामान्य तरीका यह है कि एक व्यक्ति बोता है और दूसरा उसे काटता है।

यूहन्ना 4:37 में यीशु ने कहा," इस पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि बोनेवाला और है और काटने वाला और।"परमेश्वर के राज्य में हर एक काम करने वाला जन एक ही समय में बोने वाला और लवने वाला दोनों होता है। वह किसी दूसरे की बोयी हुई खेती को काटता है। और वह ऐसी फसल को बोता है जिसे पकने पर दूसरे काटते हैं। इस तरह परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ योजना में, आपके लिए हमेशा लवने हेतू फसल होगी। या तो आपको स्वयं अपनी फसल काटने का अवसर मिलेगा नहीं तो आप जरूर यह सुनेगें कि जिस खेतों पर आपने बीज बोया था उसकी फसल दूसरे काट रहे हैं। इस तरह से, बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्दित होगें। मसीही कार्यकर्ता अपने बोने और काटने के काम को लेकर हमेशा आनन्दित हो सकते हैं। प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:58 में कहता है, "सो हे मेरे प्रिय भाइयो,दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। यह यशायाह 55:10-11 में की गयी भविष्यद्वाणी का पूरा होना है," जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं, जिस से बोने वाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है। उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा हैं उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा। सत्य पर भरोसा रखें:"फसल जरूर होगी।"

4:44-45

प्रश्न 4. यीशु अपने नगर गलील में वापस क्यों गया, जबकि वह जानता था कि भविष्यद्वक्ता को अपने घर पर कोई आदर नहीं मिलता?

नोट्स।

मत्ती 13:53-58 में यीशु गलील में बसे अपने घर वापस आये। लोगों ने यीशु का अनादर किया और यीशु ने कहा,"भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नही होता।" गलील यीशु का अपना देश था। जब वह यरूशलेम में था तो बहुत से लोगों ने उसके द्वारा किये गये चमत्कारों को देखकर उस पर विश्वास किया। मन्दिर की सफाई करने के बाद, पहली बार उसका फरीसियों से सीधा सामना हुआ। यीशु एक मकसद के तहत गलील गया था, क्योंकि गलील में उसे इस बात से डरने की कोई जरूरत नहीं थी कि लोग उसका इस तरह से आदर करेगें कि जिसकी वजह से फरीसी उस से लड़ने या झगड़ने लगें। गलीलियों ने उसका स्वागत केवल इसलिए किया था क्योंकि वह एक चमत्कार करने वाला था(पद 45)। लेकिन उन्होंने उसका आदर नहीं किया। और वे लोग बिना विश्वास के किसी पर विश्वास करते भी नहीं थे। जब यीशु ने उन्हें शिक्षा दी कि जब तक वे उसे अपने हृदय में ग्रहण न करें और विश्वास के अनुसार जीवन न व्यतीत करें तब तक अनन्त जीवन को प्राप्त नहीं करेगें, बहुत से गलील वासी उसे छोड़कर चले गये(यूहन्ना 6:66)

कदम 4. **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 4:1-54 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

1. यूहन्ना 4:1-54 से सम्भव अनुप्रयोगों की सूची।

4:1 जिस प्रकार से यीशु ने स्वयं किया, जाकर चेले बनाएं(मत्ती 28:19)।

4:7 लोगों ने मदद मांगकर या दूसरों की मदद करने का प्रस्ताव रखकर उनसे सम्पर्क साधने की पहल करें।

4:10 परमेश्वर व परमेश्वर क्या कर सकता है बताने के द्वारा लोगों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न करें।

4:13-14 आत्मिक बातों की तुलना दैनिक जीवन में काम में आने वाली चीजों के साथ करके उनके भीतर आत्मिक सच्चाई को जानने की इच्छा को उसकाएं।

4:16-18 लोगों को उनके पापों के प्रति निरूत्तर होने में सहायता करने के द्वारा उनके मन में उद्धार प्राप्त करने की सच्ची इच्छा को उजागर करें।

4:19. लोगों के सामने अंश अंश करके प्रगट करें कि यीशु कौन है, और लोगों के ऊपर प्रकाशनों का ढेर न लगा दें।

4:21-24. मन के सही रवैये के साथ परमेश्वर की आराधना करें। बाइबल में अपने आपको प्रदर्शित करने वाले परमेश्वर की आराधना करें।

4:21-24. आत्मा में सही रवैये के साथ परमेश्वर की आराधना करें। केवल रीति रिवाजों को पूरा करने के द्वारा नहीं परन्तु मन की ईमानदारी के साथ परमेश्वर की आराधना करें।

4:27. बिना किसी पक्षपात या भेद किये हुए जैसे आप पुरूषों का आदर करते हैं वैसे ही स्त्रियों को भी आदर करें।

4:32.34. सादा खाना खाएं, लेकिन कभी आत्मिक भोजन करना न भूलें: अर्थात परमेश्वर की इच्छा व उसके कामों को पूरा करना, जिसके लिए परमेश्वर ने आपको चुना है।

4:37-38 जहां कहीं सम्भव हो सुससमाचार बोओ और परमेश्वर के राज्य के लिए कटनी काटो।

4:42. सुनिश्चित करें कि आप केवल दूसरों की कही बातों पर ही विश्वास करनेवाले न ठहरे परन्तु यीशु मसीह पर आपका विश्वास आपके व्यक्तिगत विश्वास व अनुभवों पर आधारित हो।

4:44. अगर आपको एक प्रचारक के रूप में अपने निवास स्थान पर आदर न मिले तो आप दूसरे स्थान में चले जाएं(मत्ती 10:11-15)

4:48-53. स्वीकार करें कि आप तब और ज्यादा धन्य होते हैं जब आपने न यीशु को और न उसके चमत्कारों को अपने जीवन में देखा है फिर भी आप उस से प्रेम करते हैं।(यूहन्ना 20:29)।

2. यूहन्ना 1:1-18 के आधार पर व्यक्तिगत अनुप्रयोगों या रीतियों के उदाहरण

मैं भी यीशु के समान काम पूरा करने वाला बनना चाहता हूँ। मैंने यीशु पर विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया और मैं उस पर लगातार विश्वास करना चाहता हूँ चाहे मुझे कितनी ही समस्याओं का सामना क्यों न करना पड़े। यीशु ने कहा,"मेरी भोजन मेरे भेजने वाले की इच्छा पूरी करना और उसके कामों को पूरा करना है।" मैं भी अपने आपको परमेश्वर की इच्छा व उसके कामों को पूरा करने के लिए समर्पित करता हूँ, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है। मैं तब भी आनन्दि रहना चाहता हूँ जब मैंने बोया तो हो लेकिन काटने को न मिला हो। मैं तब भी आनन्द मनाना चाहता हूँ जब मैं उस खेती को काटूँ जिसे दूसरों ने बोया हो। कई बार मैं बोता हूँ और कई बार मैं काटता हूँ। मैं एक बात को जानता हूँ कि परमेश्वर की सिद्ध योजना में हमेशा काटने के लिए फसल होगी! या तो मुझे स्वयं वह फसल काटने का सौभाग्य मिलेगा या फिर यह सुनकर मुझे आनन्द होगा कि जो मैंने बोया था उसे दूसरे काट रहे हैं। इस तरह से बोने वाला और लवने वाला दोनों आनन्द मनाएंगे।

कदम 5. प्रार्थना **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1.समर्पण : चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2.किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को यूहन्ना 4के आधार पर प्रचार करें,शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3.परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **2 कुरिन्थियों 11-13** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। (1)**दोनो विश्वासी: 2 कुरिन्थियों 6:14** याद करें व मनन करें(श्रृंखला च)। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5.बाइबल अध्ययन। घर पर ही अगली बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। यूहन्ना 1:1-18। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

6.प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें। .

कलीसिया परिशिष्ट 1

[मसीह]

पुराने नियम में मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी (यशायाह 52:13-53:12)

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी 700 वर्ष ई.पू. से भी अधिक समय पहले की थी। ऐसी भविष्यद्वाणी किसी अन्य धर्म या मानव इतिहास में नहीं मिलती है! भविष्यद्वाणी प्रत्येक 3 आयतों के 5 गद्यांशों में विभाजित है। इस भविष्यद्वाणी में उसके *महिमान्वित* पद से *पीड़ी सहने* की गहराई तक उतरने और फिर *ऊँचे पर उठाये जाने* के विषय में बताया जा रहा है। सभी आयतों का इब्रानी भाषा से अनुवाद किया गया है।

महत्वपूर्ण बात।

यीशु को हमारे पापों के दण्ड के रूप में क्रूस पर चढ़ाया गया (यशायाह 52:13-53:12)।

नये नियम का दर्शन स्पष्टरूप से सिखाता है कि यहोवा के दास के बारे में यह भविष्यद्वाणी प्रभु यीशु मसीह में पूरी हुई है। मसीह ने "पाप नहीं किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली" (यशायाह 53:5 की तुलना 1 पतरस 2:22 से करें)। मसीह को भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया (यशायाह 53:7-8 की तुलना प्रेरितों के काम 8:32-33 से करें)। मसीह ने बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे दिए (यशायाह 53:10 की तुलना मरकुस 10:45 से करें)। मसीह को परमेश्वर ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ (यशायाह 53:10-11 की तुलना 2 कुरिन्थियों 5:21 से करें)। मसीह को हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया भी गया (यशायाह 53:11-12 की तुलना रोमियों 4:25 से करें)। मसीह को सताया गया, घात किया गया और वह फिर मृतकों में से जी उठा (यशायाह 53:5 की तुलना मरकुस 10:32-34 से करें)। मसीह को दु:ख उठाना अवश्य था ताकि वह अपनी महिमा में प्रवेश करे (लूका 24:26)।

क. गद्यांश 1 - यशायाह 52:13-15
यीशु मसीह को सताने के द्वारा ऊँचे (चढ़ाया) पर उठाया जायेगा।

भविष्यद्वाणी। [1]

पहला गद्यांश भविष्यद्वाणी के विषय को दर्शाता है। "आने वाले मसीहा को सताने के द्वारा ऊँचे पर उठाया जायेगा।" इस गद्यांश में यहोवा स्वयं बात कर रहा है।

1. 13वीं आयत में यीशु मसीह के ऊँचे पर उठाये जाने की व्याख्या की गई है।

52:13 - अनुवाद : "देखों मेरा दास वृद्धि से काम करेगा (Hebrew: shkl, Q), वह ऊँचा (Hebrew; rum, Q), महान (Hebrew: ns', Pi), और अति (Hebrew: gbh, Q) महान हो जाएगा (Hebrews: me'od)।"

13वी आयत में यीशु मसीह के ऊँचे पर उठाये जाने का वर्णन किया गया है, जो कि उसके जी उठने, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजने को दर्शाता है (प्रेरितों के काम 3:13; फिलिप्पियों 2:9-11)। उसके सताये जाने पर विजय का मुकुट पहनाया जायेगा, उसके श्रम का निश्चय ही परिणाम निकलेगा।

2. 14वीं आयत में उसके अपमानित होने का वर्णन किया गया है।

52:14 - अनुवाद : "जैसे बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (Hebrew: shmm, Q), क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था (Hebrew: mishchat)) कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था (Hebrew: mare'hu), और उसकी

सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी (Hebrew: to'ar)।"

14वीं आयत में उसके अपमानित होने का वर्णन किया गया है, जिसमें लोगों ने उसके साथ इतना दुर्व्यवहार किया, जिसके कारण उसे पहिचानना लगभग न के बराबर हो गया था (मरकुस 14:65; मरकुस 15:15,17,19; यूहन्ना 19:1-5)।

3. 15वीं आयत में उसकी महिमा का वर्णन किया गया है।

52:15 - अनुवाद : "वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा (खड़ा करेगा) (Hebrew: nzh, Hi), क्योंकि उसको देखकर राजा शान्त रहेंगे (Hebrew: qpts, Q), क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया (Hebrew: spr, Pu), और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी (Hebrew: bin, Hitpol)।"

[1] "प्रकाशितवाक्य 19:10 यीशु मसीह की गवाही (यीशु मसीह द्वारा दी गई गवाही) (1 पतरस 1:9-12) (यीशु मसीह के विषय में दी गई गवाही) (प्रकाशितवाक्य 12:17)। भविष्यद्वाणी की आत्मा (सार) है।" भविष्यद्वाणी व्यर्थ के अअनुमान नहीं लगा रही है (यिर्मयाह 23:16-40)।

15वीं आयत में उसकी महिमा का वर्णन किया गया है। और 14वीं आयत में उसके अपमान की तुलना का वर्णन भविष्य में होने वाली उसकी महिमा से करता है। "पवित्र" करने का अनुवाद ऊपर "खड़े होने" से किया जा सकता है। राष्ट्र और राजा घबराहट से खड़े हो जाएँगे और शान्त रहकर उसके प्रभावशाली रूप को देखेंगे (तुलना करें : यशायाह 49:7; तुलना करें : अय्यूब 29:9-10; भजन 22:29)। वह ऐसी बातों को देखेंगे जिसका वर्णन न कभी उनके सुनने में आया और न ही उन्होनें ऐसी बातों को समझा - अर्थात् सुसमाचार और नये नियम की शिक्षाएँ। बहुत से लोगों को परमेश्वर के दर्शन की बातों पर आश्चर्य होगा, जब वे यीशु मसीह को देखेंगे तो वे उसे उसके पहले आगमन से भिन्न पाकर आश्चर्यचकित हो जाएँगे।

परिपूर्णता।

नये नियम का दर्शन यीशु के साथ हुए दुर्व्यवहार के विषय में बताता है (यूहन्ना 19:1-3), परन्तु यह नहीं बताता कि दुर्व्यवहार के बाद यीशु का रूप कैसा हो गया था।

नये नियम का दर्शन स्पष्टरूप से यह सिखाता है कि उसे मृतकों में से जिलाया गया, वह स्वर्ग पर चढ़ा और परमेश्वर के दाहिने ओर सम्पूर्ण जगत के राजा के रूप में जा बैठा। "बहुत से" लोग जो उसकी पीड़ा से व्याकुल हो गए थे, "बहुत से" उन लोगों से आगे निकल जाते हैं जो उसके महिमान्वित होने के बाद उसे जानते थे - वे अपने उच्च स्तर के राजाओं सहित प्रत्येक राष्ट्र के लोगों की संख्या की बराबरी कर रहे हैं।

ख. गद्यांश 2 - यशायाह 53:1-3
यीशु मसीह को मनुष्यों द्वारा तुच्छ और त्यागा हुआ जाना जाएगा।

भविष्यद्वाणी।

दूसरे गद्यांश में यीशु मसीह के अपमान का वर्णन किया गया है। उसके साथ अविश्वास, निन्दा और ठट्ठे (अपशब्द) का दुर्व्यवहार किया जाएगा। यहाँ यशायाह भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के सच्चे लोगों के प्रतिनिधि के रूप में बोल रहा है।

1. आयत 1 बताती है कि धार्मिक क्षेत्र में उसके साथ अविश्वास का दुर्व्यवहार किया जाएगा।

53:1 - अनुवाद : "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ (Hebrew: glh, Hitp)?"

आयत 1 बताती है कि धार्मिक क्षेत्र में उसे अविश्वास के साथ तुच्छ जाना जाएगा। यशायाह 52:13 और 53:12 यहोवा की ओर से दिया गया एक सीधा दर्शन है। कोई भी मनुष्य उद्धार की ऐसी योजना को तैयार नहीं कर सकता। यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि इस दर्शन को विश्वास के साथ ग्रहण किया जाये, परन्तु यशायाह भविष्यद्वक्ता और मसीहा दोनों को अविश्वास का सामना करना पड़ा - जिसकी पुष्टि नये नियम में की जा चुकी है (यूहन्ना 12:37-38; रोमियों 10:16)।

2. आयत 2 बताती है कि सांसारिक क्षेत्र में उसे तुच्छ जाना जाएगा।

53:2 - अनुवाद : "क्योंकि वह उसके सामने (परमेश्वर के) अंकुर के समान (Hebrew: joneq), और ऐसी जड़ के समान (Hebrew: shoresh) उगा जो निर्जल (Hebrew: tsijah) भूमि (Hebrew: >erets) में फूट निकले (Hebrew: >lh); उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी (Hebrew: hadar) कि हम उसको देखते (Hebrew: r<h, Ni), और न उसका रूप (Hebrew: mar<eh) ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते (Hebrew: chmd, Ni)।"

आयत 2 बताती है कि सांसारिक क्षेत्र में उसे तुच्छ जाना जाएगा। यह मसीहा के निम्न वंश का वर्णन करता है। वह एक ऐसी पीढ़ी से उत्पन्न होगा जो कि पहले एक पेड़ था (दाऊद का राज घराना), लेकिन बाद में यह केवल एक मिट्टी से ढका हुआ ठूँठ होगा (यूसुफ और मरियम का निर्धन घर) (यशायाह 11:1)। उसके परिवार और राष्ट्र ने उसे कोई अधिकार या महत्व नहीं दिया था। उसके पास कोई विशेष शारीरिक सुन्दरता नहीं थी और उसका बाहरी स्वरूप लोगों को स्वभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित होने का कोई कारण प्रदान नहीं करता। फिर भी अपने विचारों से (यशायाह 49:1) वह यहोवा की आँखों के सामने बढ़ता गया। यहोवा ने उस पर अपनी दृष्टि बनाये रखी और यह देखता रहा कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करे (तुलना करें : लूका 2:52)!

शारीरिक रूप से उसमें कोई भी बाहरी सुन्दरता या आकर्षण नहीं था (1 शमूएल 16:18 में दाऊद देखें)।

3. आयत 3 यह बताती है कि शारीरिक क्षेत्र में उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया।

53:3 - अनुवाद : "वह तुच्छ जाना जाता (Hebrew: bzh, Ni) और मनुष्यों का त्यागा हुआ था (Hebrew: chdl, K); वह दुःखी पुरूष था (Hebrew: mak<ob), रोग से (Hebrew: choli) उसकी जान पहिचान थी (Hebrew: jd>, Pu); और लोग उस से मुख फेर (Hebrew: str, Ni) लेते थे। वह तुच्छ जाना गया (Hebrew: bzh, Ni), और, हम ने उसका मूल्य (Hebrew: chshb, Ni) न जाना।"

आयत 3 यह बताती है कि शारीरिक क्षेत्र में उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। यद्यपि वह स्वयं को देश में रहने वाले पीड़ित और बीमार लोगों के बीच पहिचान पाया, उसके साथ लोगों द्वारा यहाँ तक दुर्व्यवहार किया जाएगा कि शायद ही कोई उसे पहिचान पाए (यशायाह 52:14)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने अपने लोगों के प्रतिनिधि के रूप में यह भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल उसे स्वीकार नहीं करेगा।

परिपूर्णता।

मानवीय तौर पर देखा जाए तो यीशु मसीह के पूर्वजों में कोई भी सिद्ध या पवित्र नहीं था : यहूदा ने तामार से व्यभिचार किया, सलमोन ने राहाब वैश्या से विवाह किया, बोअज़ ने मोआबी रूत से विवाह किया और दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया (मत्ती 1:3,5,6)।

यीशु नासरत में गलील के तुच्छ समझे जाने वाले नगर में पला-बढ़ा था (जहाँ पर अन्यजाति के लोग रहते थे) (मरकुस 1:9; तुलना करें : यूहन्ना 1:46)। परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया और फिर भी उसके साथ गलील (लूका 4:29), गिरासेनियों (लूका 8:37अ) और यहूदिया (यूहन्ना 2:18; 5:16; 6:66; 7:12,20 आदि) में लोगों के अविश्वास के कारण दुर्व्यवहार किया गया। उसके स्वयं के नगर ने उसका विरोध किया (मरकुस 6:3)। उसके अपने भाइयों ने उस पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 7:5)। वह एक ऐसे समय में रह रहा था जिसमें इस्राएल परमेश्वर की प्रजा होते हुए भी सूखी और मरी हुई थी (मत्ती 21:43) और दाऊद के घराने ने बहुत लम्बे समय से राज्य नहीं किया था।

कोई स्वभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित नहीं हुआ (यशायाह 53:1-3)। महासभा के यहूदी अगुवों ने उसके चेहरे पर थूका और उसे घूँसे मारे (मत्ती 26:67)। रोम के सैनिकों ने उसके कपड़े उतार दिये, उस पर थूका, उसके सिर पर काँटों का ताज पहिनाया और एक सैनिक ने उसके सिर पर बार-बार मारा (मत्ती 27:27-30)। उसे इतनी बुरी तरह मारा गया था कि कोई उसके बिगड़े हुए चेहरे की ओर नहीं देख पाया।

ग. गद्यांश 3 - यशायाह 53:4-6
यीशु मसीह को हमारे पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया।

भविष्यद्वाणी।

गद्यांश 3 उद्धार के सुसमाचार का वर्णन करता है। मसीहा को सताया जाएगा और उसे अपने लोगों के बदले मारा जाएगा, अर्थात् वह प्रायश्चित का बलिदान बन जाएगा। यह "हमारे पापों" की तुलना "उसकी पीड़ा" और "उसकी पीड़ा" की

तुलना "हमारी चंगाई" से करता है। "हम" केवल परमेश्वर के सच्चे लोगों को ही दर्शाता है। ये वे लोग हैं जो विश्वास करते हैं और यहोवा का भुजबल उन पर प्रगट हुआ है (आयत 1)।

1. आयत 4 बताती है कि वह हमारे रोगों और दु:खों को उठा ले जाएगा।

53:4 - अनुवाद : "निश्चय (Hebrew: <aken) उस ने हमारे रोगों को सह लिया (Hebrew: ns<a) और हमारे ही दु:खों (Hebrew: mak<ob) को उठा लिया (Hebrew: sbal); तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा (Hebrew: nagu>a) - कूटा (Hebrew: mkh, Pu) और दुर्दशा (Hebrew: m>n) में पड़ा हुआ समझा (Hebrew: chshb)।"

आयत 4 बताती है कि मसीहा हमारे रोगों और दु:खों को उठा ले जाएगा। "रोग" और "दु:ख" शब्द संक्षेप में मनुष्य की पीड़ा को दर्शाते हैं जो कि पाप में गिर जाने का परिणाम है। यह सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक रोगों और कमियों को दर्शाता है। वह इसके बदले, स्वयं अपनी इच्छा से इन्हें सहेगा और इसका बोझ अपने ऊपर उठा लेगा। वह अपने दूसरे आगमन से पहले इन बीमारियों और दु:खों को अपने ऊपर ले लेगा, लेकिन अपने दूसरे आगमन पर जब वह मरे हुओं को जीवित और सब कुछ नया करेगा तब निश्चित ही सभी बीमारियों और दु:खों को भी दूर करेगा।

लेकिन इस्राएल का रुख इसके प्रति काफी निन्दनीय और विरोध से भरा है। लोगों को ऐसा लगेगा कि वह परमेश्वर द्वारा दिये गए अपने पापों के बदले पीड़ा का फल भोग रहा है। परमेश्वर ने उस पर पीड़ा और विपत्ति में डालने के लिए अपने हाथों को उठाया है (1 शमूएल 6:9; अय्यूब 1:11;19:21)।

2. आयत 6 बताती है कि उसे हमारे पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।

53:5 - अनुवाद : "परन्तु वह (emphasized against "we") हमारे ही अपराधों (Hebrew: pesha) के कारण घायल (Hebrew: chll) किया गया, वह हमारे अधर्म (Hebrew: >on) के कामों के हेतु कुचला (Hebrew: dk<a, Pu) गया; हमारी ही शान्ति (that is, that brought us peace) (Hebrew: shlm) के लिये उस पर ताड़ना (Hebrew: musar) पड़ी कि उसके कोड़े (Hebrew: cheburah) खाने से हम चंगे (Hebrew: rp<a, Ni) हो जाएँ।"

आयत 5 बताती है कि मसीह को हमारे पापों की ख़ातिर क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। उसे घायल करके और पीड़ा के साथ कुचल दिया जाएगा और अन्त में कीलें ठोकी जाएँगी (मारा जायेगा)। यह भविष्यवाणी उल्लेखनीय है, क्योंकि रोमियों द्वारा अपराधियों की सजा के लिए क्रूस पर चढ़ाया जाना, यशायाह के समय के 600 साल बाद शुरू हुआ था।

भविष्यद्वाणी इसलिए भी उल्लेखनीय है, क्योंकि यह बहुत लम्बे समय पहले की गई थी कि मसीहा को क्यों अपना प्राण देना पड़ेगा। मुख्य बात यह है कि हमारे "अपराध" और "अधर्म" के कारण यह पीड़ा बहुत अधिक हो गई है। यह मसीहा की मृत्यु का कारण और परिणाम की स्पष्ट भविष्यद्वाणी है। उसे यशायाह और पुराने नियम के विश्वासियों और अपने लोगों के अधर्म और पाप के लिए क्रूस पर चढ़ाया जाएगा! उसे उनकी जगह दण्डित किया जाएगा (तुलना करें : रोमियो 3:25)। दण्ड एक प्रतिशोध है (यिर्मयाह 2:19)। दण्ड जिसके द्वारा शान्ति (परिपूर्णता) और उसके कोढ़े खाने से जो चंगाई मिलती है वह बदले के रूप में पीड़ा का रहस्य है! जिसकी कल्पना किसी मनुष्य ने नहीं की थी, वही परमेश्वर का सुखद आनन्द बन गया!

3. आयत 6 बताती है कि वह हमारे बदले दण्डित किया जाएगा।

53:6 - अनुवाद : "हम तो सब के सब भेड़ों के समान (Hebrew: ts<on) भटक गए थे (Hebrew: t>ah), हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया (Hebrew: pnh), और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (Hebrew: pg>a)।"

आयत 6 बताती है कि मसीहा को हमारे बदले इसलिए दण्डित किया जाएगा क्योंकि हम उससे दूर हो गए। मनुष्य का पाप परमेश्वर से जानबूझकर की गई, जिद्दी और हठीली स्वतंत्रता है। यही कारण है कि मनुष्य का पाप दोषपूर्ण और दडण्नीय है। सभी लोगों ने परमेश्वर से अलग होकर अपने जीवन का मार्ग ले लिया और परमेश्वर के मार्ग पर चरवाहे के पीछे चलने से मना कर दिया। "लेकिन अब यह ज़रूरी हो चुका है कि, वे अपने प्राणों के रखवाले और अध्यक्ष के पास वापस फिर आ जाएँ" (1 पतरस 2:25)!

परिपूर्णता।

यीशु मसीह ने बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिया और बहुत से बीमार लोगों को इस भविष्यवाणी की पूर्ति

के रूप में चंगा किया (मत्ती 8:16-17)। यद्यपि यीशु मसीह ने लोगों की पीड़ा स्वयं उठा ली परन्तु लोगों ने सोचा कि वह परमेश्वर द्वारा दिये गए अपने ही पापों का दण्ड पा रहा है! उन्होंने सोचा कि वह परमेश्वर द्वारा दिए गए इस दण्ड के योग्य है (मत्ती 26:65-66)। इस्राएलियों ने "पीड़ा" को पाप की सजा के रूप में माना, और फरीसियों ने यह सोचा कि यह पीड़ा उनके पापों के कारण नहीं बल्कि उसके स्वयं के पापों के कारण उस पर आ पड़ी है! ऐसी सोच परमेश्वर के प्रति एक निन्दनीय बात है!

उसकी क्रूस की मृत्यु के दौरान, सैनिकों ने उसके हाथों और पैरों में कीलों से ऐसा छेद दिया कि वो क्रूस के आर-पार हो गई, फिर उसे क्रूस पर सीधा लटका दिया और ज़ोर लगाकर उस क्रूस को एक गड्ढे में डाल दिया गया। और उसे शापित मनुष्य के रूप में धूप में लटका दिया (तुलना करें गलातियों 3:13)। यह अपराधियों को पीड़ा से सताने का एक भयावह तरीका था। अन्त में पीड़ा के इस हिंसक तरीके ने उसके मनुष्यरूपी जीवन को कुचल दिया और उसकी मृत्यु हो गयी।

पुराने नियम में यह भविष्यद्वाणी की गयी थी कि यीशु मसीह को अपने लोगों के अपराधों और अधर्मों के कारण सताया जायेगा। "अपराध" हृदय में पाया जाने वाला एक विद्रोह है जिसे परमेश्वर की शिक्षा और आज्ञाओं के लिए अनजान अवज्ञा में व्यक्त किया गया है। "अधर्म" का अर्थ परमेश्वर की सत्य की बातों को आधे सत्य या झूठी बातों में तोड़ना और मरोड़ना है। यीशु मसीह ने अपने प्राण को लोगों को सुधारने के लिए नहीं बल्कि हमारे पापों का मूल्य चुकाने के लिए दिया। वह न केवल हमारे पापों के कारण मरा बल्कि हमारे बदले मरा! "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया" (1 पतरस 2:24)। उसी को उसने हमारे लिये "पाप ठहराया", ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह "परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ" (2 कुरिन्थियों 5:21)। उसने हमारी जगह ले ली! जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती (यूहन्ना 5:24), परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 3:24,28), जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह उसके बदले क्रूस पर मारा गया, उसका परमेश्वर से मेल-मिलाप हो जाता है (1 पतरस 3:18)। परमेश्वर विश्वासियों को शान्ति देता है (रोमियों 5:9-10) और इस प्रकार वे प्रभु में शान्ति पाते हैं (रोमियों 5:1) और अन्य लोगों के साथ शान्ति बनाये रख सकते हैं (इफिसियों 2:14-15)। परमशेवर की शान्ति "परमेश्वर के उद्धार के पूर्ण कार्य, आशीष और आनन्द को लाती है।" "परमेश्वर की चंगाई" सभी प्रकार के संकट, दु:ख, परेशानी और पीड़ा से छुटकारा दिलाती है।

पाप का आधार और निष्कर्ष "परमेश्वर से अलग होना" और "आत्म-निर्भरता" है, जिसमें एक व्यक्ति ने विद्रोह और अपराध के द्वारा जानबूझकर अपने जीवन को चरवाहे से और परमेश्वर की योजना के अलग कर लिया है और स्वयं को सही साबित करने के लिए परमेश्वर के वचन को अपने अनुसार मोड़ लिया है।

"परमेश्वर ने जिस कार्य को करने से मना किया है वही करना" या "उसकी आज्ञा का पालन न करना" पाप का फल है। यहोवा ने यीशु मसीह पर "हमारे" पापों का बोझ डाल दिया! उसने हमारे अपराध, दण्ड और दु:ख को स्वयं पर ले लिया ताकि हम अनुग्रह से उसकी परिपूर्ण धार्मिकता और पवित्रता प्राप्त कर सकें!

घ. गद्यांश 4 - यशायाह 53:7-9
यीशु मसीह पीड़ा सहने के लिये स्वयं को शून्य कर देगा।

भविष्यद्वाणी।

गद्यांश 4 यह बताता है कि किस प्रकार पूर्ण रीति से मसीहा (यीशु मसीह) ने परमेश्वर की योजना के सामने स्वयं को शून्य कर दिया : "पीड़ा सहने के द्वारा उद्धार।" 7 से 10 पदों में, भविष्यद्वक्ता अब देश में विश्वासियों के प्रतिनिधि (जो कि एक याजक के रूप में) के रूप में नहीं बोलता है, बल्कि वह परमेश्वर के उद्धार की योजना का प्रचार करता है (जो कि एक भविष्यद्वक्ता के रूप में है)!

1. आयत 7 एक भेड़ के बच्चे के रूप में उसकी पीड़ा का वर्णन करती है।

53:7 - अनुवाद : "वह सताया गया (oppressed, tyrannised) (Hebrew; ngs), तौभी वह सहता रहा (Hebrew: >anah Pu) और अपना मुँह (Hebrew: peh) न खोला (Hebrew: ptch, Pi); जिस प्रकार भेड़ (Hebrew: seh) वध (Hebrew: tebach) होने (Hebrew: jbl, Hi), के समय या भेड़ी (Hebrew: rahel) ऊन कतरने के समय (Hebrew: gazaz) चुपचाप शान्त (Hebrew: <alam, Ni), रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुँह न खोला (Hebrew: ptch)।"

आयत 7 बताती है कि किस प्रकार मसीहा (यीशु मसीह) को सताया जायेगा। उसको मिस्र के दासों के समान सताया

जायेगा (निर्गमन 3: 7; यशायाह 9: 3)। अन्याय के विरुद्ध विद्रोह किये बिना उसने स्वयं को अपमानित होने दिया (1 पतरस 2:23)। अपने मुँह को खोले बिना उसका भेड़ के समान वध कर दिया जाएगा। उसे स्वयं के बचाव के बिना झूठे आरोपों में, सार्वजनिक ठट्ठे के द्वारा और नग्न अवस्था में क्रूस पर चढ़ाया जायेगा। इसी प्रकार अपने सताए जाने के द्वारा वह परमेश्वर की योजना को पूरा करेगा।

2. आयत 8 एक अपराधी के रूप में उसकी मृत्यु का वर्णन करती है।

53:8 - अनुवाद : "अत्याचार (Hebrew: >otser) करके और दोष (Hebrew: mishpat) लगाकर वे उसे ले गए (Hebrew: lqch) उस समय के लोगों में से (Hebrew: dor) किस ने इस पर ध्यान दिया (खोज)[2] कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया (Hebrew: gzz, Ni)? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार (Hebrew: neg>a) पड़ी।"

आयत 8 बताती है कि किस प्रकार मसीहा की मृत्यु होगी। उसकी मृत्यु शान्तिपूर्ण तरीके से (बुढ़ापे में) नहीं होगी, लेकिन एक अपराधी के रूप में होगी, जिसका दण्ड एक अधर्मी जाति और एक सांसारिक महासभा (हन्नाह और कैफा और यहूदी रोमी अधिपत्र, पिलातुस के साथ यहूदी महासभा) ने सुनाया। लोगों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के बाद उसे गतसमनी से, व्याकुलता के साथ क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जाया जायेगा। महत्वपूर्ण बात परमेश्वर की परीक्षा है जिसमें यीशु मसीह पापियों के लिए आश्वासन के रूप में प्रगट होता है। इस्राएल ने उसे अस्वीकार कर दिया और अब उसे उनसे अलग कर दिया जायेगा। बचाव की उपस्थिति से इस्राएल अब वंचित हो चुका था।

उसकी मृत्यु और गाढ़े जाने के बाद का उसका "निवास स्थान" या जगह अभी तक अज्ञात है (यशायाह 38:12) (9 आयत)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह शिकायत की कि इस्राएल के लोगों ने अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया, उसकी निन्दा की और उसे मार डाला और मसीह उस जगह गया जिसे कोई नहीं जानता था (लूका 23:43,46)। पुराने नियम के समय में जब तक यीशु के चेले यीशु की मृत्यु का शोक नहीं मनाते, तब तक मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में थोड़ा ही ज्ञान था। पुराने नियम के समय में लोगों को मृतकों में से जिलाया तो गया था (बाद में फिर से मरने के लिए), लेकिन किसी का भी पुनरुत्थान नहीं हुआ था (फिर से न मरने के लिए)! ज़ोर इस तथ्य पर है कि उसकी मृत्यु के बाद उसे इस्राएल की दृष्टि से दूर कर दिया गया था। उसे पृथ्वी के जीवित प्राणियों के बीच में से ऐसे अलग किया गया जैसे कि कोई गिरा हुआ पेड़ (2 राजाओं 6:4)।

3. आयत 9 में उसके गाढ़े जाने का वर्णन एक धनवान के रूप किया गया है।

53:9 - अनुवाद : "और उसकी कब्र (Hebrew: qeber) भी दुष्टों (Hebrew: rasa) के संग ठहराई गई (Hebrew: ntn, Ni), *[यह भविष्यद्वाणी वह मोड़ है : जहाँ उसके न्याय और महिमान्वित होने का विवरण पूरी तरह से बदल जाता है]* और मृत्यु (Hebrew: maut) के समय वह धनवान (Hebrew: >asir) का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव (Hebrew: chamas) न किया था और उसके मुँह से कभी छल (Hebrew: mirmah) की बात नहीं निकली थी" (तुलना करें : 1 पतरस 2:22-23)।

आयत 9 बताती है कि किस प्रकार मसीह को गाढ़ा जायेगा। अन्यायपूर्ण याजकों ने मसीह को एक अपमानजनक स्थान में गाढ़ने की योजना बनाई थी, जैसा कि एक अपराधी के साथ किया जाता था। इस्राएल में एक अपमानजनक स्थान में गाढ़ा जाना एक बहुत ही भयानक बात थी (यशायाह 14:18-20; यिर्मयाह 8:1-2; यिर्मयाह 36:30)। परन्तु परमेश्वर ने उनकी बुरी योजना को एक तरफ रख दिया और उसे एक धनवान व्यक्ति की कब्र में आदर के साथ गाढ़ा गया, जिसे चट्टान में खोदा गया था (तुलना करें यशायाह 22:16)।

परिपूर्णता।

उसके सम्पूर्ण जीवन में उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया, कुछ लोग उसे भरमाने वाला कहते थे और कुछ लोग कहते थे कि उसमे दुष्टात्मा है और वह पागल है (यूहन्ना 7:12,20; यूहन्ना 8:48; यूहन्ना 10:19-20)। फिर भी वो गाली सुनकर गाली नहीं देता था। उसकी परीक्षा के दौरान उसे अपशब्द कहे गए और उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया। जो उसे सताते थे उन्हें वह कभी भी धमकी

नहीं देता था (1 पतरस 2:22-23)! नम्रता के साथ उसने स्वयं के साथ दुर्व्यवहार होने दिया जिसने उसे विचित्र बनाया।

उसने सब

[2] यशायाह 53:8 (jeshocheach)? BSI "यहाँ उस समय के लोगों में से किसके विषय में बात हो रही है?" RSV "Who in his generation considered?" LB "But who of the people in that day realised? ESV "As for his generation, who considered?"

लोगों के सामने नग्न हालत में क्रूस पर चढ़ाये जाने वाले अपमान, ठट्ठे और अस्वीकृति के सामने स्वयं को शून्य कर दिया। एक बार भी उसने स्वयं को बचाने का प्रयत्न नहीं किया। फसह के मेम्ने (निर्गमन 12:3) और यशायाह 53 के मेम्ने ने नए नियम में यीशु को एक "परमेश्वर के मेम्ने" के रूप में दर्शाने की नींव को कायम किया (यूहन्ना 1:19; 1 पतरस 1:19)।

गतसमनी में व्याकुल भरी पीड़ा और लोगों द्वारा दुर्व्यवहार और अन्यायपूर्ण महायाजकों द्वारा उसकी निन्दा के बाद, यीशु मसीह को दो डाकुओं के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, ताकि सभी को यह लगे कि यीशु भी एक अपराधी डाकू है। उसकी वास्तव में मृत्यु हुई, क्योंकि जीवित प्राणियों से उसे अलग किया गया।

यीशु को, अरिमतिया के युसूफ द्वारा एक धनवान व्यक्ति की कब्र में गाढ़ा गया (मत्ती 27:57-60)। यह एक महान सम्मान की बात थी! उसको आदर सम्मान के साथ गाढ़ा जाना यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने अपने दास, यीशु मसीह को निर्दोष माना! उसने कोई गलत काम नहीं किया, उसने कोई हिंसा की बात नहीं की और न ही उसने कोई झूठ बोला, वह पूरी तरह निर्दोष था और उसके शब्द व काम भी निर्दोष थे!

यद्यपि यीशु मसीह स्वभाव में निर्दोष और निष्कलंक था, उसने स्वेच्छा से स्वयं को शून्य करके हमारी जगह (प्रतिस्थापन पीड़ा) (तुलना करें यूहन्ना 10:17-18) पापों का बलिदान दिया!

ङ. गद्यांश 5 - यशायाह 53:10-12
यीशु मसीह एक महिमान्वित वंश प्राप्त करेगा।

भविष्यद्वाणी

गद्यांश 5 में परमेश्वर का मसीह के लिए उपहार और उसकी अंतिम महिमा का वर्णन किया गया है। आयत 10 में भविष्यद्वक्ता राष्ट्र के विश्वासियों के प्रतिनिधि (एक याजक के रूप में) के रूप में नहीं बोल रहा है, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोल रहा है जो उद्धार की परमेश्वर की योजना (एक नबी के रूप में) की घोषणा करता है। 11वीं और 12वीं आयत में परमेश्वर स्वयं बात कर रहा है।

1. **आयत 10 उसकी पीड़ा का वर्णन परमेश्वर की योजना के रूप में एक प्रायश्चित के बलिदान और जी उठने के द्वारा करती है।**

53:10 - अनुवाद : "तौभी यहोवा को यही भाया (Hebrew: chpts, Q) कि उसे कुचले (Hebrew: dk<, Ni)(उसी ने उसको रोगी (Hebrew: chlh, Hi) कर दिया; जब तू (the Messiah) उसका प्राण (Hebrew: nefesh) दोषबलि (Hebrew: <asham) करे (Hebrew: sim, Q), तब वह अपना वंश (Hebrew: zer>a) देखने पाएगा (Hebrew: r<ah, Q), वह बहुत दिन (Hebrew: <arak, Hi) जीवित रहेगा; उसके हाथ से (Hebrew: tslch, Q) यहोवा की इच्छा पूरी (Hebrew: chefets) हो जाएगी।"

आयत 10 में मसीहा के उद्धार के कार्य का पूरा वर्णन है। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर की अनन्त योजना का हिस्सा थे।

सवाल यह है कि मसीहा को यह सब क्यों सहना पड़ा।

सवाल यह है कि जब वह निर्दोष था, तो मसीहा को यह पीड़ा क्यों सहनी पड़ी? इसका उत्तर यह है कि उद्धार की परमेश्वर की असाधारण योजना को इसी तरह पूरा होना था! मसीहा की पीड़ा परमेश्वर के उद्धार की योजना का एक अभिन्न अंग था (1 पतरस 1:19-20)। यीशु मसीह को मरना पड़ा (लूका 24:26; मत्ती 26:54), क्योंकि यही एकमात्र तरीका था जिसके द्वारा पापों का प्रायश्चित किया जा सकता था और क्योंकि इसके द्वारा पुराने नियम में की गयी भविष्यद्वाणी को पूरा होना था! "यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले।" मानव अन्याय के पीछे (यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाई में) उद्धार की परमेश्वर की योजना छिपी थी (5-6 भी देखें)! पाप के लिए दोषबलि चढ़ाना पाप के लिए प्रायश्चित के बदले दण्ड है (लैव्यव्यवस्था 4:2,4,15,24,29)। "मसीहा को पहले अपनी आत्मा (अपने व्यक्तित्व को,

स्वयं को, अपने जीवन) को एक दोषबलि के रूप में चढ़ाने की आवश्यकता थी।" दोषबलि परमेश्वर के विरुद्ध किये गए विश्वासघात के प्रायश्चित के लिए चढ़ाई जाती है (लैव्यव्यवस्था 5:15-17; लैव्यव्यवस्था 6:2-3)। पुराने नियम में प्रायश्चित के बदले बलि देना अनिवार्य था, लेकिन मसीहा की दोषबलि पूरी तरह से स्वैच्छिक थी। लोगों के लिए ऐसा सोचना असम्भव था!

- मानव इतिहास के स्तर पर, यीशु मसीह, जगत के महायाजकों की अन्यायपूर्ण निन्दा के कारण मर गया।
- परन्तु परमेश्वर के उद्धार के स्तर पर, उसे स्वयं महायाजक परमेश्वर द्वारा पूरी दुनिया के पाप की पूरी निन्दा की वजह से मारा गया!

प्रायश्चित के उसके बलिदान के तीन परिणाम थे :

- सबसे पहले वह (मसीहा), मूल/वंश, जो कि "आत्मिक वंश" हैं, उन्हें देखने पायेगा "वे बहुत से लोगों को धर्मी ठहराएगा" (आयत 11) और वह आशीष पाएँगे (देखें उत्पत्ति 12:3)।
- दूसरी बात, कि "वह बहुत दिनों तक जीवित रहेगा", अर्थात्, वह मरे हुओं में से जी उठने के बाद युगानुयुग जीवित रहेगा (प्रकाशितवाक्य 1:18 देखें)! ये उल्लेखनीय है, क्योंकि पुराने नियम में मृतकों के जी उठने के विषय में बहुत कम लिखा गया है (तुलना करें यशायाह 26:19)।
- तीसरा, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद मसीहा का एक बड़ा कार्य होगा। "उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी होगी।" "परमेश्वर का आनन्द/इच्छा उसकी पीड़ा (आयत 10अ) का सबसे गहन कारण है, लेकिन साथ ही साथ उसके अद्भुत उद्धार के कार्य का भी कारण है (आयत 10ब)!" इस दर्शन की बात का उल्लेख आयत 11 में किया गया है। उसके हाथ से, अर्थात्, उसके (प्रभु शक्ति, ज्ञान और प्रेम) द्वारा उद्धार की परमेश्वर की योजना लगातार पूरी होती चली जाएगी! यीशु मसीह अपने आत्मिक वंश/पीढ़ी जो अनन्त जीवन को पाने के योग्य हैं, उन्हें बढ़ाएगा (देखें यूहन्ना 12:32)।

2. आयत 11 में परमेश्वर के महायाजक के रूप में उसके कार्य का वर्णन किया गया है जिसमें वह अपने पुनरुत्थान के बाद कई लोगों का न्याय करेगा।

53:11 - अनुवाद : "वह अपने प्राणों का दु:ख उठाकर (Hebrew: >amal) उसे देखेगा Qumran adds: the light of life) और तृप्त होगा (Hebrew: sabe>a, Q); अपने ज्ञान के द्वारा (Hebrew: da>at) मेरा धर्मी दास (Hebrew: tsadiq abdo) बहुतेरों को (Hebrew: rabim) धर्मी ठहराएगा (Hebrew: tsdq, Pi); और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा (Hebrew: sbl, Q)।"

आयत 11 मसीह के उद्धार के कार्य का वर्णन करती है। आयत 11-12 में परमेश्वर स्वयं बात कर रहा है। मसीहा की पीड़ा न केवल उसके शरीर को प्रभावित करती है, बल्कि उसकी आत्मा (सम्पूर्ण अस्तित्व) (उसे कुचला जायेगा और पीड़ित बनाया जाएगा) को भी प्रभावित करती है। मसीहा अपनी पीड़ा और उद्धार का फल पायेगा और वह उसे तृप्त और ताजा करेगी।

यह वाक्यांश "मसीह के विषय में ज्ञान" नहीं देता बल्कि "उसके ज्ञान के विषय" में बताता है। परमेश्वर के अपने आत्मिक "ज्ञान" और दर्शन (उद्धार की योजना) (तुलना करें : होशे 4:6; मलाकी 2:7; यशायाह 11:2; यशायाह . 50:4, उसकी भविष्यद्वाणी का कार्यालय) के द्वारा मसीहा बहुत से लोगों का न्याय करेगा।

मसीहा प्रभु का दास ("मेरे सेवक") होगा और अपने जीवन, वचनों और कार्यों के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को पूरी करेगा। यद्यपि जगत के अन्यायी महायाजकों ने उसे "अधर्मी" कहा होगा, परन्तु यहोवा ने उसे स्पष्ट रूप से "धर्मी" कहा। वह सम्पूर्ण धार्मिकता के साथ "अधर्मियों" का इस्राएल के देश में और पूरी धरती का न्याय करेगा, परन्तु "आत्मा में कंगालों" के लिए "जो कुछ भी अच्छा है", वह वही करेगा (यशायाह 11:4-5)!

मसीहा की धार्मिकता इस आधार पर होगी कि क्यों वह "बहुत से" लोगों को, जो "महान जन या कई लोगों को, परमेश्वर के लोगों (तुलना करें : दानिय्येल 9:27, दानिय्येल 11:33; दानिय्येल 12:3; रोमियों 5:19) का न्याय करेगा! "बहुत से" की तुलना एक के रूप में की गयी है : एक के विपरीत (मसीहा) बहुत से हैं, (एक बड़ी भीड़ जिसे कोई भी नहीं गिन सकता) (प्रकाशितवाक्य 7: 9)। "जैसा एक मनुष्य (आदम) के आज्ञा न मानने से बहुत (समस्त लोग) लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य (यीशु मसीह) के आज्ञा मानने से बहुत लोग (मसीह में सभी विश्वासीगण) धर्मी ठहरेंगे" (रोमियों 5:19)।

क्योंकि "वह उनके अधर्म का बोझ अपने ऊपर उठा लेगा"। केवल मसीह ही "बहुत से" लोगों के पापों का बोझ अपने

ऊपर उठा सकता है। बहुत लोगों के न्याय का आधार मसीहा (यहोवा के दास) का सबके बदले में दिया गया बलिदान है। मसीह के बिना उद्धार नहीं है और उसके बिना कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता (लूका 10:16 यूहन्ना 14:6 प्रेरितों 4:12)!

- आयत 11 भविष्यद्वाणी के कार्य को (परमेश्वर द्वारा प्रगट किया गया मसीह का ज्ञान)।
- और उस के याजकीय कार्य को दर्शाता है (मसीह का बलिदान जो अधर्मों को दूर करता है)।
- आयत 12 उसके राजकीय कार्य के बारे में बताती है (लूट में मसीह में छुड़ाये गए विश्वासियों की एक बड़ी भीड़ शामिल है)।

3. आयत 12 उसकी पीड़ा के बदले परमेश्वर से मिलने वाले उसके ईनाम का वर्णन करती है अर्थात् "बहुत से" लोग जिनका वह न्याय करेगा।

53:12 - अनुवाद : "इस कारण (Hebrew: laken) मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूँगा (Hebrew: chlq), और वह सामर्थियों (Hebrew: >atsum) के संग (Hebrew: chlq) लूट (booty, loot) (Hebrew: shalal) बाँट लेगा (क्योंकि (Hebrew: tachat <asher) उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया (Hebrew: >rah, Ni), वह अपराधियों (criminals) के संग गिना गया (Hebrew: mnh, Ni), तौभी उसने बहुतों के पाप : (Hebrew: chet<a) का बोझ उठ लिया (Hebrew: ns<a, Pi), और अपराधियों के लिये विनती करता है (Hebrew: pg>, Hi)।"

आयत 12 में मसीहा के वंश का वर्णन किया गया है जिसमें कई छुड़ाये हुए लोगों को शामिल किया गया है।

ऐसा नहीं कहा गया है कि वह कई (शक्तिशाली/बलशाली) लोगों के साथ लूट को विभाजित/साझा करेगा, क्योंकि उन्हें "पराक्रमी लोगों" (दुनिया में) के बराबर नहीं देखा जा सकता है। "बहुत से" में क्रिया का अर्थ है "उसका हिस्सा प्राप्त करना" (अय्यूब 27:17)। यहाँ इस वाक्यांश का यह मतलब नहीं है कि मसीहा को केवल उसके वंश के रूप में कुछ लोगों का हिस्सा मिलेगा, बल्कि इसके विपरीत कि उसे "बहुत से" उसके वंश के रूप में प्राप्त होंगे (रोमियो 5:19 देखें)! क्योंकि मसीहा "बहुत से" लोगों के अधर्मों को अपने ऊपर उठा लेगा और इस तरह "कई" (11वीं आयत) लोगों का न्याय करेगा, यहोवा उसे "बहुत से" लोगों को लूट (प्रतिदान, लूट) (उत्तराधिकार, इनाम) के रूप में देगा!

उसके प्रायश्चित के बलिदान की पीड़ा उसके महिमान्वित होने का कारण होगी! वह अपनी आत्मा को उण्डेलेगा (उत्पत्ति 9:4; लैव्यव्यवस्था 17:11), उसकी गिनती अपराधियों (डाकुओं) (लूका 22:37) के बीच होगी और वह इन "अपराधियों" के लिए जो उसे मार डालेंगे, उनके लिए प्रार्थना करेगा (लूका 23:34)।

परिपूर्णता

उसकी मृत्यु और जी उठने के माध्यम से यीशु मसीह अपने आत्मिक वंश को बढ़ायेगा (यूहन्ना 12: 24,32)।

- यद्यपि यीशु मसीह अपने ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार हमेशा के लिए जीवित है और कभी नहीं मरेगा : "मैं युगानुयुग जीवता हूँ" (प्रकाशितवाक्य 1:18),
- अपने मानव स्वभाव के अनुसार वह मर गया और उसे पुनर्जीवित किया गया। मृतकों में से पुनरुत्थान के बाद, उसका मानव स्वभाव अब भी हमेशा के लिए जीवित है।

यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर सृष्टि में और सभी चीजों में अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है (इफिसियों 1:9-10)।

- क्योंकि केवल यीशु मसीह ही "धर्मी है" जिसने परमेश्वर की सम्पूर्ण व्यवस्था (सच्चाई) को पूरा किया है (तुलना करें : मत्ती 5:17; रोमियो 10:4),
- केवल वह "बहुत से" लोगों का न्याय करेगा जिन्होंने "परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह की धार्मिक व्यवस्था को प्राप्त किया है" (रोमियों 5:17-19)!

मसीहा, यीशु मसीह को अपराधियों (डाकुओं) (लूका 22:37) के बीच गिना गया और स्वेच्छा से उसने अपने प्राण को दिया (यूहन्ना 10: 11,18)। वह महायाजक बन गया है जिसमें वास्तव में परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएँ हाँ के साथ हैं (तुलना करें : 2 कुरिन्थियों 1:20)! वह "जैतून के पेड़" (परमेश्वर के लोग जो सभी राष्ट्रों के विश्वासी जन हैं) का "मूल" ("कुल बीज") है (उत्पत्ति 22:17-18; गलातियों 3:16) (रोमियों 11:17-18)। वह सामर्थी राजा बन गया है, जो अब "बहुत से" लोगों का न्याय करके उन्हें उचित ठहराएगा जो अब उसके राज्य के वारिस हैं (तुलना करें : 1:5-6; 5:9-10)। वे सभी लोग जिनका वह न्याय करेगा और उन्हें उचित ठहराएगा, वे सभी उसकी निज प्रजा हैं। वह

महान मध्यस्थ और महायाजक बन गया है जो न केवल उन लोगों के लिए प्रार्थना करता है जिन्होंने उसे मार डाला (लूका 22:34), बल्कि हमारे लिए भी प्रार्थना करता है (बच्चे, प्रजा) (यूहन्ना 17:20; इब्रानियों 7:25)।

यशायाह 53 की व्याख्या सबसे स्पष्टरूप से नए नियम में प्रेरितों के काम 8:28-35 और 1 पतरस 2:22-25 की पुस्तक में की गयी है। लेकिन यशायाह 53:10 की तुलना मत्ती 20:28 से और यशायाह 53:4,7 की तुलना यूहन्ना 1:29 से करें। मसीहा, यीशु मसीह को दु:ख उठाने के कारण अपनी महिमा में प्रवेश करना पड़ा (लूका 18:31-33; लूका 24:25-27). हालाँकि यशायाह 49:3 में "यहोवा के दास" को "सच्चे इस्राएल" के रूप में चित्रित किया गया है (जैसे कि भविष्यद्वक्ता इस्राएल राष्ट्र की पीड़ा के बारे में बात कर रहा है), यह वास्तव में इस्राएल राष्ट्र को चित्रित नहीं कर रहा है, बल्कि यहाँ परमेश्वर के दास की तुलना इस्राएल राष्ट्र से की गयी है। इस्राएल राष्ट्र अब बिना परमेश्वर का है। उसने मसीहा से घृणा की और उसे स्वीकार नहीं किया, भले ही वह पूरी तरह से निर्दोष है! यहोवा के दास का स्वभाव जो भी इस्राएल में कभी देखा गया था उससे बढ़कर है! वह परमेश्वर के उद्धार की योजना का वही मध्यस्थ है जो इस्राएल को पाप और अपराध से बचाएगा!

कलीसिया परिशिष्ट 2

1.	प्रार्थना	*(मृत्यु उपरान्त जीवन)*

मृत्यु उपरान्त जीवन का सिद्धान्त

(1) स्वर्गीय वस्तुएं।

यूहन्ना 3:13 में यीशु ने कहा "कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। स्वर्गीय वस्तुएं वास्तव में खास तौर पर परमेश्वर की अनन्त उद्धार की योजना है यीशु जिसका वर्णन 3:13-18 में करते हैं। केवल परमेश्वर का पुत्र ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा है और केवल वही उन निर्णयों के बारे में जानता है जो स्वर्ग में लिए गये हैं। अत: सारी जातियों के लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना और उस योजना को यीशु मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान द्वारा पूरा करना पूरी तरह से मनुष्य की समझ से तब तक परे है जब तक कि परमेश्वर स्वयं मनुष्यों पर अपनी योजना को प्रगट न कर दे। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग से उतरा और केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग पर चढ़ा था(इफिसियों 4:9-10)[1]। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर पिता की उद्धार के निमित्त योजना को जानता है। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर के उद्धार की योजना को प्रगट करता वरन उसे पूरा भी करता है। (उदाहरण मत्ती 11:25-27; प्रकाशितवाक्य 5:1-7)

(2) बाइबल हमें स्पष्ट तौर पर मृत्यु उपरान्त जीवन के बारे में बताती है।

- बाइबल हमें सिखाती है कि मनुष्य एक "जीवित प्राणी" है(उत्पत्ति 2:7) जिसमें प्रत्यक्ष देह और अदृश्य आत्मा शामिल होती है।
- मनुष्य की आत्मा अविनाशी है और मनुष्य के शरीर में वास करती है। परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में अनन्त काल का ज्ञान रख छोड़ा है। (सभोपदेशक 3:11)
- मृत्यु के पश्चात मसीहियों की आत्मा तुरन्त स्वर्ग में चली जाती है(फिलिप्पियों 1:23);वे पूरी तरह से दूसरों को लेकर सचेत होते हैं और उन्हें (मसीह) पहिचानते हैं और अब वे यीशु मसीह की मानव आत्मा जैसे बन गये हैं(1यूहन्ना 3:2)। लेकिन मृतक व्यक्ति की आत्मा धरती पर रहने वाले लोगों के साथ किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं साध सकती। (सभोपदेशक 9:5,6,610)।
- यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मसीही लोगों की देहों का पुनरूत्थान हो जाएगा और उनकी देह रूपान्तरित होकर मसीह की देह के समान बन जाएगी। (फिलिप्पियों 3:21)।

(देखें मैनुएल 6, अध्याय 23 और 5- गुज़रे पुरखाओं से सम्बन्ध)

मृत्यु उपरान्त मनुष्य का क्या होता है के सन्दर्भ में विभिन्न बाइबलरहित सिद्धान्तों का खण्डन ।

क . भूगर्भ अर्थात अधोलोक सम्बन्धी सिद्धान्त

1. भू-गर्भ(अधोलोक) सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

भू-गर्भ का सिद्धान्त सिखाता है कि भूगर्भ, जिसे पुराने और नये नियम में "अधोलोक" के नाम से जाना जाता है वह, विश्वासी या गैर विश्वासी सभी मृतकों का निवास स्थान है। भू-गर्भ सिद्धान्त दो प्रारूपों में विद्यमान है:

(1) प्रथम भूगर्भ (अधोलोक) सिद्धान्त (एक उदासीन स्थान)

जब कोई धर्मी या दुष्ट जन मरता है, तो दोनों की ही देह और आत्माएं(या प्राण)ज़मीन के नीचे यथार्थ स्थान में उतर जाती हैं, जिसे अधोलोक भी कहा जाता है। यह स्थान धरती के गर्भ में कहीं छुपा उदासीन स्थान है। यह एक अन्धकार और एक विस्मृति का स्थान है, जहां पर उनको एक नियति के तहत रखा गया है, जो पृथ्वी पर विद्यमान जीवन का एक काल्पनिक आभास है। वे अधोलोक को ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित करते हैं जहां पर विवेक, क्रिया कलाप और कोई आनन्द नहीं है। वे विश्वास करते हैं कि अधोलोक किसी को पुरस्कार या किसी को दण्ड देने का स्थान नहीं है।

दूसरे धर्मों का भी यही विश्वास है। वे विश्वास करते हैं कि लोग जिस प्रकार से पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करते हैं ठीक उसी प्रकार से वे अधोलोक में भी जीवन व्यतीत करते हैं। वे विश्वासी करते हैं कि मृतक लोगों को अधोलोक में जीवन यापन करने के लिए धन, घर, भोजन, कपड़े और अन्य विलासप्रिय वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, और ये सारी वस्तुएं उन्हें धरती पर रहने वाले उनके रिश्तेदारों के द्वारा उन्हें मुहैय्या करायी जानी चाहिए।

(2) दूसरा भू-गर्भ सिद्धान्त (एक विभाजित स्थान)

भूगर्भ अर्थात अधोलोक कोई उदासीन स्थान नहीं है वरन इसे दो भागों में बांटा गया है, अच्छे लोगों के लिए नियुक्त स्थान को फिरदौस और बुरे लोगों के लिए नियुक्त स्थान को गेहेन्ना कहा जाता है। न्याय के दिन तक भले लोगों को उनके किये के अनुसार फिरदौस में थोड़ा प्रतिफल का आनन्द उठाने का अवसर मिलता है जबकि दुष्ट लोगों को उनके बुरे कामों के अनुसार गेहेन्ना में छोड़ा दण्ड मिलता है। एक समूह के लोग मानते हैं कि फिरदौस केवल यहूदियों के लिए ही है। जबकि दूसरा समूह मानता है कि केवल वे यहूदी ही फिरदौस के भागीदार होते हैं जो व्यवस्था का पालन करते हैं अन्यथा बाकि सभी यहूदी और अन्यजाति के लोग गेहेन्ना के भागीदार होगें। यहूदी विश्वास करते हैं कि आनेवाला मसीह यहूदियों को अधोलोक से छुटकारा देगा अर्थात वहां से बाहर निकालेगा जबकि अन्यजाति के सभी लोग अर्थात गैर-यहूदी हमेशा के लिए उसी अन्धकारमय अधोलोक में ही रहेगें।

मसीहियों का एक समूह यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह के स्वर्गारोहण से पूर्व, सारे विश्वासी फिरदौस में गये, लेकिन उसके स्वर्गारोहण के बाद वे स्वर्ग में जाते हैं।

अधोलोक सम्बन्धी दोनों ही सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं हैं।

2. अधोलोक सम्बन्धी बाइबल आधारित शिक्षाएं।

बाइबल में "शिलोह" या "हेड्स" का अर्थ बाइबल के अनुच्छेदों में हमेशा एक समान नहीं होता है। यह शब्द मृत्यु के तीन अलग अलग पहलुओं को दर्शाता है।

- प्रतीकात्मक रूप में यह मृत्यु की अवस्था को दर्शाता है।
- यर्थाथ रूप में यह मृत्यु के स्थान को दर्शाता है, जो कि कब्र हो सकती है जिसमें सभी मृतकों की देह को रखा जाता है।
- वास्तव में यह नरक को दर्शाता है, अर्थात वह स्थान जहां केवल मरे हुए दुष्ट लोगों की आत्माओं को रखा जाता है।

यह बाइबल के अनुच्छेद पर निर्भर करता है कि वहां पर उस शब्द का अर्थ क्या है। लूका 16:19-31 के सन्दर्भ में, इस शब्द का मतलब केवल नरक ही हो सकता है।

(1) कई बार "शिओल" या "हेड्स" शब्द (अर्थात अधोलाक) का अर्थ मृत दशा होती है।

शिओल या हेड्स देह और आत्मा के विभाजित होने की दशा को दर्शाते हैं। **अधोलोक के फाटक के रूप में मृत दशा।** बाइबल में अधिकतर मृत्यु की दशा को मृत्यु के *स्थान* या *क्षेत्र* के रूप में सम्बोधित किया गया है। यह बहुत से फाटकों वाले दृढ़ गढ़ के रूप में प्रदर्शित किया गया है, जिसके फाटकों को केवल मसीह ही खोल सकता है(मत्ती 16:18;प्रकाशितवाक्य 1:18)। यह दृष्टिकोण आम तौर पर कब्र को दर्शाता है (अर्थात मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है), जिसमें मृत्यु उपरान्त सभी मृतक लोगों की देह को रखा जाता है(सभोपदेशक 3:19-21)।"यहोवा *मारता* है और *जिलाता* भी है, वही *अधोलोक में उतारता* और उस से *निकालता* भी है(1शमूएल 2:6)।" मृतक दशा में अधोलोक में उतरने को हम बाइबल के निम्नलिखित अनुच्छेदों में भी पाते हैं: अय्यूब 14:13-14; 17:13-14;भजन 89:48;होशे 13:14; प्रेरितों 2:27,31; और विशेषतौर पर प्रकाशितवाक्य 6:8; 20:28 में।

बाइबल के कुछ अनुच्छेद,जैसे कि भजन 16:10,30:3, 49:15 और 89:48 आत्मा के अधोलोक में जाने या अधोलोक में रहने के बारे में बात करते हैं। लेकिन यह बात ज्ञात है कि इब्रानी भाषा में, व्यक्ति सर्वनाम "मेरी" का इस्तेमाल "*आत्मा*"(इब्रानी:नेफश) शब्द के साथ किया जाता है, जो कि एक *प्रतीकात्मक बोध* है और "*मेरी या मेरे*" सर्वनाम के समान है। उदारहण के तौर पर, भजन 89:48 में लिखा है,"कौन पुरूष सदा अमर रहेगा? क्या कोई *अपने प्राण को* अधोलोक से बचा सकता है?" इसका अर्थ है "कौन ऐसा व्यक्ति ऐसा है जो *अपने प्राण* को मृत्य या मृत्यु की शक्ति से बचा सकता है?" नीतिवचन 23:13-14 में लिखा है कि यदि आप अपने बच्चे को ताड़ना देते हैं तो आप उसे अधोलोक में जाने से बचा लेते हैं। इसका अर्थ है कि अगर बच्चों को उचित तरीके से ताड़ना दी जाए तो बच्चा नरक में नाश होने या धरती पर रहते हुए मृतक दशा से बच जाएगा।

1."मृत्योपरान्त" अनुभव जिसमें लोग इस बात का दावा करते हैं कि वे स्वर्ग या नरक में गये और फिर स्वर्ग या नरक की स्थिति का वर्णन करने लगते हैं, सब झूठ है! मसीह लोगों के दर्शन या स्वपन में प्रगट होता है। लेकिन केवल यीशु ही जानता है कि स्वर्ग कैसा है(मत्ती 11:27;यूहन्ना 3:13)।

मृत अवस्था को एक अन्धकार और निराशाजनक स्थान के रूप में माना जाता है। पुराने नियम में मनुष्य की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के सन्दर्भ में परमेश्वर का प्रकाशन अधूरा था। कई लोग मृत अवस्था को, विशेषकर मृत देह के कब्र में सड़ने के अन्तराल को एक अन्धकारमय या दु:खद अवस्था के रूप में देखते हैं। अय्यूब 7:9-10,10:19-22, 16:22 और 17:7-16, में अय्यूब मृत्यु के प्रति अपने दृष्टिकोण को प्रगट करता है। अधोलोक को एक मृत अवस्था के रूप में दर्शाया गया है "जहां से कोई वापस(वर्तमान धरती पर) नहीं आ सकता","जो अन्धकारमय और दु:खद आत्माओं का स्थान है","जहां पर केवल कीड़े और सड़ांद है" और यह एक ऐसा स्थान "जहां पर मृतकों को उनकी योजनाओं, उनकी इच्छाओं और उनकी आशाओं समेत फाटकों के पीछे बन्द कर दिया जाता है।"
अय्यूब 14:7-11 में, अय्यूब अधोलोक को "आशाहीन" स्थान के रूप में प्रगट करता है: पौधे और पेड़ सूख जाते हैं, लेकिन प्रति वर्ष उनमें कलियां फूटती है और नये पत्ते व फूल लगते हैं। लेकिन मनुष्य एक बार मरने के बाद फिर कभी इस धरती पर जीवन प्राप्त नहीं करता। मनुष्य का जीवन सीमित(निर्धारित) है और पेड़ पौधों के विपरीत उसे इस धरती पर केवल एक ही बार जीवन जीने का अवसर प्राप्त है।

लेकिन पुराने नियम में हम मृत्यु के बाद भी जीवन की आशा को देखते हैं। तब, अय्यूब 14:12-17 में अय्यूब अपनी आशा प्रगट करता है। क्या यह सम्भव हो सकता है कि मनुष्य को मरने के बाद जीने का एक और मौका मिल जाए? क्या वास्तव में परमेश्वर मृत्यु के लिए समय नियुक्त करेगा और क्या मनुष्य आकाश के टलने तक न जागेगा? क्या परमेश्वर उसे बुलाएगा, क्या उसे गहरी नींद से जगाएगा और अधोलोक से पुन: जीवित करेगा? और फिर वह परमेश्वर द्वारा नये बनने का इन्तजार करेगा और उसकी अभिलाषा बनी रहेगी। यह एक भविष्यसूचक विचार है जो हम तुरन्त बाद में अय्यूब 14:18-19 में देखते हैं। अय्यूब 16:19-21 और 19:25-27 में हम इस भविष्यसूचक विचार को दोबारा देखते हैं। हालांकि अय्यूब नश्वर प्राणी है, लेकिन वह जानता है कि, उसका छुटकारा देने वाला परमेश्वर जीतिवत है। संसार के इतिहास के अन्त में, परमेश्वर इस वर्तमान पृथ्वी पर खड़ा होगा और हर एक उस बात का हिसाब लेगा जो वर्तमान में सक्रिय है। अय्यूब अपने शरीर में बहुत सी यातनाओं को सहने के बाद,वह परमेश्वर को देह से परे अर्थात आत्मा में देख पाया।

अय्यूब का यह भविष्यसूचक विचार बाइबल की अन्य पुस्तकों में और भी अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। वहां पर हम नये नियम के समान मृत्यु के पश्चात भी आनन्दमयी आशाओं को देखते हैं। उदाहरण के तौर पर, हनोक परमेश्वर के साथ चला फिरा और *परमेश्वर ने उसे अपनी उपस्थिति में उठा लिया* (उत्पत्ति 5:22-24)। एलिय्याह बवण्डर के साथ आकाश में उठा लिया गया(2 राजा 2:11)हनोक और एलिय्याह अधोलोक में नहीं गये(इब्रानियों 11:5)! भजन 116:15 में लिखा है "यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उसकी दृष्टि में अनमोल है।" धर्मियों की मृत्यु आपत्तियों से बचने के लिए करते, शान्ति व विश्राम में प्रवेश करने के लिए होती है(यशायाह 57:1-2)। मृत्यु के समय मनुष्य की देह वापस मिट्टी में मिल जाती है जहां से वह आयी थी लेकिन मनुष्य का आत्मा परमेश्वर के पास वापस चला जाता है जो मनुष्य को आत्मा प्रदान करता है(सभोपदेशक 12:7)। धर्मी जन की देह को सुरक्षित रखा जाएगा अर्थात, परमेश्वर उसकी देह के अवयवों को पुनरूत्थान के दिन तक सम्भाल कर रखता है। लेकिन उसकी आत्मा(अविनाशी) परमेश्वर की उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी का आनन्द उठाएगा(भजन 16:9; 17:15; 49:15;73: 24-26; नीतिवचन 14:32; यशायाह 25:8; दानिय्येल 12:3)।

नये नियम में भी मृत्यु के बाद आशा है। परमेश्वर मृतकों का परमेश्वर नहीं लेकिन जीवितों को अर्थात अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है(मत्ती 22:23)। पुराने नियम में लोग एक बेहतर देश अर्थात ईश्वरीय देख की तलाश किया करते थे(इब्रानियों 11:13-16)। नया नियम मसीही के आनन्दपूर्ण बाहरी रूप को अधिक स्पष्ट रीति से प्रगट करता और देहमुक्त दशा में आनन्द को उनके विवेक में सिखाता है। उदाहरण के लिए, जब उनकी देह इस धरती पर नाश हो जाती है तो उनकी आत्मा में उनके पास "परमेश्वर की ओर से एक इमारत होती है अर्थात स्वर्ग में एक घर।" जब मसीही लोग अपने देह से मुक्त हो जाते हैं(अपनी देह से अलग हो जाते हैं), तो उन्हें परमेश्वर की ओर से अपना घर प्राप्त हो जाता है(2 कुरिन्थियों 5:1.8; लूका 16:22-25; 23:43;प्रेरितों 7:59;इफिसियों 3:14-15;फिलिप्पियों 1:21,23; 1 थिस्लुनिकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 6:9,11; 14:13)।

(2) शिओल या हेड्स अर्थात अधोलोक का अर्थ कई बार नरक होता है।
अधोलोक अनन्तकाल के लिए दण्ड दिये जाने का स्थान है।
नरक के रूप में अधोलोक। कई अनुच्छेदों में, मृत्यु और अधोलोक के बीच की समानता को एक वाक्य से बढ़कर एक धमकी और एक चेतावनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है(नीतिवचन 5:5,7:27;9:17-18;15:24;23:14)। इसका अर्थ नरक

के बहुत नज़दीक है। उदाहरण के लिए नीतिवचन 15:24 में लिखा है कि बुद्धिमान के लिए जीवन का मार्ग ऊपर की ओर जाता है, इस रीति से वह *अधोलोक* अर्थात *नरक* में पड़ने से बच जाता है। दुष्ट लोगों को अधोलोक या नरक में जाने के दण्ड के द्वारा डराया या धमकाया जाता है। व्यवस्थाविवरण 32:19-22 में, परमेश्वर कहते हैं इस्राएल के मूर्तिपूजा करने के कारण, मेरे कोप की आग भड़क उठी है जो पाताल की तह तक जलती जाएगी। अत: परमेश्वर के क्रोध के आग नरक के रूप में जलती है। भजन संहिता 9:17-18 चेतावनी देते हैं कि दुष्ट जन व जितनी जातियां परमेश्वर से फिर गयी है, वे अधोलोक में जा पड़ेंगी। वे नरक में जाएंग, जहां पर उन्हें धर्मी लोगों के विपरीत अकेला और आशाहीन अवस्था में छोड़ दिया जाएगा। भजन 49:13-15 में लोगों को चेतावनी मिलती है कि जिन लोगों को अपने ऊपर भरोसा हैं ,वे कभी अधोलाक से न बच पाएंगे। अर्थात वे, धर्मी लोगों के समान परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं वरन उसके विपरीत नरक में जाएंगे। दुष्ट जन बिना छुटकारे, बिना आशा के, बिना परमेश्वर की सुन्दर उपस्थिति के नरक में जाएंगे(2 थिस्लुनिकियों 1:9)।

कुछ अनुवादक उदासीन अधोलोक के विचार को त्याग कर इस जटिलता से बचने का प्रयास करते हैं और अधोलोक को दो भागों में विभाजित कर देत हैं: फिरदौस अर्थात धर्मी आत्माओं के रहने का स्थान तथा गेहेन्ना अर्थात दुष्टों की आत्मा का निवास स्थान। जबकि पुराना नियम बताता है कि अधोलोक दुष्टों को दण्ड दिये जाने का स्थान है। और नया नियम फिरदौस की तुलना स्वर्ग से करता है(लूका 23:43;2 कुरिन्थियों 12:2,4)अधोलोक से नहीं । और नये नियम में अधोलोक का अर्थ स्पष्ट तौर पर नरक बताया गया है(मत्ती 11:23-24; लूका 16:23)। लूका 16:23-24, वह स्वार्थी धनी व्यक्ति मरा और दफनाया गया और वह सीधे अधोलोक पहुँच गया, जहां पर उसे यातनाएं हो रही थीं। इन सारी घटनाओं को अगर मद्देनज़र रखा जाये तो केवल दुष्ट लोग ही अधोलोक अर्थात नरक में जाते हैं, क्योंकि धर्मी लोग सभी स्वर्ग में जाते हैं। अत: अधोलोक को कभी भी ऐसे स्थान के रूप में नहीं देखा जा सकता जो दो भागों में विभाजित हो जैसा कि अधोलोक से जुड़े दूसरे सिद्धान्त में बताया गया है।

अधोलोक, शैतान और दुष्टात्माओं के निवासस्थान के रूप में। अधोलोक, *नरक* का ही एक पर्यायवाची शब्द है जिसका अर्थ *विनाश* है(अय्यूब 26:6;नीतिवचन 15:11;27:20)। यह एक ठोस शब्द है, जो विनाश के स्वर्गदूत के लिए इस्तेमाल किया जा ता है, यह वह स्थान है जहां शैतान व उसकी दुष्टात्माएं रहती हैं(प्रकाशित 19:11;प्रकाशितवाक्य 9:1-5; 11:7;17:8; 20:1-3)। इस तरह से "शिओल" अर्थात अधोलोक कभी उदासीन स्थान नहीं हो सकता, जैसा कि अधोलोक सम्बन्धी प्रथम सिद्धान्त में बताया गया है।

(3) शिओल या हेड्स अर्थात अधोलोक का अर्थ कई बार कब्र होता है।

अधोलोक वह कब्र है जिसमें सारे मृत रखें जाते हैं।

शिओल अर्थात अधोलोक शब्द का मूल अर्थ सम्भवत: विनाशकारी स्थान अर्थात नरक ही था, अर्थात दुष्टों के लिए अनन्त विनाश का स्थान। परोक्ष रूप में इस मतलब देह के नाश से भी है, अर्थात कब्र। पुराने नियम के अधूरे प्रकाशन में, अधोलोक शब्द का इस्तेमाल नरक से ज्यादा कब्र के बोध में किया गया है, जबकि नये नियम के सिद्ध प्रकाशन में इसी की समानता में इस्तेमाल किया गया हेड्स अर्थात अधोलोक शब्द कब्र से कहीं ज्यादा नरक के लिए इस्तेमाल किया गया है।

यह कहना कठिन है कि अय्यूब में लिखे इन अनुच्छेदों में(अय्यूब 14:13;17:13;21:13) शिओल अर्थात अधोलोक शब्द का अर्थ मृत दशा है या कब। निम्नलिखित अनुच्छेदों में तो कब्र ज्यादा सम्भावित बोध जान पड़ता है। उत्पत्ति 42:38 में याकूब कहता है कि उसके पुत्र के दु:ख के कारण वह शोक के साथ अधोलोक अर्थात कब्र में उतर जाएगा।(उत्प. 37535;44:29; 1 राजा 2:6.9)। भजन संहिता 88:3 में लिखा है मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है, अर्थात वह मर रहा है। भजन 6:5 में लिखा है कि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक अर्थात कब्र में कौन तेरा धन्यवाद करेगा? भजन संहिता 49: 6-15 में लिखा है, कि अपने व अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखने वाले लोगों और उनके मानने वालों का परिणाम जो अपनी बातों को सही ठहराते हैं, अधोलोक अर्थात कब्र है, जहां पर उनकी सम्पत्ति की बहुतायत होने के बावजूद भी उनकी देह अन्तत: सड़ जाएगी। परन्तु धर्मी जन का भाग, अर्थात उनका जो परमेश्वर का भय मानते हैं, उन्हें परमेश्वर छुड़ाएगा अर्थात वह उनकी देहों को कब्र में से निकालकर परमेश्वर की उपस्थिति में पहुंचा देगा। हालांकि, पुनरूत्थान से पहले, वरन मृत्यु के समय, "मिट्टी की देह मिट्टी में वापिस मिल जाती है और आत्मा पिता परमेश्वर के पास वापस चली जाती है, जिसने

उसे प्रदान किया था"(सभोपदेशक),इसका मतलब है, कि देह तो कब्र में जाती है लेकिन आत्मा परमेश्वर के पास है(लूका 23:46-53)।

सभोपदेश 9:6.10 भी हमें मृतक अवस्था के बारे में बताता है, खास तौर पर देह की अवस्था के बारे में जो कब्र में गाड़ दी जाती है। इसमें लिखा है कि अधोलोक में, अर्थात कब्र के भीतर मृतक अवस्था में, न तो कोई काम होता है न योजना बनती है न ज्ञान न बुद्धि किसी काम आती है। कब्र में जाने वाला व्यक्ति फिर जीवतों के बीच में कोई काम नहीं कर सकता। मरने के बाद कोई भी जन धरती पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकता। जिस तरह से मृतक व्यक्ति संसार में जीवन से अलग हो जाता है ठीक उसी प्रकार एक मृतक व्यक्ति संसार में सारे क्रिया कलापों से भी अलग हो जाता है। प्रेरितों 2:27,31 हमें सिखाता है कि अधोलोक मृतक अवस्था को दर्शाता है, विशेषकर की देह की, जो कब्र में जाकर सड़ जाती है।

निष्कर्ष: उपरोक्त विषयवस्तु के आधार पर, शिओल या हेड्स का अर्थ सम्भवत:

- वह अवस्था हो सकती है जिसमें देह और आत्मा देह के पुनरूत्थान से पूर्व अलग हो जाते हैं।
- देह की वह अवस्था हो सकती है जिसमें देह अपनी आत्मा से अलग कब्र में पड़ी होती है
- मनुष्य की आत्मा की वह अवस्था जिसमें नरक में पड़ी उसकी देह उसकी आत्मा से अलग होती है।

बाइबल का कोई भी अनुच्छेद हमें यह शिक्षा प्रदान नहीं करत है कि सभी मृतकों की आत्माएं मरने के बाद एक ही स्थान पर चली जाती है। धर्मी और दुष्ट दोनों के शरीर कब्र में जाते हैं लेकिन जहां तक इनकी आत्माओं का सवाल है वे दो अलग अलग स्थानों में जाती हैं। मसीहियों(धर्मियों)की आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं(सभोपदेश 12:7; 2 कुरिन्थियों 5:8; फिलिप्पियों 1:23;इब्रानियों 12:23), जबकि गैर मसीही लोगों (अधर्मियों) की आत्माएं नरक में जाती हैं(मत्ती 11:23-24;लूका 16:23)।

ख. पापशोधन सिद्धान्त

1.पापशोधन स्थल सिद्धान्त बाइबल के अनुसार नहीं है।

पापशोधन स्थल सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के समय केवल उन्हीं मसीहियों की आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं जो पूरी तरह से शुद्ध हों। जिन्हें मत्ती 25:46 और फिलिप्पियों में "सन्त" कहा गया है। बाकि सारे मसीहियों की आत्माएं स्वर्ग में जाने से पहले "पापशोधन स्थल" में जाती हैं, अर्थात उस स्थान में जो आग,यातनाओं,पीड़ाओं से भरा होता है। पापशोधन स्थल में, उन्हें एक पाप क्षमा प्रक्रिया से होकर गुजरना होता है, जो उन्होंने इस संसार में रहते हुए किये होते हैं। रोमन कैथलिक कलीसियाओं के अनुसार, पापशोधन स्थल यातना या दण्ड देने का स्थान नहीं है, लेकिन यह शुद्धिकरण व स्वर्ग में प्रवेश करने से पहले तैयारी करने का स्थान है। पापशोधन स्थन में रहने का समय इस बात पर निर्भर करता है कि मृतक व्यक्ति के कितने पापों से उसे अभी भी शुद्धिकरण प्राप्त करने की जरूरत है। पापशोधन स्थल में किसी मृतक व्यक्ति का समय अन्तराल छोटा और उसकी यातनाएं कम भी हो सकती हैं:

- संसार में जीवित कैथोलिक लोगों की प्रार्थनाओं या उनके द्वारा किये गये भले कामों के द्वारा।
- खास तौर पर रोमन कैथोलिक कलीसियाओं में प्रार्थना सभा के दौराने चढ़ाया जाने वाला बलिदान द्वारा
- पोप किसी व्यक्ति को "एक सन्त" के रूप में घोषित कर सकता है।

रोमन कैथलिक लोगों का यह सिद्धान्त बाइबल पर नहीं वरन एक अप्रमाण्ति ग्रन्थ, 2मकाबी 12:42-45 पर आधारित है,जहां लिखा है कि:

40.हर एक सैनिक के कपड़ों की छोर पर उन्हें प्रतिमाओं की कारीगरी मिली.....42. उन्होंने प्रार्थना करती कि उनके ये पाप क्षमा कर दिये जाएं.....43.यहूदा और मकाबी ने चंदा किया और पापबलि के रूप में काफी मात्रा में धन यरूशलेम भेज दिय। 44. उसने यह काम मृतकों के जी उठने को अपने दिमाग में रखते हुए किया। वह मृतकों की ओर से इस पापबलि को लेकर आया, ताकि मृतक अपने पापों से मुक्त हो सके।

हालांकि, मकाबी की पुस्तक का यह खण्ड कुछ ऐसी शिक्षाओं को देता है जो शायद रोमन कैथलिक लोग कभी स्वीकार न कर सकें, खास तौर पर, सैनिकों के पापक्षमा से छुटकारे को जो मूर्तिपूजा के पाप करते हुए मरे(40)!

2.पापशोधन के विरूद्ध बाइबल आधारित तर्क

(1) मृत्यु होने पर सारे मसीही तुरन्त स्वर्ग पहुँच जाते हैं।

सारे (नया जन्म पाये हुए) मसीही "सन्त" है(1कुरिन्थियों 1:2)। बाइबल मसीहियों के प्रस्थान को बहुत से नामों से सम्बोधित करती है। "स्वर्ग" का वह अदभुत स्थान, जहां मसीही लोग मृत्यु पश्चात जाते हैं, "फिरदौस" के नाम से (लूका 23:43), "पिता के घर के नाम से जहां पर रहने के लिए बहुत सा स्थान है"(यूहन्ना 14:2), "महिमा के स्थान के नाम से"(भजन 73:24-25),"मसीह के साथ रहने के स्थान के नाम से"(फिलिप्पियों 1:23) और "परमेश्वर के साथ घर में रहने के नाम से" जाना जाता है और फिलिप्पियों 1:23 के अनुसार, "जीवतों में से प्रस्थान कर जाने" का अर्थ "मसीह के साथ होना है।

(2) कोई भी जन मसीह द्वारा किये गये सम्पूर्ण कार्यों में कुछ और नहीं जोड़ सकता।

मृत्यु होने पर, मसीही जन तुरन्त स्वर्ग चला जाता है क्योंकि मसीह ने उसके पापों को मूल्य पहले ही चुका दिया है। पापशोधन सिद्धान्त मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त क्रूस पर पूर्ण किये गये कामों में कुछ जोड़ने का प्रयास करना है। हालांकि,प्रकाशितवाक्य 22:18-19 लोगों को चेतावनी देता है कि वे बाइबल की शिक्षाओं में से न तो कुछ कम करें और न ही कुछ बढ़ाएं। यीशु मसीह विश्वासियों का शुद्धिकरण और धर्मी ठहराने वाला है(1 कुरिन्थियों 1:30)।

पापशोधन सिद्धान्त दूसरे मसीहियों के भले कामों और प्रार्थनाओं को उद्धार प्रदान करने में सहयोग देने वाले माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार प्रार्थना सभाओं में बलिदान चढ़ाना,विशेष सन्तों के भले काम जैसे भले काम भी दूसरे लोगों को उद्धार दिलाने वाले माध्यम ठहरते हैं। हालांकि, इफिसियों 2:8-9 हमें सिखाता है कोई भी अपने भले कामों के द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं कर सकता। जबकि रोमन कैथोलिक कलीसियाएं दावा करती हैं कि रोमन कैथोलिक कलीसियाओं के पास मृत्यु और अधोलोक की कुँजियां हैं, लेकिन प्रकाशितवाक्य 1:18 स्पष्ट रूप से हमें सिखाता है कि केवल यीशु मसीह के पास ही वे कुँजियां हैं।

ग.आत्माओ के सोने का सिद्धान्त

1.आत्माओं के सोने का सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

आत्माओं के सोने का सिद्धान्त कहता है कि मृत्यु के बाद आत्माएं पूरी तरह से बेहोशी की अवस्था में पहुँच जाती हैं (जिसे "सोना" भी कहा जाता है)। केवल पुनरूत्थान के समय में आत्माएं फिर से अपने होश में आकर जाग जाती है। आत्माओं के सोने का यह सिद्धान्त अधिकतर "द ऐनिलीशन थिओरी"अर्थात "विनाश के सिद्धान्त" तथा "दूसरा अवसर देने के सिद्धान्त" के साथ ही साथ जुड़ कर आगे बढ़ता है। मृत्यु के पश्चात, देह और आत्माएं दोनों ही कब्र में जाकर पूरी तरह से लुप्त हो जाती हैं। केवल पुनरूत्थान के समय में आत्मा(प्राण)पुन: जागृत हो जाती है और उन्हें निम्नलिखित कारणों से दूसरा अवसर मिलता है:

- पश्चाताप करने का चुनाव करने,उद्धार पाने तथा पूरी तरह नयी देह प्राप्त करने के लिए
- या फिर पश्चातापहीन दशा में रहकर पूरी तरह नाश होने के लिए।

ऐसे झूठे शिक्षकों ने यूहन्ना 11:11 को,"हमारा मित्र,लाज़र, सो गया है;मैं उसको जगाने के लिए वहां जाता हूँ" और 1थिस्लुनिकियों 4:13 "जो सो जाते हैं तुम उनके बारे में अनजान न रहो"अपना आधार बना लिया है। दोनो ही जगहों पर मृत्यु को "सोने" से सम्बोधित किया गया है। इन्होंने अपने सिद्धान्तों को भजन 6:5 और सभोपदेशक 9:10 जेसे अनुच्छेदों पर आधारित किया है, जहां पर मृतकों को बेहोश या अचेत अवस्था से सम्बोधित किया गया है: "क्योंकि अधोलोक में न तो कोई काम न योजना है न ज्ञान न बुद्धि काम करती है।" इन्होंने भी अपने सिद्धान्त 2 कुरिथियों 5:10 और प्रकाशित वाक्य 20 :11-15 जैसे अनुच्छेदों पर आधारित किये हैं, जिसके अनुसार वे लोग कहते हैं कि लोगों की मंजिल केवल न्याय के दिन तय होगी उससे पहले नहीं।

2.आत्माओं के सोने के सिद्धान्त के विरूद्ध तर्क।

(1) बाइबल हमें कभी यह शिक्षा नहीं देती है कि आत्मा(या प्राण) या देह कभी सो जाती है!

बाइबल हमें केवल यह बताती है कि मरने वाला व्यक्ति सो जाता है। यह शब्द सोने वाले व्यक्ति व मृतक की उदासीन अवस्था के चलते बना है और इसे शारीरिक मृत्यु की खबर बताने का आसान तरीका या व्यजंना है।

(2) बाइबल हमें बताती है कि मृतक की आत्मा सचेत होती है।

बाइबल के वे अनुच्छेद जो हमें यह सिखाने का प्रयास करते हैं कि मृतक लोग बेहोश अवस्था में होते हैं, वे केवल इस बात पर जोर देना चाहते हैं मृतक लोग,वर्तमान संसार की किसी भी गतिविधी में भागीदार नहीं हो सकते।उदाहरण के तोर पर, सभोपदेशक 9:5-12 में लिखा है....किस मृतक कुछ नहीं जानता...सूर्य ने नीचे जो कुद गतिविधियां हो रही हैं उनमें वे कुछ भागीदारी नहीं कर सकते.....क्योंकि अधोलोक अर्थ कब्र में जहां तू जाने वाला है, न काम न युक्ति न ज्ञान और न बुद्धि है" अत: मृत्यु के पश्चात मज़दूर काम नहीं कर सकता, गायक गीत नहीं गा सकता और न राजा धरती पर राज्य कर

सकता है। अत: बाइबल हमें बताती है कि मृत्यु के पश्चात हमारे देह कब्र में पड़ी रहती है, लेकन आत्मा धरती पर होने वाले सारे कार्यो के प्रति अबोध हो जाती है। (यशायाह 63:16)

हालांकि, बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि जिस समय हमारी देह कब्र में होती है, हमारी आत्मा(प्राण) स्वर्ग व नरक में होने वाली सारी गतिविधियों के प्रति अति सचेत होती है! उदाहरण के लिए, लूका 16:22-28 में लिखा है कि जब वह स्वार्थी धनी व्यक्ति मरा और उसे गाढ़ा गया, तो उसने अपनी आंखे सीधे नरक में जाकर खोली जहां पर उसे यातनाएं मिल रही थीं। और इब्रानियों 12:22-24 व प्रकाशित वाक्य 6:9-10 कहता है कि जब मसीही मरते हैं तो वे त्रिएक परमेश्वर व उनसे पहले मरे हुए सारे मसीहियों के साथ सचेत संगति का आनन्द उठाते हैं।

(3) न्याय के दिन,लोगों के मंजिल तय नहीं, घोषित होती है।

लोगों की मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु के साथ उनके सम्बन्धों के आधार पर तय होती है। यीशु ने यूहन्ना 3:18,36 में कहा," परन्तु जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।""परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन का नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" मत्ती 25 और 2 थिस्लुनिकियों 1 के अनुसार लोगों की मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु के साथ उनके सम्बन्धों के आधार पर तय हो जाती है। मत्ती 25:14-30 में तोड़ों के दृष्टान्त के अनुसार, हर एक व्यक्ति का प्रतिफल या उसका दण्ड उसके मरने से पहले और यीशु के दूसरे आगमन से पहले ही तय हो जाता है।

इसलिए मृत्यु के बाद उद्धार या छुटकारा पाने का कोई दूसरा अवसर भी नहीं मिलेगा। मत्ती 25:34,41 और 2 थिस्लुनिकियों 1:5-10 के अनुसार,न्याय के दिन केवल स्वर्गदूतों और इस दुनिया में पैदा हुए सभी लोगों के सामने परमेश्वर के निर्णय और परमेश्वर के न्याय और उसकी महिमा की घोषणा होगी! अन्तिम न्याय में जिस बात को लेकर लोग हैरान होते हैं वह न्याय से ज्यादा न्याय का वह आधार होता है जिस पर न्याय होता है। अन्तिम न्याय का आधार परमेश्वर का अनुग्रह है, जो "मसीह के भाई बहनों पर"(दूसरे मसीहियों पर)दया करने की ओर हमारी अगुवाई करता है(मत्ती 12:50; इब्रानियों 2:11-12)(मत्ती 25:34-40)। उनके दोषी ठहरने का आधार कारण यह है कि उन्होंने मसीहियों पर दया नहीं की(मत्ती 25:41-45)।

घ. विनाश के सिद्धान्त

1. विनाश के सिद्धान्त बाइबल पर आधारित नहीं है।

(1) विनाश के सिद्धान्त [2]

विनाशवादी सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के पश्चात, देह और आत्मा (या प्राण) दोनों ही नाश हो जाते हैं। देह और प्राण दोनो ही कब्र में डाल दिये जाते हैं जिनका बाद में कोई अस्तित्व नहीं होता। पुनरूत्थान के समय में किसी प्रकार का पुन: जीवित होना या होश में आना नहीं होता, वरन नयी देह और नयी आत्मा प्राप्त होती है।

विनाशवादी सिद्धान्त सिखाता है कि मृत्यु के बाद दुष्ट का कोई अस्तित्व पूरी तरह से खत्म हो जाता है इसी कारण कोई नरक नहीं है और न हीं यातना देने का कोई स्थान है। क्योंकि दुष्टों को हमेशा के लिए नाश कर दिया जाता है।

विनाशवाद हमें यह भी शिक्षा देता है कि मृत्यु के पश्चात धर्मी का अस्तितव भी मिट जाता है इस कारण मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच में कोई अवस्था बाकि नहीं है। पुनरूत्थान के समय में केवल धर्मी जन को ही नयी देह और नयी आत्मा प्राप्त होती है।

वे शिक्षा देते हैं कि परमेश्वर ने सबको नश्वर बनाया है, लेकिन मनुष्य विश्वास, आज्ञाकारिता और शुद्धिकरण के द्वारा अमर हो सकता है। पश्चाताप रहित पापी नाश होगा।

जबकि बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने सभी प्राणियों को अमर बनाया था लेकिन उन्होनें अनाज्ञाकारिता के कारण अपनी अमरता को खो दिया। पाप में गिरते ही परमेश्वर ने मनुष्यों से अमरता को दूर कर दिया। लेकिन जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं वे अनन्त जीवन पाते हैं,लेकिन जो लोग पश्चाताप नहीं करते वे अनन्त दण्ड पाते हैं(मत्ती 25:46),जो कि विनाश से थोड़ा अलग होता है।

(2) विनाशकारी (destruction) सिद्धान्त ।

उन्होंने विनाश को "समाप्त करने" में अनुवाद किया है, जिसका अर्थ, पूरी तरह से विवेक और सम्पूर्ण अस्तित्व का नाश होना। कुछ अुनयायियों का मानना है कि दुष्ट लोग अपने पापों के लिए कुछ सीमित समय तक यातनाएं व तकलीफें सहने

के बाद नाश कर दिये जाते हैं। अन्य अनुयायियों के अनुसार, दुष्टों को तुरन्त ही नाश कर दिया जाता है। उनके सिद्धान्त निम्नलिखित मतों पर आधारित होते हैं:

- तथ्य कि केवल *परमेश्वर* की अमर है
- विश्वासियों को अनन्त जीवन *दिया गया* है
- कि अविश्वासी *नाश* किये जाएगें, दूसरे शब्दों में वे कहते हैं कि अविश्वासियों का *वजूद खत्म* हो जाएगा।

2. विनाशकारी सिद्धान्तों के विरूद्ध बाइबल के तर्क ।

(1) परमेश्वर सदा से अमर है, लेकिन मसीहियों को अमरता प्रदान की गयी है।

परमेश्वर अमर है। 1 तीमुथीयुस 6:16, परमेश्वर "ही केवल अमर है",अर्थात वह आदि से ही अमरता या अनश्वरता धारण किये है। परमेश्वर कभी मर नहीं सकता।

परमेश्वर ने मनुष्य को अमर बनाया है। प्रथम मानव अर्थात आदम और हव्वा को अमर बनाया गया था। वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गये थे(उत्प. 1:27), और यह सिद्ध अवस्था बदलकर सड़न और नश्वर अवस्था बन गयी। सृष्टि के समय परमेश्वर ने "मनुष्य के हृदय में अमरता को रखा था"(सभोपदेशक 3:11)। उनकी देह और आत्मा दोनो ही अमर बनाये गये थे। परमेश्वर चाहते थे कि मनुष्य हमेशा उसकी उपस्थिति में बना रहे! लेकिन आदम और हव्वा को अमरता इस तरह से नहीं दी गयी थी कि वे न मरें। अर्थात यदि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया तो वे अपनी अमरता को खो बैठेंगे और मर जाएगें(उत्पत्ति 2:15-17)। उत्पत्ति 3 वर्णन करता है कि किस प्रकास से वे मृत्यु का शिकार बन गये।

पुनरूत्थान के समय, मसीही जन अमर हो जाएंगे। पुनरूत्थान के समय, शरीर नाशमान दशा में बोया जाएगा और *अविनाशी दशा* में जी उठेगा(1कुरिन्थियों 15:42,50)। इसका अर्थ है कि पुनरूत्थान के समय,मनुष्य *अमरता* को प्राप्त कर लेगा। मसीही जन नहीं मर सकते और भविष्य में भी नहीं मरेंगे। केवल मसीहियों को ही "अमर" कहा जाता है, क्योंकि उन्हीं के पास अनन्त जीवन है और उन्हें ही अनन्त तक अपनी देह और आत्मा से परमेश्वर की महिमा करने के लिए बनाया गया है। मसीही लोग ही सिद्ध व अनन्त जीवन के वारिस हैं, जिन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्ता के लिए आशीषित किया गया है।

(2) आत्मा निश्चय ही मृत्यु में बनी रहती है।

निर्गमन 3:6 में परमेश्वर ने मूसा से कहा,"मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्व, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ।" यीशु के अनुसार,"परमेश्वर मुर्दों का नहीं वरन जीवतों को परमेश्वर है(मत्ती 22:32)"। जब अब्राहम और इसहाक और याकूब मरे, तो उनका *अस्तित्व खत्म नहीं हुआ*। हालांकि उनकी देह अभी कब्र में पड़ी हैं और पुनरूत्थान के दिन जी उठेगी, लेकिन उनकी आत्मा अभी भी विद्यमान और जीवित है। परमेश्वर मुर्दों का नहीं वरन जीवतों का परमेश्वर है। अत: मृत्यु के समय, मनुष्य की आत्मा नहीं नहीं मरती,वरन मृत्यु से पार होकर लगातार विद्यमान व जीवित रहती है।

(3) शरीर निश्चय ही भविष्य के जीवन का भाग होगा।

उत्पत्ति 3:19 के अनुसार,मृत्यु में, देह मिटटी में मिल जाती है(प्रेरितों 2:29-31)। लेकिन "मिट्टी" कोई अविद्यमान वस्तु नहीं है! यूहन्ना 5:28-29, प्रेरितों 24:15 और प्रकाशितवाक्य 20:12-15 स्पष्ट तौर पर शिक्षा देता है कि यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर लोगों के शरीर दुबारा से रचे नहीं जाएंगे, वरन वे मिटटी में से ही पुर्नजीवित हो जाएगें। धर्मी और दुष्टों दोनों के ही शरीर मृतकों में से जी उठेगें।

बाइबल में ऐसा कोई तथ्य प्रस्तुत नहीं किया गया है जो हमें यह बताता हो कि धर्मी और दुष्ट लोग एक साथ नहीं जी उठेंगे। बाइबल हमें यीशु मसीह के आगमन पर एक सामान्य पुनरूत्थान को बताती है।

1 कुरिन्थियों 15: 35-42 और फिलिप्पियों 3:21 बताते हैं कि मृतक मसीहियों से जुड़ी हर वस्तु रूपान्तरित हो जाएगी जिससे उनकी पुर्नजीवित देह यीशु की महिमित देह के समान हो जाएगी। पुनरूत्थान में नयी देहों की रचना नहीं होगी, परन्तु उनकी मूल देह का ही महिमित रूपान्तरण हो जाएगा। इस तरीके से लोगों को पुनरूत्थान के बाद भी पहिचाना जा सकेगा जैसे कि यीशु को पहिचाना जा सकता है(यूहन्ना 20:24-29)।

मत्ती 25:46 हमें सिखाता है कि अन्तिम न्याय के बाद, धर्मी और दुष्ट लोग लगाता बने रहेंगे। अत:, मृत्यु होने पर, मनुष्य की देह और उसकी आत्मा कुछ भी अविद्यमान नहीं होता। इसी प्रकार से पुनरूत्थान व अन्तिम न्याय के दिन भी मनुष्य की आत्मा और मनुष्य की देह अविद्यमान या मरती नहीं है।

(4) अमरता या लगातार अस्तित्व में बने रहना अनन्त जीवन के समान नहीं है।

अनन्त जीवन वास्तव में परमेश्वर की ओर से एक वरदान है, जो केवल धर्मी लोगों को अर्थात केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों को ही दिया जाता है। लेकिन जब दुष्ट लोगों को अनन्त जीवन नहीं दिया जाता है तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उनका बजूद खत्म हो जाएगा।

यूहन्ना 5:28-29 व प्रेरितों 24:15 के अनुसार, मसीहियों और गैर मसीहियों के शरीर एक ही समय में जी उठेंगे। और मत्ती 25:46 के अनुसार, केवल मसीहियों को ही अनन्त जीवन प्राप्त होगा, लेकिन गैर मसीहियों को अनन्त दण्ड मिलेगा। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि दोनो ही प्रकार के लोग लगातार अस्तित्व में बने रहेगें। धर्मी जन अनन्त जीवन का आनन्द मनाएंगे। और दुष्ट लोगों को अनन्त दण्ड मिलेगा(मत्ती 25:46;2 थिस्लुनिकियों 1:9)।

(5)"विनाश" शब्द का अर्थ समाप्त या खत्म होना या अस्तित्वहीन हो जाना नहीं है।

मनुष्य से जुड़े हुए शब्दों अर्थात मृत्यु,विनाश और दण्ड को मतलब अस्तित्वहीन हो जाना नहीं है। 1कुरिन्थियों 5:5 के अनुसार, देह के नष्ट हो जाने का अर्थ समाप्त हो जाना नही है। इसका अर्थ है कि "देह के विनाश द्वारा" "दण्ड"। इसका अर्थ है कि,"इस मनुष्य को शैतान के हाथों में सौंप दिया जाए, ताकि इसका पापमय स्वभाव समाप्त हो जाए और उसकी आत्मा परमेश्वर के दिन में बच जाए।" कलीसिया एक पापी को इस आशा के साथ उसके पापमय स्वभाव को नष्ट करने के लिए शैतान के हाथ में अर्थात भयंकर बीमारी या कष्टों के हाथ में सौंपती है ताकि उसकी आत्मा न्याय की दिन में बच जाए। शैतान केवल मनुष्य पापमय स्वभाव के कारण ही उसे नुकसान पहुंचा सकता और उसे दण्ड दे सकता है। लेकिन केवल मसीह ही मनुष्य के पापमय स्वभाव का अपने उद्धार के कामों द्वारा अन्त कर सकता है।

2 थिस्लुनिकियों 1:8-9 के अनुसार, अन्तिम न्याय के दिन विनाश,अस्तित्वहीन होने के बिल्कुल विपरीत है। जहां पर दुष्टों को अनन्त नाश या अनन्त दण्ड के द्वारा सज़ा दी जाती है, जिसका अर्थ है कि उन्हें हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति व उसकी सामर्थ्य की तेजस्वी महिमा से अलग कर दिया जाता है।

परमेश्वर इन लोगों से बदला लेगा या उन्हें दण्ड देगा(पद 8), अर्थात इन लोगों को परमेश्वर के प्रेम,दया और का अनुभव करने से वंचित कर दिया जाएगा, उन्हें यीशु मसीह के महिमामय और अद्भुत तेज को देखने से अलग कर दिया जाएगा। प्रकाशित वाक्य 20:10 व 21:8 के अनुसार दूसरी मृत्यु का मतलब उस स्थान में फेंक दिया जाना है जहां पर दुष्टों को आग की झील में रात और दिन हमेशा हमेशा के लिए यातनाएं दी जा रही है।

ड.दूसरे अवसर का सिद्धान्त

1.दूसरे अवसर का सिद्धान्त बाइबल पर आधारित नहीं है।

(1) दूसरे अवसर का सिद्धान्त सिखाता है कि मनुष्य की शारीरिक मृत्यु के बाद भी मसीह के द्वारा उद्धार सम्भव है

इस सिद्धान्त को मानने वाले विश्वास करते हैं कि उन लोगों के पास अभी भी विश्वास में आने का अवसर है जिन्हें:

- अपने जीवनकाल में कभी भी सुसमाचार सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है।
- जिन लोगों ने उचित तरीके से मसीह के दावों को नहीं समझा या उन्होंने ध्यान नहीं दिया
- जो शिशु अवस्था में ही मर गये।

उनका कहना है कि कोई भी जन नरक का दण्ड तब तक नहीं पाएगा जब तक कि सबको सुसमाचार सुनने और विश्वास करने का उचित अवसर न मिल जाए। इसलिए उन लोगों का निष्कर्ष यह है कि मनुष्य की अनन्त अवस्था शारीरिक मृत्यु और न्याय के दिन तक ही सीमित नहीं है।

(2) उन्होंने अपने सिद्धान्त को परमेश्वर के प्रेम और न्याय के प्रति मानवीय समझ पर आधारित किया है।

वे निम्नलिखित वचनों का हवाला देते हैं:

- यूहन्ना 3:18,36, जिसमें उनकी समझ के अनुसार केवल वह व्यक्ति ही दण्ड का हकदार है जिसने *जानबूझकर विश्वास न किया हो।*

- वे 1पतरस 3:19 और 4:6 का हवाला देते हैं जिसमें उनकी समझ के अनुसार यह लिखा है कि मसीह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान और कें बीच अधोलोक में गया और उसने *वहां बन्दी आत्माओं को जाकर सुसमाचार प्रचार किया।*
- वे अपने सिद्धान्त का आधार 2 कुरिन्थियों 5:10 और प्रकाशितवाक्य 20:11-15 को भी बताते हैं, जिसमें उनके अनुसार लिखा है कि *लोगों की मंजिल केवल अन्तिम न्याय के दिन ही तय होगी।*

2. दूसरे अवसर के सिद्धान्त के विरूद्ध बाइबल का तर्क।

(1) मनुष्य के जीवन की मंजिल मनुष्य के विश्वास और विश्वासपूर्ण जीवन के आधार पर तभी तय हो जाती है जब वे धरती पर जीवित होते हैं।

धरती पर रहते हुए मनुष्य के काम और उसका जीवन उसकी अनन्त मंजिल को तय कर देता है। यूहन्ना 3:18-21,36 में हमें शिक्षा मिलती है कि लोगों की अनन्त मंजिल धरती पर रहते हुए यीशु मसीह के साथ उनके रिश्ते के आधार पर तय हो जाती है। यूहन्ना 3 हमें यीशु मसीह के आगमन और उसके आने पर वर्तमान संसार में लोगों द्वारा किये जाने वाले व्यवहार के बारे में बताता है। यीशु सिखाते हैं कि जो काई उस पर विश्वास नहीं करता है वह पहले से ही दोषी ठहर चुका है। यीशु सिखाते हैं कि जो कोई उसे अस्वीकार करता है वह जीवन को नहीं देख सकता, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उसमें बना रहता है।

लोगों का अनन्त जीवन इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसने इस संसार में रहते हुए किस प्रकार का जीवन व्यतीत किया है। मत्ती 7:22-23,10:32-33 और 25:31-46, सिखाते हैं कि इस धरती पर रहते हुए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना,धरती पर रहते हुए यीशु को लोगों के सामने मान ग्रहण कर लेना और मसीह के भाई बहनों के साथ कृपा व भलाई के काम, धरती पर लोगों की अनन्त मंजिल को तय करते हैं। हालांकि, लोग भले कामों की वजह से नहीं वरन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की वजह से उद्धार पाते हैं। परमेश्वर की इच्छा यह है कि लोग यीशु मसीह पर विश्वास करके उसे अपना एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करें(यूहन्ना 6:29)। और उनके काम इस बात को प्रगट करेगें कि उनका विश्वास सच्चा है कि नहीं(याकूब 2:14-22)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर लोगों को मिलने वाली प्रशंसा और प्रतिफल या दोष और दण्ड इस बात पर निर्भर करेगा कि इस धरती पर रहते हुए उसने अपनी योग्यताओं और अवसरों के साथ क्या किया (मत्ती 25:21,30;2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। न्याय के दिन लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा, वरन उस दिन अनन्त मंजिल की सार्वजनिक तौर पर घोषणा कर दी जाएगी। लोगों की अनन्त मंजिल लोगों के विश्वास और धरती पर बिताए विश्वासपूर्ण जीवन पर निर्भर करती है।

(2) विश्वासियों का मृत्यु के पश्चात अनन्त स्थान या पद पहले ही तय हो चुका है।

यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर अधर्मियों को उनकी मृत्यु के पश्चात तुरन्त दण्ड देता है(लूका 16:19-23)। प्रेरित पतरस सिखाता है कि परमेश्वर अधर्मियों को लगातार दण्ड देता है लेकिन अन्तिम निर्ण को न्याय के दिन के लिए रख छोड़ा है। अधर्मियों को विशेष उद्देश्य और विशेष समय के लिए निर्धारित किया गया है। उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद उनका दण्ड लागातार उन पर पड़ता है और वे न्याय के दिन तक तकलीफें सहते रहते हैं(2 पतरस 2:9)। न्याय के दिन के बाद उनकी तकलीफें और अधिक बढ़ जाती है। इसके बाद उन्हें और भी अधिक लज्जा का सामना करना पड़ेगा जब धरती पर जीवन यापन करने वाले सारे लोगों के सामने सार्वजनिक तौर पर उनकी सज़ा सुनाई जाएगी। वे अपनी आत्मा में ही नहीं वरन अपनी देह में भी नरक ही यातनाओं को सहेगें(मत्ती 10:28;25:41,46)। वे हमेशा के लि परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखरेख से वंचित हो जाने के कष्ट को सहेगें(2 थिस्लुनिकियों 1:8-10)। घोर अन्धकार अधर्मियों के लिए "लगातार आरक्षित किया जा रहा है"(यहूदा 7-11)।

(3) दूसरे अवसर का सिद्धान्त ज्यादातर लोगों के लिए सुमाचार न सुनाने के लिए एक बहाना है।

यह सुसमाचार प्रचार करने से आपातकालीन परिस्थिति को चुरा लेता है। चाहे लोग विश्वास करें या न करें लेकिन सुसमाचार अवश्य ही प्रचार किया जाना चाहिए(मरकुस 16:15-16)। यीशु के आगमन से पूर्व सारे संसार में गवाही के तौर सुसमाचार सुना दिया जाएगा(मत्ती 24:14)।

(4) लोगों के मृत होने के बाद निश्चय ही उन्हें किसी तरह सुसमाचार प्रचार नहीं किया जा सकता।

दो अनुच्छेद, 1 पतरस 3:18-22 और 1 पतरस 4:1-6,में समान विषय के बारे में बात नहीं की गयी है अत: इन दोनों अनुच्छेदों को दूसरे अवसर के सिद्धान्त के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। न हीं ये अनुच्छेद सुझाव देते हैं कि लोगों

को मरने के बाद सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है। इन दोनों ही अनुच्छेदों का गलत तरीके से इस्तेमाल किया जाता है इसलिए हम इनका विस्तृत वर्णन अलग से करेंगे।

3.1पतरस 3:18-22 और 1 पतरस 4:1-6 पर आधारित दूसरे अवसर का सिद्धान्त।

(1) अधोलोक में जाकर लोगों को सुनाना।

दूसरे अवसर के सिद्धान्त के अनुसार, 1पतरस 3:18-22 कहता है कि उसकी मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बीच में,यीशु की आत्मा बन्दीगृह में गयी,जिसे हेड्स अर्थात अधोलोक के रूप में जाना जाता है। हेड्स को अधोलोक कहा जाता है,अर्थात यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले इस दुनिया में जीवन यापन करने वाले लोगों का निवास स्थान।

(2) सुसमाचार प्रचार करना।

दूसरे अवसर के सिद्धान्त के अनुसार, 1पतरस 4:6 कहता है कि यीशु ने अधोलोक में जाकर बन्दी आत्माओं में सुसमाचार सुनाया ताकि उन्हें उद्धार पाने का एक अन्तिम अवसर मिल सके।

(3) सही मतलब।

1 पतरस 3:18-22 यीशु मसीह के *अधोलोक में जाने के बारे में बात नहीं करते* हैं,वरन मसीह के विजय के साथ में *स्वर्ग में जाने की* बातें करते हैं। यह अनुच्छेद सुसमाचार प्रचार के बारे में नहीं बात करता,वरन आज्ञा न मानने वालों पर अपनी निर्णायक विजय के बारे में बताता है।

1 पतरस 4:1-6 *मृतकों में* सुसमाचार सुनाने के बारे में बात नहीं करते, वरन बताते हैं कि *जब वे लोग इस संसार में जीवित थे* तब ही उन्हें सुसमाचार सुना दिया गया था।

अत: दूसरे अवसर का सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।

4. 1 पतरस 3:18-22 का सही अर्थ

1 पतरस 3:18-22 में मसीह के स्वर्ग में विजयी स्वर्गारोहण का वर्णन किया गया है। उसका स्वर्गारोहण ही अपने आप में सारे जगत में उसकी विजय की घोषणा है!

(1) पद 18 में मसीह की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के माध्यम से उसके प्रायश्चित व उसके मेल मिलाप का वर्णन किया गया है।

जब यीशु मरा, तो केवल उसका मानवीय स्वभाव ही मरा। उसे "मार दिया गया" का अर्थ है कि जब वह अपने मानवीय शरीर की कमजोरियों को धारण किये हुए और अपने ऊपर सम्पूर्ण मानवजाति के पापों के बोझों को उठाये हुए था उसे मार दिया गया(रोमियों 1:3)। उसकी मृत्यु के द्वारा यीशु ने अपने कमज़ोर मानव स्वभाव को दूर कर दिया पाप और मृत्यु के साथ कड़ा रूख अपनाया। अपनी मृत्यु के समय, यीशु ने अपनी आत्मा को परमेश्वर पिता के हाथों में सौंप दिया(लूका 23:46)। अत: जब यीशु मरा,उसकी देह तो कब्र में रखी गयी परन्तु उसकी आत्मा परमेश्वर पिता की उपस्थिति में थी। हम बाइबल में कहीं पर भी यह नहीं पड़ते कि यीशु की आत्मा अधोलोक में गयी जिसे लोग नरक भी कहते हैं।

जब यीशु मसीह का पुनरूत्थान हुआ तो केवल उसके मानवीय स्वभाव का पुनरूत्थान हुआ। वह"आत्मा के द्वारा जिलाया गया" का अर्थ है कि उसकी मानवीय देह पवित्र आत्मा के द्वारा जिलायी या पुनरूत्थित की गयी(अर्थात उसके ईश्वरीय स्वभाव के द्वारा)(यूहन्ना:17-18)।

उसके पुनरूत्थान के बाद, उसकी देह एक महिमित व पूरी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित देह थी(रोमियों 1:4;कुलुस्सियों 2:9)! उस क्षण के बाद से यीशु, अपने मानवीय स्वभाव की सीमाओं के हिसाब से शारीरिक कमजोरियों में जीवन नहीं, वरन पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में जीन व्यतीत करने जा रहे थे। उस क्षण से बाद से परमेश्वर के अतुल्य सामर्थ्य ने यीशु को परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर और जगत की सारी शक्तियों में शिरोमणी ठहरा दिया(मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

(2) पद 19-20 मसीह के "जाने" और उसके "प्रचार" के बारे में बातें करते हैं।

यीशु मसीह का "जाना" **उसके पुनरूत्थान से पहले नहीं था *वरन उसके पुनरूत्थान के बाद जाना था ।*** पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से जिलाये गये थे और उसी अवस्था में वह कहीं गया और उसने जाकर प्रचार किया।

पद 18-19 के अनुसार, यीशु मसीह का "जाना" यीशु की मृत्यु और उसके पुनरूत्थान के बीच में जाना नहीं था। उसका जाना पुनरूत्थान से पूर्व यीशु की मानवीय आत्मा में जाना नहीं था वरन उसका जाना पुनरूत्थान के पश्चात महिमित देह में जाना था।

यीशु मसीह का प्रस्थान धरातल की ओर नहीं वरन स्वर्ग की ओर था। पद 22 में लिखा है कि यीशु मसीह अधोलोक में नहीं गये थे जहां पर सभी मृतकों का निवास स्थान है वरन वह तो परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर ऊपर की ओर गये।

यूहन्ना 12:32 में पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण और यीशु का विराजमान होने को इस तरह से दर्शाया गया है जैसे किसी को "परमेश्वर के पास" उठा लिया गया हो।

प्रकाशितवाक्य 12:5 में पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण को और उसके सिंहासन पर विराजमान होने को इस तरह से दर्शाया गया है मानों किसी को "छीनकर" पहुंचा दिया गया हो।

इसी तरह से 1 पतरस 3:19-22 में उसके पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन में विराजमान होने को स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर के पास "जाने के" में दर्शाया गया है।

"यीशु मसीह का प्रचार करना सुसमाचार प्रचार करना नहीं था, वरन अपनी विजय का प्रचार करना था। पद 19 में साधारण: "प्रचार" करने के बारें में बात करता है। लेकर उसके प्रचार की विषयवस्तु क्या थी। मूल भाषा में "जाना" और "प्रचार करना" दोनों एक ही कहानी के दो भाग हैं। "उसने जाकर उन कैदी आत्माओं को खबर सुनाई जो पहले मर चुके थे। उसकी विजयी स्वर्ग की यात्रा (उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के बाद) ही अपने आप में उसकी अन्तिम विजय की उदघोषणा थी। पद 19 सुसमाचार प्रचार के बारे में बातचीत नहीं करता है वरन वह वचन विजय के साथ मसीह के स्वर्गारोहण के बारे में बात करता है।

मसीह का "जाना" सारे लापरवाह और अनाज्ञाकारी लोगों के लिए एक सीधी चेतावनी जैसी थी।

पद 19-20 में लिखा है कि उसकी विजय की उदघोषणा विशेष तौर पर "उन कैदी आत्माओं के लिए थी जिन्होंने नूह के समय में परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना जब नाव तैयार की जा रही थी"। वे आत्माएं कौन हैं जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी? ये वे उन लोगों की देहमुक्त आत्माएं हैं जो जलप्रलय में नष्ट हो गयी थी और जिन्हें नरक में कैद करके रखा गया है। उत्पत्ति 6:5 में लिखा है कि वे एक दुष्ट पीढ़ी थी और 2 पतरस 2:5 में लिखा है कि नूह एक धार्मिकता का प्रचारक था। नूह ने परमेश्वर की बातों पर विश्वास करके नाव बनाना शुरू कर दिया, लेकिन इन भक्तिहीन लोगों ने जलप्रलय के द्वारा भविष्य में होने वाले परमेश्वर न्याय को लेकर उसका बहुत मज़ाक बनाया था। उन्होंने न तो नूह के प्रचार पर विश्वास किया बल्कि नाव के बनाये जाने पर भी ध्यान नहीं दिया, जो उनके आने वाले विनाश का एक प्रत्यक्ष चिन्ह था। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और लगभग सौ वर्षों तक उसके क्रोध दिलाते रहे(1 पतरस 3:20;उत्पत्ति 5:32;6:3;7:6)। लेकिन जब जलप्रलय आया तब, नूह अपने विश्वास के कारण बच गया जबकि दुष्टों को अपने अविश्वास का दण्ड मिला(इब्रानियों 11:6)।

मत्ती 24:37-39 के अनुसार, यीशु स्वयं शिक्षा देते हैं कि "नूह के समय के लोग" संसार भर के लापरवाह और अनाज्ञाकारी लोगों के प्रतीक हैं।अत: यीशु मसीह का स्वर्गारोहण लावरपाह,अनाज्ञाकारी और अधर्मी लोगों के लिए एक उदघोषणा है, चाहे वे यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले इस धरती पर पैदा हुए हों या बाद में।

इसके अलावा यह लोगों के लिए पश्चाताप करने हेतू चेतावनी भी है। बाइबल के अन्य अनुच्छेदों से हम जानते हैं कि मसीह की मृत्यु,पुनरूत्थान,स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होना दुष्ट की शक्तियों पर विजय की घोषणा है (इफिसियों 1:20-22),उदाहरण के लिए शैतान और उसकी दुष्टात्माएं(यूहन्ना 12:31-32; प्रकाशितवाक्य 12:5-9; 20:1,3,7), बुरी आत्माएं(पतित स्वर्गदूत)(लूका 8:31; कुलुस्सियों 2:15; 2पतरस 2:4;यहूदा 6; प्रकाशितवाक्य 9:1)और संसार में पायी जाने वाली सारी सत्ता(भजन संहिता 2:8-12)!यीशु मसीह का स्वर्गारोहण उसकी सम्पूर्ण विजय की उदघोषणा है।

(3) पद 21-22 यीशु मसीह के पुनरूत्थान.स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने का दर्शाता है।

एक रोमी कप्तान जब विजय प्राप्त करके कदमताल करते हुए रोम में वापस आता है, तो उसके गुलाम रथों से जंज़ीरों में बंधे हुए कतार में उसके पीछे पीछे आते हैं, यही तस्वीर यीशु मसीह के स्वर्गारोहण को दर्शाती है, जिस में उसके गुलाम उसके पीछे पीछे हो लेते हैं।

2 कुरिन्थियों 2:14 और इफिसियों 4:8 के अनुसार यीशु मसीह अपने साथ इतिहास के सारे मसीहियों को अपने साथ बाहर निकाल लाएं। जैसा कि सुसमाचार में बताया गया है उसने उन्हें अपने प्रेम और अनुग्रह से जीत लिया है। सबसे पहले यीशु परमेश्वर को प्रगट करने तथा लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए स्वर्ग से उतरकर धरती के सबसे निचले स्थान पर आये(उसने कमजोर और मरनहार मनुष्य का रूप धारण किया)। उसके बाद वह सब बातों को परिपूर्ण करने के लिए, स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हो गया(अब वह महिमित मानवीय स्वभाव धारण किये हुए है)(फिलिप्पियों 2:6-11;इफिसियों 1:10)। इसलिये वह कहता है:"वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।"(उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। और जो उतर गया यह वहीं है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)(इफिसियों 4:8-10)। विजयी स्वर्गारोहण इस बात को दर्शाता है कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। उसके विजयी स्वर्गारोहण के द्वारा द्वारा सारी धरती की सभी जातियों और राज्यों पर यह प्रगट किया उसने अपनी दया और अनुग्रह की शक्ति से इन मसीहियों को जीत लिया है!

कुलुस्सियों 2:15 के अनुसार इतिहास में उसके द्वारा जीती गयी सारी बुरी शक्तियां कतार बनाकर यीशु मसीह के पीछे हो ली। विजयी परेड प्रदर्शित करती है कि यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान से अन्धकार की सारी शक्तियों को जीतकर सारे जगत के लोगों के सामने खुलासा कर दिया है।

1 पतरस 3:21-22 के अनुसार सारी जाति और सारे राज्यों की सारी अच्छी और बुरी आत्माएं स्वेच्छा से यीशु मसीह के अधीन हैं। यीशु मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है(मत्ती 28:18;इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 17:14)

1 कुरिन्थियों 15:25 और फिलिप्पियों 2:10-11 जितने लोग उसकी अनुग्रहकारी विजय के अधीन नहीं करते वे न्याय के दिन उसकी अधीनता को स्वीकार करेगें(यूहन्ना 5:22)।

5. 1 पतरस 4:1-6 का सही अनुवाद।

1 पतरस 4:1-6 में वर्णित घटना में उन लोगों के बीच तब सुसामचार प्रचार करने के बारे में कहा गया है जब वे जीवित थे,लेकिन पतरस के पत्री लिखते समय उनकी मृत्यु हो चुकी थी। वे उस समय की घटना के बारे में बताता है जब वे शारीरिक रूप में पृथ्वी पर जीवित थे, ताकि उनका उद्धार हो सके तथा वे इस दुनिया में जीवित रहते हुए भी अपने शरीर में शुद्ध जीवन व्यतीत कर सकें। हालांकि भविष्य में जाकर हमारा शरीर नष्ट हो जाएगा लेकिन उसके बावजूद भी धरती पर रहते हुए आत्मिक जीवन व्यतीत करने की जरूरत के बारे में बोला जा रहा है। 1 पतरस 4:6 में लिखा है "क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार इसीलिए सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हो, पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार जीवित रहें। उनका मानवीय आत्मा पहले से ही नया जन्म पाया हुआ था (आत्मा के सन्दर्भ में कहा जाए तो उन्होंने परमेश्वर के अनुसार जीवन व्यतीत किया) लेकिन उनकी मानवीय देह को तो मरना ही था (उनका मनुष्य के शारीरिक रूप में न्याय प्रक्रिया से होकर गुजरना ज़रूरी था)।

(1) पद 6 हमें सुसमाचार प्रचार करने के उद्देश्य के बारे में बताता है।

लोगों को सुसमाचार प्रचार करने का मुख्य कारण या तो उन्हें बचाना होता है या उन्हें दोषी ठहराना होता है! पद 3 से 5 कहता है कि जो लोग लगातार पाप व अनैतिकता में जीवन व्यतीत करते रहते हैं, उनका न्याय होगा। और पद 1,2,6 में कहा गया है कि मसीही लोगो का उद्धार होगा, जो अपना बाकि का जीवन परमेश्वर के लिए जीते हैं। मसीही लोगों समेत संसार के सारे लोगों का,"मानवीय देह के अनुसार न्याय होगा"। इसका अर्थ है कि *उनका शरीर पहले ही मरने के लिए शारीरित तौर पर आरोपी ठहर चुका* है,जैसा कि संसार के बाकि लोगों के साथ होता है(इब्रानियों 9:27)। मसीहियों को शारीरिक रूप से मरना ही होगा क्योंकि उनकी वर्तमान देह जिसमें मांस और लहू पाया जाता है परमेश्वर के राज्य में उनके लिए कोई स्थान नहीं है(1कुरिन्थियों 15:50)।

अत: जितने लोग सुसमाचार को प्रतिउत्तर देते हैं वे मसीही परमेश्वर के लिए जीएंगे। इसका अर्थ हुआ कि बहुत से मसीहियों के सताव में शहीद हो जाने के बावजूद बहुत से मसीही जन अपनी नयी आत्मा के कारण, मसीही जन परमेश्वर के लिए जिएंगे, परमेश्वर की सेवा और अराधना करेगें। उनके अन्दरूनी मनुष्यत्व के कारण परमेश्वर के वचनों और परमेश्वर के रास्ते के कारण आनिन्दत होगें। (यूहन्ना 4:23-24; रोमियों 7:22-25)। छोटे रूप में कहें तो, सारे सच्चे मसीही शुद्ध जीवन व्यतीत करेगें।

"मृतकों को सुसमाचार सुनाया गया। इस पंक्ति का अर्थ यह है कि जिन लोगों ने अपने जीवन काल में परमेश्वर के वचनों को सुना, चाहे वे सताव के द्वारा मरे हों या उनकी स्वाभाविक मृत्यु में मर गये हों, और पतरस के पत्री लिखने से पहले वे खत्म हो गये हों। मगर वास्तविकता यह है उनके जीवित दशा में मसीह पर विश्वास रखने के कारण उनके सताव में कोई

रियायत नहीं हुई। लेकिन इसने उन्हें पाप और अनन्त मृत्यु के दण्ड से बचा लिया; और इसने उन्हें सताव के बीच में शुद्ध और पवित्र जीवन जीने में सहायता की।

(2) पद 6 दूसरे अवसर के सिद्धान्त की शिक्षा न तो देता है और न दे सकत है।

पद 6 का मतलब यह कभी नहीं हो सकता कि सुसमाचार मृत लोगों की आत्माओं को प्रचार किया गया था चाहे वे अधोलोक में हो या नरक में, क्योंकि इन आत्माओं के पास देह नहीं होती। इसलिए पद 6 का केवल यह मतलब हो सकता है कि उन्हें उनके मरने से पहले ही सुसमाचार सुना दिया गया था। इस वचन का यह अर्थ कभी नहीं निकाला जा सकता कि लोगों के मरने के बाद उन्हें सुसमाचार सुनाया गया था अर्थात मरे हुओं की आत्मा को, क्योंकि उन आत्माओं के पास कोई देह नहीं थी कि सुसमाचार सुनाने के बाद में आप उन पर मृत्यु दण्ड देने के लिए दोष लगा सको।

निष्कर्ष। पद 6 हमें यह नहीं सिखाता कि सुसमाचार मृत लोगों की आत्माओं को सुनाया गया चाहे वे अधोलाक हो या नरक।

सारांश: बाइबल में कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं है जो इस बात को दर्शाता हो कि मृत्यु के पश्चात सुसमाचार सुनने और उद्धार पाने का दूसरा अवसर मिलेगा। सुसमाचार केवल लोगों को उनके जीवित रहते हुए ही सुनाया जाता है। उनकी जीवित दशा में विश्वास या अविश्वास करना ही इस बात को निर्धारित करता है कि वे अपनी अनन्तता कहां बिताने जा रहे हैं।

"देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है, देखो अभी वह उद्धार का दिन है।"(2कुरिन्थियों 6:2)!

"परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।"(मरकुस 1:15)

कलीसिया परिशिष्ट 3

(कलीसिया का उत्सव)
नये साल का पर्व: मूल्याँकन तथा समर्पण करने का दिन

परिचय : नये साल का पर्व कई लोगों के लिए महत्वपूर्ण होता है। हम सीखेगें कि मसीह नये वर्ष की शुरूआत को कैसे मना सकते हैं। हम पिछले वर्ष के सम्बन्ध में स्वयं की जांच करने महत्व को सीखेगें। हम नये वर्ष के सम्बन्ध में सही निर्णयों और चुनावों को करने के महत्व को सीखेगें। हम हर एक काम की शुरूआत में परमेश्वर का सम्मिलित करने के महत्व को भी सीखेगें।

भजन 90:10-12 में लिखा है, "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ठ और शोक ही शोक है,वह जल्दी कट जाती है और हम जाते रहते हैं। हम को अपने दिन गिनने की समझ दें कि हम बुद्धिमान हो जाएं।" प्रत्येक नये वर्ष का उत्सव संसार के लोगों को याद दिलाता है कि संसार में उनका समय सीमित है और यह नया साल भी खत्म हो जाएगा। प्रत्येक नया स का उत्सव लोगों के लिए बीते साल का मूल्यांकन करने और आने वाले साल के लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों को करने का एक महत्वपूर्ण मौका है। पुराने साल के अन्तिम दिन की शाम को एक मसीही परिवार या मित्रों का दल व्यक्तिगत रूप से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को सोचते हुए कुछ समय बिता सकते हैं।

बाइबल ही ऐसी पुस्तक है जो सभी महत्वपूर्ण चीजों की शुरूआत के बारे में बताती है। यह प्रकट करती है कि परमेश्वर आदि में था। यह रचे गये जगत, मानवजाति की शुरूआत,परमेश्वर के उद्देश्य की शुरूआत तथा पृथ्वी पर मनुष्य के कार्यों के बारे में बताती है।

लेकिन इसके साथ साथ बाइबल हमें सारी चीजों के अन्त के बारे में भी बताती है। यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर सारे राष्ट्रों और अधिकारियों के साथ इस दुनिया के अन्त के बारे में भी बताती है। तब यीशु मसीह प्रत्येक व्यक्ति का, जो उस से सम्बन्ध रखता है, उन सब का न्याय करेगा कि उन्होंने किस तरह का जीवन बिताया। इसलिए मसीहियों को याद दिलाया जाता है कि यीशु ही सभी चीज़ो का आदि और अन्त है। उन्हें याद दिलाया जाता है कि हम केवल परमेश्वर के साथ ही अगले वर्ष की शुरूआत कर सकते है और केवल परमेश्वर के साथ ही वे अपने सम्पूर्ण जीवन का अच्छा अन्त कर सकते हैं।इसलिए नये साल का उत्सव मसीहियों के लिए पुराने साल का मूल्यांकन करते हुए अपने जीवन में गलतियों को सही करने का एक मौका है। नये साल का उत्सव नये निर्णयों,और नये चुनावों को करने और मुख्य रूप से अपने सम्पूर्ण जीवनों को जीवित परमेश्वर के हाथ में सौंपने के लिए एक नया सर्मपण करने का मौका भी है।

क.नये वर्ष का उत्सव, स्वयं का मूल्यांकन करने के रूप में

परिचय: आपके बीते साल के मूल्यांकन में सहायता करने के लिए नये साल का उत्सव खुद से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने का एक अच्छा अवसर होता है।

1. नये साल का पहला प्रश्न: क्या मैं एक विश्वासी हूँ?

पढ़ें: यूहन्ना 3:16-18,36 यूहन्ना 5:24, यूहन्ना 3:9-10, 2कुरिन्थियों 13:5

खोज व चर्चा करें: अपने आप से पूछा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न क्या है?

इस नये साल में एक नई शुरूआत करने से पहले आप अपने आप से सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह कर सकते हैं कि "क्या मैं एक मसीही हूँ या नहीं? 2 कुरिन्थियों 13:5 कहता है," अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप

को जाँचों। क्या तुम अपने आप के विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकलते?"

कई लोग इस नए साल को बिना यीशु मसीह के अर्थात बिना जीवित परमेश्वर के शुरू करेगें। प्रत्येक व्यक्ति जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता वह भटका या खोया हुआ है। उसका पाप अभी तक क्षमा नहीं हुआ है, परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है और उसे अनन्त काल का दण्ड मिलेगा। हर कोई जो लगातार पाप करता है और सही कामों को नहीं करता या अपने भाई को प्रेम नहीं, वह शैतान की सन्तान है। परन्तु जो परमेश्वर की ओर फिरता, यीशु मसीह में विश्वास करता, वह निश्चय ही दोषी न ठहरेगा और नाश न होगा, लेकिन अनन्त जीवन पाएगा। वह लगातार पाप न करेगा, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है। वह उचित कामों को करेगा, और अपने भाई से प्रेम रखेगा। और वह जानता है कि वह परमेश्वर की सन्तान है। इसलिए प्रत्येक का खुद अपने आप को जांचना और परखना चाहिए।

विचार करें: यदि आपने कभी भी प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं किया है तो अभी ग्रहण करें। निम्नलिखित प्रार्थना को दोहराएं: "हे स्वर्गीय पिता मैं मानता हूँ कि मैं एक पापी और खोया हुआ व्यक्ति हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर यीशु मसीह मेरे पापों के दण्ड के लिए मारा गया, मैं विश्वास करता हूँ कि वह फिर जीवन उठा और अब राजाओं के राजा के रूप में राज्य करता है। अब मैं मसीह को मेरे पापों को क्षमा करने और मुझे एक नया जीवन देने के लिए मेरे जीवन में बुलाता हूँ, मेरे शिक्षक के रूप में यीशु मसीह से मैं सीखना और प्रभु के रूप में उनकी आज्ञा मानना चाहता हूँ। यीशु मसीह के नाम में मेरी प्रार्थना सुनने के लिए धन्यवाद। आमीन।

2.नये साल का दूसरा प्रश्न: मैंने पिछले साले में कैसे जीवन व्यतीत किया?

पढ़े भजन 139:1-7,23-24,यूहन्ना 8:32

खोज और चर्चा करें: दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न क्या है, जो प्रत्येक व्यकित को खुद से पूछना चाहिए?

दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न है कि, "मैंने बीते साल में किस तरह का जीवन व्यतीत किया?"भजन संहिता 139 एक जांच की प्रार्थना है। दाऊद महसूस करता है कि वह सिद्ध और निष्पाप नहीं है। वह महसूस करता है कि वह हमेशा नहीं जानता कि कौन सी चीज परमेश्वर को दुखित करती है। इसलिए वह परमेश्वर से उसके पापों को दिखाने के लिए कहता है वह प्रार्थना करता है कि

"हे यहोवा ,तू ने मुझे जांच कर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है;और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भली भांति छानबीन करता है, और मेरे पूरे चालचलन का भेद जानता है।"

"हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले। मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले। और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल हैं कि नहीं और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।"(भजन 139:1-3;23-24)

विचार करें: डाक्टर मरीज़ की सहायता तभी कर सकता है, जब मरीज़ को मालूम हो कि वह बीमार है। जब तक एक मरीज अपनी बीमारी की वास्तविकता का इनकार करता है तब तक उसे मालूम नहीं होता कि उसे एक डाक्टर की आवश्यकता है। लेकिन जब वह अपने जीवन की वास्तविकता का सामना करता है तो उसे मालूम पड़ता है कि वह बीमार है और उसे सहायता की आवश्यकता है। और तभी डाक्टर उसे होने में मदद भी कर सकते हैं।

इसीलिए यीशु कहते हैं कि" भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती परन्तु रोगी को होती है"। मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ।"(लूका 5:31-32)।जो कोई अपने अधर्म का सामना करता है और यीशु की आवश्यकता को महसूस करता है वह संसार के सबसे उत्तम डॉक्टर यीशु से सहायता और चंगाई पाता है। जो कोई उस पर विश्वास करता है वह अपनी बीती घटनाओं में छुपे हुए डर का सामना करने और गहराई से अपना मूल्यांकन करने में कभी भयभीत नहीं होगा, क्योकि वह जानता है कि चंगाई पाने के लिए सबसे उत्तम और आसान रास्ता यही है। इसलिए इस नये साल की शुरूआत करने से पहले एक महत्वपूर्ण प्रश्न आप खुद से पूछ सकते हैं, वह आपके जीवन में पाप की सम्भावना से जुड़ा प्रश्न है।"क्या मेरे जीवन में कोई ऐसा विशेष पाप है, जिसे मैंने प्रभु यीशु मसीह के सामने स्वीकार नहीं किया है?" क्या कोई ऐसा गुप्त पाप है जिसका मैं गुलाम हूँ?" "क्या मेरा सम्बन्ध किसी के साथ खराब है?" बीते वर्ष को स्मरण करें और बीते वर्ष के दौरान किये हुए अपने व्यवहार,शब्दों और विचारों और स्वभाव और निर्णयों और चुनावों का

मूल्यांकन करें। जब आप जानते या महसूस करते हैं कि आपकी जीवन सहीं नहीं है लेकिन आप नहीं जानते कि गलत क्या है, तो फिर जांच की प्रार्थना के रूप में भजन 139 को प्रार्थना के रूप में दोहराएं। परमेश्वर पहले से ही जानता है कि आपने मन,हृदय और जीवन में क्या छुपा हुआ है लेकिन वह चाहता है कि आप अपने मुंह से इनका अंगीकार करें। परमेश्वर चाहता है कि आप इन सारी चीजों का जाने और मान लें, क्योंकि वह आपको इन सारी चीजों से छुटकारा देना चाहता है। यूहन्ना 8:32 में यीशु ने प्रतिज्ञा की " जब तुम सत्य को जानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा।" सत्य आपको आपके सबसे अन्धेरे भाग के स्वभाव से भी स्वतन्त्र कर सकता है।

3.नये साल का तीसरा प्रश्नः "बीते साल के दौरान मैंने क्या उन्नति की है?"

पढ़ें. कुलुस्सियों 2:6,7 1 तीमुथीयुस 4:15-16

खोज और चर्चा करें: तीसरा सबसे महत्वूपर्ण प्रश्न क्या हैं जो कोई जन अपने आप से पूछ सकता है?

अपने आप से पूछा जाने वाला तीसरा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि,"बीते वर्ष में मैंने क्या उन्नति की है?" मनुष्य जीवित प्राणी है और जीवित प्राणी या तो आगे की ओर उन्नति करता या फिर पीछे की ओर खिसकता है। लोगों को लगता है कि वे किसी विशिष्ट समस्य से निपटने के लिए थोड़ी देर तक खड़े हो सकते हैं। लेकिन समस्या से निपटना भी उन्नति करता होता है। केवल निर्जीव वस्तुएं की खड़ी रहती है और एक लम्बे समय तक जैसी हैं वैसी बनी रहती है। प्रेरित पौलुस तीमुथीयुस को उन्नति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह कहता है इन बातों को सोचता रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रकट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख, इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।

विचार करें: इस साल में एक नई शुरूआत करने से पहले एक महत्वपूर्ण प्रश्न जो आप खुद से पूछ सकते हैं वह है कि बीते साल में आपके जीवन में क्या उन्नति की।"मैंने किस हद तक परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत किया"(रोमियों 11:36)"कैसे मैं मसीह में बना रहा(यूहन्ना 15:5)" "एक मसीही व्यक्ति के रूप में मैंने उन्नति की या नहीं(1तीमुथी 4:15)""मैंने अपनी पत्नी और बच्चों से कैसा प्रेम किया(इफि 5:25)?" क्या मैंने अपनो के लिए छः दिन काम किया? मैंने परमेश्वर के काम और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए किस प्रकार से सहयोग दिया(मत्ती 6:33)?" आनेवाले नये सा के दौरान परमेश्वर चाहता है कि मैं बदलूं या सुधरूँ? और किन क्षेत्रों में बदलाव की जरूरत महसूस होती हैं, सोचने के लिए समय निकालें। बाइबल पढ़ते और प्रार्थना करते हुए, परमेश्वर के साथ मिलकर इन प्रश्नों पर ध्यान दे।

ख. समर्पण के अवसर के रूप में नए साल का त्यौहार

परिचयः जीवन में महत्वपूर्ण निर्णयों और चुनावों को करने के लिए नए साल का उत्सव एक बहुत अच्छा अवसर होता है। कुछ महत्वपूर्ण निर्ण या चुनाव जो आपको करने चाहिए वह निम्नलिखित हैं:

"अगले वर्ष मेरे जीवन की दिशा क्या होगी?""मेरे समय,योग्यताओं,अवसरों और पैसों के साथ मैं क्या करूंगा?" "जीवन में मेरा लक्ष्य और प्राथमिकताएं क्या हैं?" बाइबल में कुछ लोगों के द्वारा किये गये निर्णयों और चुनाओं को देखें। फिर सही निर्णयों और चुनावों को करें।

1. नए साल का पहला निर्णय"मैं अपने जीवन में सही दिखा को अपनाऊँगा।

पढ़ें. यिर्मयाह 6:16 "यहोवा यों भी कहता है सड़को पर खड़े होकर देखो, और पूछो कि प्राचीनकाल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो, और तुम अपने अपने मन में चैन पाओगे। उन उन्होंने कहा हम उस पर न चलेंगे।

विचार करें और चर्चा करें। आप कौन सा रास्ता अपनाएंगे? आने वाले नये साल के दौरान आप के जीवन की दिशा क्या होगी?"

इस नये साल में एक नई शुरूआत करने से पहले आपको अपने जीवन की दिशा के बारे में एक महत्वपूर्ण निर्णय और चुनाव लेना चाहिए । प्रत्येक नये साल का उत्सव एक निरछे रास्ते पर खड़े होने जैसा है, जहां आप को दायें या बायें मुड़ने या सीधे जाने या पीछे मुड़ने का निर्णय लेता होता है। आपको निर्णय लेना होता है कि आप परमेश्वर की ओर फिरेगें और उसके मार्ग को अपनाएंगे, जो अच्छा और सही है,या परमेश्वर से दूर होकर गलत मार्ग को अपनाएंगे।

"प्राचीन मार्ग", प्राचीन मार्ग बाइबल के प्रकट किये गये परमेश्वर के मार्ग को दर्शाता है,जो सृष्टि के समय से है। प्रार्थना करें और परमेश्वर से अच्छे और सही मार्ग को दिखाने को कहें। निश्चय ही आप भी कभी न कभी ऐसे चौराहे पर आ सकते हैं।

2. नये वर्ष का दूसरा निर्णय: मैं अपने जीवन में सही व्यक्ति पर भरोसा रखूंगा"।

विचार और चर्चा करें: इस वर्ष के दौरान आप किस पर भरोसा करेगें?

पढ़ें. यिर्मयाह 17:5-10,"यहोवा यो कहता है: स्रापित है वह पुरूष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है। वह निर्जल देश के अधमरे पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर बसेगा।"धन्य है वह पुरूष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के किनारे लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब धूप होगी तब उसको न लगेगी,उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।" जो कोई एक मनुष्य, राजनेता धनवान,सेना, नेता या आत्मिक अगुवा पर भरोसा रखता है, वह मरूभूमि में एक सूखी झाड़ी के समान बन जाएगा। परन्तु जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखता है वह नदी के किनारे लगाये गये एक पेड़ के समान हो जाएगा। किसी भी व्यक्ति के साथ हानिकारक निर्भरता के सम्बन्ध के प्रति परमेश्वर चेतावनी देता है।

पढ़ें, नीतिवचन 23:4-5, मत्ति 6:25-34, जो लोग भौतिक चीजों जैसे पैसा और पदों पर भरोसा रखता है उन्हें मालूम हो जाएगा कि उनको प्राप्त करने का उनका प्रयास व्यर्थ हो जायेगा और धन भी तुरन्त खो जाएगा। लेकिन जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते हैं वे लोग अपने सारे समया और मेहनत भौतिक चीजों को प्राप्त करने में नहीं लगाते, वरन पहले परमेश्वर के राज्य और जो चीज़े परमेश्वर की दृष्टि में सही हैं उसे ढूँढ़ते हैं।

पढ़ें. भजन 20 :4-8 जो लोग सेना पर, जैसे घोड़े लड़ाई के रथों, आधुनिक हथियारों पर भरोस रखते हैं, उन्हें मालूम हो जाएगा कि एक दिन वे "घुटनों पर आकर गिर जाएंगे।" परन्तु जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखता है बच जाएगा: परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर देगा:"और वह उठकर स्थिर हो जाएगा"

पढ़ें होशे 4:6, 1 कुरि 1:18-25 लोग जो अपने जीवन के लिए केवल मनुष्य की बुद्धि जैसे वैज्ञानिक या सैद्धान्तिक बुद्धियों पर भरोसा रखते हैं,उन्हें मालूम पड़ जाएगा कि परमेश्वर की दृष्टि में वे मूर्ख बन गये हैं। परन्तु जो कोई परमेश्वर पर और उसके वचन पर भरोसा रखता है बुद्धिमान हो जाएगा। वह तिरस्कृत या नाश न होगा परन्तु बच जाएगा।

पढ़ें भजन 23:1-6 जो लोग परमेश्वर पर अपने चरवाहों के रूप में भरोसा रखते हैं,वे परमेश्वर का सही दिशा में अगुवाई करते,घाटि से होकर गुजरते समय साथ रहकर मृत्यु की धमकी से छुड़ाकर उनके शत्रुओं से बचाते हुए अनुभव करेगें।

3. नये वर्ष का तीसरा निर्णय: मैं अपने जीवन में उन्नति करूंगा"।

विचार और चर्चा करें: इस वर्ष के दौरान आपके जीवन के किन क्षेत्रों में परमेश्वर चाहता है कि आप उन्नति करें?

इस वर्ष में एक नई शुरूआत करने से पहले एक महत्वपूर्ण निर्णय या चुनाव जो आपको करना चाहिए वह है आप अपने जीवन में वास्तविक उन्नति करें। कई लोग केवल अपने स्कूल के वर्षों में ही उन्नति करते हैं। उसके बाद,उनके बाकि जीवन में वे अकसर आगे से ज्यादा पीछे की ओर जाते हैं। प्रभु यीशु मसीह और प्रेरित पौलुस मसीहियों को अपने जीवन भर उन्नति करने की शिक्षा देते हैं।

पढ़े, मत्ती 25:14-30। परमेश्वर ने हर एक को एक से ज्यादा तोड़े दिये हैं। एक तोड़ा वास्तविकता में एक बड़ी रकम होता है। यीशु के दिनों में एक साधारण मजदूर को एक तोड़ा कमाने के लिए बीस साल काम करना पड़ता था। इस दृष्टान्त का विषय यह है कि परमेश्वर के दिये हुए अवसरों को प्रत्येक व्यक्तियों को विश्वासयोग्यता पूर्वक प्रयोग करना चाहिए। वह उसे इस प्रकार से प्रयोग करें कि परमेश्वर की महिमा हो परमेश्वर के राज्य का विस्तार हो और दूसरों को लाभ पहुँचे (मत्ती 25:40)। परमेश्वर लापरवाही को दण्ड देगा, परन्तु परिश्रमी को आशीष।

यद्यपि हर एक को जीवन में अलग मात्रा मे अवसर दिया गया है, तौभी उन्हें परमेश्वर द्वारा दिये गये तोड़े के द्वारा अधिक कमाना है।

पढ़ें, इफिसियों 5:15-17, बुद्धिमान लोग परमेश्वर के साथ चलते हैं और परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं। वे उच्च स्तर तक पढ़ने की इच्छा रखते हैं और उसे प्राप्त करने के लिए हर सम्भव प्रयास भी करते हैं। वे अपनी क्षमताओं और अवसरों का उत्तम प्रयोग करते हैं। उन्नति करने के लिए एक व्यक्ति को बुद्धिमान होना चाहिए।

पढ़ें. फिलिप्पियों 3:7-16, पौलुस अपने ही उदाहरण को अनुसरण करने के लिए अपने लक्ष्य की व्याख्या करके फिलिप्पियों को प्रोत्साहित करता है। उसका उद्देश्य मसीह को जानना,मसीह का प्राप्त करना और मसीह के समाना बनना है। वह नैतिक और धार्मिक सिद्धता को प्राप्त करना चाहता है। पौलुस सृष्टि की बुनियाद पड़ने से पहले चुने जाने (इफिसियों 1:4) और उद्धार की निश्चयता पर विश्वास रखता है(2तीमुथीयुस 2:19)। लेकिन वह मनुष्य की जिम्मेदारी के बिना ईश्वरीय उद्धार या मनुष्य के प्रयास के बिना इश्वरीय उद्धार या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर मनुष्यों के भरोसे के बिना उद्धार की निश्चयता पर विश्वास नहीं करता है। यद्यपि इस संसार में रहते समय तक मसीही जल पूर्ण रूप से शुद्धिकरण नहीं पा सकते। फिर भी उन्हें इसकी ओर बढ़ते रहना चाहिए।

पढ़ें.तीमुथीयुस 4:11-16 पौलुस, तीमुथीयुस को बातों में,जीवन में, प्रेम में, विश्वास में और शुद्धता में उदारहण बनने के लिए उत्साहित करता है। वह उसे लोगों के आगे वचन पढ़ने,प्रचार करने और शिक्षा देने में खुद को अर्पण करने के लिए उत्साहित करता है। और वह उसे खुद के जीवन और शिक्षा के प्रति चौकस रहने को कहता है। जब वह इन बातों में बना रहेगा, तभी लोग उसकी उन्नति को देख पाएंगे।

ग.नये वर्ष का उत्सव परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा करने का अवसर होता है

परिचय: अपनी इच्छा के अनुसार परमेश्वर ने हमें चुनने और निर्णय करने के लिए एक सीमित आजादी दी है। जिसके लिए वह हमें जिम्मेदार समझता है। उदाहरण के रूप में वह हमे उसकी शिक्षाओं को इनकार करने या विश्वास करने के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह ठहरायेगा। इसी प्रकार से वह हमें उसकी आज्ञाओं को मानने या न मानने के प्रति भी ज़िम्मेदार और ठहरायेगा। परन्तु हमारे जीवन के दूसरे क्षेत्रों में उसने हमें आज़ादी नहीं दी है। उदाहरण के तौर पर, हम अपने जन्म के समय और स्थान को नहीं चुन सकते, और कई बार हम अपनी परिस्थितियों को भी नहीं चुन सकते। परन्तु परमेश्वर ने हमारी परिस्थितियों के प्रति हमारे स्वभाव और प्रतिक्रियाओं को चुनने की आज़ादी दी है!

प्रत्येक नये वर्ष का उत्सव परमेश्वर के प्रति कुछ नये समर्पण काने का एक अच्छा अवसर होता है,खासकर परमेश्वर की इच्छा में समर्पण करने का। परमेश्वर चाहता है कि हम स्वेच्छा और सारे हृदय से बाइबल में प्रकट परमश्वेर की इच्छा के प्रति सर्मपण करें जो उसकी शिक्षा पर विश्वास करने और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए चुनना है। और परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वासयोग्यता के साथ खुद को परिस्थितियों में सौंप दें, जिसे परमेश्वर ने हमारे जीवन में अपनी माहानता के अनुसार अनुमति दी है। इसलिए, नये वर्ष के प्रारम्भ में किये जाने वाले सारे निर्णयों और कामों में, सबसे पहले परमेश्वर को शामिल करें।

1. नये वर्ष की पहली प्रतिज्ञा: मैं अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति पर निर्भर रहूंगा।

विचार और चर्चा करें: परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में बाइबल क्या प्रतिज्ञा करती है।

इस साल में एक नयी शुरूआत करने से पहले एक महत्वपूर्ण समपर्ण जो प्रत्येक मसीही को करना चाहिए वह अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति पर निर्भर रहना, खासकर मुश्किलों का सामना करते समय।

पढ़ें: व्यवस्था 1:29-33। परमेश्वर स्वयं अपने लोगों के आगे जाता है और अपने लोगों के लिए लड़ता है। अगले वर्ष के दौरान एक मसीही के रूप में जहां कही भी हमें जाना होगा स्वयं परमेश्वर हमारे साथ और वह हमारे लिए लड़ेगें। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर हमसे समस्याओं को दूर नहीं हटाता बल्कि समस्याओं के बीच में हमें सम्भाल कर ले चलता है। जैऐ एक पिता अपने बच्चे को सारी समस्याओं से बचाकर ले चलता है, इसी प्रकार परमेश्वर ही हमें हमारी समस्याओं से तब तक सम्भाले ले चलता है जब तक हम अपने अन्तिम लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाते।

पढ़ें. 2 राजा 6:15-17 शत्रुओं ने एलीशा को मारने के लिए पूरे शहर को घेर लिया था। एलीशा का सेवक बहुत ही डर गया। फिर परमेश्वर से उसकी आत्मिक आखें खोल दीं और वह देख पाया कि सारा पर्वत और शहर चारों ओर से अग्निमय घोड़ों और रथों से घिरा हुआ और सुरक्षित है। कई बार हमें बहुत ही मुश्किल परिस्थितियों में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान करता है। तब हमें केवल शारीरिक खतरे और शत्रु ही दिखाई देते हैं और परमेश्वर के स्वर्गदूतों की उपस्थिति कोई वास्तविकता नहीं लगती। भजन 34:7 कहता है "उसके भय मानने वालों के चारों ओर परमेश्वर के दूत घेरा लगाये रहते हैं और उन्हें छुड़ाते हैं"। यशायाह 41:10 में, परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं....."। और यशायाह 43:1-7 में वह प्रतिज्ञा करते हैं..... "।

2.नये साल की दूसरी प्रतिज्ञा : मैं अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहूगा।

खोज और चर्चा: परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में बाइबल क्या प्रतिज्ञा करती है?

इस वर्ष में एक नई शुरूवात करने से पहल एक महत्वपूर्ण सर्मपण जो प्रत्येक मसीही को करना चाहिए वह अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह पर निभर रहना है।

पढ़ें. प्रकाशित.3:7-8, यह परमेश्वर का अनुग्रह ही है जो प्रत्येक मसीही के लिए द्वार और असवर खोलता है। वह हममें पढ़ने या नाकरी पाने या जीवन साथी पाने इत्यादि का मौका देहा है। वह हमारे लिए दूसरों को यीशु मसीह के बारे मे बताने या उसके राज्य के लिए सेवा करने के लिए द्वार को खोलता है। भले ही दूसरे लोग द्वारों को बन्द करने की कोशिश करें यीशु कहता है,.."जो द्वार मैं खोलता हूँ उसे कोई बन्द नहीं कर सकता और जो मैं बन्द करता हूँ, उसे कोई खोल नहीं सकता।" भले ही संसार के राजनेता, सैनिक,धार्मिक अगुवे, हमारे जीवन में द्वारों को बन्द करने की कोशिश करें,परन्तु वह इसे केवल परमेश्वर के प्रभुत्व की अनुमति से ही कर पाते हैं। कुँजियों को ढोने वाले वे नहीं परन्तु यीशु है। द्वार को बन्द करने वाले वे नहीं, परन्तु यीशु मसीह है जो उन्हें द्वार बन्द करने के लिए अनुमाति देता है। द्वारों को खोलने वाले भी वे नहीं परन्तु यीशु मसीह है जो हमारे लिए अपनी महानता के अनुसार नये द्वारों को खोलता है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता।

मसीही जन परमेश्वर की महानता और यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं। इसलिए मसीहियों को इस वर्ष के दौरान नये द्वारों और अवसरों को खुलने के लिए परमश्वर के अनुग्रह पर निर्भर होना चाहिये।

पढ़ें। नीतिवचन 27: 1; याकूब 4:13-17। बाइबल चेतावनी देती है कि हम कल जो भी करने जा रहे हैं उनमें घमण्ड नहीं करना चाहिए। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा। कोई नहीं जानता कि कल वह जीवित होगा या नहीं। इसलिए जब एक मसीही कल के लिए या नये वर्ष के लिए योजना बताता है तो वह परमेश्वर पर निर्भर होता है। मसीही कहते हैं"यदि प्रभ की इच्छा हो तो हम जियेगें और इसे करेंगे।

पढ़ें. 2 कुरिन्थियों 12:9, निश्चय ही हर एक मसीही मुश्किलों का सामना करेगा। परन्तु कल या आनेवाले साल के दौरान आप जो भी समस्याओं का सामना करेगें, उसमें परमेश्वर का एक उद्देश्य है। पौलुस सिखाता है जब आप मुश्किलों, बीमारियों या सताव का सामन करते हैं तो आपको परमश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहना चाहिए। परमेश्वर ने पौलुस की कठिनाइयों को दूर नहीं हटाया बल्कि इसके बदले उससे कहा कि "मेरा अनुग्रह तेरे लिए काफी है, क्योंकि मेर बल दुर्बलता में प्रबल होता है"। इसलिए नये साल के दौरान जब आप कठिनाईयों बिमारियों और सतावटों का सामना करते हैं, तब परमेश्वर के अनुग्रह पर आपको निर्भर रहना चाहिए। परमेश्वर आपकी कठिनाईयों बिमारियों या सतावटों को आपको और भी अधिक मसीह के समान और प्रभावशाली बनने के लिए प्रयोग करेगा।

3. नये वर्ष की तीसरी प्रतिज्ञा: मैं अपने जीवन में परमेश्वर की विजय पर निर्भर रहूंगा।

खोजें और चर्चा करें: " परमेश्वर की विजय के बारे में बाइबल क्या प्रतिज्ञा करती है।

इस वर्ष में एक नयी शुरूआत करने से पहले एक महत्वपूर्ण समर्पण जो प्रत्येक मसीह को करना चाहिए, वह अपने जीवन में परमेश्वर के विषय पर निर्भर रहना है। जब लोग अखबार पढ़ते या रेडियों पर खबरों को सुनाते हैं तो वे अक्सर बुरी खबरो को सुनते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरूद्ध लड़ाई करता है,लोग झूठ बोलते हैं चोरी,बलात्कार और हत्या करते हैं। कुछ व्यापारी और राजनेता भ्रष्ट होते हैं। कुछ पुलिसवाले और न्यायधीश गरीबों और असहाय लोगों का बचाव नहीं करते, बलिक जो उन्हें घूस देते हैं, उनका ही पक्ष लेते हैं। परन्तु जो बाइबल पढ़ते हैं वे हमेशा अच्छी खबरों को सुनाते हैं।

पढ़ें. रोमियों 8:28-39, परमेश्वर सिखाता है कि अन्तिक विजय परमेश्वर के लोगों की होती है, दुष्ट और भ्रष्ट लोगों की नहीं ।यह कहता है "यदि परमेश्वर हमारी ओर हैं तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है? मसीह के प्रेम से हमें कौन अलग कर सकता है? क्या संकट उपद्रव या अकाल या नंगाई या सतावट या जोखिम या तलवार? नहीं इन सारी बातों में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं। भले ही नये साले के दौराने मसीहियों के साथ कुछ भी हो परन्तु वे जानते हैं कि वे परमेश्वर की अन्तिम विजय में शामिल होगें।

पढ़ें. मत्ति 13:41,प्रेरित 3:21,प्रकाशित.21:27, इस संसार में जो भी होता है, वह अन्त नहीं है। परन्तु इस वर्तमान टूटी हुई दुनिया का अन्त यीशु मसीह का दूसरा आगमन, मृत्यु से पुनरूत्थान, अन्तिम न्याय और दुष्टों का दण्ड और स्वर्ग और पृथ्वी का नवीनीकरण है जिसमें धर्मी वास करेगें। इसलिए जब आप इस नये वर्ष की शुरूआत करते हैं तो इस संसार पर वर्ष के अन्त में मिलने वाली अन्तिम विजय पर निर्भर करें। वह अन्त आपके मरने या यीशु मसीह वापस आने पर आता है।